HINDI BENGALI SHIKSHA

By

PANDIT HARIDASS,

AN EXPERIENCED TEACHER.

Formerly Head Master T. A. V. School, Pokaran [Jodhpur]

AND AUTHOR OF

rasthya Raksha, Angrezi Shiksha Series, Aqlamandi-ka Khazana, Kalgyan & Translator of Gulistan, Bhagavada Gita, Rajsingh or Chanchal Kumari

&

Bichhuri-hui Dulhin etc,

THIRD EDITION

1914.

CALCUTTA.

PRINTED by Babu Rampratap Bhargava,
at the "Narsingh Press"
201, Harrison Road Calcutta.

तीसरी बार २५००]

[मूल्य ॥)

NOTICE.

Registered under Section XVIII of act XXV of 1867.

आवश्यक सूचना ।

इस किताब को रजिष्ट्री सन १८६७ के एकट् २५ सेक्शन १८ के मुताबिक सरकार में होगई है। कोई शख्स इसको फिरसे छापने, छपवाने या इसको उलट पलट कर काम निकालने का अधिकारी नहीं है। यदि कोई शख्स लोभ के वशीभूत होकर, ऐसा काम करेगा तो वह राज-दण्डसे दण्डित होगा।

1st Edition 1000
1911.

2nd Edition 2000
1912.

3rd Edition 2500
1914

प्रथम संस्करणकी

भूमिका।

हमारे अनेकानेक ग्राहकोंने हमारी अँगरेजी शिक्षासे खुश होकर, हमसे एक ऐसी पुस्तक लिखनेका बारम्बार अनुरोध किया, जिसके सहारे हिन्दी जाननेवाले बंगला भाषा, बिना उस्तादके घर बैठे, सीख सके। ग्राहकोंकी इच्छानुसार मैंने इस पुस्तकको इस ढँगसे ही लिखा है कि हिन्दी जाननेवाले सज्जन, सचमुच ही, बिना गुरुके, बहुत थोडी मिहनतसे ही बँगला सीख सकें और हमारे बङ्गाली भाई बँगलाकी मददसे हिन्दी सीख सकें।

आजकल बँगला साहित्य उन्नतिके उच्चतम सोपान पर चढ़ा हुआ है। बँगलामें एक से एक उत्तम ग्रन्थ रत्न बन गये हैं और बनते जा रहे हैं। हिन्दीके पाठक उनके देखनेका लोभ संवरण कर नहीं सकते। दूसरी ओर हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो भारतके इस छोरसे उस छोरतक बोली जाती है। तैलंग या मदरासी जब उत्तरीय भारत में आता है तब उसे हिन्दी से ही काम निकालना पडता है। इसी भाँति बङ्गाली जब युक्तप्रान्त या राजपूतानेमें जाता है तब उसे हिन्दीसे ही

मतलब निकालना होता है। यदि एक बङ्गाली और एक सिक्ख अमेरिका या अफ्रिकामें मिलते हैं तब वे परस्परका मतलब हिन्दी बोलकर ही निकालते हैं। अतः पश्चिमी भारतके लोगोंको बँगला सीखनेकी जितनी आवश्यकता है; बङ्गाली लोगोंको भी हिन्दी सीखनेकी उतनी ही या उससे कहीं अधिक आवश्यकता है।

मैं नहीं कह सकता, कि इस काममें मुझे कहाँ तक सफलता हुई है; क्योंकि मैं न तो हिन्दी का ही लेखक हूँ और न बङ्गला का ही; किन्तु मैंने बौनेके आकाशीय चाँद छूनेके समान साहस किया है। अलबत्त मनुष्यके काममें त्रुटियाँ और भूलें रह जाना नितान्त सम्भव है। दूसरे इस पुस्तकको लिखकर मुझे दुबारा पढ़नेका अवकाश भी नहीं मिला; अतः जो भूलें या त्रुटियाँ मेरी या मेरे मित्रोंकी नजर तले आजायँगी, उन्हें मैं दूसरे संस्करण में अवश्य सुधार दूँगा।

एक बात और कहनी है, इस पुस्तकके लिखनेमें भी मेरे सदाके सहायक बाबू हरिराम भार्गवसे मुझे बहुत कुछ सहायता मिली है। बल्कि जब जब मुझे समय नहीं मिला तब तब उन्होंने ही इसे लिखा है। अतः मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। दूसरे इसके प्रूफ संशोधनमें कई एक बङ्गाली सज्जनोंने भी सहायता दी है; अतः मैं उनका भी कृतज्ञ हूँ।

हिन्दी या बँगला सीखनेवाले सज्जन यदि इसे कुछ भी

कामकी चीज़ समझकर अपनावेंगे और इसके दोषोंको छोड़ कर गुणोंपर रीझेंगे; तो मैं उत्साह बढ़नेसे इसका दूसरा भाग भी लेकर उनकी सेवामें उपस्थित हूँगा।

कलकत्ता
१० सितम्बर १८११ ई०

विनीत—
हरिदास।

तृतीय संस्करणकी

भूमिका।

हर्षका विषय है कि, प्रेमी और कदरदान पाठकोंने मेरी लिखी इस पुस्तक की भी खूब ही कदर की। उसीका यह फल है कि, मैं आज तीन वर्षके भीतर ही इसका तीसरा संस्करण देख रहा हूँ।

इस संस्करणमें साइज़ क्रौन कर दिया गया है। पृष्ठ-संख्या भी बढ़ा दी गयी है। साथ ही साथ अनेक स्थलोंमें बँगला के कठिन शब्दोंके उच्चारण भी लिख दिये हैं। पहले ऐडिशनमें जहां जहां दृष्टि-दोषसे कुछ भूलें रह गई थीं वह भी सुधार दी गई हैं। आशा है कि, प्रेमी पाठक मेरी इस मिहनत की क़दर पूर्ववत करके, मेरा उत्साह बढ़ायेंगे। दूसरा भाग छप गया और बिक भी चुका है। आशा है शीघ्र ही उसका दूसरा संस्करण छपेगा। उसमें बँगला व्याकरण बड़ी उत्तमता से समझाया है।

कलकत्ता
१० सितम्बर १८१४ ई०

विनीत—
हरिदास।

ভূমিকা।

আমি এই পুস্তকখানি অতি যত্ন-সহকারে এইরূপ প্রণালীতে লিখিয়াছি যে, হিন্দি-ভাষা শিক্ষিত ব্যক্তি শিক্ষা-গুরুর সাহায্য না লইয়া অনায়াসে বাঙ্গালা ভাষা শিখিতে পাবেন, যিনি বাঙ্গালা ভাষা জানেন তিনিও বিনা শিক্ষকের সাহায্যে হিন্দি ভাষা সহজে শিখিতে পারিবেন।

আজকাল বাঙ্গালা সাহিত্য উন্নতির সর্ব্বশ্রেষ্ঠ আসন অধিকার করিয়াছে, সেই কারণ আমি একখানি "হিন্দি বাঙ্গালা শিক্ষা" নামক পুস্তক লিখিলাম ও লিখিতেছি, সুশিক্ষিত হিন্দি পাঠক উহা দেখিবার জন্য অত্যন্ত আগ্রহের সহিত আমায় উৎসাহিত করিতেছেন, বিশেষতঃ হিন্দি ভাষা সমগ্র ভারতের এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্য্যন্ত অধিকার করিয়াছে, তৈলঙ্গী বা মান্দ্রাজী যখন উত্তর ভারতে আসে তখন উহারা কেবল হিন্দি ভাষা হইতে সমস্ত কার্য্য করিয়া থাকে। সেইরূপ যেমন বাঙ্গালা শিক্ষিত ব্যক্তি যখন যুক্তপ্রান্ত বা রাজপুতানা যায় তখন উহারাও কেবল হিন্দি ভাষা হইতেই সমস্ত কার্য্য করিয়া থাকে, যদ্যপি একজন বাঙ্গালী ও শিখ আমেরিকায় বা আফ্রিকায় সাক্ষাৎ হয় তখন পরস্পর হিন্দি ভাষা হইতেই আপনাপন মনোগত ভাব বুঝাইয়া দেয়, অতএব পশ্চিমীয় ভারতের লোকের পক্ষে বাঙ্গালা

শিক্ষা একান্ত আবশ্যক ও বাঙ্গালীদিগকেও হিন্দি শিক্ষিবার বিশেষ আবশ্যক।

একদিন এইরূপ সময় আসিবে যে, সমগ্র ভারতে ভাষা হিন্দি ও লিপি দেবনাগর হইয়া যাইবে সেই কারণ আমি অনুরোধ করিতেছি যে বাঙ্গালী মাত্রেই যেন হিন্দি ভাষার উপর বিশেষ লক্ষ্য রাখেন।

বলিতে পারি নাই যে আমি এই বিষয়ে কতদূর কৃতকার্য্য হইয়াছি; না সুপ্রসিদ্ধ হিন্দি ভাষার লেখক, না বাঙ্গালা ভাষার লেখক, বিশেষতঃ বাঙ্গালা ভাষায় সুশিক্ষিত নহি, যেমন বামন হইয়া আকাশের চাঁদ ধরিতে আশা করে, আমারও সেইরূপ আশা, কেননা সামান্য বুদ্ধির মনুষ্যের লিখিত পুস্তকে ভুল থাকা অসম্ভব নয়, অতএব মহাশয় যদি কোন ভুল হইয়া থাকে তাহা চতুর্থ সংস্করণে সংশোধন করিয়া দিন।

আর যিনি হিন্দি হইতে বাঙ্গালা শিখিতে ইচ্ছা করেন বা বাঙ্গালা হইতে হিন্দি শিখিতে ইচ্ছা করেন তাঁহারা ইহার দোষ ছাড়িয়া সারাংশ হৃদয়ঙ্গম করিবেন, তাহা হইলে শীঘ্রই আমার লিখিত দ্বীতীয় ভাগ উহার শ্রেষ্ঠ আসনে উপবেশন করিবে।

কলিকাতা
১০ই সেপ্টম্বর সন ১৯১৪

বিনীত—
হরিদাস।

हिन्दी बंगला शिक्षा
प्रथम भाग ।
स्वर वर्ण ।
Dorabji Edulji Mewawalla.
অ আ ই ঈ উ ঊ ঋ
अ आ इ ई उ ऊ ऋ
ঌ এ ঐ ও ঔ অং অঃ
ऌ ए ऐ ओ औ अं अः

स्वरों की पहिचान।

আ অ উ এ ই ঐ

ঊ ঔ ও ঋ ঈ অং

ঌ অঃ

व्यञ्जन वर्ण।

ক খ গ ঘ ঙ চ ছ

क ख ग घ ङ च छ

জ ঝ ঞ ট ঠ ড ঢ

ज झ ञ ट ठ ड ढ

ণ ত থ দ ধ ন প

ण त थ द ध न प

ফ ব ভ ম য র ল

फ ब भ म य र ल

ব শ ষ স হ ক্ষ ড়

वं श ष स ह क्ष ड़

ঢ় য় ং ঃ ঁ

ढ़ य ं :

व्यञ्जनों की पहिचान ।

শ ল ঘ হ ছ চ ঠ ট

ঢ ঙ ম ফ স খ থ ব

র ক ভ ধ ঝ প ষ য়

জ ত ন দ ঞ ব ণ ড

গ ড় ক্ষ য ঢ় ঃ ং

बंगला गिनती ।

১	২	৩	৪	৫
एक	दुइ	तिन	चारि	पाँच
৬	৭	৮	৯	১০
छय	सात	आट	नय	दश

ध्यान देने योग्य बातें

नोट (१) "জ" इसको बँगलामें वर्गीय "ज" कहते हैं। इसका इस्तेमाल ऐसे शब्दोंमें होता है जैसे, जल, जानवर, जगन्नाथ, जीव, जन्तु इत्यादि।

नोट (२) "য" इसको अन्तस्थ "ज" बोलते हैं; मगर असल में यह वहाँ ही इस्तेमाल होता है जहाँ हिन्दीमें "य" होता है। जैसे, यत्न, योग, इत्यादि। *

नोट (३) बँगलामें "ব" और "বঁ" जुदे जुदे नहीं होते। अर्थात् एकसे ही होते हैं।

नोट (४) बँगला और हिन्दीके निम्न लिखित अक्षरोंमें कुछ न कुछ समानता है।

ঘ घ, ড ड, ঢ ढ,
ন न, ব व, ম म,
ল ल, ঃ :,

नोट (५) बंगलाके निम्नलिखित अक्षरों के लिखनेमें बहुत थोड़ा भेद है। पढ़नेवालों को उनकी बारीकियाँ खूब समझ लेनी चाहियें।

ঘ য ষ য়, ঙ ড ড়, ণ ন, ব র, ধ ব,
घ य प य, ङ ड ड़, ण न, व र, ध व,
ই ঈ, উ ঊ ড, ঋ ঝ,
इ ई, उ ऊ ड, ऋ झ,

* बंगाली लोग 'य' का उच्चारण बहुधा 'ज' के माफ़िक करते हैं "यत्न" को 'जत्न" और 'योग' को 'जोग' कहते हैं।

बंगला अक्षरों का उच्चारण।

बँगला अक्षरोंका उच्चारण करते समय इस बातपर विशेष ध्यान रखना चाहिये कि हिन्दीके समान अकारान्त शब्दोंका उच्चारण ओकार के स्वरूप की हल्की मात्रा लगाकर किया जाता है। जैसे हिन्दीमें "परिमाण" बँगलामें "पोरिमाण" "प" = "पो", "परिमल" "पोरिमल" इत्यादि।

बंगला शब्दोंका उच्चारण।

बंगभाषामें शब्दोंको लावण्ययुक्त बनानेके लिये कितने ही स्थानोंपर उच्चारण बिगाड़ दिया जाता है जैसे श्मशान—शशान, आत्मा—आत्तौ, लक्ष्मी—लक्खीं, लक्ष्मण—लकखँण, पद्म-पद्दँ, इत्यादि।

ज़ और ज का भेद।

बंग भाषामें ज़कारान्त अथवा ज़कारके शब्द नहीं हैं। अन्य भाषाओंके शब्दोंके व्यवहार करते समय वर्गीय "ज" से ही काम निकाला जाता है।

व और ब का भेद।

बंगलामें "व" के स्थान पर "ब" ही लिखा जाता है। संस्कृत शब्दोंको लिखते समय 'व' के स्थान पर "ब" लिखनेके साथही साथ उच्चारण भी 'ब' ही किया जाता है। जैसे विवेक—बिबेक, विवर्ण—बिबर्ण, वाचाल—बाचाल, इत्यादि।

प्रथम अध्याय।

अक्षरों का जोड़ना।

पहिला पाठ।

অ+ব=অব	अव	ই+স=ইস	इस
ঈ+খ=ঈখ	ईख	উ+স=উস	उस
ঊ+খ=ঊখ	ऊख	এ+ক=এক	एक
ঐ+ব=ঐব	ऐब	অং+গ=অঙ্গ	अंग

दूसरा पाठ।

ক+ল=কল	कल	ফ+ল=ফল	फल
জ+ল=জল	जल	হ+ল=হল	हल
ন+ল=নল	नल	ব+ল=বল	बल
চ+ল=চল	चल	ঝ+ট=ঝট	झट
প+ঢ়=পঢ়	पढ़	প+ট=পট	पट
র+চ=রচ	रच	ঘ+র=ঘর	घर

तीसरा पाठ।

দ+র=দর दर	ড+র=ডর डर
ধ+র=ধর धर	ন+খ=নখ नख
ভ+য়=ভয় भय	ব+ন=বন वन
র+স=রস रस	শ+ঠ=শঠ शठ

चौथा पाठ।

অপর	अपर	অবশ	अवश
অলস	अलस	অধম	अधम
ইতর	इतर	ঈষৎ	ईषत्
উদর	उदर	ঊষর	ऊषर
লবণ	लवण	তরল	तरल
বমন	वमन	চরণ	चरण
চরম	चरम	কদম	कदम
শরট	शरट	করট	करट
মকট	मकट	দখল	दखल
সবল	सबल	দশম	दशम
মদন	मदन	কটক	कटक

পাঁচবাঁ পাঠ।

কপট	कपट	সমন	समन
দমন	दमन	দশর্ন	दशन
অটল	अटल	অমর	अमर
অসৎ	असत्	গরল	गरल
নয়ন	नयन	রজক	रजक

ছঠা পাঠ।

অনশন	अनशन	জলচর	जलचर
পরবশ	परवश	উপবন	उपवन
অপচয়	अपचय	অকপট	अकपट
থরথর	थरथर	দরদর	दरदर
করবট	करवट	পলটন	पलटन
বরতন	बरतन	মলমল	मलमल
খটমল	खटमल	সরবত	सरवत
সরপট	सरपट	পনঘট	पनघट
রপটন	रपटन	হলচল	हलचल
খটপট	खटपट	শশধর	शशधर

बंगला और हिन्दी मात्राएं।

অ আ ই ঈ উ ঊ এ ঐ ও ঔ অং অঃ

০ া ি ী ু ূ ে ৈ ো ৌ ং ঃ ঁ

० ा ि ी ु ू े ै ो ौ ं ः ँ

नोट—ध्यान पूर्वक देखना चाहिये कि बंगला और हिन्दी की आकार, इकार और ईकार मात्राओंमें नाम मात्रका अन्तर है। उकार और ऊकार मात्राओंमें भी थोड़ा अन्तर है। एकार, ऐकार ओकार और औकार मात्राओंमें पूरा २ फर्क है। हिन्दीमें एकार और ऐकार मात्राएं अक्षरके सिरपर लगती हैं; किन्तु बंगला में एकार और ऐकार मात्राएं अक्षर के बाईं बगल लिखी जाती हैं। इसी तरह ओकार और औकार मात्राओं में भी भेद है हिन्दीमें आकार मात्रा अक्षर की बगल में दाहिनी तरफ और एकार और ऐकार सिरपर लगती है; किन्तु बंगला में आकार मात्रा तो हिन्दी की तरह अक्षर के दाहिनी तरफ़ ही लगती है; किन्तु एकार और ऐकार मात्रा बाईं अक्षरको बाईं तरफ़ बगल में लिखी जाती हैं। नीचे हम कुछ अक्षरों की बारहखड़ी लिखते हैं। पढ़ने वाले हिन्दी और बंगला मात्राओं के भेद को अच्छी तरह समझ लें। जिस तरह क, ख, ग, घ, की बारहखड़ी लिखी है उसी तरह शेष सब अक्षरों की बारहखड़ी समझनी चाहिये।

बारह खड़ी।

𑂍 𑂍𑂰 𑂍𑂱 𑂍𑂲 𑂍𑂳 𑂍𑂴 𑂍𑂵 𑂍𑂶 𑂍𑂷 𑂍𑂸 𑂍𑂁 𑂍𑂂

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

𑂎 𑂎𑂰 𑂎𑂱 𑂎𑂲 𑂎𑂳 𑂎𑂴 𑂎𑂵 𑂎𑂶 𑂎𑂷 𑂎𑂸 𑂎𑂁 𑂎𑂂

ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः

𑂏 𑂏𑂰 𑂏𑂱 𑂏𑂲 𑂏𑂳 𑂏𑂴 𑂏𑂵 𑂏𑂶 𑂏𑂷 𑂏𑂸 𑂏𑂁 𑂏𑂂

ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः

𑂐 𑂐𑂰 𑂐𑂱 𑂐𑂲 𑂐𑂳 𑂐𑂴 𑂐𑂵 𑂐𑂶 𑂐𑂷 𑂐𑂸 𑂐𑂁 𑂐𑂂

घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः

दूसरा अध्याय ।

প্রথম পাঠ।

গান	गान	তাল	ताल
নাম	नाम	শাক	शाक
লাভ	लाभ	পাস	पास
দান	दान	রাগ	राग
বাস	वास	ঘাস	घास
কাক	काक	জাম	जाम
মান	मान	বাণ	वाण
কাল	काल	জাল	जाल
কান	कान	ছাপ	छाप
ছাল	छाल	লতা	लता
কথা	कथा	দয়া	दया
জরা	जरा	কায়া	काया
ভাষা	भाषा	মাথা	माथा
পাতা	पाता	জটা	जटा

বালক বালক — চালক চালক
সমান সমান — বাচাল বাচাল
ভাবনা ভাবনা — কাপাস কাপাস
কপাট কপাট — সাহস সাহস
কারণ কারণ — তাড়না তাড়না
পাষাণ পাষাণ — করাল করাল
মরাল মরাল — যাতনা জাতনা
অপার অপার — অকাল অকাল
সকাল সকাল — অসার অসার
পকানা পকানা — পঢ়ানা পঢ়ানা
ডালনা ডালনা — টগরা টগরা
অবাক অবাক — আকর আকর
পাঠক পাঠক — দানব দানব
পাশব পাশব — গাজর গাজর
বাদাম বাদাম — বঢ়ানা বঢ়ানা
বতানা বতানা — বরষা বরষা
পলাশ পলাশ — সারস সারস

दूसरा पाठ।

দিন	दिन	হিম	हिम
যদি	यदि	দধি	दधि
তিল	तिल	গতি	गति
রবি	रवि	তরি	तरि
নিধি	निधि	মণি	मणि
লিপি	लिपि	চিনি	चिनि
কিস	किस	জিস	जिस
কিন	किन	দিল	दिल
বিহিত	विहित	অশনি	अशनि
বিনয়	विनय	হরিণ	हरिण
শিশির	शिशिर	অবধি	अवधि
মলিন	मलिन	কঠিন	कठिन
দিবস	दिवस	কিরণ	किरण
বিলয়	विलय	নিয়ত	नियत
অগতি	अगति	মিলাপ	मिलाप
রিঝানা	रिझाना	বিগাড়া	बिगाड़ा

তীসরা পাঠ ।

কালী	काली	শীত	शीत
তীর	तीर	কীর	कीर
দীন	दीन	নীর	नीर
কীট	कीट	বীর	वीर
গীত	गीत	নীল	नील
নদী	नदी	ধনী	धनी
ঘটী	घटी	জয়ী	जयी
শশী	शशी	বলী	बली
চীতা	चीता	চীন	चीन
পদবী	पदवी	রজনী	रजनी
গভীর	गभीर	অধীর	अधीर
জীবন	जीवन	নীরস	नीरस
ধমনী	धमनी	শীতল	शीतल
শরীর	शरीर	কীমত	कीमत
কীরত	कीरत	জীরক	जीरक

চৌথা পাঠ।

কুল	कुल	ক্ষুধা	क्षुधा
সুধা	सुधा	ঘুণ	घुण
তুষ	तुष	যুগ	जुग
বুধ	बुध	সুখ	सुख
মুখ	मुख	লঘু	लघु
পটু	पटु	কটু	कटु
তনু	तनु	মধু	मधु
ধনু	धनु	মুগ	मुग
কুভাব	कुभाव	মুকুট	मुकुट
কুমতি	कुमति	কুমুদ	कुमुद
কুমার	कुमार	কুশল	कुशल
কুকুর	कुकुर	অতনু	अतनु
চতুর	चतुर	আকুল	आकुल
কুফল	कुफल	লুটন	लुटन
পুনীত	पुनीत	মুখর	मुखर
মুটরী	मुटरी	মধুর	मधुर

पाँचवाँ पाठ ।

কূপ	कूप	দূত	दूत
ভূত	भूत	স্তূপ	स्तूप
শূল	शूल	মূঢ়	मूढ़
ধূম	धूम	পূজা	पूजा
মূল	मूल	পূত	पूत
মূক	मूक	মূছ	मूछ
দূষণ	दूषण	ভূষণ	भूषण
নূতন	नूतन	শূকর	शूकर
ময়ূর	मयूर	অকূল	अकूल
পূরণ	पूरण	পূতনা	पूतना
মূষক	मूषक	মূষল	मूषल

छठा पाठ ।

কৃত	कृत	কৃপা	कृपा
কৃমি	कृमि	কৃশ	कृश

কৃষি कृषि — গৃহ गृह
ঘৃত घृत — পৃথু पृथु
দৃঢ় दृढ़ — মৃত मृत
কৃপণ कृपण — কৃষক कृषक
গৃহিণী गृहिणी — মৃতক मृतक
অমৃত अमृत — পৃথক पृथक
পৃথিবী पृथिवी — পৃষৎ पृषत्
মৃণাল मृणाल — মৃগয়া मृगया

सातवाँ पाठ।

কেবা केवा — কেন केन
কেশ केश — কেলি केलि
নেত नेत — পেটী पेटी
বেত वेत — খেত खेत
খেদ खेद — খেল खेल
গেহ गेह — চেটী चेटी
চেলা चेला — তেজ तेज

তেলা	तैला	তেলী	तैली
মেষ	मेष	চেত	चैत
লেই	लैइ	ভেক	भैक
দেব	दैव	রেখা	रैखा
মেক	मैक	সেখ	सैख
কেচিৎ	कैचित्	কেতক	कैतक
কেতাব	कैताव	কেদার	कैदार
কেমন	कैमन	কেশব	कैशव
কেশর	कैशर	কেশরী	कैशरी
পেশকার	पैशकार	বেজার	वैजार
খেতাব	खैताव	খেয়াল	खैयाल
সেচক	सैचक	চেতনা	चैतना
তেবন	तैवन	তেতালা	तैताला
দেবতা	दैवता	দেনাদার	दैनादार
দেবকী	दैवकी	লেপক	लैपक
হেমল	हैमल	রেচন	रैचन

সেনা सैना সেনানী सैनानी
সেবন सैवन সেবনী सैवनी
লেখক लैखक লেখনী लैखनी
লেকড়ী लैकड़ी মেখলা मैखला
মেঘনাদ मैघनाद মেতর मैतर
মেদিনী मैदिनी পেয়াজ पैयाज
সেতখানা सैतखाना সেনাপতি सैनापति

আঠবাঁ পাঠ ।

কৈতব कैतव কৈরব कैरव
কৈলা कैला শৈল शैल
তৈল तैल হৈম हैम
শৈব शैव বৈদ वैद
শৈশব शैशव গৈগা गैगा
গৈরা गैरा জৈন जैन
বৈকালী वैकाली পৈতা पैता

পৈশাচ पैशाच বৈকাল वैकाल
বৈঠক वैठक বৈতরণী वैतरणी
ভৈরব भैरव ভৈরবী भैरवी
শৈবাল शैवाल শৈল शैल
সৈনিক सैनिक সৈরিভ सैरिभ
সৈরিক सैरिक হৈরিক हैरिक
বৈতালিক वैतालिक শৈবলিনী शैवलिनी

नवां पाठ।

সোরা सोरा সোসর सोसर
সোহাগ सोहाग লোক लोक
লোচন लोचन লোটন लोटन
লোণ लोण লোধ लोध
লোপ लोप রোগ रोग
রোচক रोचक রোজগার रोजगार
রোটি रोटि রোদন रोदन

লোমকূপ	लोमकूप	রোহিণী	रोहिणी
মোট	मोट	মোদক	मोदक
মোন	मोन	মোম	मोम
বোঝা	बोझा	বোধক	बोधक
বোনা	बोना	বোরা	बोरा
বোলী	बोली	পোকা	पोका
পোত	पोत	পোয়াল	पोयाल
পোষক	पोषक	পোষণ	पोषण
দোতালা	दोताला	দোপড়া	दोपड़ा
দোল	दोल	দোহজ	दोहज

दशवां पाठ।

কৌড়ি	कौड़ि	কৌতর	कौतर
কৌশল	कौशल	কৌতুক	कौतुक
কৌমুদী	कौमुदी	কৌরব	कौरव
কৌশেয়	कौशेय	গৌতম	गौतम

গৌর	गौर	গৌরব	गौरव
ডৌল	डौल	পৌধা	पौधा
গৌরী	गौरी	চৌর	चौर
তৌল	तौल	পৌর	पौर
পৌষ	पौष	রৌপা	रौपा
লৌহ	लौह	মৌন	मौन
পৌরক	पौरक	দৌলত	दौलत
রৌরব	रौरव	রৌহিণা	रौहिणी
মৌমাছি	मौमाछि	যৌবন	जौवन
মৌলবী	मौलवी	ফৌজদার	फौजदार
দৌবারিক	दौवारिक	পৌরাণিক	पौराणिक

ग्यारहवां पाठ ।

দংশ	दंश	মাংস	मांस
অংশ	अंश	পংক	पंक
হংস	हंस	বংশ	बंश

সংবৎ	संवत्	বংশজ	वंशज
শংবর	शंवर	হিংসক	हिंसक
সংবদন	संवदन	সংবাদ	संवाद
সংযম	संयम	সংশয়	संशय
সংসদ্	संसद्	দংশন	दंशन
সংসার	संसार	নংশুক	नंशुक
সংকলন	संकलन	বংশধর	वंशधर

बारहवाँ पाठ।

নভঃ	नभ:	দুঃখ	दु:ख
নিঃসার	नि:सार	নিঃশেষ	नि:शेष
দুঃসহ	दु:सह	দুঃশীল	दु:शील
নিঃকারণ	नि:कारण	নিঃকাসন	नि:कासन
নিঃসংশয়	नि:संशय	অধঃপাত	अध:पात
দুঃশাসন	दु:शासन	দুঃসময়	दु:समय

तेरहवां पाठ ।

হাঁচি	हाँचि	হাঁড়ি	हाँड़ि
পাঁশ	पाँश	ভাঁড়	भाँड़
ফাঁকা	फाँका	ফাঁকী	फाँकी
ফাঁদ	फाँद	ফাঁসী	फाँसी
পাঁতি	पाँति	হাঁক	हाँक
সাঁঝ	साँझ	সাঁচি	साँचि
রাঁধনি	राँधनि	শাঁখ	शाँख
পাঁইত	पाँइत	পাঁক	पाँक
পাঁচ	पाँच	পাঁজী	पाँजी
পাঁচালী	पाँचाली	পাঁচড়া	पाँचड़ा
সাঁড়াশী	साँड़ाशी	পাঁপড়	पाँपड़
শাঁখপোকা	शाँखपोका	শাঁখিনী	शाँखिनी

चौदहवां पाठ ।

অভিলাষ	अभिलाष	অকাল	अकाल
অতাত	अतात	অতাপ	अताप
অনুশাসন	अनुशासन	আতবাদ	आतवाद
অতীত	अतीत	অতীব	अतीव
অনামক	अनामक	অনাময়	अनामय
অনুগমন	अनुगमन	অনুরাগ	अनुराग
আদর	आदर	আতপ	आतप
আপন	आपन	আমূল	आमूल
আবীর	आवीर	আশপাশ	आशपाश
আলোক	आलोक	আশিস্	आशिस्
ইতিহাস	इतिहास	ইদং	इदं
ইদানীং	इदानी	ইমান	इमान
ইহকাল	इहकाल	ইহলোক	इहलोक
ইহারা	इहारा	ঈদ	ईद
ঈশ	ईश	ঈশান	ईशान
অনুমোদন	अनुमोदन	অনুমান	अनुमान

पन्द्रहवां पाठ ।

পরিশোধ	परिशोध	অনুশীলন	अनुशीलन
কচহরী	कचहरी	চূড়াকরণ	चूड़ाकरण
কটার	कटार	জাতীয়	जातीय
কবচ	कवच	তনয়	तनय
কবিতা	कविता	অনুজ	अनुज
কমঠ	कमठ	পরিণাম	परिणाम
করিণী	करिणी	তপোবল	तपोबल
কলম	कलम	তামাসা	तामासा
কলস	कलस	কাকাবলী	काकावली
তুলা	तूला	কাকী	काकी
দশনবাসাঃ	दशनवासा:	কাগজক	कागजक
দশমূল	दशमूल	কাতেল	कातिल
পরিহাস	परिहास	দিকদারী	दिकदारी
কামকলা	कामकला	দেবকুসুম	देवकुसुम
কুমারিকা	कुमारिका	দোষাদোষি	दोषादोषि
কোকনদ	कोकनद	ধনপতি	धनपति

কোপাল	कोपाल	ধনাধিপ	धनाधिप
কোমলতা	कोमलता	নব বধূ	नव वधू
গজানন	गजानन	নিমিষ	निमिष
গামলা	गामला	নিরাহার	निराहार
গোদোহন	गोदोहन	নিরবকাশ	निरवकाश
চকোর	चकोर	নিশাপতি	निशापति
চাঁদী	चाँदी	নীলমণি	नीलमणि
চাঁপকলি	चाँपकलि	চাটবাদী	चाटवादी

सोलहवां पाठ ।

অনুপায়	अनुपाय	পিকদান	पिकदान
ফলোদয়	फलोदय	ফুঁকন	फूँकन
অভিমান	अभिमान	ফৌজদারী	फौजदारी
ফৌতিক	फौतिक	অবিবেচনা	अविवेचना
বিভাবনা	विभावना	বিবিধ	विविध
বিবাদ	विवाद	বিমোহন	विमोहन
বেত্রকুক	वेत्रकुक	বৈতালিক	वैतालिक
ভুবনমোহন	भुवनमोहन	ভূতকাল	भूतकाल

ভূতনাথ	भूतनाथ	পুরাতন	पुरातन
ভোলানাথ	भोलानाथ	ভৌতি	भौति
ভৌম	भौम	মহাঘোষ	महाघोष
মহাকায়	महाकाय	মহিলা	महिला
মহীতল	महीतल	লাভালাভ	लाभालाभ
লোলুপ	लोलुप	শতদল	शतदल
শনিবার	शनिवार	শাসনীয়	शासनीय
শিশির	शिशिर	সদৃশতা	सदृशता

सत्रहवाँ पाठ ।

গ+উ=গু   ग+उ=गु

গুণ	गुण	গুণক	गुणक
গুণকথন	गुणकथन	গুণগান	गुणगान
গুণজনক	गुणजनक	গুণবান	गुणवान
গুণাগুণ	गुणागुण	গুণাকর	गुणाकर
গুণাবলী	गुणावली	গুদাম	गुदाम
গুণযোগ	गुणजोग	গুণহীন	गुणहीन

গুণধর	गुणधर	গুড়	गुड़
গুটী	गुटी	গুলি	गुलि

अठारहवाँ पाठ।

র+উ=রু र+उ=रु

গুরু	गुरु	গুরুপাক	गुरुपाक
গুরুপাপ	गुरुपाप	চরু	चरु
রুচি	रुचि	রুচির	रुचिर
রুজ	रुज	রুধির	रुधिर
রুমাল	रुमाल	রুহক	रुहक
তরু	तरु	গরু	गरु

उन्नीसवाँ पाठ।

শ+উ=শু श+उ=शु

শুক	शुक	শুকনা	शुकना
শুচ	शुच	শুচি	शुचि
শুভ	शुभ	আশুতোষ	आशुतोष
পশুপতি	पशुपति	পশুরাজ	पशुराज

बीसवां पाठ।

হ+উ=হু   ह+उ=हु

হুকুম हुकुम হুড় हुड़
হুতবহ हुतवह হুতাশন हुताशन
বহু बहु বহুধা बहुधा

इक्कीसवां पाठ।

র+ঊ=রূ   र+ऊ=रू

রূপ रूप নিরূপণ निरूपण
রূপবতী रूपवती রূপা रूपा
অপরূপ अपरूप আরূঢ় आरूढ़

बाईसवां पाठ।

হ+ঋ=হৃ   ह+ऋ=हृ

অপহৃত अपहृत হৃদয় हृदय
সুহৃদ सुहृद হৃষ हृष
হৃষীকেশ हृषीकेश হৃদেশ हृदेश

तीसरा अध्याय ॥

मिले हुए अक्षर ।

प्रथम पाठ ।

য ফলা । । यफला

ক+য=ক্য	বাক্য,	শাক্য	চাণক্য
क+य=क्य	वाक्य,	शाक्य	चाणक्य
খ+য=খ্য	সুখ্যাতি,	আখ্যান,	অখ্যাতি
ख+य=ख्य	सुख्याति,	आख्यान,	अख्याति
গ+য=গ্য	আরোগ্য,	যোগ্য,	সৌভাগ্য
ग+य=ग्य	आरोग्य,	योग्य,	सौभाग्य
চ+য=চ্য	বিবেচ্য,	আলোচ্য,	কচ্য
च+य=च्य	विवेच्य,	आलोच्य,	कच्य
জ+য=জ্য	রাজ্য,	জ্যামিতি,	জ্যোতি
ज+य=ज्य	राज्य,	ज्यामिति,	ज्योति
ট+য=ট্য	অকাট্য,	নাট্য,	কাপাট্য
ट+य=ट्य	अकाट्य	नाट्य,	कापाट्य
ঠ+য=ঠ্য	সুপাঠ্য,	পাঠ্য,	অপাঠ্য
ठ+य=ठ्य	सुपाठ्य,	पाठ्य,	अपाठ्य

ড+য=ড্য	জাড্য,	জাড্যাদি	
ড+য=ড্য	জাড্য,	জাড্যাদি	
ঢ+য=ঢ্য	ধনাঢ্য,	আঢ্য	সনাঢ্য
ঢ+য=ঢ্য	ধনাঢ্য,	আঢ্য,	সনাঢ্য
ণ+য=ণ্য	লাবণ্যবতী	পুণ্যবান	
ণ+য=ণ্য	লাবণ্যবতী,	পুণ্যবান	
ত+য=ত্য	অনিত্য	ত্যাগ	অমাত্য
ত+য=ত্য	অনিত্য,	ত্যাগ,	অমাত্য
থ+য=থ্য	রথ্যা,	মিথ্যা,	অপথ্য
থ+য=থ্য	রথ্যা,	মিথ্যা,	অপথ্য
দ+য=দ্য	সদ্য,	অদ্য,	গদ্য
দ+য=দ্য	সদ্য,	অদ্য,	গদ্য
ধ+য=ধ্য	বধ্য,	ডমরুমধ্য	আরাধ্য
ধ+য=ধ্য	বধ্য,	ডমরুমধ্য,	আরাধ্য
ন+য=ন্য	বন্য,	জন্য	জঘন্য
ন+য=ন্য	বন্য,	জন্য,	জঘন্য
প+য=প্য	রৌপ্য,	গোপ্য	আলাপ্য
প+য=প্য	রৌপ্য	গোপ্য,	আলাপ্য
ভ+য=ভ্য	লভ্য,	সভ্যতা,	আরভ্য
ভ+য=ভ্য	লভ্য	সভ্যতা	আরভ্য
ম+য=ম্য	ম্যোর,	ধৌম্য,	সৌম্য
ম+য=ম্য	ম্যোর	ধৌম্য	সৌম্য

ল+য=ল্য	বাল্যকাল,	মূল্যবান,	কল্যাণ
ल+य=ल्य	बाल्यकाल,	मूल्यवान	कल्याण
ব+য=ব্য	ব্যয়, '	ব্যথা	ব্যোপার
ब+य=ब्य	ब्यय,	ब्यथा	ब्यौपार
শ+য=শ্য	শ্যামতা	শ্যালক	প্রকাশ্য
श+य=श्य	श्यामता,	श्यालक,	प्रकाश्य
ষ+য=ষ্য	পোষ্য	শিষ্য	মনুষ্য
ष+य=ष्य	पोष्य	शिष्य	मनुष्य
স+য=স্য	আলস্য	শস্য	ঔদাস্য
स+य=स्य	आलस्य	शस्य,	औदास्य
হ+য=হ্য	দহ্যমান	মুহ্যমান	লেহ্য
ह+य=ह्य	दह्यमान	मुह्यमान	लेह्य

दूसरा पाठ।

र फला। ्र फला।

ক+র=ক্র	তক্র,	শক্র,	চক্রপাণি
क+र=क्र	तक्र,	शक्र,	चक्रपाणि
গ+র=গ্র	অগ্রজ,	গ্রাহক,	গ্রাহী
ग+र=ग्र	अग्रज,	ग्राहक	ग्राही
ঘ+র=ঘ্র	শীঘ্র	অবঘ্রাণ	আঘ্রাণ
घ+र=घ्र	शीघ्र	अवघ्राण	आघ्राण

জ+র=জ্র	বজ্রপাত	বজ্রপাণি	বজ্রাঙ্কুশ
ज+र=ज्र	बज्रपात	बज्रपाणि	बज्राङ्कुश
ত+র=ত্র	পাত্র,	মিত্র	ত্রাস
त+र=त्र	पात्र,	मित्र,	त्रास
দ+র=দ্র	মদ্ররাজ,	ভদ্র,	দ্রাবক
द+र=द्र	मद्रराज	भद्र,	द्रावक
ধ+র=ধ্র	ধ্রুব	গৃধ্র,	ধ্রুবরেখা
ध+र=ध्र	ध्रुव,	गृध्र,	ध्रुवरेखा
প+র=প্র	প্রবাসী,	প্রলয	প্রসাদ
प+र=प्र	प्रवासी,	प्रलय,	प्रसाद
ভ+র=ভ্র	ভ্রূণ	ভ্রমণ,	জাতিভ্রংশ
भ+र=भ्र	भ्रुण	भ्रमण,	जातिभ्रंश
ম+র=ম্র	আম্র,	তাম্র,	নম্র
म+र=म्र	आम्र,	ताम्र,	नम्र
ব+র=ব্র	ব্রজ,	পরিব্রাজক	ব্রত
ब+र=ब्र	ब्रज,	परिब्राजक	ब्रत
শ+র=শ্র	শ্রম,	শ্রীমান	শ্রীমতী
श+र=श्र	श्रम,	श्रीमान्	श्रीमती
হ+র=হ্র	হ্রাস,	হ্রিণীয়া	হ্রিপিত
ह+र=ह्र	ह्रास,	ह्रिणीया,	ह्रिपित

तीसरा पाठ ।

রেফ ´ रेफ ˚

র+ক=র্ক	কর্ক,	তর্ক,	শর্করা
र+क=र्क	कर्क,	तर्क,	शर्करा
র+খ=র্খ	মূর্খ,	সুর্খ,	চর্খা
र+ख=र्ख	मूर्ख	सुर्ख,	चर्खा
র+গ=র্গ	দুর্গম	দুর্গতি,	অনর্গল
र+ग=र्ग	दुर्गम	दुर्गति	अनर्गल
র+ঘ=র্ঘ	অর্ঘ,	দুর্ঘট,	মহার্ঘ
र+घ=र्घ	अर्घ	दुर्घट	महार्घ
র+জ=র্জ	কর্জ	অর্জন,	পুনর্জাত
र+ज=र्ज	कर्ज	अर्जन	पुनर्जात
র+ঝ=র্ঝ	ঝর্ঝরী	ঝর্ঝর,	নির্ঝর
र+झ=र्झ	झर्झरी,	झर्झर	निर्झर
র+ণ=র্ণ	পর্ণকুটী	মহার্ণব	কর্ণধার
र+ण=र्ण	पर्णकुटी	महार्णव	कर्णधार
র+থ=র্থ	অর্থহানি	গতার্থক	চতুর্থাংশ
र+थ=र्थ	अर्थहानि,	गतार्थक	चतुर्थांश
র+প=র্প	কুর্পর,	দর্পণ	খর্পর
र+प=र्प	कूर्पर	दर्पण	खर्पर

র+ব=র্ব	নির্বল,	দুর্বল,	গর্ব
र+व=र्व	निर्व्वल	दुर्व्वल	गर्व्व
র+ভ=র্ভ	গর্ভকোষ	দুর্ভিক্ষ,	চতুর্ভুজ
र+भ=र्भ	गर्भकोष	दुर्भिक्ष,	चतुर्भुज
র+য=র্য	দুর্য্যোধন	তির্যক,	মর্য্যাদা
र+य=र्य	दुर्य्योधन	तिर्यक,	मर्य्यादा
র+ল=র্ল	দুর্ললিত	দুর্লভ	বার্লি
र+ल=र्ल	दुर्ललित	दुर्लभ	वार्लि
র+শ=র্শ	অর্শ,	দর্শক	আদর্শ
र+श=र्श	अर्श,	दर्शक	आदर्श
র+ষ=র্ষ	লোমহর্ষ,	মহর্ষি	বর্ষণ
र+ष=र्ष	लोमहर्ष	महर्षि	वर्षण
র+হ=র্হ	গর্হিত	শাস্ত্রার্হ	গার্হস্থ্য
र+ह=र्ह	गर्हित	शास्त्रार्ह	गार्हस्थ्य

चौथा पाठ ।

ক+ম=ক্ম	রুক্মকার,	রুক্মিণীকান্ত
क+म=क्म	रुक्मकार	रुक्मिणीकान्त
গ+ম=গ্ম	যুগ্ম	বাগ্মী
ग+म=ग्म	युग्म	वाग्मी

नोट—याद रखना चाहिये कि बंगाली लोग "दुर्य्योधन"को "दुर्जोधन" और "मर्यादा" को "मर्जादा" बोलते हैं।

ত+ম=ত্ম	মহাত্মা	চিদাত্মা
त+म=त्म	महात्मा	चिदात्मा
দ+ম=দ্ম	ছদ্মবেশী	পদ্মিনী
द+म=द्म	छद्मवेशी	पद्मिनी
ন+ম=ন্ম	জন্মতিথি	মন্মথ
न+म=न्म	जन्मतिथि	मन्मथ
ল+ম=ল্ম	জলগুল্ম	শাল্মলী
ल+म=ल्म	जलगुल्म	शाल्मली
ষ+ম=ষ্ম	চক্ষুষ্মান	ঊষ্মা
ष+म=ष्म	चक्षुष्मान	उष्मा
শ+ম=শ্ম	রশ্মি	শ্মশান
श+म=श्म	रश्मि	श्मशान
স+ম=স্ম	স্মৃতি	স্মরণ
स+म=स्म	स्मृति	स्मरण
হ+ম=হ্ম	ব্রাহ্মণ	ব্রহ্মর্ষি
ह+म=ह्म	ब्राह्मण	ब्रह्मर्षि

नोट—जब 'म' किसी दूसरे अक्षर के साथ मिला होता है तब बंगाली लोग बहुधा उसके उच्चारण के समय 'म' के स्थानमें केवल अनुस्वार ही का उच्चारण करते हैं जैसे "आत्मा" का "आत्ताँ" पद्म "का' "पद्दँ"।

पांचवा पाठ।

क+ल=क्ल	क्लीव,	क्लेश	क्लेद
क+ल=क्ल	क्लीव	क्लेश	क्लेद
ग+ल=ग्ल	ग्लानिकारक		ग्लास
ग+ल=ग्ल	ग्लानिकारक		ग्लास
प+ल=प्ल	प्लुत	प्लावन	विप्लव
प+ल=प्ल	प्लुत	प्लावन	विप्लव
म+ल=म्ल	अम्ल	म्लान	म्लेच्छ
म+ल=म्ल	अम्ल	म्लान	म्लेच्छ
ल+ल=ल्ल	मल्ल	मल्लिका	मल्लार
ल+ल=ल्ल	मल्ल	मल्लिका	मल्लार
श+ल=श्ल	श्लाघा	श्लेष	श्लोक
श+ल=श्ल	श्लाघा	श्लेष	श्लोक

छठा पाठ।

क+व=क्व	क्वाथ	पक्वातिसार
क+व=क्व	क्वाथ	पक्वातिसार
ग+व=ग्व	ग्वाल	दिग्विजय
ग+व=ग्व	ग्वाल	दिग्विजय

জ+ব=জ্ব জটাজ্বাল জ্বর জ্বলন

জ+ব=জ্ব জটাজ্বাল জ্বর জ্বলন

ট+ব=ট্ব খট্বা খট্বাঙ্গ

ট+ব=ট্ব খট্বা খট্বাঙ্গ

ত+ব=ত্ব মহত্ব ত্বরা সত্বর

ত+ব=ত্ব মহত্ব ত্বরা সত্বর

দ+ব=দ্ব দ্বারপাল অদ্বিতীয় দ্বারা

দ+ব=দ্ব দ্বারপাল অদ্বিতীয় দ্বারা

ধ+ব=ধ্ব মোরধ্বজ গরুড়ধ্বজ ধ্বংশ

ধ+ব=ধ্ব মৌরধ্বজ গরুড়ধ্বজ ধ্বংশ

শ+ব=শ্ব বিশ্বাসপাত্র শ্বাসরোগ নিঃশ্বাস

শ+ব=শ্ব বিশ্বাসপাত্র শ্বাসরোগ নিঃশ্বাস

স+ব=স্ব স্বরান্ত স্বাদু স্বর

স+ব=স্ব স্বরান্ত স্বাদু স্বর

হ+ব=হ্ব জিহ্বা আহ্বান বিহ্বল

হ+ব=হ্ব জিহ্বা আহ্বান বিহ্বল

सातवां पाठ।

ষ+ণ=ষ্ণ	বিষ্ণু	কৃষ্ণ	জিষ্ণু
ष+ण=ष्ण	विष्णु	कृष्ण	जिष्णु
গ+ন=গ্ন	নগ্ন	লগ্নিকা	দাবাগ্নি
ग+न=ग्न	नग्न	लग्निका	दावाग्नि
ঘ+ন=ঘ্ন	কৃতঘ্ন	রোগঘ্ন	বিঘ্ন
घ+न=घ्न	कृतघ्न	रोगघ्न	बिघ्न
ত+ন=ত্ন	রত্ন	যত্ন	রত্নাকর
त+न=त्न	रत्न	यत्न	रत्नाकर
ন+ন=ন্ন	অন্নপ্রাশন	ছিন্নভিন্ন	আচ্ছন্ন
न+न=न्न	अन्नप्राशन	छिन्नभिन्न	आच्छन्न
শ+ন=শ্ন	প্রশ্ন	প্রশ্নদূতী	
श+न=श्न	प्रश्न	प्रश्नदूती	

आठवां पाठ।

ক+ক=ক্ক	চক্কী	মক্কা	তুক্ক
क+क=क्क	चक्की	मक्का	तुक्क
ক+ত=ক্ত	বক্ত	তক্ত	শক্তি
क+त=क्त	रक्त	तक्त	शक्ति

नोट—बँगाली लोग प्रायः "ष्ण" का उच्चारण "ष्ट" करते है। जैसे, "कृष्ण" को "कृष्ट" "विष्णु" को "बिष्टु" कहते है।

ক+ষ=ক্ষ   তক্ষক   দক্ষিণা   ক্ষমা
क+ष=क्ष   तक्षक   दक्षिणा   क्षमा
গ+ধ=গ্ধ   দুগ্ধ   দগ্ধ   দগ্ধিকা
ग+ध=ग्ध   दुग्ध   दग्ध   दग्धिका
ঙ+ক=ঙ্ক   অঙ্ক   ময়ঙ্ক   শঙ্কা
ङ+क=ङ्क   अङ्क   मयङ्क   शङ्का
ঙ+খ=ঙ্খ   শঙ্খ   শঙ্খিনী   পঙ্খ
ङ+ख=ङ्ख   शङ्ख   शङ्खिनी   पङ्ख
ঙ+গ=ঙ্গ   মঙ্গল   জঙ্গল   মাতঙ্গ
ङ+ग=ङ्ग   मङ्गल   जङ्गल   मातङ्ग

नवां पाठ ।

চ+চ=চ্চ   লুচ্চা   চৌবাচ্চা   সচ্চা
च+च=च्च   लुच्चा   चौबाच्चा   सच्चा
চ+ছ=চ্ছ   অচ্ছা   তুচ্ছ   স্বচ্ছ
च+छ=च्छ   अच्छा   तुच्छ   स्वच्छ
জ+জ=জ্জ   মজ্জন   লজ্জাশীল   সজ্জন
ज+ज=ज्ज   मज्जन   लज्जाशील   सज्जन
জ+ঞ=জ্ঞ   বিজ্ঞতা   বিজ্ঞান   জ্ঞাতা
ज+ञ=ज्ञ   विज्ञता   विज्ञान   ज्ञाता

ঞ+চ=ঞ্চ কাঞ্চন মঞ্চ বৈঞ্চ

ञ+च=ञ्च काञ्चन मञ्च वैञ्च

ঞ+ছ=ঞ্ছ লাঞ্ছন বাঞ্ছা মঞ্ছাল

ञ+छ=ञ्छ लाञ्छन बाञ्छा मञ्छाल

ঞ+জ=ঞ্জ জঞ্জাল মঞ্জন মঞ্জিল

ञ+ज=ञ्ज जञ्जाल मञ्जन मञ्जिल

दशवाँ पाठ।

ট+ট=ট্ট টট্টী গট্টী পট্টী

ट+ट=ट्ट टट्टी गट्टी पट्टी

ণ+ট=ণ্ট চিরণ্টী কণ্টক বণ্টন

ण+ट=ण्ट चिरण्टी कण्टक बण्टन

ণ+ঠ=ণ্ঠ কুণ্ঠিত কণ্ঠ উৎকণ্ঠা

ण+ठ=ण्ठ कुण्ठित कण्ठ उत्कण्ठा

ণ+ড=ণ্ড ঠণ্ডা কাণ্ড দণ্ডপাণি

ण+ड=ण्ड ठण्डा काण्ड दण्डपाणि

ত+ত=ত্ত চৌরবৃত্তি চৌরাগর্ত্ত মত্ত

त+त=त्त चौरवृत्ति चौरागर्त्त मत्त

ত+থ=ত্থ উত্থান উত্থাপন সমুত্থিত

त+थ=त्थ उत्थान उत्थापन समुत्थित

দ+গ=দ্গ উদ্গার উদ্গীরণ মদ্গতি
द+ग=द्ग उद्गार उद्गीरण मद्गति
দ+দ=দ্দ উদ্দেশ্য উদ্দাম তদ্দণ্ডে
द+द=द्द उद्देश्य उद्दाम तद्दण्डे
দ+ধ=দ্ধ রুদ্ধমান উদ্ধার শ্রাদ্ধ
द+ध=द्ध रुद्धमान उद्धार श्राद्ध
দ+ভ=দ্ভ উদ্ভব সদ্ভাব উদ্ভিদ
द+भ=द्भ उद्भव सद्भाव उद्भिद
ন+ত=ন্ত দিগন্তর অনন্তর কান্তা
न+त=न्त दिगन्तर अनन्तर कान्ता

ग्यारहवां पाठ ।

ন+থ=ন্থ পন্থ পান্থশালা পন্থা
न+थ=न्थ पन्थ पान्थशाला पन्था
ন+দ=ন্দ নন্দ কন্দ ছন্দ
न+द=न्द नन्द कन्द छन्द
ন+ধ=ন্ধ অন্ধ দুর্গন্ধ সন্ধি
न+ध=न्ध अन्ध दुर्गन्ध सन्धि
প+ত=প্ত তৃপ্ত সুপ্ত গুপ্ত
प+त=प्त तृप्त सुप्त गुप्त

ব+দ=ব্দ শব্দ অব্দ জব্দ

ब+द=ब्द शब्द अब्द जब्द

ব+ধ=ব্ধ লব্ধ স্তব্ধ ক্ষুব্ধ

ब+ध=ब्ध लब्ध स्तब्ध क्षुब्ध

প+প=প্প টপ্পা ছপ্পর

प+प=प्प टप्पा छप्पर

ম+প=ম্প লম্পট সম্পদ অনুকম্পা

म+प=म्प लम्पट सम्पद अनुकम्पा

ম+ফ=ম্ফ গুম্ফিত লিম্ফ

म+फ=म्फ गुम्फित लिम्फ

ম+ব=ম্ব দিগম্বর চুম্বক তম্বুরা

म+ब=म्ब दिगम्बर चुम्बक तम्बुरा

ম+ভ=ম্ভ বিশ্বম্ভর গম্ভীরতা স্তম্ভিত

म+भ=म्भ विश्वम्भर गम्भीरता स्तम्भित

ল+ক=ল্ক শুল্ক মুল্ক ঝল্ক

ल+क=ल्क शुल्क मुल्क झल्क

ল+প=ল্প অল্প কল্প গল্প

ल+प=ल्प अल्प कल्प गल्प

बारहवाँ पाठ ।

শ+চ=শ্চ তৎপশ্চাৎ নিশ্চয়

श+च=श्च तत्पश्चात् निश्चय

ষ+ট=ষ্ট জলকষ্ট তুষ্টিকর অষ্টমী

ष+ट=ष्ट जलकष्ट तुष्टिकर अष्टमी

ষ+ঠ=ষ্ঠ পৃষ্ঠ চতুষ্ঠয় উপনেষ্ঠ

ष+ठ=ष्ठ पृष्ठ चतुष्ठय तपनेष्ठ

স+ক=স্ক তস্কর নিস্ক

स+क=स्क तस्कर निस्क

तेरहवां पाठ ।

ক+ষ+ণ=ক্ষ্ণ তীক্ষ্ণ

क+ष+ण=क्ष्ण तीक्ष्ण

ক+ষ+ম=ক্ষ্ম লক্ষ্মণ

क+ष+म=क्ष्म लक्ष्मण

ঙ+ক+ষ=ঙ্ক্ষ আকাঙ্ক্ষা

ङ+क+ष=ङ्क्ष आकाङ्क्षा

জ+জ+ব=জ্জ্ব জাজ্জ্বল্যমান

ज+ज+व=ज्ज्व जाज्ज्वल्यमान

ত+ত+র=ত্ত্র পুত্ত্রবধূ, পুত্ত্র, ছাত্ত্র

त+त+र=त्त्र पुत्त्रवधु, पुत्त्र, छात्त्र

ত+ত+ব=ত্ত্ব তত্ত্ববিদ, তত্ত্বকারক

त+त+व=त्त्व तत्त्वविद, तत्त्वकारक

ন+ত+র=ন্ত্র তন্ত্র, মন্ত্র, যন্ত্রণা

न+त+र=न्त्र तन्त्र, मन्त्र, यन्त्रणा

র+য+য=র্য্য সূর্য্যাবর্ত্ত, ধৈর্য্য, বীর্য্য
र+य+य=र्य्य सूर्य्यावर्त्त, धैर्य्य, वीर्य्य
র+ব+ব=র্ব্ব সর্ব্ব, শর্ব্ব, পূর্ব্ব, দুর্ব্বল
र+व+व=र्व्व सर्व्व, गर्व्व, पूर्व्व, दुर्व्वल
র+শ+ব=র্শ্ব পার্শ্বভাগ
र+श+व=र्श्व पार्श्वभाग
ষ+ট+র=ষ্ট্র রাষ্ট্রীয় সভা
ष+ट+र=ष्ट्र राष्ट्रीय सभा
স+ত+র=স্ত্র শাস্ত্র, স্ত্রী
स+त+र=स्त्र शास्त्र, स्त्री

चौथा अध्याय।

রিশতেদার—স্বজন।

পরমেশ্বর	परमेश्वर	परमेश्वर
মানুষ	मानुष	मनुष्य
পিতা	पिता	बाप
মাতা	माता	मा
ভ্রাতা	भ्राता	भाई
কাকা	काका	चाचा
মেসো	मेसो	मौसा

पिसे — फूफा
पुत्र — बेटा
बालक — बालक
कन्या — कन्या, लडकी
बालिका — बालिका
भागिना — भाञ्जा
भाइपो — भतीजा
स्वामी — स्वामी
बाबा — बाप
ठाकुर दादा — दादा
पितामह — दादा, बाबा
मातामह — नाना
ज्येठा — ताऊ
स्त्रीलोक, मेये मानुष — स्त्रियाँ
भगिनी — बहिन
ज्येठी — ताई
काकी — काकी, चाची
मामी — मामी
पिसी — फूफी, भूआ
भागिनी — भाञ्जी
भाइझी — भतीजी
स्त्री — पत्नी, बीबी

মা	मा	मा, माता
ঠাকুর-মা	ठाकुर-मा	दादी
দিদি-মা	दिदि-मा	नानी
দৌহিত্র	दौहित्र	दोहिता
পৌত্র	पौत्र	नाती, पोता
পৌত্রী	पौत्री	नतनी, पोती
দৌহিত্রী	दौहित्री	दुहिती
মামা	मामा	मामा
মামী	मामी	मामी
জামাই, জামাতা	जामाइ, जामाता	दामाद, जमाई
পুত্রবধূ	पुत्रवधू	बेटेकी बहू
শ্বশুর	श्वशुर	ससुर
শাশুড়ি	शाशुडि	सास
খুড়-শ্বশুর	खुड श्वशुर	ककिया ससुर
মামা-শ্বশুর	मामा श्वशुर	ममिया ससुर
খুড়-শাশুড়ি	खुड शाशुडि	ककिया सास
মামা শাশুড়ি	मामा-शाशुडि	ममिया सास
শালা, সম্বন্ধী	शाला, सम्बन्धी	साला
শালী -	शाली	साली
ভগিনীপতি	भगिनीपति	बहनोई
ভাজ	भाज	भौजाई
দেবর	देवर	देवर

भासुर — जेठ
वैयाइ — समधी (सम्बन्धी)
ननद — ननद
वैयान — समधिन
प्रभु — प्रभु
मनिब — मालिक
मनिब पत्नी — मालिकिन
वर — वर, दूलह
क'नेबउ — छोटोबहू
बिबाहेर क'ने — दुलहिन
सतीन-पो — सौतेलाबेटा
सतीन-झी — सौतेलीबेटी
धर्म्म पिता — धर्म्मपिता
धर्म्म माता — धर्म्म माता
धात्री पुत्र — धा भाई
धात्री कन्या — धा-बहिन
पुरोहित — प्रोहित
पुरोहित-पत्नी — प्रोहितानी
गृह-शिक्षक — घरमें सिखानेवाला
शिक्षयित्री — सिखानेवाली
गुरु — गुरु
गुरु-पत्नी — गुरुआइन

अवस्थानुसार मनुष्यों के नाम।

শিশু	शिशु	शिशु, बच्चा
যুবা	जुवा	जवान
বৃদ্ধ, বুড়া	वृद्ध, बुडा	बूढा
পিতৃ মাতৃহীন বালক		बिना मा बाप का लडका
অবিবাহিত লোক	अविवाहित लोक	कँवारा
— মৃতদার	मृतदार	रँडुआ
— কৃতদার	कृतदार	विवाहित
পুরুষ	पुरुष	पुरुष, मर्द
কুমারী	कुमारी	कुमारी
বিধবা	बिधवा	विधवा, बेवा
টাক পড়া	टाक पडा	गञ्जा
খাঁদা	खांदा	नक-बैठा
নাক-কাটা	नाक काटा	नकटा
অন্ধ	अन्ध	अन्धा
কানা	काना	काना
কালা	काला	बहरा
তোতলা	तोतला	तोतला
খোঁড়া	खोँडा	लँगडा
মোটা	मोटा	मोटा
কৃশ	कृश	दुबला,

लम्बा	लम्बा
खोजा	हिंजडा
वामन	बौना
सुन्दर	सुन्दर
कुत्सित्	कुरूप
रुग्न	रोगी
सुस्थ	आरोग्य
कालो	काला
सन्तान	सन्तान
पोष्यपुत्र	गोदका बेटा
शुश्रुषाकारिणी	शुश्रुषा करनेवाली
स्तन्यदायिनी	स्तन पिलानेवाली
उपपति	उपपति, यार
ज्ञाति	जाति
कुटुम्बी	कुटुम्बी
उत्तराधिकारी	वारिस
पूर्व्वपुरुष	पुरखा
माता पिता	मा बाप
अतिथी	अतिथी
निमन्त्रित व्यक्ति	मिहमान
बन्धु	बन्धु, मित्र
शत्रु	शत्रु, दुश्मन

চাকর	चाकर	चाकर, नौकर
মহাজন	महाजन	महाजन
ধনদাতা	धनदाता	बौहरा
বিদেশী	विदेशी	परदेशी
ঠিকাদার	ठिकादार	ठेकेदार
প্রতিবেশী	प्रतिवेशी	पड़ोसी
অপরিচিত ব্যক্তি	अपरिचित व्यक्ति	अजनबी
জমিদার	जमिदार	ज़मींदार
প্রজা	प्रजा	किरायेदार
ক্রীতদাস	क्रीतदास	गुलाम
ছাত্র	छात्र	छात्र, विद्यार्थी
শিক্ষানবীশ	शिक्षानवीश	उम्मेदवार
শিষ্য	शिष्य	शिष्य, शागिर्द
শরীর	शरीर	बदन
মস্তক	मस्तक	मस्तक, सिर
অঙ্গ	अङ्ग	अङ्ग

अंग प्रत्यंग।

মাথারখুলি	माथारखुलि	खोपड़ी
মুখমণ্ডল	मुखमण्डल	चेहरा
মুখগহ্বর	मुखगह्वर	मुँह
দাঁত	दाँत	दाँत

जिभ	जीभ
आलजिभ	गलेकीकौडी
कण्ठ	गला, कण्ठ
घाड	गर्दन
गाल	गाल
चिबुक	ठोडी
ठोँट	होंट
काँध	कन्धा
चोयाल	जाबडा
बुक	छाती
पिठ	पीठ
मेरुदण्ड	पीठका बाँसा
पेट	पेट
तलपेट	पेड़ू
पाकस्थली	पाकस्थली
कोमर	कमर
चामडा	चमडा
त्वक	चमडा
हात	हाथ
हातेर कब्जी	कब्जा
हातेर आङ्गुल	हाथकीउँगली
बुडा आङ्गुल	अँगूठा

পঞ্জর	पञ्जर	पसली
ধড়	धड़	धड़
বগল	बगल	बगल
কণুই	कणुइ	कोहनी
চোখের পাতা	चोखेर पाता	पलक
চোখের পাতার চুল	चोखेर पातार चुल	बरौनी
চোখের তারা	चोखेर तारा	आँखकी पुतली
নাকের বিংদ	नाकेर विन्द	नथुना
মেড়ে	मेड़े	मसूड़ा
গোঁপ	गोंप	मूँछ
দাড়ী	दाड़ी	दाढ़ी
রক্ত	रक्त	खून, लोहू
হাড়	हाड़	हाड, हड्डी
মস্তিষ্ক	मस्तिष्क	भेजा
নখ	नख	नख, नाखून
কাণ	काण	कान
কপাল	कपाल	कपाल, लिलाट
ভ্রু	भ्रु	भौं
উরু	उरु	जाँघ
হাঁটু	हाँटु	घोंटु
পা	पा	पैर
পায়ের গাঁইট	पायेर गाँइट	टखना

गोड़ाल्नि	एँडी
गाँइट	गाँठ
केश	केश, बाल
पायेर तेलो	पैरका तलवा
हातेर तेलो	हथेली
धमनी	धमनी
मज्जा	मज्जा
नाडि, नाडी	नाडी
स्नायु	स्नायु
मांसपेशी	पुट्ठा
हृदय	हृदय
फुस्फुम्	फेफड़े
पित्त	पित्त
श्लेष्मा	श्लेष्मा, कफ
स्वर	आवाज़
निश्वास	साँस
चत्तेर जल, अश्रु	आँसू
युतु	थूक
चर्म्म	चमड़ा
नासिका, नाक	नाक
नासारन्ध्र	नथुना
चक्षु	आँख

লোমকূপ	लोमकूप	रोमछिद्र
মাংস	मांस	मांस

पशु पक्षी और कीड़े मकौड़े ।

পশু	पशु	पशु, जानवर
সিংহ	सिंह	सिंह, शेर
সিংহী	सिंही	सिंहिनी, शेरनी
অশ্ব	अश्व	घोड़ा
ঘোড়া	घोड़ा	घोड़ा
ঘোটকী, ঘুড়ী	घोटकी, घुड़ी	घोड़ी
ষাঁড	षाँड़	सांड
গাভী	गाभी	गाय
ভেড়া	भेड़ा	भेड़ा, भेड़
কুকুর	कुकुर	कुत्ता
কুকুরী	कुकुरी	कुतिया
ব্যাঘ্র	व्याघ्र	चीता
ব্যাঘ্রী	व्याघ्री	चीती
হস্তী	हस्ती	हाथी
হস্তিনী	हस्तिनी	हथनी

हरिण	हिरन
हरिणी	हिरनी
नेकड़े बाघ	भेड़िया
चिता बाघ	तेंदुआ
भल्लुक	रीछ, भालू
महिष	भैंसा
गण्डार	गैंडा
उष्ट्र	ऊँट
खच्चर	खच्चर
गर्दभ	गधा
छाग	बकरा
बिडाल	बिल्ली
शूकर	सूअर
काठ बिडाल	गिलहरी
बन-मानुष	बन-मानुष
बानर	बन्दर
शृगाल	स्यार, गीदड़
खेंकशियाली	लोमड़ी
बेंजी	नौला
मूषिक, इन्दुर	मूसा, चूहा
खरगोस	खरगोश
बाछुर	बछड़ा

মেষ শাবক	मेष शावक	मैमना
ছাগ শাবক	छाग शावक	बकरीका बच्चा
শূকর শাবক	शूकर शावक	सूअरकाबच्चा
কুকুরের বাচ্ছা	कुकुरेर बाच्छा	पिल्ला
বিড়ালের বাচ্ছা	बिड़ालेर बाच्छा	बिल्लीका बच्चा
চতুষ্পদ	चतुष्पद	चौपाया
শৃঙ্গ	शृङ्ग	सींग
খুর	खुर	खुर
পশম	पशम	रोआँ
পুচ্ছ	पुच्छ	पूँछ, दुम
পোকা	पोका	कीड़ा
প্রজাপতি	प्रजापति	तितली
মৌমাছী	मौमाछी	मधुमक्खी
বোল্‌তা	बोल्‌ता	बर्र, ततैया
ভ্রমর	भ्रमर	भौंरा
মাছি	माछि	मक्खी
ডাঁশ	डाँश	मच्छर, डाँस
জোনাকী পোকা	जोनाकी पोका	जुगनू
পঙ্গপাল	पङ्गपाल	टिड्डी
পক্ষী	पक्षी	पक्षी, पखेरु
চড়াই	चड़ाइ	गौरैया
চাতক	चातक	चातक, पपीहा

मयूर	मोर
मयूरी	मोरनी
हंस	हंस
हंसी	हंसनी
राजहंस	राजहंस
कोकिल	कोयल
तोतापची	तोता
काकातुया	काकातुआ
पायरा	कबूतर
बुल्बुल्	बुल्बुल्
घुघु	पण्डुकिया
सारस	सारस
बक	बगुला
मोरग	मुर्गा
मुरगी	मुर्गी
काक	कव्वा
शकुनि	गिद्ध
चिल	चील
बाज	बाज, शिकरा
माछराङ्गा	मछलीमार पक्षी
पेँचा	उल्लू
पच	पंख

চঞ্চু	चञ्चु	चोंच
ডানা	डाना	पर
ডিম্ব	डिम्ब	अण्डा
কীট	कीट	कीड़ा
পিপীলিকা	पिपीलिका	चींटी
উকুন	उकुन	जूँ
নিকি	निकि	लीक
মাকড়সা	माकड़सा	मकड़ी
গুটিপোকা	गुटिपोका	रेशमका कीड़ा
জোঁক	जोंक	जोंक
ছারপোকা	छारपोका	खटमल
গুবরেপোকা	गुबरेपोका	गुबरीला
সর্প	सर्प	सर्प, साँप
ঝিনুক	झिनुक	सीप
কচ্ছপ	कच्छप	कछुआ
শামুক	शामुक	घोंघा
শঙ্খ, শাঁখ	शङ्ख, शांख	शङ्ख
কুম্ভীর	कुम्भीर	मगर, घड़ियाल
টিকটিকি	टिकटिकि	छिपकली
কিউটেসাপ	किउटेसाप	कालासाँप
কটকটে-বেঙ	कटकटे बेङ	मेंडक
বিছা	बिछा	बिच्छू
কেঁচো	केंचो	केंचुआ

वृक्ष आदि।

শাখা,ডাল	शाखा, डाल	शाखा, डाली
পত্র, পাত, পাতা	पत्र पात, पाता	पत्र, पत्ता
কলি	कलि	कली
কুঁড়ি	कुँड़ि	कली
গুঁড়ি	गुँड़ि	धड़
খোসা	खोसा	छाल
ছোবড়া	छोबड़ा	छिलका
শাঁস	शांस	गूदा
কণ্টক, কাঁটা	कण्टक, कांटा	कांटा
বীজ	बीज	बीज
মুকুল	मुकुल	फूल, कली
ফুল,	फुल	फूल
অঙ্কুর	अङ्कुर	अङ्कुर
কাঠ	काठ	काठ, लकड़ी
রস	रस	रस
মূল	मूल	मूल, जड़
আঁশ	आंश	रेशा, तार
বৃক্ষ	वृक्ष	वृक्ष, पेड़
আম গাছ	आम गाछ	आमका पेड़
তাল গাছ	ताल गाछ	ताड़का पेड़

খেজুর গাছ	खेजुर गाछ	खिजूरका पेड
আঙ্গুর গাছ	आङ्गुर गाछ	अङ्गूरका पेड
নারিকেল গাছ	नारिकेल गाछ	नारियलका पेड
অশ্বত্থ	अश्वत्थ	पीपलका पेड
শাল গাছ	शाल गाछ	सालका पेड
শিমুল গাছ	शिमुल गाछ	सेमलका पेड
সেগুন গাছ	सेगुन गाछ	सागवानका पेड
বেত্র গাছ	वेत्र गाछ	बैंतका पेड
ঝাউ গাছ	झाउ गाछ	झाउका पेड
পাট গাছ	पाट गाछ	पाटका पेड
শন গাছ	शन गाछ	सनका पेड
বট গাছ	वट गाछ	वडका पेड
বাঁস গাছ	बाँस गाछ	बाँसका पेड
নীল	नील	नील
ইক্ষু	इक्षु	ईख
কাঁঠাল গাছ	काँठाल गाछ	कटहलका पेड
আতা গাছ	आता गाछ	सरीफेका पेड
সুপারি গাছ	सुपारि गाछ	सुपारीका पेड
কলা গাছ	कला गाछ	केलेका गाछ॰
ছোট গাছ	छोट गाछ	पौधा
চারা গাছ	चारा गाछ	पौधा

अनाज ।

শস্য	शस्य	शस्य, अनाज
ধান্য	धान्य	धान
চাউল	चाउल	चाँवल
গম	गम	गेहूँ
যব	यव	जौ
ধন্যা	धन्या	धनिया
ধনিয়া	धनिया	धनिया
ডাল	डाल	दाल
ময়দা	मयदा	मैदा
মটর	मटर	मटर
ভুট্টা	भुट्टा	मक्का
ছোলা	छोला	चना
সাগুদানা	सागुदाना	साबूदाना
সরিষা	सरिषा	सरसों
তিসি	तिसि	तीसी, अलसी
তিল	तिल	तिल
ভেরেণ্ডা, রেড়ী	भेरेण्डा, रेड़ी	रेंडी
পোস্তদানা	पोस्तदाना	पोस्ते बीज

फल और मेवे।

ফল	फल	फल
আম	आम	आम
জাম	जाम	जामुन
কাঁঠাল	काँठाल	कटहल
পিয়ারা	पियारा	अमरूद
নাশপাতি	नाशपाति	नाशपाती
রম্ভা	रम्भा	केला
লেবু	लेबु	नीबू
কমলা লেবু	कमला लेबु	नारङ्गी
দাড়িম	दाडिम	अनार
তাল	ताल	ताड
খেজুর	खेजुर	खजूर
কুল	कुल	बेर
কালজাম	कालजाम	काला जामुन
সুপারি	सुपारि	सुपारी
আনারস	आनारस	अनन्नास
নারিকেল	नारिकेल	नारियल
লিচু	लिचु	लीची
শসা	शसा	खीरा
তেঁতুল	तेंतुल	इमली

मसाले।

মসলা	मसला	मसाले
জয়ত্রী	जयत्री	जावित्री
জিরা	जिरा	ज़ीरा
হরিদ্রা	हरिद्रा	हल्दी
মৌরী	मौरी	सौंफ
জাফ্রান	जाफ्रान	केशर
কস্তুরি	कस्तुरि	कस्तूरी
লবঙ্গ	लवङ्ग	लौंग
কর্পূর	कर्पूर	कपूर
শুঁঠ	शुँठ	सोंठ
গোলমরিচ	गोलमरिच	गोलमिर्च
সরিসা	सरिसा	राई
লঙ্কা	लङ्का	लालमिर्च
আদা	आदा	अदरख
জায়ফল	जायफल	जायफल
এলাইচ	एलाइच	इलायची
তেজপাত	तेजपात	तेजपात
দারুচিনি	दारुचिनि	दालचीनी
পেঁপুল	पेंपुल	पीपर
কাবাবচিনি	काबाबचिनि	कबाबचीनी
খয়ের	खयेर	खैर, कत्था

खाद्य द्रव्य और बरतन।

খাদ্য	खाद्य	भोजन
জল	जल	पानी, जल
ভাত	भात	भात
মদ্য	मद्य	मद्य, शराब
রুটী	रुटी	रोटी
ডাল	डाल	दाल
ঝোল	झोल	झोल, सोरवा
অম্বল, টক্	अम्बल, टक्	खट्टा, चटनी
মাছ	माछ	मछली
ডিম্ব	डिम्ब	अण्डा
মাংস	मांस	मांस
পিষ্টক	पिष्टक	टिकिया
দুগ্ধ	दुग्ध	दूध
সাগু	सागु	साबू
মাখন	माखन	मक्खन
ছানা	छाना	छना
দধি	दधि	दही
পনির	पनिर	पनीर
সর	सर	मलाई
ক্ষীর	क्षीर	·ीर

লবণ	लवण	लवण, नमक
তৈল	तैल	तेल
সর্ষপ তৈল	सर्षप तैल	सरसोंका तेल
পাঁউরটী	पाँउरुटी	पावरोटी
চিনি	चिनि	चीनी
মধু	मधु	शहद, मधु
মিছরী	मिछरी	मिश्री
বাতাসা	बातासा	बताशा
মিষ্টান্ন	मिष्टान्न	मिठाई
ঘী	घि	घी
ঘোল	घोल	माठा
চা	चा	चाय
কফি	कफि	काफी
পানীয়	पानीय	पीनेकी चीज़
সরবত	सरबत	शरबत
প্রাতঃভোজন	प्रात भोजन	कलेवा
মধ্যাহ্ন ভোজন	मध्याह्न भोजन	भोजन
রাত্রির আহার	रात्रिर आहार	ब्यालू
বনভোজন	वनभोजन	जङ्गलकीरसोई
জলযোগ	जलजोग	जलपान
ভোজ	भोज	दावत, भोज
বড় ভোজ	बड भोज	बडी दावत

রান্নাঘর	रान्नाघर	रसोई
পাথরে কয়লা	पाथरे कयला	पत्थरका कोयला
জ্বালানী কাঠ	ज्वालानी काठ	जलानेकी लकड़ी
আগুণ	आगुण	आग
ধোঁয়া	धोँया	धूआँ
কাঠের কয়লা	काठेर कयला	लकड़ीका कोयला
ছাই	छाइ	राख
রাঁধুনি	राँधुनि	रसोइया
কড়াই	कड़ाइ	कड़ाही
পাত্র	पात्र	पात्र, बरतन
ঘড়া	घड़ा	घड़ा
বাসন	बासन	बासन
বাটি	बाटि	कटोरी
পেয়ালা	पियाला	प्याला
গেলাস	गेलास	ग्लास
থালা	थाला	थाली
কলসী	कलसी	कलस
কুঁজো	कुँजो	कुज्जा, सुराही
*চামচ্	चामच्	कलछी, चमची
বোতল	बोतल	बोतल
শিশি	शिशि	शीशी

कपड़े और ज़ेवर ।

পোষাক	पोषाक	पोशाक
অলঙ্কার	अलङ्कार	गहना
কাপড়	कापड़	कपड़ा
চাদর	चादर	चद्दर
পাজামা	पाजामा	पायजामा
কোট	कोट	कोट
কামিজ	कामिज	कमीज़
ঘাগরা	घागरा	घागरा
চোগা	चोगा	चुगा
আস্তিন	आस्तिन	आस्तीन
কোমরবন্ধ	कोमरबन्ध	कमरबन्द
জেব	जेब	जेब
তোয়ালে	तोयाले	तौलिया
দস্তানা	दस्ताना	दस्ताना
টুপি	टुपि	टोपी
পাগড়ী	पागड़ी	पगड़ी
মলমল	मलमल	मलमल
ছিট-কাপড়	छिट कापड़	छींट
মখমল	मखमल	मखमल
পশমী কাপড়	पशमी कापड़	ऊनी कपड़ा

পশম	पशम	ऊन
রেশম	रेशम	रेशम
অস্তর	अस्तार	अस्तर
কফন	कफन	कफन
বোতাম	बोताम	बोताम, बटन
মোজা	मोजा	मोज़ा
গামছা	गामछा	गामछा, दुशाला
রুমাল	रुमाल	रुमाल
আংটি	आंटि	अंगूठी
হার	हार	हार, माला
ফিতা	फिता	फीता

घर और घरका सामान।

জানালা	जानाला	खिड़की
ছিটকিনি	छिटकिनि	छिटकनी
নল	नल	नल
জলের কল	जलेर कल	जल-कल
পায়খানা	पायखाना	पाखाना
বড় ঘর	बड़ घर	बड़ा घर
শুইবার ঘর	शुइबार घर	सोनेका घर
পড়িবার ঘর	पड़िबार घर	पढ़नेका घर
বৈঠকখানা	बैठकखाना	बैठक
বসিবার ঘর	बसिबार घर	बैठक
অভ্যর্থনা ঘর	अभ्यर्थना घर	अभ्यर्थना घर
নৃত্যের ঘর	नृत्येर घर	नाच-घर
আস্তাবল	आस्ताबल	अस्तबल
উঠান	उठान	आँगन
গোয়াল	गोयाल	गायोंकाबाड़ा
কড়া	कड़ा	कथुआ
একতালা	एकताला	इकतला
দোতালা	दोताला	दुतला
বারাণ্ডা	बाराण्डा	बरण्डा
কুঁড়েঘর	कुँड़ेघर	झोंपड़ी
থাম	थाम	थम्भा, खम्भा
উনান	उनान	अँगीठी

গোলাঘর	गोलाघर	खलिहान
ভাণ্ডার ঘর	भाण्डार घर	भण्डार, गोदाम
ইষ্টক	इष्टक	ईंट
টালি	टालि	खपरा
পাথর	पाथर	पत्थर
রং	रंग	रङ्ग
আলকাতরা	आल्कातरा	अलकतरा
খাট	खाट	खाट
তক্তাপোষ	तक्तापोष	पलँग, चौकी
হাতপাখা	हातपाखा	हाथ-पङ्खा
ছবি	छवि	तस्वीर
টানা পাখা	टाना पाखा	खींचनेका पङ्खा
বৈদ্যুতিক পাখা	वैद्युतिक पाखा	बिजलीकापङ्खा
আয়না	आयना	दर्पण
সিন্দুক	सिन्दुक	सन्दूक
লোহার সিন্দুক	लोहार सिन्दुक	लोहेका पेटी
দেরাজ	देराज	दराज
টুল	टुल	तिपाई
বেঞ্চ	बेञ्च	बैञ्च
তোরঙ্গ	तोरङ्ग	ट्रङ्क, पेटी
বাজা ঘড়ী	बाजा घड़ी	घण्टा-घड़ी
ট্যাঁকঘড়ী	ट्यांकघड़ी	जेब-घड़ी

দোলনা	दोल्‌ना	पालना
লণ্ঠন	लण्ठन	लालटेन
দেওয়ালগিরি	देवालगिरि	दीवालगीरी
ঝাড়	झाड़	झाड़
প্রদীপ	प्रदीप	चिराग, दीपक
সলতা	सल्‌ता	बत्ती
বাতী	बाती	मोमबत्ती
খিল	खिल	चिटकनी
শিকল	शिकल	सांकल, जञ्जीर
পেরেক	पैरेक	कील
স্ক্রুপ	स्क्रुप	पेच, स्क्रू
কড়ি	कड़ि	कड़ी, लट्ठा
ধন্না	धन्ना	कड़ी, धरन
মেজে	मेजे	फर्श
দেওয়াল	देवाल	दीवार
সিঁড়ি	सिँड़ि	सीढ़ी
তক্তা	तक्ता	तख्‌ता
খুঁটি	खुँटि	खूँटी
ফটক	फटक	फाटक
কেদারা	केदारा	कुर्सी
মেজ্‌	मेज्	मेज़
বাক্স	बाक्स	सन्दूक

চূণ	चुण	चूना
বিলাতী মাটি	बिलाती माटि	बिलायती मिट्टी
বাক্সের কল	वाक्से र कल	ताला
কুলুপ	कुलुप	ताला
চাবি	चावि	चाभी, कुञ्जी
পর্দ্দা	पर्द्दा	पर्दा
কার্পেট	कार्पेट	दरी
ঘটি	घटि	पानीकी घड़िया
বাটী	बाटी	कटोरी
কড়া	कड़ा	कड़ाह
জলের জালা	जलेर जाला	पानीका माट
কাঁচের বাসন	कांचेर बासन	कांचका बरतन
চীনের বাসন	चीनेर बासन	चीनीका बरतन
কেট্‌লি	केट्‌लि	देगची
ঝাঁটা	झाँटा	झाड़ू
ছাতা	छाता	छाता, छतरी
লাটিম	लाटिम	लट्टू
ছাঁকনি	छांकनि	छन्ना
চালনী	चालनी	चलनी
জাঁতা	जाँता	चक्की
দিয়াশালাই	दियाशालाइ	दियासलाई
পুত্তলিকা	पुत्तलिका	गुड़िया

চিরুনী	चिरुनी	कंघी
খেল্না	खेल्ना	खिलौना
ছড়ি	छड़ि	छड़ी
শাঁক	शांक	शङ्ख
খড়ি	खड़ि	खड़िया
ছুরি	छुरि	छुरी, चाकू
কম্বল	कम्बल	कम्बल
লেপ	लेप	रजाई
তোশক	तोशक	तोशक
বালিশ	बालिश	तकिया
পাশবালিশ	पाशबालिश	गोल लम्बा तकिया
গদি	गदि	गद्दी
মশারি	मशारि	मशहरी
গামছা	गामछा	अंगोछा
ঝুড়ি	झुड़ि	टोकरी
থলে	थलि	थैला
কোচ	कोच	पलंग
বিছানার চাদর	बिछानार चादर	बिस्तरेकी चद्दर
মোম	मोम	मोम
গালিচা	गालिचा	गलीचा
জীন	जीन	ज़ीन
লাগাম	लागाम	लगाम

চাবুক	चाबुक	चाबुक
ভাঁড	भाँड	हाँड़ी
ফাঁদ	फाँद	फन्दा

वस्त्र और जूते वगैरः ।

আটপৌরে কাপড	आटपौरे कापड	हर समय के कपड़े
ধোলাই করা কাপড	धोलाइ करा कापड	धुले हुए कपड़े
শীতকালের কাপড	शीतकालेर कापड	जाड़े के कपड़े
সূতার কাপড	सूतार कापड	सूती कपड़ा
রেশমী কাপড	रेशमी कापड	रेशमी कपड़ा
খাদি কাপড	खादि कापड	कपड़े का टुकड़ा
মোমের কাপড	मोमेर कापड	मोमजामा
বনাত	बनात	बनात
ফ্লানেল্	फ्लानेल्	फलालैन
ক্যানবিস	क्यानविस	किरमिच
পকেট	पकेट	जेब
বগলি	बगलि	जेब
গলাসি	गलासि	कॉलर
পরিচ্ছদ	परिच्छद	पोशाक
কোরা কাপড	कोरा कापड	कोरा कपड़ा

সাদা কাপড়	सादा कापड़	सफ़ेद कपड़ा
ঘোম্টা	घोम्टा	घूँघट
গরম চাদর	गरम चादर	लिहाफ़
সূতা	सूता	डोरा
সূচ	सूच	सूई
চসমা	चसमा	चश्मा, ऐनक
ঘড়ির চেন	घड़िर चेन	घड़ीकी चैन
জুতা	जुता	जूता
চটি জুতা	चटि जुता	चपटा जूता

स्कूल और लिखने पढ़ने का सामान।

বিদ্যালয়	विद्यालय	विद्यालय
চতুষ্পাঠী	चतुष्पाठी	पाठशाला
শিক্ষক	शिक्षक	शिक्षक
অধ্যাপক	अध्यापक	पढ़ानेवाला
বিশ্ববিদ্যালয়	विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय
প্রধান শিক্ষক	प्रधान शिक्षक	प्रधान शिक्षक
অধ্যক্ষ	अध्यक्ष	अध्यक्ष
পাঠার্থী	पाठार्थी	विद्यार्थी

শিক্ষার্থী	শিক্ষার্থী	विद्यार्थी
ছাত্র	छात्र	छात्र
পাঠক	पाठक	पढ़नेवाला
পুস্তক	पुस्तक	पुस्तक
পাঠ্য পুস্তক	पाठ्य पुस्तक	पाठ्य पुस्तक
কাগজ	कागज	कागज़
চুষীকাগজ	चुषीकागज	स्याही-सोख
কলম	कलम	कलम
কালি	कालि	स्याही
দোয়াত	दोयात	दावात
পুরস্কার	पुरस्कार	पुरस्कार, इनाम
ফল	फल	फल, परिणाम
শ্রেণী	श्रेणी	दर्जा, श्रेणी
নম্বর	नम्बर	नम्बर
সাপ্তাহিক পরীক্ষা	साप्ताहिक परीक्षा	
পাক্ষিক পরীক্ষা	पाक्षिक परीक्षा	
মাসিক পরীক্ষা	मासिक परीक्षा	
দ্বৈমাসিক পরীক্ষা	द्वैमासिक परीक्षा	
ত্রৈমাসিক পরীক্ষা	त्रैमासिक परीक्षा	
বার্ষিক পরীক্ষা	वार्षिक परीक्षा	
উচ্চশ্রেণীতে উঠা	उच्चश्रेणीते उठा	दर्जा चढ़ाना
পুস্তকাগার	पुस्तकागार.	पुस्तकालय

খেলা	खेला	खेल
দৌড়	दौड़	दौड़
ব্যায়াম	व्यायाम	व्यायाम, कसरत
স্কুলের বেতন	स्कुलेर वेतन	मदरसेकी फीस
জরিমানা	जरिमाना	जुर्माना
ভুল	भुल	गलती
শাস্তি	शास्ति	सज़ा
বিদায়	बिदाय	बिदा, छुट्टी
ছুটীর দিন	छुटीर दिन	छुट्टीका दिन
বেহারা	बेहारा	बेहरा
কেরাণী	केराणी	लेखक
গ্রন্থকার	ग्रन्थकार	ग्रन्थकार
চিঠির কাগজ	चिठिर कागज	चिट्ठीका कागज़
চিঠি	चिठि	चिट्ठी
সংবাদ পত্র	संबादपत्र	समाचारपत्र
চিঠির খাম	चिठिर खाम	लिफ़ाफ़ा
ছত্র	छत्र	पंक्ति, लाइन
মলাট	मलाट	कवर
গদ্য	गद्य	गद्य
পদ্য	पद्य	पद्य
ব্যাকরণ	व्याकरण	व्याकरण
সাহিত্য	साहित्य	साहित्य

ভাষা	भाषा	भाषा
ইতিহাস	इतिहास	इतिहास
ভূগোল	भूगोल	भूगोल
প্রাকৃতিক ভূগোল	प्राकृतिक भूगोल	प्राकृतिक भूगोल
ভূতত্ব বিদ্যা	भूतत्वविद्या	भूतत्व विद्या
জ্যোতিষ শাস্ত্র	ज्योतिषशास्त्र	ज्योतिष शास्त्र
আলোক চিত্র বিদ্যা	आलोक चित्र विद्या	फोटोग्राफी
সঙ্গীত বিদ্যা	सङ्गीत विद्या	सङ्गीत विद्या
নাটক	नाटक	नाटक
পাটীগণিত	पाटीगणित	अङ्क गणित
বীজ গণিত	बीज गणित	बीज गणित
দর্শনশাস্ত্র	दर्शनशास्त्र	दर्शन शास्त्र
মনোবিজ্ঞান	मनोविज्ञान	मनोविज्ञान
স্মৃতি	स्मृति	स्मृति, याद
উদ্ভিদ্ বিদ্যা	उद्भिद् विद्या	वनस्पतिविद्या
ষাণ্মাসিক পরীক্ষা	षान्मासिक परीक्षा छमाही इमतिहान	

रोज़गारी लोग ।

উকীল	उकील	वकील
কৌন্সিলি	कौन्सिलि	बड़ा वकील
কৃষক	कृषक	कृषक, किसान
ডাক্তার	डाक्तार	डाक्टर
মহাজন	महाजन	महाजन
চিকিৎসক	चिकित्सक	चिकित्सक, वैद्य
নাপিত	नापित	नाई
ধীবর	धीबर	धीवर, मछुवा
বারিষ্টার	बारिष्टार	बैरिष्टर
জেলে	जेले	मछुआ
ভিক্ষুক	भिक्षुक	भिखारी
বাগানের মালী	बागानेर माली	बागकामाली
কামার	कामार	लुहार
স্বর্ণকার	स्वर्णकार	सुनार
মাঝি	माझि	माँझि, मल्लाह
স্যাক্‌রা	स्याक्‌रा	सुनार
দপ্তরি	दप्तरि	जिल्दसाज़
মুদী	मुदी	पसारी
পুস্তক বিক্রেতা	पुस्तक बिक्रेता	किताबवाला
সহিস	सहिस	साईस

দালাল	दालाल	दलाल
ফিরিওয়ালা	फिरिवाला	फेरीवाला
কসাই	कसाइ	कसाई
বিচারকর্ত্তা	बिचारकर्त्ता	विचारक, जज
সূত্রধর, সুথার	सूत्रधर, सुथार	बढ़ई
মজুর	मजुर	मज़दूर
পাহারাদার	पाहारादार	पुलिसकासिपाही
আইন ব্যবসায়ী	आइन व्यवसायी, कानूनी पेशेवाला	
জুতা মেরামতকারী	जुता मेरामत कारी	मोची
ফৌজদারী হাকিম	फौजदारी हाकिम	मजिस्ट्रेट
মুচী	मुचो	मोची
রাজমন্ত্রী	राजमन्त्री	राज-मन्त्री
রাঁধুনী	रांधुनी	रसोइया
সওদাগর	सओदागर	सौदागर
রাখাল	राखाल	चरवाहा
গোয়ালা	गोयाला	ग्वाला, दूधवाला
দোকানদার	दोकानदार	दूकानदार
ধাত্রী	धात्री	धात्री, दाई
সৈন্য	सैन्य	सिपाही
কলু	कलु	तेली
যোদ্ধা	जोद्धा	योधा
চসমা বিক্রেতা	चसमा बिक्रेता, चश्मा बेचनेवाला	

জুতার বুরুষধারী	जूतारबुरुषकारी, जूताबुरुशकरनेवा०	
চাষা	चाषा	किसान
পণ্ডিত	पण्डित	पण्डित
পেয়াদা	पेयादा	प्यादा
কাঁসারী	कांसारी	कसेरा
মুটে	मुटे	मुटिया
পুরোহিত	पुरोहित	प्रोहित
জমিদার	जमिदार	ज़मीन्दार
পাঠক	पाठक	पढ़नेवाला
প্রজা	प्रजा	प्रजा
হাতুড়ে ডাক্তার	हातुड़े डाक्तार	नकली वैद्य
রায়ত	रायत	रैयत
দস্যু	दस्यु	लुटेरा
ভাড়াটিয়া	भाडाटीया	किरायेदार
কবি	कवि	कवि
ডাকাত	डाकात	डाकू
ব্যবসাদার	व्यवसादार	व्यौपारी
নাবিক	नाबिक	मल्लाह
ধোপা	धोपा	धोबी
মেষপালক	मेषपालक	गडरिया
তাঁতি	तांति	जुलाहा

समय सूचक शब्द ।

দিন	दिन	दिन
মাস	मास	महीना, मास
সপ্তাহ	सप्ताह	सप्ताह, हफ्ता
বৎসর	वत्सर	वर्ष
পক্ষ	पक्ष	पक्ष, पखवारा
শতাব্দী	शताब्दी	शताब्दी
যুগ	जुग	युग, समय
সূর্য্যোদয় কাল	सूर्य्योदय काल	सूर्य्योदयकाल
প্রাতঃকাল	प्रातःकाल	प्रातःकाल
পূর্ব্বাহ্ণ	पूर्व्वाह्ण	दोपहर पहिले
মধ্যাহ্নকাল	मध्याह्नकाल	मध्याह्नकाल
দুপুরবেলা	दुपुरवेला	दोपहरी
অপরাহ্ণ	अपराह्ण	दोपहरके पीछे
গোধূলি	गोधूलि	गोधूलि समय
সূর্য্যাস্ত	सूर्य्यास्त	सूर्य्यास्त
মধ্যরাত্রি	मध्यरात्रि	आधीरात
নিশীথ সময়	निशीथ समय	मध्यरात्रि
মুহূর্ত্ত	मुहूर्त्त	मुहूर्त्त, पल
ঘণ্টা	घण्टा	घण्टा
আজ	आज	आज

আজ রাত্রি	आज रात्रि	आजरात
গতকল্য	गतकल्य	गयाहुआ कल
আগামী কল্য	आगामी कल्य	आनेवाला कल

सप्ताह के दिन और ऋतुएँ।

রবিবার	रविवार	रविवार
সোমবার	सोमवार	सोमवार
মঙ্গলবার	मङ्गलवार	मङ्गलवार
বুধবার	बुधवार	बुधवार
বৃহস্পতিবার	बृहस्पतिवार	बृहस्पतवार
শুক্রবার	शुक्रवार	शुक्रवार
শনিবার	शनिवार	शनिवार
ঋতু	ऋतु	ऋतु, मौसम
গ্রীষ্মকাল	ग्रीष्मकाल	गरमीका मौसम
বর্ষাকাল	वर्षाकाल	वर्षाकाल
শরৎকাল	शरत्काल	शरत्काल
হেমন্তকাল	हेमन्त काल	हेमन्तकाल
শীতকাল	शीतकाल	शीतकाल
বসন্তকাল	वसन्तकाल	वसन्त ऋतु

नोट—बंगाली लोग बृहस्पतिवार को "लक्खीवार" और "गुरुवार" भी बोलते हैं।

खनिज पदार्थ।

স্বর্ণ	स्वर्ण	सोना
রৌপ্য	रौप्य	चाँदी
তাম্র	ताम्र	ताम्बा
লৌহ	लौह	लोहा
ইস্পাত	इस्पात	फौलाद
দস্তা	दस्ता	जस्ता
ফট্‌কিরি	फट्किरि	फिटकरी
সীসা	सीसा	शीशा
পিত্তল	पित्तल	पीतल
পারা, পারদ	पारा, पारद	पारा
গন্ধক	गन्धक	गन्धक
সৈন্ধব লবণ	सैन्धव लवण,	सैंधा नमक
হীরক	हीरक	हीरा
পান্না	पान्ना	पन्ना
চুনী	चुनी	चुन्नी

दिशाएँ

উত্তরদিক	उत्तरदिक	उत्तर दिशा
দক্ষিণদিক	दक्षिणदिक	दक्षिण दिशा

পূর্ববদিক	पूर्व्वदिक	पूरब दिशा
পশ্চিমদিক	पश्चिमदिक	पच्छम दिशा
ঈশানকোণ	ईशानकोण	उत्तर पूरबका कोना
বায়ুকোণ	वायुकोण	उत्तर पच्छमका कोना
অগ্নিকোণ	अग्निकोण	दक्खन पूरबका कोना
নৈঋতকোণ	नैऋतकोण	दक्खन पच्छमका कोना

अदालती शब्द।

আদালত	आदालत	कचहरी
আইন	आइन	क़ानून
বিচার	विचार	विचार
সালিস	सालिस	पञ्च
মধ্যস্থ	मध्यस्थ	मध्यस्थ
জুরি	जुरि	जूरी
ফরিয়াদী	फरियादी	मुद्दई
বাদী.	बादी	मुद्दई
আসামী	आसामी	मुद्दायलह
প্রতিবাদী	प्रतिवादी	मुद्दायलह
উকিল	उकिल	उक़ील
উকালতনামা	उकालतनामा	वकालतनामा

এসেসর,	एसेसर	पञ्च
দাবী	दावी	दावा
স্বত্ব	स्वत्व	हक्
জামিন	जामिन	ज़ामिन
সমন	समन	सम्मन
ওয়ারেণ্ট	वारेण्ट	वारण्ट
মোক্তার	मोक्तार	मुख़्तार
রায়	राय	राय
খাজানা	खाजाना	भाड़ा
জরিমানা	जरिमाना	जुर्माना
কয়েদ	कयेद	क़ैद
দেউলিয়া-ব্যক্তি	देउलिया व्यक्ति	दिवालिया
কোর্ট-ফি:	कोर्ट फि:	अदालतका खर्चा
ঘুষ	घुष	घूँस, रिश्वत
সুবিচার	सुविचार	इन्साफ़, न्याय
দণ্ডাজ্ঞা	दण्डाज्ञा	सज़ा, दण्ड
দেওয়ানী-আদালত	देवानीआदालत	दीवानी कचहरी
ফৌজদারী-আদালত	फौजदारीआदालत	फौजदारी कचहरी
আর্জি	आर्जि	अर्जी
সাক্ষী	साक्षी	साक्षी, गवाह
মুন্সেফ	मुन्सेफ	मुन्सिफ
মোকদ্দমা	मोकद्दमा	मुकद्दमा

প্রমাণ	प्रमाण	प्रमाण
নালিস	नालिस	नालिश
খৎ	खत्	दस्तावेज़
পাট্টা	पाट्टा	पट्टा
জবানবন্দী	जबानबन्दी	ज़बानबन्दी
শপথ	शपथ	शपथ, क़सम
গ্রেপ্তারি পরোয়ানা	ग्रेप्तारिपरवाना	गिरफ्तारीका परवाना।
মুচলিখা	मुचलिखा	मुचलका
নিষ্পত্তি	निष्पत्ति	फैसला
খালাস	खालास	रिहाई
পুনর্বিচার	पुनर्ब्बिचार	नज़रसानी
নথী	नथी	नत्थी
আমমোক্তার নামা	आममोक्तारनामा	आममुख्तारनामा
দলিল	दलिल	दलील
শুনানি	शुनानि	सुनवाई
নীলাম	नीलाम	नीलाम

संज्ञाविशेषण पद।

লাল	लाल	लाल
কাল	काल	काला

সাদা	सादा	सफ़ेद
শান্ত	शान्त	शान्त
ধূর্ত্ত	धूर्त्त	धूर्त्त
বলবান্	बलवान्	बलवान्
দুর্ব্বল	दुर्ब्बल	कमज़ोर
মোটা	मोटा	मोटा
কৃশ	कृश	कृश, दुबला
সুন্দর	सुन्दर	सुन्दर
ভাল	भाल	अच्छा
সুশ্রী	सुश्री	सुन्दर
কোন	कोन	कोई, कुछ
এ কোন	ए कोन	कोई
কতকগুলি	कतकगुलि	कुछ
অনেক	अनेक	बहुतेरे
এই	एइ	यह
ঐ	ऐ	वह
সেই	सेइ	वह
এই সকল	एइ सकल	ये सब
ঐ সকল	ऐ सकल	वे सब
মন্দ	मन्द	बुरा
বড	बड	बड़ा
বৃহৎ আকার	बृहत् आकार	बड़ा

ক্ষুদ্র	क्षुद्र	क्षुद्र, छोटा
সবুজ	सबुज	हरा
নীলবর্ণ	नीलवर्ण	नीला
হলদে	हल्दे	ज़र्द
পোষা	पोषा	पालतू
বন্য	बन्य	बन्या, जङ्गली
শুভ্রবর্ণ	शुभ्रवर्ण	सफ़ेद
ফিকে বাদামী	फिके बादामी	हल्का बादामी
সাহসী	साहसी	साहसी
ভীরু	भीरु	डरपोक
উজ্জ্বল	उज्ज्वल	चमकीला
মলিন	मलिन	मटमैला
যুবা	युवा	युवा, जवान
তরুণ বয়স্ক	तरुण वयस्क	जवान उम्र
পুরাতন	पुरातन	पुरातन
বুড়ো	बुड़ो	बुड्ढा
নূতন	नूतन	नया
শক্ত	शक्त	सख्त
ঠিক	ठिक	ठीक
ভুল	भुल	गलत
ন্যায়	न्याय	न्याय
অন্যায়	अन्याय	अन्याय

দীর্ঘসূত্রী	दीर्घसूत्री	दीर्घसूत्री
ঘন	घन	घन, गाढ़ा
পাতলা	पातला	पतला
খোঁড়া	खोँड़ा	लँगड़ा
অন্ধ	अन्ध	अन्धा
বধীর	बधीर	बँहिरा
কালা	काला	बहरा
এক চক্ষু	एक चक्षु	काना
নরম	नरम	नरम
লম্বা	लम्बा	लम्बा
ছোট	छोट	छोटा
ধনী	धनी	धनी
দরিদ্র	दरिद्र	दरिद्र, निर्धन
গরীব	गरीब	गरीब
বুদ্ধিমান	बुद्धिमान	बुद्धिमान
নির্ব্বোধ	निर्ब्बोध	मूर्ख
পরিশ্রমী	परिश्रमी	मिहनती
অলস	अलस	आलसी
সত্বর	सत्वर	तेज़
মন্থরগতি	मन्थरगति	सुस्त चाल
কুঁড়ে	कुँड़े	सुस्त
ধীর	धीर	धैर्य्यवान

মূক	मूक	गूँगा
বোবা	बोवा	गूँगा
দীর্ঘাকার	दीर्घाकार	लम्बा
বেঁটে	बेंटे	बौना
খর্ব্বাকার	खर्व्वाकार	बौना
বিশ্রী	विश्री	कुरूप
কুৎসিৎ	कुत्सित	भद्दा
প্রবল	प्रबल	तेज़, ज़ोरावर
গভীর	गभीर	गहरा
উচ্চ	उच्च	ऊँचा
নিম্ন	निम्न	नीचा
গরম	गरम	गरम
শীতল	शीतल	शीतल
ঠাণ্ডা	ठाण्डा	ठण्डा
সুমিষ্ট	सुमिष्ट	मीठा
সুমধুর	सुमधुर	मीठा
দ্রুতগামী	द्रुतगामी	तेज़ चलनेवाला
ভয়ানক	भयानक	भयानक
সংকীর্ণ	संकीर्ण	तङ्ग
বিস্তৃত	विस्तृत	चौड़ा
উপস্থিত	उपस्थित	मौजूद, हाजिर
অনুপস্থিত	अनुपस्थित	नामौजूद

জীবিত	जीवित	ज़िन्दा
মৃত	मृत	मृत, मुर्दा
প্রফুল্ল	प्रफुल्ल	खुश
গম্ভীর	गम्भीर	गम्भीर
লজ্জাশীল	लज्जाशील	शरमीला
লাজুক	लाजुक	लजीला
শিষ্টাচারী	शिष्टाचारी	शिष्टाचारी
অশিষ্ট	अशिष्ट	गँवार
সাবধান	सावधान	सावधान
অসাবধান	असावधान	ग़ाफ़िल
বিশ্বাসী	विश्वासी	विश्वासी
বিশ্বাসঘাতক	विश्वासघातक	विश्वासघातक
গৃহপালিত	गृहपालित	घरेलू
বে-আদব	बेग्रादब	बे-अदब
খিট্‌খিটে	खिट्‌खिटे	चिरचिरा
নিরুপায়	निरुपाय	निःसहाय
কৃতঘ্ন	कृतघ्न	एहसानमन्द
কশা	कशा	कसा हुआ
ঢিলে	ढिले	ढीला
অল্প	अल्प	अल्प, थोड़ा
যথেষ্ট	यथेष्ट	यथेष्ट, काफ़ी
সমুদয়	समुदय	तमाम

প্রত্যেক	प्रत्येक	प्रत्येक, हरेक
শুষ্ক	शुष्क	सूखा
সত্য	सत्य	सच
মিথ্যা	मिथ्या	झूँठ
গোল	गोल	गोल
সোনার	सोनार	सोनेका
রূপার	रूपार	चाँदीका
চতুষ্কোণ	चतुष्कोण	चौकोना
দৈনিক	दैनिक	दैनिक, रोज़ाना
রাত্রিকালীন	रात्रिकालीन	रातका
সাপ্তাহিক	साप्ताहिक	साप्ताहिक
সপ্তাহে দুইবার	सप्ताहे दुइबार	सप्ताहमें दो बार
পাক্ষিক	पाक्षिक	पाक्षिक
মাসিক	मासिक	मासिक
দ্বৈমাসিক	द्वैमासिक	द्वैमासिक
ত্রৈমাসিক	त्रैमासिक	त्रैमासिक
বাৎসরিক	बात्सरिक	सालाना
বার্ষিক	वार्षिक	वार्षिक
স্থানীয়	स्थानीय	स्थानीय
অনন্তকাল-স্থায়ী	अनन्तकाल-स्थायी	अनन्तकालस्थायी
সৎ	सत्	ईमान्दार
একটা	एकटा	एक

কেহ না	केह ना	कोई नहीं
কিছু না	किछु ना	कुछ नहीं
অপর	अपर	दूसरा
অন্য একটা	अन्य एकटा	एक दूसरा
সকল	सकल	सब
কতিপয়	कतिपय	कई
উভয়	उभय	दोनों
কিছু	किछु	कुछ
সেই	सेइ	वही
কেন না	केन ना	क्योंकि

सर्व्वनाम शब्द।

আমি	आमि	मैं
তুই	तुइ	तू
আপনি	आपनि	आप
তুমি	तुमि	तुम
আমরা	आमरा	हम
তোমরা	तोमरा	तुम लोग
আপনারা	आपनारा	आपलोग
তিনি	तिनि	वह
সে	से	वह
ইহা	इहा	यह
তাহারা	ताहारा	ये
তাঁহারা	तांहारा	वे
আমার	आमार	मेरा
আপনার	आपनार	आपका
তোর	तोर	तेरा
তাহার	ताहार	उसका
তাঁহার	तांहार	उसका
আমাদিগের	आमादिगेर	हमारा
তোমার	तोमार	तुम्हारा
তোমাদিগের	तोमादिगेर	तुम्हारा

তাহাদিগের	ताहादिगेर	उनका
আমাকে	आमाके	मुझे
তোকে	तोके	तुझे
আপনাকে	आपनाके	आपको
তোমাকে	तोमाके	तुम्हे
তাহাকে	ताहाके	उसे
ইহাকে	इहाके	इसे
আমাদিগকে	आमादिगके	हमें
তোমাদিগকে	तोमादिगके	तुम्हें
তাহাদিগকে	ताहादिगके	उन्हें

सम्वन्ध और वाचक शब्द।

যিনি, যে	जिनि, जे	जो
যাহার	जाहार	जिसका
যাহাকে	जाहाके	जिसको
যাহা, যে	जाहा, जे	जो
কে	के	कौन
কাহার	काहार	किसका
কাহাকে	काहाके	किसको
কোন্	कोन्	कौनसा
কি	कि	क्या
কাহারা	काहारा	किनका
কে কে	के के	कौन कौन
কাহাদিগের	काहादिगेर	किनका
কাহাদিগকে	काहादिगके	किनको
আমি নিজে	आमि निजे	मैं खुद
তুমি নিজে	तुमि निजे	तुम खुद
তিনি নিজে	तिनि निजे	वह खुद
সে নিজে	से निजे	वह खुद
আমরা নিজে	आमरा निजे	हम खुद
তোমরা নিজে	तोमरा निजे	तुम खुद
তাহারা নিজে	ताहारा निजे	वे खुद

गुण और अवस्था वाचक विशेष्य शब्द।

দয়া	दया	दया
কৃপা	कृपा	कृपा
উদারতা	उदारता	उदारता
আশা	आशा	आशा
ভয়	भय	भय, डर
দুঃখ	दुःख	दुःख
ক্রোধ	क्रोध	क्रोध
হিংসা	हिंसा	हिंसा
গর্ব্ব	गर्व्व	गर्व्व, घमण्ड
সহানুভূতি	सहानुभूति	सहानुभूति
শ্রদ্ধা	श्रद्धा	श्रद्धा
বন্ধুতা	बन्धुता	मित्रता
সততা	सतता	ईमानदारी
আগ্রহ	आग्रह	आग्रह
সাহস	साहस	साहस
ধৈর্য্য	धैर्य्य	धैर्य्य
নিষ্ঠুরতা	निष्ठुरता	निष्ठुरता
উচ্চাভিলাষ	उच्चाभिलाष	उच्चाभिलाष

উচ্চাকাঙ্ক্ষা	उच्चाकाङ्क्षा	उच्चाकांक्षा
ঘৃণা	घृणा	घृणा
ক্ষমা	क्षमा	क्षमा
আমোদ	आमोद	आमोद, खुशी
ব্যথা	व्यथा	व्यथा, दुःख
ভীরুতা	भीरुता	भीरुता, डरपोकपन
দৈর্ঘ্য	दैर्घ्य	लम्बाई
বিস্তার	विस्तार	चौड़ाई
অভ্যাস	अभ्यास	अभ्यास
বেধ	वेध	मुटाई
গভীরতা	गभीरता	गहराई
উচ্চতা	उच्चता	ऊँचाई
নীচতা	नीचता	नीचता
সম্পদ	सम्पद	सम्पद
বিপদ	विपद	विपद
দুর্গতি	दुर्गति	दुर्गति
বিশুদ্ধতা	विशुद्धता	सफाई
উপস্থিতি	उपस्थिति	हाजिरी
শৈশবকাল	शैशवकाल	बचपन
যৌবন	यौवन	जवानी
প্রৌঢ়াবস্থা	प्रौढ़ावस्था	प्रौढ़ावस्था
উন্মত্তাবস্থা	उन्मत्तावस्था	पागलपन

লজ্জা	लज्जा	लज्जा
দ্বেষ	द्वेष	द्वेष
ক্ষুধা	क्षुधा	क्षुधा, भूख
পিপাসা	पिपासा	प्यास
নিদ্রা	निद्रा	नींद
অহঙ্কার	अहङ्कार	अहंकार
স্মৃতি	स्मृति	स्मृति
স্নেহ	स्नेह	स्नेह
স্বাস্থ্য	स्वास्थ्य	स्वास्थ्य
দুর্ব্বলতা	दुर्ब्बलता	दुर्ब्बलता
পীড়া	पीड़ा	पीड़ा, बीमारी
বল	बल	बल, ताकत
সৌন্দর্য্য	सौन्दर्य्य	सुन्दरता
স্থূলতা	स्थूलता	मोटापन
কৃশতা	कृशता	दुबलापन
আরাম	आराम	आराम
নম্রতা	नम्रता	नम्रता
সলজ্জভাব	सलज्जभाव	शर्म, हया
শত্রুতা	शत्रुता	शत्रुता
নির্ব্বুদ্ধিতা	निर्बुद्धिता	निर्बुद्धिता
চাকরী	चाकरी	चाकरी, नौकरी
সত্বরতা	सत्वरता	जल्दी

পারগতা	पारगता	लियाक़त
অমিতব্যয়	अमितव्यय	फ़िज़ूलखर्च
ক্ষিপ্রতা	क्षिप्रता	फ़ुर्ती
নিস্তব্ধতা	निस्तब्धता	खामोशी
উপকারিতা	उपकारिता	उपकारिता
আঘ্রাণ	आघ्राण	गन्ध
অধ্যবসায়	अध्यवसाय	अध्यवसाय
দুষ্টামি	दुष्टामि	दुष्टता
কৌতূহল	कौतूहल	कौतूहल
ভক্তি	भक्ति	भक्ति
গোলমাল	गोलमाल	शोर, हल्ला

संयुक्त शब्द ।

পশ্চাদ্ভূমি	पश्चाद्भूमि	पश्चाद्भूमि
গুপ্তসিঁড়ি	गुप्तसिँढ़ि	गुप्तसीढ़ी
স্নানাগার	स्नानागार	स्नान घर
যুদ্ধক্ষেত্র	युद्धक्षेत्र	युद्धक्षेत्र
শয়নকাল	शयनकाल	सोनेका समय
জন্মদিন	जन्मदिन	जन्मदिन
জন্মগত স্বত্ব	जन्मगत स्वत्व	पैदायशी हक़

গ্রন্থকীট	ग्रन्थकीट	किताब का कीड़ा
তীরন্দাজ	तीरन्दाज	तीरन्दाज
সহাধ্যায়ী	सहाध्यायी	सहपाठी
শস্যক্ষেত্র	शस्यक्षेत्र	अनाजका खेत
যুবরাজ	युवराज	युवराज
দিবা-স্বপ্ন	दिवा स्वप्न	दिनका सपना
কর্ণাভরণ	कर्णाभरण	कानका गहना
সান্ধ্যভ্রমণ	सान्ध्य भ्रमण	शाम की सैर
স্ত্রী-শিক্ষা	स्त्री शिक्षा	स्त्री-शिक्षा
চলনপথ	चलनपथ	चलने की राह
পদচিহ্ন	पदचिह्न	पदचिह्न
জ্বালানী কাঠ	ज्वालानी काठ	जलानेकी लकड़ी
স্বর্ণরেণু	स्वर्णरेणु	सुवर्ण की खाक
স্বর্ণ খনি	स्वर्ण खनि	सोने की खान
ঘোড়-দৌড়	घोड़ दौड़	घुड़दौड़
আলোকস্তম্ভ	आलोकस्तम्भ	रोशनीका मीनार
বাজার দর	बाजार दर	बाज़ार भाव
জ্যোৎস্না	ज्योत्स्ना	चाँदनी
সংবাদপত্র-বিক্রয়কারী বালক	संवादपत्र विक्रय कारी बालक	संवादपत्र बेचने वाला लड़का
সংবাদপত্র	संवादपत्र	अख़बार
ইন্দ্রধনু	इन्द्रधनु	इन्द्रधनुष

গোলাপ-জল	गोलाप जल	गुलाबजल
সামুদ্রিক পক্ষী	सामुद्रिक पक्षी	समुन्द्री चिड़िया
সিন্ধুঘোটক	सिन्धुघोटक	समुन्द्री घोड़ा
মাসিক বৃত্তি	मासिक वृत्ति	मासिक वृत्ति
সমুদ্র উদ্ভিদ্	समुद्र उद्भिद्	समुद्री पौधा
আত্মত্যাগ	आत्मत्याग	आत्मत्याग
স্বর্ণবণিক	स्वर्णवणिक	सुनार
গোলাবাস	गोलावास	गोलाकारमें रहनेका घर
মোমবাতি	मोमबाती	मोम बत्ती
গলাগলি	गलागली	गलेपर धना
রক্ত-পিপাসু	रक्त-पिपासु	खूनका प्यासा
ঠিকানাহীন পত্র	ठिकानाहीन पत्र	बेपतेकी चिट्ठी
দুর্ভিক্ষপীড়িত	दुर्भिक्षपीड़ित	अकालके मारे
ধনগর্বিত	धनगर्वित	धनगर्वित
বজ্রাহত	वज्राहत	बिजलीका मारा हुआ
পুস্তকের দোকান	पुस्तकेर दोकान	पुस्तककी दूकान
কয়লার খনি	कयलार खनि	कोयलेकी खान
চক্ষের লোম	चक्षेर लोम	आँख के बाल
চক্ষের পাতা	चक्षेर पाता	पलक
গ্যাসের আলো	ग्यासेर आलो	गैसकी रौशनी
কাচের জিনিষ	काचेर जिनिष	काँचकी चीज

হাতে বাজাইবার ঘণ্টা, हाथेबाजाइबार घण्टा, हाथसेबजानेकाघण्टा

হাতে চালাইবার তাঁত	हाते चालाइबार तांत	हाथै चालाइवार तांत
ঘোড়ার চাবুক	घोडार चाबुक	घोड़ेकी चाबुक
পাটের কল	पाटेर कल	पाट की कल
কাগজের কল	कागजेर कल	कागज़की कल
ঘোড়-দৌড়ের ঘোড়া	घोड़दौड़ेर घोड़ा	घुड़दौड़का घोड़ा
স্কুলের ছাত্র	स्कूलेर छात्र	स्कूलका लड़का
স্কুলের শিক্ষক	स्कूलेर शिक्षक	स्कूलका उस्ताद
সমুদ্রের যুদ্ধ	समुद्रेर युद्ध	समुन्दरी लड़ाई
সমুদ্রের জল	समुद्रेर जल	समुद्रका पानी
রূপার বাটি	रूपार बाटि	चाँदीकी कटोरी
যুদ্ধের ঘোড়া	जुद्धेर घोड़ा	लड़ाईका घोड़ा
রক্তের ন্যায় লাল	रक्तेर न्याय लाल	खूनकी तरह सुर्ख़
মাটির পাত্র	माटिर पात्र	मिट्टीका बरतन
লোহার দ্রব্যাদি	लोहार द्रव्यादि	लोहेका सामान
আলকাতরার ন্যায়	आल्कातरार न्याय	अलकतरेकी भाँति
আকাশের ন্যায় নীল	आकाशेर न्याय नील	आकाशके समान नीला
ঘাসের মত সবুজ	घासेर मत सबुज	घासके समान सब्ज़
ধোপার ইস্ত্রী	धोपार इस्त्री	धोबीकी इस्त्री

क्रिया पद।

শোধন করা	सोधना
জিজ্ঞাসা করা	पूछना
আরম্ভ করা	आरम्भ करना
বন্ধন করা (বাঁধা)	बांधना
ধার করা	उधार लेना
ভঙ্গ করা (ভাঙ্গা)	तोड़ना
আনয়ন করা	लाना
ক্রয় করা (কেনা)	खरीदना
আহ্বান করা (ডাকা)	पुकारना
ধারণ করা (ধরা)	पकड़ना
প্রতারণা করা	धोखा देना
কর্ত্তন করা (কাটা)	काटना
করা	करना
উপার্জ্জন করা	कमाना
আহার করা (খাওয়া)	खाना
সুখভোগ করা	सुखभोग करना
অনুমান করা	अनुमान करना
দান করা (দেওয়া)	देना
অধিকার করা (থাকা)	रखना
ক্ষতি করা	नुकसान करना

ঘৃণা করা	घृणा करना
সাহায্য করা	सहायता करना
আঘাত করা	चोट लगाना
উত্তোলন করা	उठाना, चढ़ाना
প্রজ্বলিত করা	आग लगाना, जलाना
অগ্রাহ্য করা	न मानना
কল্পনা করা	कल्पना करना, विचारना
কারারুদ্ধ করা	कैद करना
যোগ করা	जोड़ना, मिलाना
অপমান করা	अपमान करना
বিপর্য্যস্ত করা (উলটান)	उलटना, औंधा करना
নিমন্ত্রণ করা	निमन्त्रण करना, बुलाना
সমর্থন করা	समर्थन करना, सही साबित करना
রক্ষা করা (রাখা)	रक्षा करना, रखना
পদাঘাত করা (লাথি মারা)	लात मारना
নিহত করা (মারিয়া ফেলা)	मार डालना
বোধগম্য করা (জানা)	जानना
ধার দেওয়া	उधार देना
উত্তোলন করা (তোলা)	उठाना
পরিচালন করা	रास्ता दिखाना, लेजाना
লেহন করা (চাটা)	चाटना
পছন্দ করা	पसन्द करना

ক্রিয়া পদ।

শোধন করা	सोधना
জিজ্ঞাসা করা	पूछना
আরম্ভ করা	आरम्भ करना
বন্ধন করা (বাঁধা)	बाँधना
ধার করা	उधार लेना
ভঙ্গ করা (ভাঙ্গা)	तोड़ना
আনয়ন করা	लाना
ক্রয় করা (কেনা)	खरीदना
আহ্বান করা (ডাকা)	पुकारना
ধারণ করা (ধরা)	पकड़ना
প্রতারণা করা	धोखा देना
কর্ত্তন করা (কাটা)	काटना
করা	करना
উপার্জ্জন করা	कमाना
আহার করা (খাওয়া)	खाना
সুখভোগ করা	सुखभोग करना
অনুমান করা	अनुमान करना
দান করা (দেওয়া)	देना
অধিকার করা (থাকা)	रखना
ক্ষতি করা	नुकसान करना

ঘৃণা করা	घृणा करना
সাহায্য করা	सहायता करना
আঘাত করা	चोट लगाना
উত্তোলন করা	उठाना, चढ़ाना
প্রজ্জ্বলিত করা	आग लगाना, जलाना
অগ্রাহ্য করা	न मानना
কল্পনা করা	कल्पना करना, विचारना
কারারুদ্ধ করা	कैद करना
যোগ করা	जोड़ना, मिलाना
অপমান করা	अपमान करना
বিপর্য্যস্ত করা (উলটান)	उलटना, औंधा करना
নিমন্ত্রণ করা	निमन्त्रण करना, बुलाना
সমর্থন করা	समर्थन करना, सही साबित करना
রক্ষা করা (রাখা)	रक्षा करना, रखना
পদাঘাত করা (লাথি মারা)	लात मारना
নিহত করা (মারিয়া ফেলা)	मार डालना
বোধগম্য করা (জানা)	जानना
ধার দেওয়া	उधार देना
উত্তোলন করা (তোলা)	उठाना
পরিচালন করা	रास्ता दिखाना, लेजाना
লেহন করা (চাটা)	चाटना
পছন্দ করা	पसन्द करना

क्रिया पद।

শোষণ করা	सोखना
জিজ্ঞাসা করা	पूछना
আরম্ভ করা	आरम्भ करना
বন্ধন করা (বাঁধা)	बाँधना
ধার করা	उधार लेना
ভগ্ন করা (ভাঙ্গা)	तोड़ना
আনয়ন করা	लाना
ক্রয় করা (কেনা)	खरीदना
আহ্বান করা (ডাকা)	पुकारना
ধারণ করা (ধরা)	पकड़ना
প্রতারণা করা	धोखा देना
কর্ত্তন করা (কাটা)	काटना
করা	करना
উপার্জ্জন করা	कमाना
আহার করা (খাওয়া)	खाना
সুখভোগ করা	सुखभोग करना
অনুমান করা	अनुमान करना
দান করা (দেওয়া)	देना
অধিকার করা (থাকা)	रखना
ক্ষতি করা	नुकसान करना

ঘৃণা করা	घृणा करना
সাহায্য করা	सहायता करना
আঘাত করা	चोट लगाना
উত্তোলন করা	उठाना, चढ़ाना
প্রজ্বলিত করা	आग लगाना, जलाना
অগ্রাহ্য করা	न मानना
কল্পনা করা	कल्पना करना, विचारना
কারারুদ্ধ করা	कैद करना
যোগ করা	जोड़ना, मिलाना
অপমান করা	अपमान करना
বিপর্য্যস্ত করা (উলটান)	उलटना, औंधा करना
নিমন্ত্রণ করা	निमन्त्रण करना, बुलाना
সমর্থন করা	समर्थन करना, सही साबित करना
রক্ষা করা (রাখা)	रक्षा करना, रखना
পদাঘাত করা (লাথি মারা)	लात मारना
নিহত করা (মারিয়া ফেলা)	मार डालना
বোধগম্য করা (জানা)	जानना
ধার দেওয়া	उधार देना
উত্তোলন করা (তোলা)	उठाना
পরিচালন করা	रास्ता दिखाना, लेजाना
লেহন করা (চাটা)	चाटना
পছন্দ করা	पसन्द करना

সংযুক্ত করা	जोड़ना, मिलाना
নষ্ট করা	खोना
প্রীতি করা (ভালবাসা)	प्रेम करना
অবনত করা	नीचा करना
নির্মাণ করা	बनाना
বন্দোবস্ত করা	बन्दोबस्त करना
খণ্ড খণ্ড করা	टुकड़े टुकड़े करना
উর্বরা করা (জমীতে সার দেওয়া)	खाद देना
লক্ষ করা	लक्ष करना
বিবাহ করা	विवाह करना
পরিমাণ করা	परिमाण करना, तौलना
দ্রব করা (গলান)	गलाना
অবিশ্বাস করা	अविश्वास करना
বিপথে চালিত করা	बहकाना
অস্থানে স্থাপন করা	और की और जगह रखना
ভুল মুদ্রণ করা (ভুল ছাপা)	गलत छापना
কু-শাসন করা	अन्धेर करना, बुरी तरह पेशआना
অপব্যবহার করা	बुरी तरह काम में लाना
লাঘব করা	घटाना, कम करना
ঘাস কর্তনকরা (ঘাস কাটা)	घास काटना
গুণ করা	गुणा करना
খুন করা (হত্যা করা)	खून करना

নাম করা	नाम लेना
সংকীর্ণ করা	तङ्ग करना
হস্তান্তর করা	हस्तान्तर करना
নামোল্লেখ করিয়া	नाम लेना
লক্ষ করা (টুকে রাখা)	नोट करना, टाँक लेना
অবগত করা	प्रकाश करना, मालूम करना
আজ্ঞাপালন করা	आज्ञापालन करना
মুছিয়া ফেলা	मिटाना, पोंछना
প্রতিরোধ করা (বাধা দেওয়া)	रोकना
ঐ ক্টিনি করা,	एवज़ी करना
অনুল্লেখ করা (বাদ দেওয়া)	छोड़ना
প্রকাশ করা (খুলিয়া দেওয়া)	खोलना, प्रकाश करना
বিবেচনা করা	विवेचना करना, विचार करना
উৎপীড়ন করা	दबाना, जुल्म करना
আদেশ করা	हुक्म देना
বলপ্রয়োগ করা	ज़ियादती करना, ज़बरदस्ती करना
অতিক্রম করা	पीछे छोड़ना, लङ्घन करना
অধিক দাবী করা	अधिक दाम लगाना
পরাজয় করা	जीतना, हराना
অধিক বোঝাই করা	अधिक बोझ लादना
অগ্রাহ্য করা	तरह देना, ख्याल न करना

তত্ত্বাবধান করা — देख भाल करना
অতিরিক্ত খাটান — अधिक काम करना
চিত্র করা — तस्वीर उतारना या बनाना
হ্রাস করা — घटाना
বিভাগ করা — विभाग करना, हिस्साकरना
ক্ষমা করা — क्षमा करना, माफ़ करना
সংলগ্ন করা — लगाना, जोड़ना
পথ প্রস্তুত করা — राह तैयार करना
প্রদান করা — देना
লোষ্ট্রাঘাত করা — पत्थर मारना
অনুভব করা — अनुभव करना, मालुम करना
সম্পন্ন করা — अञ्जाम देना, पूरा करना
মন দিয়া পাঠ করা — दिल लगा कर पढ़ना
অনুসরণ করা — अनुसरण करना, पीछा करना
বিদ্ধ করা — छेदना
অনুকম্পা করা — दया करना
স্থাপন করা — रखना
উৎপাটন করা — तोड़ लेना, उखाड़ना
কলঙ্কিত করা — कलङ्कित करना
বিলম্ব করা — देर करना
প্রশংসা করা — प्रशंसा करना, तारीफ़ करना
প্রার্থনা করা — प्रार्थना करना

পূর্ব্বে যোগ করা	पहिले मिलाना
উপহার প্রদান করা	उपहार देना
মুদ্রিত করা	छापना
লাভ করা	पाना
যোগাড় করা	जोगाड करना, घुटाना
পরিস্কার করা	साफ़ करना
পবিত্র করা	पवित्र करना
উপযুক্ত করা	उपयुक्त करना
বিচ্ছিন্ন করা	टुकड़े टुकड़े करना
বাতিল করা	मनसूख करना
শান্ত করা	बुझाना, ठण्ढा करना
নীরব করা	चुप करना
উদ্ধৃত করা	उद्धृत करना, उल्लेख करना
মঞ্জুর করা	मञ्जूर करना
পাঠ করা	पढना
তিরস্কার করা	झिडकना
গ্রহণ করা	पाना, लेना
পুনরুক্তি করা	बार २ कहना, दुहराना, दुबारा कहना या लिखना
সুপারিস করা	सिफ़ारिश करना
মিলন করা	मेल करना
লিপিবদ্ধ করা	लिखना

পুনরুদ্ধার করা	पुनरुद्धार करना
পুনর্লাভ করা	पुनर्लाभ करना, फिरसे पाना
অস্বীকার করা	अस्वीकार करना, इंकार क०
অনুতাপ করা	अनुताप करना, अफसोस क०
বর্ণনা করা	बयान करना
শিথিল করা	ढीला करना
মুক্ত করা	छोड़देना
ত্যাগ করা	त्यागना, छोड़ना
মন্তব্য প্রকাশ করা	राय देना
স্থানান্তর করা	हटाना, स्थानान्तर करना
মেরামত করা	मरम्मत करना
দমন করা	दमन करना
বিমুখ করা	विमुख करना
অনুরোধ করা	अनुरोध करना, दरख्वास्त क०
কার্য্যত্যাগ করা	इस्तीफ़ा देना, काम छोड़ना
প্রতিজ্ঞা করা	प्रतिज्ञा करना, प्रण करना
সম্মান করা	सम्मान करना
উত্তর করা	जवाब देना, उत्तर देना
সীমাবদ্ধ করা	सीमाबद्ध करना
খুচরা বিক্রয় করা	फुटकर बिक्री करना
প্রতিশোধ গ্রহণ করা	बदला लेना
প্রত্যুত্তর করা	जवाब पर जवाब देना

বিনষ্ট করা (ধ্বংস করা)	बरबाद का
শাসন করা	शासन कर
লুণ্ঠন করা	लूटना
উৎসর্গ করা	बलिदान देना, अर्पण करना
সন্তুষ্ট করা	सन्तुष्ट करना
বিকীর্ণ করা	छितराना
দগ্ধ করা	जलाना, झुलसाना
নখাঘাত করা	नाखून से खरोचना
প্রলোভিত করা	फुसलाना
দর্শন করা (দেখা)	देखना
অনুসন্ধান করা	तलाश करना
আক্রমণ করা	आक्रमण करना
বিক্রয় করা	बेचना
দণ্ডাজ্ঞা প্রদান করা	सज़ाका हुक्म देना
সেবা করা	सेवा करना
চাকরী করা	चाकरी करना
গঠন করা	डौल डालना
ধারাল করা	तेज़ करना
ক্ষৌর কার্য্য করা	हजामत बनाना
আশ্রয় দেওয়া	आश्रय देना
গুলি করা	गोली मारना
সংক্ষেপ করা	संक्षेप करना

বন্ধ করা	बन्द करना
স্বাক্ষর করা	दस्तखत करना
নির্বাক করা	चुप करना
সরল করা	सरल करना
কোমল করা	कोमल करना
সান্ত্বনা করা	शान्त करना
বানান্ করা	हिज्जे करना
অস্ত্র বিদ্ধ করা	छुरी मारना, घायल करना
চুরি করা	चोरी करना
উত্তেজিত করা	उत्तेजित करना, उकसाना
শ্বাসরোধ করা	गला घोटना, साँस बन्दकरना
সহন করা	सहना
গ্রহণ করা (লওয়া)	लेना
ব্যক্ত করা (বলা)	कहना, ज़ाहिर करना
ভীত করা	डराना
পরীক্ষা করা	परीक्षा करना, आज़माना
ধন্যবাদ করা	धन्यवाद देना
তৃণাচ্ছাদিত করা	छप्पर छाना
মনে করা	सोचना, ख्याल करना
নিক্ষেপ করা	फेंकना
বন্ধন করা	बाँधना
শৃঙ্খলমুক্ত করা	बेड़ी खोलना

ব্যবহার করা	व्यवहार करना, काममें लाना
সত্য বলিয়া প্রমাণ করা	सच बोलकर प्रमाण करना
আবশ্যক বোধ করা	चाहना, जरूरी समझना
বয়ন করা (বুনা)	बिनना
সম্মত হওয়া	राजी होना
স্নান করা	स्नान करना
হওয়া	होना
নমস্কার করা	नमस्कार करना
প্রজ্জ্বলিত হওয়া	जलना, प्रज्ज्वलित होना
রোদন করা	रोना
ক্রন্দন করা	रोना
স্বপ্ন দেখা	सुपना देखना
বিফল হওয়া	विफल होना
পড়া	गिरना
উপবাস করা	उपवास करना
যুদ্ধ করা	लड़ना
পলায়ন করা	भागना
মরিয়া যাওয়া	मरजाना
যাওয়া	जाना
ঘটা	होना
আশা করা	आशा करना
ঠাট্টা করা	हँसी करना

লাফান	कूदना, उछलना
মিথ্যাবলা	झूँठ बोलना
বাস করা	रहना
উঁকিমারা	झाँकना
প্রার্থনা করা	प्रार्थना करना
বিবাদ করা	झगड़ा करना
উঠা	उठना
দৌড়ান	दौड़ना
বোধ হওয়া	मालुम होना
গান করা	गाना
বসা	बैठना
ঘুমান	सोना
হাস্য করা	मुस्कराना, हँसना
দাঁড়ান	खड़ा होना
যাত্রা করা	चलना, रवानः होना
থাকা	ठहरना
থামা	रोकना, ठहरना
সফল হওয়া	सफल होना
সাঁতার দেওয়া	तैरना
শপথ করা	क़सम खाना
কথা বলা	बातचीत करना
অদৃশ্য হওয়া	नज़रसे गायब होना

অপেক্ষা করা	बाट देखना
বেড়ান	सैर करना, घूमना, फिरना
কার্য্যকরা	काम करना
লেখা	लिखना
হাইতোলা	जमुहाई लेना
জাগরিত করা	जगाना
জাগরিত হওয়া	जागना
বহন করা	लेजाना, ढोना
প্রহার করা	मारना
আরম্ভ করা	आरम्भ करना
আজ্ঞা করা	आज्ञा देना
কামড়ান	काटना, डंकमारना
বহা	बहना
ফাটিয়া যাওয়া	फटना
খণ্ডিত করা	खण्डित करना, चीरना
লগ্ন হওয়া	चिपटना, लगना
আসা	आना
কা কা করা	काँव काँव करना
খনন করা	खोदना
টানা	खींचना .
পান করা	पीना
চালান	हाँकना, चलाना

খাওয়া	खाना
পতিত হওয়া	गिरना
দেখা	देखना
উড়া	उड़ना
ক্ষান্ত থাকা	मचना
ভুলিয়া যাওয়া	भूलजाना
জমিয়া যাওয়া	जमना
পাওয়া	पाना
গুঁড়া করা	पीसना
ঝুলান	लटकाना
ফাঁসি দেওয়া	फांसी देना
গোপন করা	छिपाना
জানা	जानना
বোঝাই করা	लादना
শয়ন করা	लेटना
গলান	गलाना
পক্ষ সমর্থন করা	वकालत करना
আরোহণ করা	सवार होना, चढ़ना
পচা	सड़ना
করাত দিয়া কাটা	आरे से काटना
চরা	चराना
সিলাই করা	सीना

কম্পিত হওয়া	काँपना
ক্ষৌরী করা	हजामत करना
লোম বর্জন করা	बाल काटना
উজ্জ্বল হওয়া	चमकना
গুলি করা	गोली मारना
দেখান	दिखाना
সঙ্কুচিত হওয়া	सुकड़ना
মগ্ন হওয়া	डूबना
বসা	बैठना
বপন করা	बोना
সূতাকাটা	सूत कातना
থুথু ফেলা	थूकना
লাফান	छलाँग मारना, कूदना
চুরি করা	चोरी करना
সংযুক্ত থাকা	चिपका रहना, लगा रहना
দড়িতে গাঁথা	डोरी बाँधना
ফুলিয়া উঠা	फूलना
দোলা	झूलना, हिलना
লওয়া	लेना
ছিন্ন করা	फाड़ना
ছেঁড়া	फाड़ना, चीरना
বর্দ্ধিত হওয়া	बढ़ना

নিক্ষেপ করা	फेंकना
মাড়ান	कुचलना
জাগা	जागना
পরিধান করা	पहिनना
বস্ত্র বুনা	कपड़ा बिनना
নত হওয়া	झुकना
বঞ্চিত করা	वञ्चित करना
মিনতি করা	मिन्नत करना
রক্ত বাহির করা	खून बहाना
বস্ত্র পরা	कपड़े पहिनना
খরচ হওয়া	खर्च होना
সাহস করা	हिम्मत करना
অনুভব করা	मालुम करना
প্রবাহিত হওয়া	बहना
সোনালী করা	सुनहली करना
বেষ্ঠন করা	लपेटना, ढकना
রাখা	रखना
ভ্রমণ করা	घूमना
হাঁটু গাড়িয়া বসা	घुटनों के बल बैठना
স্থাপন করা	स्थापन करना
ত্যাগ করা	छोड़ना
প্রজ্বলিত করা	रोशन करना, जलाना

হারান	खोना, गँवाना
শিক্ষা করা	सिखाना
প্রস্তুত করা	बनाना
সাক্ষাৎ করা	मिलना, मुलाक़ात या भेट करना
টাকা দেওয়া	रुपया देना
আকর্ষণ করা	खींचना
দয়া করা	दया करना
যোগ্য করা	योग्य करना, फिट करना
অন্বেষণ করা	तलाश करना
পাঠান	भेजना
অস্ত যাওয়া	अस्त होना
বিস্তার করা	फैलाना
ঝাঁট দেওয়া	झाड़ना
মনে করা	ख्याल करना, समझना
প্রবেশ করাইয়া দেওয়া	घुसेड़ना
অশ্রুবর্ষণ করা	रोना, आँसू बरसना
আর্দ্র করা	भिजोना
ভিজান	भिगोना
সান দেওয়া	धार धरना

क्रिया विशेषण ।

আগে (গত হইল)	आगे (गत हइल)	गुज़रा हुआ, बीता हुआ
পূর্ব্বেই	पूर्ब्बेइ	पहिले ही
শনৈঃ	शनैः	धीरे धीरे
তখন, তৎপরে	तखन, तत्परे	तब, उसके बाद
এখন	एखन	अब, इस समय
তৎক্ষণ	ततक्षण	तब
পূর্ব্বে	पूर्ब्बे	पहिले, आगे
শীঘ্র	शीघ्र	शीघ्र, जल्दी
অবিলম্বে	अविलम्बे	तुरन्त, झटपट
প্রত্যহ	प्रत्यह	रोज़रोज
প্রতি বৎসর	प्रति वत्सर	हर साल
গতকল্য	गतकल्य	गया कल
আগামী কল্য	आगामी कल्य	आनेवाला कल
দীর্ঘকাল	दीर्घकाल	बहुत देर
কদাচিৎ	कदाचित्	कदाचित, शायद
ক্বচিৎ	क्वचित्	कदाचित, कभी'२
কখন কখন	कखन कखन	कभी कभी
এই সময় মধ্যে	एइ समय मध्ये	इतने में
কিছু পূর্ব্বে	किछु पूर्ब्बे	थोड़े दिन हुए

তৎক্ষণাৎ	ततक्षणात्	तुरन्त, फौरन
সর্ব্বদা	सर्व्वदा	हमेशा, सदा
পুনঃপুনঃ	पुनःपुनः	फिर फिर, बार २
আবার	आवार	फिर
কখন	कखन	कभी
কখন না	कखन ना	कभी नहीं
প্রায়ই	प्रायइ	प्रायः, अक्सर
বারম্বার	वारम्बार	वारम्बार, फिर २
একবার	एकबार	एकबार, एकदफा
দুইবার	दुइबार	दोबार
তিনবার	तिनबार	तीनबार, तीनदफा
দেরি করিয়া	देरि करिया	देर करके
সম্প্রতি	सम्प्रति	हालमें, अभी
এ যাবৎ	ए जावत्	अब तक
সকাল সকাল	सकाल सकाल	सबेरे
হঠাৎ	हठात्	अचानक
উচিত সময়ে	उचित समये	उचित समय पर
উপরে	उपरे	ऊपर
নীচে	नीचे	नीचे
তথায়	तथाय	वहाँ
কোথায়	कोथाय	कहाँ, किस जगह
যেখানে	जेखाने	जहाँ, जिस जगह

এখানে	एखाने	यहाँ
এইস্থান পর্য্যন্ত	एइस्थान पर्य्यन्त	इधर, यहाँतक
ঐ স্থান পর্য্যন্ত	ऐ स्थान पर्य्यन्त	उधर, वहाँतक
একদিকে	एकदिके	एक तरफ
একত্র	एकत्र	इकट्ठा
ভিতরে	भितरे	भीतर
বাহিরে	बाहिरे	बाहर
উচ্চৈঃস্বরে	उच्चै स्वरे	ऊँचे स्वरसे
যেমন, যে প্রকারে	जेमन, जे प्रकारे	जैसे, जैसा
খারাপরূপে	खारापरूपे	बुरी तरह से
উত্তমরূপে	उत्तमरूपे	अच्छी तरह से
উপযুক্তরূপে	उपयुक्तरूपे	उचित रूपसे
যথার্থরূপে	यथार्थरूपे	यथार्थ रूपसे
যথেষ্টরূপে	यथेष्टरूपे	यथेष्ट रूपसे
সম্পূর্ণরূপে	सम्पूर्णरूपे	सम्पूर्ण रूपसे
আংশিকরূপে	आंशिकरूपे	आंशिक रूपसे
সাবধানে	सावधाने	सावधानी से
সাহসের সহিত	साहसेर सहित	साहस से
আস্তে আস্তে,	आस्ते आस्ते	धीरे धीरे
সহজে	सहजे	सहज में
নীরবে	नीरवे	चुपचापसे
বুদ্ধির সহিত	बुद्धिर सहित	बुद्धिमानी से

কি প্রকারে	कि प्रकारे	कैसे, किस तरहसे
স্থির ভাবে	स्थिर भावे	स्थिरतासे, शान्तिसे
এইরূপে	एइरूपे	इस तरह
দুঃখের সহিত	दुःखेर सहित	दुःखसे
অবহেলার সহিত	अवहेलार सहित	बेपरवाहीसे
অসাবধান ভাবে	असावधान भावे	असावधानीसे
অনুগ্রহ পূর্ব্বক	अनुग्रह पूर्ब्बक	अनुग्रह पूर्वक
সৌভাগ্যক্রমে	सौभाग्यक्रमे	सौभाग्यसे
দুর্ভাগ্যক্রমে	दुर्भाग्यक्रमे	दुर्भाग्यसे
প্রায়	प्राय	लगभग
অত্যন্ত	अत्यन्त	अत्यन्त
অতিরিক্ত রূপে	अतिरिक्त रूपे	अधिक, बहुतही
অধিক পরিমাণে	अधिक परिमाणे	बहुत
মাত্র	मात्र	सिर्फ़, केवल
সম্পূর্ণ পরিমাণে	सम्पूर्ण परिमाणे	बिल्कुल
কিয়ৎ পরিমাণে	कियत् परिमाणे	कुछ कुछ
অর্দ্ধেক পরিমাণে	अर्द्धेक परिमाणे	आधा
অল্প পরিমাণে	अल्प परिमाणे	थोड़ा
সমস্ত পরিমাণে	समस्त परिमाणे	सब
আরও	आरओ	और भी
প্রথমতঃ	प्रथमतः	पहिले, आदिमें
দ্বিতীয়তঃ	द्वितीयतः	दूसरे

তৃতীয়তঃ	तृतीयतः	तीसरे
চতুর্থতঃ	चतुर्थतः	चौथे
পরে	परे	पीछेवाला, बादका
শেষে	शेषे	अन्तमें
কিজন্য, কেন	किजन्य, केन	क्यों, किस लिये
অতএব	अतएव	इसवास्ते
যেজন্য	जेजन्य	जिस लिये
কিজন্য	किजन्य	किस लिये
তদনুসারে	तदनुसारे	तदनुसार
সুতরাং	सुतरां	लिहाज़ा, इसवजहसे
হাঁ	हाँ	हाँ
না	ना	न, नहीं
নিঃসন্দেহে	निःसन्देहे	निस्सन्देह
নিশ্চয়	निश्चय	निश्चय
বাস্তবিক	वास्तविक	सचमुच
হয়ত	हयत	शायद
সম্ভবতঃ	सम्भवतः	कदाचित

सम्बन्ध बोधक अव्यय ।

পরে	परे	बाद, पीछे
মধ্যে	मध्ये	मध्य, दर्म्यान
তে	ते	पर
ারা	द्वारा	द्वारा
নিকটে	निकटे	पास, निकट
ন্য	जन्य	वास्ते, लिये
হইতে	हइते	से
ভিতরে	भितरे	भीतर
র	र	का, के, की
এর	एर	का, के, की
দূরে	दूरे	दूर
উপরিভাগে	उपरिभागे	ऊपर
সম্বন্ধে	सम्बन्धे	सम्बन्धमें, बाबत
মধ্য দিয়া	मध्य दिया	आर पार, में से
অতীত	अतीत	बीता हुआ
পর্য্যন্ত	पर्य्यन्त	तक
প্রতি, তে	प्रति, ते	प्रति, में
দিকে	दिके	तरफ़
নিম্নে	निम्ने	नीचे
তলে	तले	तले

সহিত	सहित	सहित, साथ, से
ব্যতীত	व्यतीत	सिवाय
চারিদিকে	चारिदिके	चारों तरफ़
বিরুদ্ধে	विरुद्धे	विरुद्ध
এপার ওপার	एपार ओपार	आरपार
সত্বে	सत्वे	तथापि
আশে পাশে	आशे पाशे	आस पास
পার্শ্বে	पार्श्वे	पास
সম্মুখে	सम्मुखे	सामने
অগ্রে	अग्रे	आगे
পশ্চাতে	पश्चाते	पीछे
যে পর্য্যন্ত না	जे पर्य्यन्त ना	जबतक न

पांचवाँ अध्याय।

प्रथम पाठ।

আমি হই	आमि हइ	मैं हूँ
আমরা হই	आमरा हइ	हमलोग हैं
আমি আছি	आमि आछि	मैं हूँ
আমরা আছি	आमरा आछि	हमलोग हैं
তুই হ'স্	तुइ ह'स्	तू है
তোমরা হও	तोमरा हश्रो	तुमलोग हो
তুই আছিস্	तुइ आछिस्	तू है
তোমরা আছ	तोमरा आछ	तुमलोग हो
সে হয	से हय	वह है
তাহারা হয	ताहारा हय	वे हैं
সে আছে	से आछे	वह है
তাহারা আছে	ताहारा आछे	वे हैं
তিনি হন্	तिनि हन	वह है

दूसरा पाठ ।

আমি ছিলাম	आमि छिलाम	मैं था
আমরা ছিলাম	आमरा छिलाम	हम लोग थे
আমি হইয়াছিলাম	आमि हइयाछिलाम	मैं हुआ था
আমরা হইয়াছিলাম	आमराहइयाछिलाम	हम लोग हुए थे
তুই ছিলি	तुइ छिलि	तू था
তোমরা ছিলে	तोमरा छिले	तुम लोग थे
তুই হইয়াছিলি	तुइ हइयाछिलि	तू हुआ था
তোমরা হইয়াছিলে	तोमरा हइयाछिले	तुम लोग हुए थे
তিনি ছিলেন	तिनि छिलेन	वह था
তুমি ছিলে	तुमि छिले	तुम थे
তিনি হইয়া ছিলেন	तिनि हइया छिलेन	वह था
তাঁহারা ছিলেন	ताँहारा छिलेन	वे लोग थे
ইহা ছিল	इहा छिल	यह था
ইহা হইয়াছিল	इहा हइयाछिल	यह हुआ था

तीसरा पाठ ।

আমি হইব	आमि हइब	मैं हूँगा
তিনি থাকিবেন	तिनि थाकिबेन	वह रहेगा
আমি থাকিব	आमि थाकिब	मैं रहूँगा

তিনি হইবেন	तिनि हइबेन	वह होगी
তুই হইবি	तुइ हइबि	तू होगा
তিনি থাকিবেন	तिनि थाकिबेन	वह रहेगी
তুই থাকিবি	तुइ थाकिबि	तू रहेगा
ইহা হইবে	इहा हइबे	यह होगा
তিনি হইবেন	तिनि हइबेन	वह होगा
ইহা থাকিবে	इहा थाकिबे	यह रहेगा
আমরা হইব	आमरा हइब	हमलोग होंगे.
তোমরা হইবে	तोमरा हइबे	तुमलोग होगे
তাহারা হইবে	ताहारा हइबे	वे लोग होंगे

चौथा पाठ।

আমার আছে	आमार आछे	मेरा है
তোর আছে	तोर आछे	तेरा है
আপনার আছে	आपनार आछे	आपका है
তাহার আছে	ताहार आछे	उसका है
তাঁহার আছে	ताँहार आछे	उसकी है
ইহার আছে	इहार आछे	यह रखता है
আমাদের আছে	आमादेर आछे	हम लोगोंका है
তোমাদের আছে	तोमादेर आछे	तुम लोगोंका है

তোমার আছে	तोमार आछे	तुम्हारा है
তাহাদের আছে	ताहादेर आछे	उनका है

पाँचवां पाठ।

আমার ছিল	आमार छिल	मेरा था
তোর ছিল	तोर छिल	तेरा था
তাহার ছিল	ताहार छिल	उसका था
আমাদের ছিল	आमादेर छिल	हम लोगोंका था
তোমাদের ছিল	तोमादेर छिल	तुम लोगोंका था
তাহাদের ছিল	ताहादेर छिल	उन सबका था

छठा पाठ।

আমি যাই	आमि जाइ	मैं जाता हूँ
তুমি যাও	तुमि जाओ	तुम जाओ
সে যায়	से जाय	वह जाता है
আমরা যাই	आमरा जाइ	हमलोग जाते'
তোমরা যাও	तोमरा जाओ	तुमलोग जाते'
তাহারা যায়	ताहारा जाय	वे लोग जाते हैं

नोट :—हिन्दी में पुरुष को "वह जाता है" और स्त्री को "वह जाती है" ऐसा लिखते हैं अर्थात् अगर कर्त्ता पुल्लिंग होता है तो क्रिया भी पुल्लिंग होती है लेकिन बंगला में यह भेद नहीं है। उसमें पुरुष और स्त्री दोनों को "से जाय" लिख सकते हैं।

सातवां पाठ।

আমি গিয়াছিলাম	मैं गया था।
তুমি গিয়াছিলে	तुम गये थे।
সে গিয়াছিল	वह गया था।
আমরা গিয়াছিলাম	हम गये थे।
তোমরা গিয়াছিলে	तुम लोग गये थे।
তাহারা গিয়াছিল	वे लोग गये थे।

नोट :—हिन्दीमें एक बचन और बहु बचन की क्रिया में भी फर्क होता है। जैसे "मैं गया" और "हम गये" किन्तु बङ्गला में यह भेद नहीं होता। जैसे "आमि गियाछिलाम" और "आमरा गियाछिलाम"।

आठवां पाठ।

আমি যাইব	मैं जाऊँगा।
তুমি যাইবে	तुम जाओगे।

সে যাইবে	वह जायगा
আমরা যাইব	हम जायँगे।
তোমরা যাইবে	तुम लोग जाओगे।
তাহারা যাইবে	वे लोग जावेंगे।

नोट :—हिन्दी में भविष्यत् कालका चिन्ह "ग" है वैसेही बङ्गला में "ব" है। जिस तरह हिन्दीमें लिङ्ग पुरुष और वचनके अनुसार "गा, गी, गी" रूप हो जाते हैं वैसे ही बँगला में भी "ব, বে, বি" रूप हो जाते हैं।

नवां पाठ।

আমি গিয়াছি	मैं गया हूँ।
তুমি গিয়াছ	तुम गये हो।
সে গিয়াছে	वह गया है।
আমরা গিয়াছি	हम गये हैं।
তোমরা গিয়াছ	तुम लोग गये हो।
তাহারা গিয়াছে	वे लोग गये हैं।

दशवां पाठ।

আমি যাইতেছি	मैं जा रहा हूँ।
তুমি যাইতেছ	तुम जा रहे हो
সে যাইতেছে	वह जा रहा है

আমরা যাইতেছি	हम जा रहे हैं।
তোমরা যাইতেছ	तुम लोग जा रहे हो।
তাহারা যাইতেছে	वे लोग जा रहे हैं।

ग्यारहवां पाठ।

আমি যাইতেছিলাম	मैं जा रहा था।
তুমি যাইতেছিলে	तुम जा रहे थे।
সে যাইতেছিল	वह जा रहा था।
আমরা যাইতেছিলাম	हम जा रहे थे।
তোমরা যাইতেছিলে	तुम लोग जा रहे थे।
তাহারা যাইতেছিল	वे लोग जा रहे थे।

बारहवां पाठ।

আমি গেলেও যেতে পারি	मैं जा सकता हूँ (सम्भवाना)
আমি গেলেও যেতে পারিতাম	मैं जा सकता था।
আমি যাইতে পারি	मैं जा सकता हूँ (शक्ति)
আমি যাইতে পারিতাম	मैं जा सकता था।
আমাকে যাইতে হইবে	मुझे जाना हो होगा (अवश्य)
আমাকে যাইতে হয়	मुझे जाना पड़ता है।
আ কে যাইতে হইয়াছিল	मुझे जाना पड़ा था।

আমাকে যাইতে হইবে	मुझे जाना होगा।
আপনি দীর্ঘজীবী হউন	आप दीर्घजीवी होवें।
তোমার যাওয়া উচিত	तुमको जाना उचित है।
তোমার যাওয়া উচিত ছিল	तुम्हें जाना उचित था।

तेरहवां पाठ।

সেখানে যাও	वहाँ जाओ।
ইহা করিও না	यह मत करो।
পড়িতে আরম্ভ কর	पढ़ना शुरू करो।
সেখানে যাইও না	वहाँ मत जाओ।
আমাকে একটা কলম দাও	मुझे एक कलम दो।
তাহাকে মারিও না	उसको मत मारो।
আমাদিগকে যাইতে দাও	हमें जाने दो।
তাহাকে ছাড়িয়া দাও	उसे छोड़ दो।

चौदहवां पाठ।

চুরি করিও না	चोरी मत करो।
তাহাকে ছাড়িয়া দাও	उसे छोड़ दो।
সে লিখুক	उसे लिखने दो।

এস আমরা লিখি	আম্মী হম লিখেঁ।
অবিলম্বে এই কাজটা কর	তুম কামকো জল্‌দী করো।
এই কার্য্যটী কর	যহ কাম করো।
মাতাপিতার কথা শুনিও	মা বাপকী বাত সুনো।
সদা সত্য কথা বলিও	সদা সচ বাত বোলো।
পরিষ্কার পরিচ্ছন্ন থাকিও	সাফ সুথরে রহো।
ঈশ্বরকে ধন্যবাদ দাও	ঈশ্বরকো ধন্যবাদ দো।
আমাকে দেখিতে দাও	মুঝে দেখনে দো।

ছঠা অধ্যায়।

প্রথম পাঠ।

এই দেখ	দুধর দেখো (যহ দেখো)
সেখানে যাও	বহাঁ জাও।
ইহা করিও না	যহ মত করো।
সেখানে যাইও না	বহাঁ মত জাও।
পা চালিয়ে চল	জল্দী জল্দী চলে চলো।
শীঘ্র বাড়ী যাও	জল্দী ঘর জাও।
আসল কথা বল	অসল বাত কহো।
পড়িতে ২ গল্প করিও না	পঢ়নেকে সময বাত মত করো।
শাস্তি গ্রহণ কর	দণ্ড গ্রহণ করো।
জামা পর	কুরতা পহনো।
শিক্ষককে বিশ্বাস কর	শিক্ষক পর ভরোসা করো।
আয় বুঝিয়া ব্যয় কর	আমদনী দেখকর খর্চ করো।
অন্ততঃ আমাকে দশ টাকা দাও	কমসে কম দশ রুপয়ে দো।
কথা ফিরাইয়া লইও না	বাত মত বদলো।

সময়ে পরিশ্রম কর	समय पर काम करो।
বুড়ুল রেখে দাও	कुल्हाड़ी रख दो।
অন্যের উপর নির্ভর করিও না	दूसरों पर निर्भर मत रहो।
তোমার ভুল সংশোধন কর	अपनी भूल सुधारो।
এই বাক্যটী মুখস্থ কর	इस वाक्यको कण्ठस्थ करो।
কাহাকেও একথা বলিও না	किसोसे यह बात मत कहना।
যদি ভাল চাও, লোকের ভাল কর	अगर भला चाहते हो दूसरों, का भला करो।

दूसरा पाठ।

কাহারও সহিত বাজী রাখিও না
किसी के साथ बाजी मत लगाना।

সত্য বলিতে ভীত হইও না　　सत्य बोलनेमें मत डरो।

তাহার সহিত বিবাদ মিটাইয়া ফেল उससे झगड़ा मिटा दो।

অঙ্গিকারেব পূর্ব্বে দুইবার ভাবা উচিত।
वादा करनेसे पहले दो बार विचारना उचित है।

অসাক্ষাতে কাহারও নিন্দা করিও না।
पोठ पीछे किसोकी निन्दा मत करना।

তোমার বলের বড়াই করিও না।
अपनी बलकी सेखी मत मारना।

আর আমায় সন্দেহে রেখো না।
मुझे और सन्देह में न रक्खो।
চোরকে সিঁড়ির উপর থেকে নিচে টেনে আন।
चोरको सीढ़ीके ऊपर से नीचे खींच लाओ।
তুমি কি আমার উপর রাগ করিয়াছ ?
क्या तुम मुझपर गुस्सा हो ?
অনুগ্রহ করিয়া আমাকে একখানি পুস্তক পড়িতে দি
अनुग्रह करके मुझे एक पुस्तक पढ़नेको दो।

ॐ

तीसरा पाठ।

এই বালককে ক্ষমা করো	इस बालकको क्षमा करो।
এমন কথা বলিও না	ऐसी बात मत कहो।
আলস্য পরিত্যাগ কর	सुस्ती छोड़ो।
দূর হও	दूर हो।
ইহার নিদ্রা ভঙ্গ করিও না	इसकी निद्रा भङ्ग मत करो।
বৃদ্ধকে সমাদর কর	बूढ़ेका आदर करो।
শত্রুকেও ভাল বাসিও	दुश्मनका भी भला चाहो।
দরজাটা বন্দ কর	दरवाज़ा बन्द करो।
সৎকার্য্যে পরিশ্রান্ত হইও না	अच्छे काममें मत थको।

चौथा पाठ।

সে কি পীড়িত ?	क्या वह बीमार है ?
তুমি কি বাড়ী যাইবে ?	क्या तुम घर जाओगे ?
মোহন কি গিয়াছে ?	क्या मोहन गया है ?
আমি কি পড়া করি নাই ?	क्या मैंने सबक़ नहीं पढ़ा ?
তিনি কি আসিতেছেন ?	क्या वह आरहे हैं ?
তুমি কি ফিরিবে ?	क्या तुम वापिस आओगे ?

पांचवां पाठ।

তুমি কি ইহা জান ?	क्या तुम इसे जानते हो ?
সে কি তথায় যায় ?	क्या वह वहाँ जाता है ?
হরি কি হাসিয়াছিল ?	क्या हरी हँसा था ?
তুমি কি তথায় গিয়াছিলে ?	क्या तुम वहाँ गये थे ?

তুমি কি তাঁহার কাছে কোন সাহায্য পাইয়াছিলে ?
क्या तुमने उससे कुछ सहायता पाई थी ?

छठा पाठ।

প্রশ্ন—তুমি কি সাঁতার দিতে পার ?
प्रश्न—क्या तुम तैर सकते हो ?

উত্তর—হাঁ পারি।

उत्तर—हाँ सक्ता हूँ।

প্রশ্ন—সেন কি ভুলে যায় ?

प्रश्न—क्या तुम स्कूल जाता है ?

উত্তর—হাঁ যায়।

उत्तर—हाँ, जाता है।

উত্তর—না যায় না। नहीं, वह नहीं जाता।

প্রশ্ন—সে কি বাটী গিয়াছে ?

प्रश्न—क्या वह घर गया है।

উত্তর—হাঁ গিয়াছে ?

उत्तर—हाँ, गया है।

প্রশ্ন—তাহারা কি গান করিয়াছিল ?

प्रश्न—क्या उन्होंने गाया था ?

উত্তর—হাঁ করিয়াছিল।

उत्तर—हाँ, गाया था।

উত্তর—না করে নাই। नहीं, उन्होंने नहीं।

প্রশ্ন—তুমি কি কখনও একথা বলিয়াছিলে ?

प्रश्न—क्या तुमने यह बात कभी कही थी ?

উত্তর—না, বলি নাই।

उत्तर—नहीं, नहीं कही।

প্রশ্ন—তাহার কি এ কাজ করা উচিত ?

प्रश्न—क्या उसको यह काम करना उचित है ?

উত্তর—না, নিশ্চয়ই না।
उत्तर—नहीं, निश्चय ही नहीं।

सातवां पाठ।

তুমি কি বাটীতে থাকিবে ?	क्या तुम घर पर रहोगी ?
এখন কি বৃষ্টি হইবে ?	क्या अब मेह बरसेगा ?
সে কি এখন যাইবে ?	क्या वह अब जायगा ?
তিনি কি দণ্ডিত হইবেন ?	क्या उन्हें सज़ा होगी ?
আমি কি এখন যাইব ?	क्या मैं अभी जाऊँगा ?
রাম কি এবার পরীক্ষা দিবে ?	राम क्या इस साल परीक्षा देगा ?

आठवां पाठ।

কে এ কাজ করিয়াছে ?	यह काम किसने किया है ?
কোনটী নূতন ?	कौन नया है ?
তোমার কি হইয়াছে ?	तुम्हें क्या हुआ है ?
এ শ্লেটখানা কাহার ?	यह स्लेट किसकी है ?
কে একথা বলিল ?	किसने यह बात कही ?

नवां पाठ ।

তুমি কে ? तुम कौन हो ?
এ ছেলেটা কে ? यह लड़का कौन है ?
এ কি ? यह क्या है ?
তাহার কি হইয়াছে ? उसका क्या हाल है ?
তুমি কি চাও ? तुम क्या चाहते हो ?
আপনি কাহাকে খোঁজেন ? आप किसको चाहते हैं ?
তুমি কাহার অনুসন্ধান কর ? तुम किसको तलाश करते हो ?
তুমি কখন ফিরিয়া আসিবে ? तुम कब लौटोगे ?
তুমি এখন কেমন আছ ? तुम अब कैसे हो ?
তুমি কেন আমাকে পত্র লেখনা ?
तुम मुझे पत्र क्यों नहीं लिखते ?

दशवां पाठ ।

তুমি কাহাকে ডাকিয়া পাঠাইয়াছিলে ?
तुमने किसे बुला भेजा था ?
তুমি কোথায় যাও ? तुम कहां जाते हो ?
তুমি কখন আসিবে ? तुम कब आओगे ?
হরি কখন ফিরিয়া আসিবে ? हरि कब लौटेगा ?
তুমি কত চাও ? तुम कितना चाहते हो ?
ইহার মানে কি ? इसका मतलब क्या है ?

সুশীলার বিবাহ কবে হইবে ?	सुशीलाका विवाह कब होगा ?
তুমি কবে টাকা দিবে ?	तुम कब रुपया दोगे ?
তুমি কোথায় যাইতে চাও ?	तुम कहाँ जाना चाहते हो ?
এ গ্রাম কেমন ?	यह ग्राम कैसा है ?
ট্রেন কখন ছাড়িবে ?	गाड़ी कब छूटेगी ?

ग्यारहवां पाठ।

তোমার কাল কি হইয়াছিল ?	कल तुमको क्या हुआ था ?
তোমার নাম কি ?	तुम्हारा नाम क्या है ?
সে কে ?	वह कौन है ?
সে কি করিবে ?	वह क्या करेगा ?
আমি কি এখন যাইব ?	मैं क्या अब जाऊँगा ?
হরি কি কলিকাতায় যাইবে ?	क्या हरि कलकत्ते जायगा ?
আর কে সেখানে যাইবে ?	वहाँ और कौन जायगा ?

बारहवां पाठ।

তুমি কি আমাকে মূর্খ মনে কর ?
क्या तुम मुझे मूर्ख समझते हो ?
তোমার কি কাণ্ডাকাণ্ড জ্ঞান নাই ?
क्या तुम्हें बुरे भलेका ज्ञान नहीं है ?

এত গোলমাল কিসের ?　इतना शोर क्यों होता है ? क्या गड़-
बड़ है ?
তুমি মূর্খের মত বক্‌ছ কেন ?
तुम मूर्खकी भाँति क्यों बक रहे हो ?
তোমার ছেলের বিবাহ কবে ?
तुम्हारे लड़केकी शादी कब है ?
কবে তোমার পিতার মৃত্যু হইয়াছে ?
तुम्हारे बापकी मृत्यु कब हुई ?
তুমি সকাল বেলা কখন খাও ?
तुम सवेरे कब खाते हो ?

———

तैंतइवाँ पाठ ।

তুমি রাত্রিতে কখন খাও ?
तुम रातको कब खाते हो ?
তোমায় কে চিকিৎসা করিতেছে ?
तुम्हारा इलाज कौन करता है ?
তুমি কি রকমের লোক হে ?
तुम किस किस्मके आदमी हो ?
আমি যা বল্‌ছি তা কি তুমি এখন করবে ?
मैं जो कहता हूँ क्या तुम वह अब करोगे

তুমি কালিদাসের শকুন্তলা পড়িয়াছ ?
क्या तुमने कालिदास की शकुन्तला पढ़ी है ?
তুমি কি এ বিষয়ে কাল ভেবে ছিলে ?
क्या तुमने कल इस विषयपर विचार किया था
এ বিষয়ে অধিক আর কি বলিব ?
इस विषयमें और क्या कहूँगा ?

चौदहवां पाठ ।

তোমার কোন্ পুস্তকখানি হারাইয়াছে ?
तुम्हारी कौन सी पुस्तक खो गई है ?
আপনি কোথায় হইতে আসিতেছেন ?
आप कहां से आ रहे हैं ?
আজকাল কয়টার সময় সূর্য্য অস্ত যায় ?
आजकल कितने बजे सूर्य्य अस्त होता है ?
এত টাকা আমি কোথায় পাইব ?
इतना रुपया मुझे कहां मिलेगा ?

पन्द्रहवां पाठ ।

তুমি কাহার কথা বলিতেছ ? तुम किसकी बात कहते हो ?
তুমি কি অন্ধ ? क्या तुम अन्धे हो ?

তুমি কি নির্দ্দয় ?	क्या तुम निर्दयी हो ?
আমাকে কি করিতে হইবে ?	मुझे क्या करना होगा ?
তুমি কোথা হ'তে আসছ ?	तुम कहांसे पाते हो ?
তুমি কেন কাঁদিতেছ ?	तुम क्यों रो रहे हो ?
তাহাকে রাগাও কেন ?	उसे गुस्सा क्यों कराते हो ?

একথা তোমাকে কে বলিয়াছে ?
यह बात तुमसे किसने कही ?
তুমি কতক্ষণ এখানে থাকিবে ?
तुम यहां कितनी देर तक रहोगे ?
তুমি কাল স্কুলে আস নাই কেন ?
तुम कल स्कूल क्यों नहीं आये ?

सोलहवां पाठ।

আমাকে ঐ বইখানা এনে দেবে ?
क्या मुझे यह किताब ला दोगे ?
তুমি কি পশুশালা দেখিতে যাবে ?
क्या तुम चिड़िया घर देखने जाओगे ?
তাহারা কি আমার উপদেশ মত কাজ করিবে ?
क्या वे मेरी सलाहके माफ़िक काम करेंगे ?
বালক মৃত্যুর কথা কি জানে ?
बालक मृत्यु की बात क्या जाने ?

তোমার ছেলে কেমন আছে ?

তুম্হারা লড়কা কৈসা হৈ ?

কে তোমার গাঁজাখোরী গল্প বিশ্বাস করিবে ?

তুম্হারী বেহুদা কাহানী পর কৌন বিশ্বাস করেগা ?

তুমি সত্য বলিতেছ, না ঠাট্টা করিতেছ ?

তুম সচ কহতে হো যা মসখরী কর রহে হো ?

सातवां अध्याय

प्रथम पाठ।

আমার অবকাশ নাই।	मुझे अवकाश नहीं है।
তাহার কলম নাই।	उसके पास क़लम नहीं है।
সে পড়িতে যায় নাই।	वह पढ़नेको नहीं जाता।
তাহার ঘোড়া নাই।	उसके घोड़ा नहीं है।
এ গ্রামে স্কুল নাই।	इस गांवमें स्कूल नहीं है।
ঘরে কেহ নাই।	घरमें कोई नहीं है।
আকাশে মেঘ নাই।	आकाशमें बादल नहीं है।
তাঁহার বন্ধু নাই।	उसके मित्र नहीं है।
তাহার নড়িবার শক্তি নাই।	उसको हिलनेकी शक्ति नहीं है
তাহার সামান্য জ্ঞানও নাই।	उसमें सामान्य ज्ञानभी नहीं है।
আমার এখন চাকরী নাই।	अब मेरी नौकरी नहीं है।
দোকানে চাউল নাই।	दूकानमें चावल नहीं है।
তাহার পুত্র নাই।	उसके लड़का नहीं है।

তিনি ধূমপান করেন না।	वह हुक्का नहीं पीते।
হরি ব্রাহ্মণ নহে।	हरि ब्राह्मण नहीं है।
তিনি অসুস্থ।	वह बीमार है।
আমি ধনবান লোক নহি।	मैं धनवान नहीं हूँ।
এ সহজ নয়।	यह आसान नहीं है।
তুমি দোষী নও।	तुम दोषी नहीं हो।

दूसरा पाठ

তুমি এ পদের উপযুক্ত নয়।
तुम इस पदके योग्य नहीं हो।
আমি তোমার সহিত যাইব না।
मैं तुम्हारे साथ न जाऊँगा।
আমি তোমাকে গালি দিই নাই।
मैंने तुम्हें गाली नहीं दी।

तीसरा पा:

*তাহারা আজ গান করিবে না।	वे आज नहीं गायेंगे।
তুমি ইহা কর নাই।	तुमने यह नहीं किया है।
সে পড়িতে যায় না।	वह पढ़नेको नहीं जाता।
আমি রাত্রে কাজ করি না।	मैं रातको काम नहीं करता।

একটীও কথা কহিও না।	एक शब्द भी मत कहो।
অতি ভোজন করিও না।	बहुत मत खाओ।
এখানে জায়গা নাই।	यहाँ जगह नहीं है।
আমি তথায় যাইব।	मैं वहाँ जाऊँगा।
আমার চক্ষু নষ্ট হইয়াছে।	मेरी आँखें नष्ट होगई हैं।
আমি বাড়ী যাইব।	मैं घर जाऊँगा।
আমি একটি ফুল দেখিয়াছি।	मैंने एक फूल देखा है।
আমার তৃষ্ণা পাইয়াছে।	मैं प्यासा हूँ।
আমার ক্ষুধা পাইয়াছে।	मैं भूखा हूँ।

चौथा पाठ।

আমার ঘুম পাচ্ছে।	मुझे नींद आती है।
তিনি হঠাৎ আসিয়াছিলেন।	वे यकायक आये।
এক এক জন করিয়া যাও।	एक एक करके जाओ।
আমার পয়সায় কাজ নাই।	मुझे पैसे की जरूरत नहीं है।
যেমন কর্ম্ম তেমনি ফল।	जैसा कर्म वैसा फल।
এখন সওয়া তিনটা হইয়াছে।	इस समय सवा तीन बजे हैं।
তিনি এই মাত্র আসিয়াছেন।	वे अभी आये हैं।
তিনি ভুল করিয়াছেন।	उन्होंने भूल की है।
আমি ভুলিব না।	मैं नहीं भूलूँगा।
আমাকে যেতে হবে।	मुझे जाना पड़ेगा।

তিনি পলাইয়া গিয়াছেন। वे भाग गये हैं।
বাতিটা নিবিয়া গিয়াছে। बत्ती बुझ गई है।
তিনি বাতিটা জ্বালিয়াছেন। उसने बत्ती जलाई है।

पाँचवां पाठ।

আমার এখনও লেখা হয় নাই।
मेरा लिखना अभी तक समाप्त नहीं हुआ है।
এই পল্লীতে ধনী লোক নাই।
इस गांवमें धनी लोग नहीं हैं।
তোমার কিছুমাত্র ক্ষমতা নাই।
तुम्हारी कुछ भी शक्ति नहीं है।
আমি কখনও গাছে উঠি নাই।
मैं कभी पेड़पर नहीं चढ़ा।
আমাদের একটাও বাটী নাই।
हमारे एक भी घर नहीं है।
আমি গতকল্য বাটী যাই নাই।
मैं कल घर नहीं गया।
সেখানে কাহাকেও দেখি নাই।
वहाँ किसीको नहीं देखा।
আমার হাতে একটীও পয়সা নাই।
हमारे हाथमें एक भी पैसा नहीं है

छठा पाठ ।

আহার একটুও অসুখ হয় নাই ।
वह बिलकुल बीमार नहीं है ।
ইহাতে সন্দেহের লেশমাত্র নাই ।
इस बातमें ज़रा भी शक नहीं है ।
চারিটা বাজিতে দশ মিনিট বাকী ।
चार बजनेमें दश मिनिट बाकी है ।
তিনি কখন অলস করেন না ।
वह कभी आलस्य नहीं करता ।
এ পৃথিবীতে কিছুই অসম্ভব নহে ।
इस दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं है ।
এ রোগের আর চিকিৎসা নাই ।
इस रोगका और इलाज नहीं है ।
তিনি ভাল লিখিতে পারেন না ।
वह अच्छी तरह नहीं लिख सकता ।
সে ইহা করিতে প্রস্তুত নহে ।
वह इसे करनेको तय्यार नहीं है ।

सातवाँ पाठ ।

ছি ! ছি ! আমি তোমার বুদ্ধি দেখে অবাক্ ।
छि ! छि ! मुझे तुम्हारी बुद्धिपर आश्चर्य्य है ।

গত রাত্রে আমি অনেকক্ষণ পর্য্যন্ত জাগিয়াছিলাম।
गत रात्रिको मैं बहुत देर तक जागता रहा ।
আমার ঘোড়াটা একেবারে খোঁড়া হ'য়ে গিয়েছে।
मेरा घोड़ा एकदम लँगड़ा हो गया है ।
এ তোমার চালাকি মাত্র।
यह खाली तुम्हारी चालबाजी है ।
তাঁহার সঙ্গে তাঁহার বাপের সদ্ভাব নাই।
उसके साथ उसके बापका मेल नहीं है ।
তাঁহার সঙ্গে আমার বন্ধুতা আছে।
उसके साथ मेरी मित्रता है ।
সোমবারের পূর্ব্বে ইহা করিতে হইবে।
सोमवार के पहिले यह करना होगा ।
আমার এখন পড়িবার ইচ্ছা নাই।
अब मेरा पढ़नेका इरादा नहीं है।
তিনি ষোল আনা ভদ্রলোক।
वह सोलह आने सज्जन पुरुष हैं ।
আমি একঘণ্টা ধ'রে এখানে দাঁড়াইয়া আছি।
मैं यहाँ एक घण्टे से खड़ा हूँ ।

आठवाँ पाठ

আমি বরাবর সেইখানে যাইতেছি।
मैं वहाँ सीधा जा रहा हूँ ।

আমি পুস্তকখানি হারাইয়াছি।
मैंने पुस्तक खो दी है।
তিনি সারাদিন বাহিরে ছিলেন।
वह तमाम दिन बाहर था।
ফোঁটা ২ করিয়া বোতলটি খালি হইয়া গিয়াছিল।
बूँद बूँद करके बोतल खाली हो गयी।
সে দিন দিন খারাপ হ'য়ে যাচ্ছে।
वह दिन बदिन खराब होता जाता है।
সে গান গাইতে গাইতে আসছে।
वह गाता गाता आता है।
তিনি মাসে ২ চাকরদিগের মাহিনা চুকাইয়া দেন।
वह महीने महीने नौकरोंकी तनख्वाह चुका देता है।

नवां पाठ।

বেশী বাক্যে কাজ কম হয়।
बहुत बातोंसे काम कम होता है।
আমি যথাসাধ্য চেষ্টা করিব।
मैं भरसक कोशिश करूँगा।
তিনি আমার প্রতি নেকনজর দিয়াছিলেন।
उसने मुझ पर कृपा की थी।
ভিন্নঃ রুচিহি লোকঃ।
आदमी आदमी की रुचि अलग अलग होती है।

সে আমার কথা শুনে না।
वह मेरी बात नहीं सुनता।
রৌদ্রে বেড়াইও না।
धूपमें मत घूमो।
সে এতক্ষণ চলিয়া গিয়াছে।
वह अभी चला गया है।
তিনি একজন ডাকাত।
यह एक डाकू है।
ইহার দাম এক পয়সাও নহে।
सका मूल्य एक पैसा भी नहीं।
কথা প্রকাশ পাইয়াছে।
ह बात प्रकाशित हो गई है।
হা কোন কাজের নয়।
ह किसी कामका नहीं है।

दसवां पाठ।

কল কথা খুলে বল।
ारी बात खोल कर कहो।
ামি আপনাকে ইহা বলিব।
ै यही आपको बाकी मगाकर कहूँगा।
সে পাগল হইয়াছে।

वह पागल हो गया है।
তিনি এই অপমান সহ্য করিয়াছেন।
उसने यह अपमान सह लिया है।
আমি ইহা ধারে কিনিয়া আনিয়াছি।
मैं इसे उधार खरीद कर लाया हूँ।
আমি এ অপমান সহ্য করিতে পারি না।
मैं यह अपमान नहीं सह सकता।
তিনি অবস্থার অতিরিক্ত খরচ করেন।
वह औक़ात से बाहर ख़र्च करता है।
এই আফিসে কোনও কর্ম্ম খালি নাই।
इस दफ़्तरमें कोई काम खाली नहीं है।
যে অসময়ের বন্ধু, সেই যথার্থ বন্ধু।
विपत्ति में जो काम आवे, वही सच्चा मित्र है।
অর্থ অনর্থের মূল।
धन अनर्थ की जड़ है।
গতস্য শোচনা নাস্তি।
बीती बातका सोच करना व्यर्थ है।
আমি তাঁহাকে দুইশত টাকা ধার দিয়াছি।
मैंने उसे २०० रुपये उधार दिये हैं।

ग्यारहवाँ पाठ।

আমি তাঁহাকে ইংরাজ মনে করিয়াছিলাম।

मैंने उसे अँगरेज़ समझा था।

কুসংবাদ শীঘ্রই প্রচারিত হয়।

बुरी खबर जल्दी फैल जाती है।

যত গর্জে, তত বর্ষে না।

जितना गरजता है उतना बरसता नहीं।

প্রত্যেক জাহাজের একজন অধ্যক্ষ আছে।

हरेक जहाज़ में एक अध्यक्ष होता है।

তিনি ও আমি হরিহর আত্মা।

वह और मैं पक्के दोस्त हैं।

তিনি আমার একজন বিশেষ বন্ধু।

वह हमारा दिली दोस्त है।

তাঁহারা আমার পরামর্শ হাসিয়া উড়াইয়া দিয়াছিল।

उन्होंने मेरी सलाह हँसी में उड़ा दी।

তাহারা তাহাদের বাড়ী বিক্রয় করিয়াছে।

उन्होंने अपना मकान बेच दिया है।

আমি স্বয়ং তথায় গমন করিব।

मैं वहाँ खुद जाऊँगा।

তিনি একজন মহাকবি।

वह एक महाकवि है।

এই জাহাজ বিলাত যাইবে।
यह जहाज़ विलायत जायगा।

बारहवां पाठ।

অগত্যা আমাকে ইহা স্বীকার করিতে হইবে।
मुझे यह बात अवश्य स्वीकार करनी होगी
সে আত্মহত্যা করিয়াছে।
उसने आत्महत्या करी है।
এই পাখীটা দেখিতে খুব সুন্দর।
यह पक्षी देखनी में खूब अच्छा है।
তিনি বাম কানে কম শুনেন।
वह बांयें कान से कम सुनता है।
আমার এ বিষয়ে কোন আপত্তি নাই।
इस विषयमें मुझे कुछ उज्र नहीं है।
সভা ভঙ্গ হইল।
सभा भंग होगई है।
ম্যাজিষ্ট্রেট এই মোকদ্দমা সোমবারে করিবেন
मजिष्टर यह मुकद्दमा सोमवारको सुनेगा।
আমি তাহাকে কাজ হইতে জবাব দিয়াছি।
मैंने उसे नौकरी से अलग कर दिया है।
আমার সেটি ঠিক স্মরণ হ'চ্ছে না।
मुझे उसकी ठीक याद नहीं आती।

সে প্রবেশিকা পরীক্ষায় ফেল হইয়াছে।
वह प्रवेशिका परीक्षा में फेल होगया है।
প্রাণাপেক্ষা ধন অধিক মূল্যবান নহে।
प्राणों से धन अधिक मूल्यवान नहीं है।

तेरहवां पाठ।

চাউলের বাজার চড়িয়া গিয়াছে।
चांवलका बाजार चढ़ गया है।
আমি সন্ধ্যার পূর্ব্বে আসিব।
मैं सन्ध्याके पहिले आऊँगा।
আমি তোমাদিগকে নিশ্চয়ই কহিতেছি।
मैं आपसे निश्चय पूर्व्वक कहता हूँ।
সে কথা কহিতে উদ্যত হইয়াছিল।
वह बोलनेके लिये तय्यार हुआ था।
হরির বাপের সঙ্গে গতকল্য আমার দেখা হইয়াছিল।
कल हरिके बापसे मेरी मुलाकात हुई थी।
চাউলের তিন টাকা করিয়া মন বিক্রয় হইতেছে।
चावल तीन रुपये मन बिक रहा है।
দুধ সের হিসাবে বিক্রয় হয়।
दूध सेर के हिसाब से बिकता है।
এই গল্পটি আগে একবার শুনিয়াছিলাম।
यह बात एकबार आगे सुनी थी।

তিনটার সময় গাড়ী ছাড়িব।
तीन बजे गाडी छूटेगी।
রাধাবাজারে তাঁর বাসা।
उसका बासा राधाबाज़ार में है।
সে যথেষ্ট ধন জমাইয়াছে।
उसने यथेष्ट धन जमा किया है।

चौदहवां पाठ

তিনি একমাত্র পুত্র রাখিয়া মরিয়াছেন
वह एक मात्र पुत्र छोड कर मर गया
তিনি উপাধি পাইবার জন্য লালায়িত।
वह उपाधि पाने को लालायित है।
তিনি আহার করিতেছেন।
वह भोजन कर रहा है।
তিনি আমার বিরুদ্ধে বলিয়াছেন।
वह मेरे विरुद्ध बोला।
সে ঠিক আমার মনের মত লোক।
वह ठीक मेरे मनका आदमी है।
তিনি সুদে টাকা খাটাইতেছেন।
उसने व्याज पर रुपया लगा दिया है।
টাকায় টাকা বাড়ে।
रुपये से रुपया बढ़ता है।

সে তাহার বাপের নয়ন তারা ছিল।
वह अपने बाप की आँखों का तारा था।
এই বই আমি শীঘ্র ছাপাইব।
मैं इस पुस्तक को जल्दी ही छपवाऊँगा।
আজ আমার জন্মদিন।
आज मेरा जन्मदिन है।
তিনি আমার পরিবর্তে কাজ করিয়াছিলেন।
उसने मेरी जगह काम किया।

पन्द्रहवाँ पाठ।

তাহার মস্তিষ্কের গোলমাল হইয়াছে।
उसका जन्म भरको दिमाग फिरा हुआ है।
ভয় আছে পাছে সে পাগল হ'য়ে যায়।
भय है कि वह पागल न हो जाये।
তাহাকে পুলিসে দেওয়া হইয়াছে।
वह पुलिस के सिपुर्द कर दिया गया है।
আমি যতদূর জানি সে চোর নহে।
जहाँतक मैं जानता हूँ वह चोर नहीं है।
সে তাহার বাপের খুব প্রিয় ছিল।
वह अपने बाप का खूब प्यारा था।
তিনি দুই এক দিনের মধ্যেই আসিবেন।
वह दो एक दिनमें ही आवेंगे।

তাহাকে ফাঁসী দেওয়া হইয়াছে।
उसे फांसी दीगयी है।
আমার মরিবার অবকাশ নাই।
मुझे मरनेकी भी फुर्सत नहीं है।
এই বাড়ী ভাড়া দেওয়া যাইবে।
यह मकान भाड़े दिया जायगा।
এই টাকাটী ভাঙ্গাইয়া আন ত।
इस रुपये को भँजालाओ।

षोलहवां पाठ।

তিনি আমাকে গোপাল মনে করিয়াছিলেন।
उसने मुझे गोपाल समझा था।
আমি শীঘ্রই তাঁহার টাকা শোধ করিয়া দিব।
मैं उनका रुपया जल्दी ही चुका दूंगा।
আমি হিসাব পত্র দেখিয়াছি।
मैंने हिसाब किताब देख लिया है।
আমার আজকাল টানাটানির অবস্থা।
आजकल मेरी हालत तंग है।
প্রতিদিন ঈশ্বরোপাসনা করা উচিত।
प्रतिदिन ईश्वरोपासना करना उचित है।

তিনি জামিনে খালাস পাইয়াছেন।
उनने जमानत पर रिहाई पायी है।
তিনি তাঁহার সমুদয় সম্পত্তি দান দিয়াছেন।
उनने अपनी सारी सम्पत्ति प्रदान करदी है।
ভবিষ্যতের জন্য কিছু সঞ্চয় করা ভাল।
भविष्यतके लिये कुछ सञ्चय करना अच्छा है।
আজকাল আমাকে ভারি টানাটানি করিয়া চালাইতে হয়।
आजकल मुझे भारी खींचतान करके काम चलाना होता है।
আমি কাল তোমার সঙ্গে দেখা করিব।
मैं कल तुमसे मिलूंगा।
আজ আমার জ্বর বোধ হইতেছে।
आज मुझे ज्वर मालुम होता है।
সে দেউলে হইয়াছে।
वह दिवालिया हो गया है।
ইনকম্ টেক্স উঠাইয়া দেওয়া উচিত।
इनकम् टेक्स उठा देना उचित है।
আমি তাহাকে ঘুস দিব না।
मैं उसे घूँस न दूँगा।
*সৌন্দর্য্য হৃদয়কে আকর্ষণ করে.
सुन्दरता दिलको खींच लेती है।
এ জীবনের সুখ ক্ষণস্থায়ী।
इस जीवनका सुख क्षणस्थायी है।

তাহার বয়স কেবল মাত্র দশ বৎসর।
उसकी उम्र सिर्फ दश वर्षकी है।
আমি তাহার সহিত বিবাদ মিটাইয়া ফেলিব।
मैं उससे झगड़ा मिटा लूँगा।

सत्तरहवाँ पाठ।

তিনি অনেক রাত্রি পর্য্যন্ত জাগেন।
वह बहुत रात तक जागता है।
আমি যে ক্ষতি করিয়াছি, তাহা পূরণ করিব।
मैंने जो हानि की है उसे पूरी करूँगा।
সে তাহার বাপের বিষয় পাইয়াছে।
उसने अपने बापकी मिलकियत पाई है।
আমি তোমাকে বিশেষ রূপে সাজা দিব।
मैं तुमको अच्छी तरह दण्ड दूँगा।
আমি একটা ব্যবসা করিব।
मैं एक व्यवसाय करूँगा।
সে আমার পত্রের জবাব দিয়াছে।
उसने मेरे पत्र का जवाब दिया है।
সে আমার চেয়ে বেশী চালাক।
वह मुझसे अधिक चालाक है।

তিনি এখন বেকার আছেন।
वह अब बेरोजगार है।
মানুষ্য মাত্রেরই ভ্রম হয়।
मनुष्य मात्रको भ्रम होता है।

अठारहवाँ पाठ।

আমি বেশ ভাল আছি।
मैं बिल्कुल तन्दुरुस्त हूँ।
সে আমাকে এ বিষয়ে ঠকিয়েছে।
उसने मुझे इस काममें धोखा दिया है।
আমি খুব সকালে উঠিয়াছিলাম।
मैं खूब सबेरे उठा था।
আমি তাঁহার সঙ্গে ছিলাম।
मैं उसके साथ था।
তোমার স্বাস্থ্যের দিকে দৃষ্টি রাখা উচিত।
तुमको स्वास्थ्यकी तरफ नज़र रखनी चाहि
আমি তাঁহাকে বাড়ীতে দেখিতে পাইলাম না
मुझे वह घर में नहीं मिला।
গরু আমাদের অত্যন্ত উপকারী।
गाय हमारे लिये अत्यन्त उपकारी है।
সে এক জন জ্ঞানী লোক হ'বে।
वह एक बुद्धिमान आदमी होगा।

उन्नीसवाँ पाठ ।

সে একটী প্রদীপ হাতে লইয়া আসিয়াছিল ।
वह एक दीपक हाथमें लेकर आया था ।
আমার কাজ যা তা আমি জানি ।
मैं अपना काम जानता हूँ ।
ইহা কিনিতে তাঁহার চারিটী টাকা লাগিয়াছে ।
इसको खरीदनेमें उसके चार रुपये लगे हैं ।
ইহা প্রস্থে এক ইঞ্চ ।
यह चौड़ाईमें एक इँच है ।
আমি যাহা চাই, তাই আমাকে দাও ।
मैं जो चाहता हूँ, वही मुझे दो ।
তোমাকেই বলতে হবে ।
तुम्हें ही बोलना होगा ।
তিনি এখানে এক দিন অন্তর আইসেন ।
वह यहाँ एक दिनके अन्तर से आता है ।
তাঁহার এক চোক কানা ।
वह एक आँखसे काना है ।
তিনি ভাল দিন দেখিয়াছেন ।
उसने अच्छे दिन देखे हैं ।
তুমি সে দিন আমাকে বোকা বানাইয়াছিলে ।
तुमने उस दिन मुझे मूर्ख बना दिया था ।

बीसवाँ पाठ ।

কুক্ষণে তাহাকে আমি বাড়ীতে স্থান দিয়াছিলাম।

बुरे समय में मैंने उसे घरमें जगह दी।

তিনি যাহা খান তাহাই বমি করিয়া ফেলেন।

वह जो खाता है वही वमन कर देता है।

তাহারা সকলে একই প্রকৃতির লোক।

उन सब का एक स्वभाव है।

ডাকাতেরা কুঁড়ে ঘরে আগুণ লাগিয়ে দিয়েছিল।

डाकुओंने झोंपड़े में आग लगा दी थी।

ঘটনাক্রমে আমি সেখানে উপস্থিত ছিলাম।

दैवयोगसे मैं वहाँ मौजूद था।

এ রকম অবস্থায় আমি বিল খানি গ্রাহ্য করিতে পারি না।

इस हालतमें मैं बिलको मञ्जूर नहीं कर सकता।

তিনি তাঁহার সমস্ত বিপদে অটল ছিলেন।

वह अपनी सारी विपद में अटल था।

আমি উভয় সঙ্কটে পড়িয়াছি।

मैं दो आफतोंमें फँसा हूँ।

তুমি তাহার সামনে পড় নাই, তোমার পক্ষে ভালই হইয়াছে।

तुम उसके सामने नहीं पड़े, यह तुम्हारे लिये अच्छा ही हुआ।

হিন্দীসখা পাঠ।

তিনি সেদিন তোমার বড় সুখ্যাতি করিয়াছিলেন।
उसने उस दिन तुम्हारी बड़ी तारीफ़ की थी।
এই বিষয়টী লইয়াই বাদানুবাদ চলিতেছে।
इस विषय पर ही वादानुवाद होता है।
ইহা একটী গাঁজাখুরি গল্প।
यह एक गँजेड़ियों की सी बात है।
সকলেই তাহাকে ধিক্কার দিয়াছিল।
सबोंने ही उसे धिक्कारा था।
খাদ্য কম পড়েছিল।
खानेका सामान कम हो गया।
আমি উঁহাকে দেখতে পারি না।
मैं उसको नहीं देख सकता।
মাহিনা ব্যতিরেকে প্রতিমাসে তিনি ৫০ টাকা পান।
वेतनके सिवाय वह ५० रुपया हर महीने पाता है।
সে তাহার বংশের কুলাঙ্গার।
वह उसके वंशमें कुलाङ्गार है।
তাঁহার স্ত্রী গর্ভবতী।
उसकी स्त्री गर्भवती है।

बाईसवाँ पाठ ।

তুমি অবকাশ মত তাহাদিগকে দেখিতে পার।
तुम उनसे अपनी फुरसतके समय मिल सकते हो।
তিনি রীতিমত আহার করিয়াছিলেন।
उसने खूब खाया।
ইহার আর প্রচলন নাই।
आजकल इसका प्रचार नहीं है।
আমি তোমাকে ভগ্নোৎসাহ করিতে ইচ্ছা করি না।
मैं आपको भग्नोत्साह करना नहीं चाहता।
একটা মিথ্যার জন্য দশটা মিথ্যা বলিতে হয়।
एक झूँठके लिये दस झूँठ बोलनी पड़ती है।
ঘরে মধ্যে চারিদিকে দেখ।
घरमें चारों तरफ देखो।
তিনি বড় উদ্বিগ্ন আছেন।
वह बहुत ही उद्विग्न है।
তিনি বয়সে ছোট স্থানে বড়।
वह उम्रमें छोटा है किन्तु मान में बड़ा है।
নকলে কাজ করিলে সহজ হয়।
सबके काम करनेसे काम सहज हो जाता है।
অহঙ্কারের পতন আছেই।
घमण्डका सिर नीचा होता ही है।

तेईसवाँ पाठ ।

সে হটাৎ কেঁদে উঠে ছিল।
वह यकायक रो पड़ा ।
তাহারা লুকোচুরি খেলা করিতেছে।
वह आँख मिचौनी खेलती हैं।
যতক্ষণ শ্বাস, ততক্ষণ আশ।
जब तक श्वासा, तब तक आशा।
আমি একদমে দশ মাইল যাইতে পারি।
मैं एक दम दश मील जा सकता हूँ।
আমি ছুটিতে আছি।
मैं छुट्टी पर हूँ।
তাঁর চেষ্টায় কোনও ফল হয় নাই।
उसकी चेष्टाका कुछ भी फल न हुआ।
আমি আজ পাঁচটার সময় উঠিয়াছিলাম।
मैं आज पाँच बजे उठा ।
তিনি সমুদ্র ভ্রমণ ভাল বাসেন।
उसे समुद्रभ्रमण अच्छा लगता है।
এ বিষয়ে তাঁহার মত শিরোধার্য্য।
इस विषय में उसका मत शिरोधार्य्य है ।
আমি তাঁহার উদ্দেশ্য বুঝিতে পারি নাই।
मैं उसका उद्देश्य समझ नहीं सका।

चौबीसवाँ पाठ ।

তিনি এত বেগে চলিলেন যে, তাহাকে ধরিতে পারিলাম না।
वह इतनी तेज़ी से चला कि मैं उसे न पकड़ सका।
ইহাতে অপরের উপকার হ'তে পারে।
इससे दूसरों का उपकार होसकता है।
তৃষ্ণাতে আমার প্রাণ যায় যায় হয়ে উঠেছিল।
प्यासके मारे मेरा दम निकलता था।
চাকরের উপর তোমার এত কড়া হওয়া উচিত নয়।
नौकर पर तुम्हारा इतना कड़ा रहना उचित नहीं है।
কেহ আপন দোষ দেখিতে পায় না।
किसीको अपना दोष मालुम नहीं होता।
বিশ্বাসই সফলতার অনুচর ।
विश्वास ही सफलताका अनुचर हैं।
সে আমাকে তাচ্ছিল্য করে।
यह मुझ से नफ़रत करता है।
দুঃখ ভোগ সৌভাগ্যের কারণ।
दुःख भोगने के पीछे सुख मिलता है।
সুচরিত্র এবং সাহস মানবকে সম্মান দেয়।
सुचरित्र एवं साहससे मनुष्य का सम्मान होता है
তাহারা অনেক কথা কয়।
वे बहुत सी बातें कहते हैं।

पच्चीसवाँ पाठ।

মুরগীতে ডিম পাড়ে।

मुर्गी अण्डा देती है।

বেগে বায়ু বহিতেছিল।

हवा तेज़ी से चल रही थी।

তিনি বিদ্বেষ বশতঃ এ কাজ করিয়াছেন।

उसने विद्वेषके वश होकर यह काम किया है।

বাতাস বড় ঠাণ্ডা ও কনকনে।

हवा बड़ी ठण्डी और ठिठरानेवाली है।

আমি তোমাকে মনের কথা সব ব'লেছি।

मैंने तुमसे मनकी सब बातें कहदी है।

সে মজার লোক।

वह मज़ेका आदमी है।

আমি নগদ দাম দিব।

मैं नक़द दाम दूँगा।

তাঁহার মনের গতি বুঝা কঠিন।

उसके मनकी गति जानना कठिन है।

এর দাম তোমাকে অনেক দিতে হবে।

इसका दाम तुमको बहुत देना होगा।

ছব্বীসবাঁ পাঠ।

শিক্ষাই মনকে শুদ্ধ ও উন্নত করে।

শিক্ষা হী মনকো শুদ্ধ ঔর উন্নত করতী হৈ।

তিনি আমার কথায় কর্ণপাত করিলেন না।

উসনে হমারী বাতপর কান নহীঁ দিয়া।

চক্ষের পলক পড়তে না পড়তে তিনি অদৃশ্য হইলেন

পলক মারতে ২ বহ গায়ব হো গয়া।

তিনি গভীর রাত্রে যাত্রা করিয়াছেন।

উসনে আধী রাতকো যাত্রা কী।

আমি সর্ব্বান্তঃকরণে তোমার মঙ্গল কামনা করি।

মৈঁ অন্তঃকরণ সে আপকা ভলা চাহতা হূঁ।

একদিনে কোন কাজ হয় না।

এক দিনমেঁ কোঈ ভী কাম নহীঁ হোতা।

মানুষ মনে করে এক ঘটে আর।

আদমী সোচতা কুছ হৈ ঔর হোতা কুছ হৈ।

তাঁহার শিখিবার বয়স আর নাই।

উসকো সীখনেকী উম্র ঔর নহীঁ হৈ।

তিনি সমস্ত জীবন সুখে কাটাইয়াছেন।

উসকী সারী উম্র সুখমেঁ বীতী।

তিনি লজ্জায় মাথা হেঁট করিলেন।

উসনে লজ্জাকে মারে সির নীচা কর লিয়া।

সুবুদ্ধিকে এক কথা মরণ সমান।
बुद्धिमानका एक बातमें ही मरण हो जाता है।
মানুষের সময় এক বার ফিরেই।
मनुष्य के दिन एकबार तो फिरते ही हैं।
পুলিস ডাকতে ২ চোর টা পিট্টান দিলে।
पुलिस के बुलाते २ चोर हवा होगया।
মিষ্টান্নগুলি দেখে বালকটীর মুখ দিয়া লাল পাড়িতে লাগিল।
मिठाई देखते ही बालक की लार पड़ने लगी।

सत्ताईसवां पाठ।

ভূগোল শিখিবার আর সহজ কোনও উপায় নাই
भूगोल सीखने का और सहज तरीका नहीं
তাঁহার কথা আমার কানে বাজিতেছে।
उसकी बात मेरे कानमें बज रही है।
প্রেসের কাজ খুব চলিতেছে।
प्रेसका काम खूब चलता है।
মনে একটু সাহস কর।
दिलमें थोड़ी हिम्मत करो।
ইহা হাসি ঠাট্টার বিষয় নহে।
यह हँसी ठट्ठे की बात नही है।
বালকেরা জয়ধ্বনি করিতেছে।
बालक जयध्वनि कर रहे है।

তার পর কি হইল, বল বল।

उसके पीछे क्या हुआ, बोलो २।

আজকাল তুমি আর এক রকম হইয়া গিয়াছ।

आजकल तुम और ही तरह के होगये हो।

এই ঘরে দরজা ভেজাইবার সময় বড় শব্দ হয়।

इस घरका द्वार बन्द करनेके समय बड़ा शब्द होता है।

তোমরা দুজনে এক সাঁচে গড়া।

तुम दोनों ही एक सांचे में ढले हो।

আমওয়ালাকে আমায় চারি আনা দিতে হইবে।

आमवाले को मुझे चार आने देने होंगे।

মালী গাছ পুতিতেছে।

माली दरख्त लगा रहा है।

আহ্লাদে তোমার মুখ উজ্জ্বল হইতেছে।

खुशी के मारे तुम्हारा चेहरा दमक रहा है।

आठवाँ अध्याय।

प्रथम पाठ।

দিবা রাত্র	दिन रात	অন্ন বস্ত্র	अन्न वस्त्र
অন্ন জল	अन्न जल	ধন জন	धन जन
রক্ত মাংস	रक्त माँस	মাছ মাংস	मछली माँस
স্ত্রী পুরুষ	स्त्री पुरुष	জল স্থল	जल स्थल
মন প্রাণ	मन प्राण	তালা চাবি	ताला चाभी
বাড়ী ঘর	घर मकान	পাপ পুণ্য	पाप पुण्य
পুঁটুলী তাল্পা	गठरी मुठरी	হাত পা	हाथ पाँव
কাগজ কলম	कागज क़लम	পিতা পুত্র	बाप बेटा
পশু পক্ষী	पशु पत्ती	ভালমন্দ	अच्छा बुरा
ধনী নির্দ্ধন	धनी निर्धन	কুকুর বিড়াল	कुत्ता बिल्ली
শত্রু মিত্র	शत्रु मित्र	চন্দ্র সূর্য্য	चाँद सूरज
নর বানর	नर बानर	ধর্ম্মাধর্ম্ম	धर्माधर्म

মনুষ্য জাতী হাসিতে পারে।

मनुष्य जाति हँस सकती है।

সূর্য্য পূর্ব্বদিকে উদয় হয়।

सूर्य्य पूर्व दिशामें उदय होता है।

ভারতীয় কবিদিগের মধ্যে কালিদাস শ্রেষ্ঠ।
भारतीय कवियोंमें कालिदास श्रेष्ठ था।
স্বর্ণ সর্ব্বাপেক্ষা বহুমূল্য ধাতু।
सोना सब की अपेक्षा बहुमूल्य धातु है।
দুঃখীদিগের প্রতি দয়ালু হও।
दु:खियों पर दया करो।
দিল্লী ভারতবর্ষের রাজধানী।
दिल्ली भारतवर्ष की राजधानी है।
তেল ঘীর চেয়ে সস্তা।
तेल घीसे सस्ता है।
দয়ার তুল্য আর কিছুই নাই।
दयाके समान और कुछ नहीं है।
সাধুতাই সর্ব্বশ্রেষ্ঠ কৌশল।
ईमानदारी ही सबसे अच्छी नीति है।
ধন দৌলত এসংসারে চিরস্থায়ী নয়।
इस संसार में धन दौलत चिरस्थायी नहीं है।

दूसरा पाठ।

হিতাহিত	हिताहित	ভাই ভগিনী	भाई बहिन
গুরু শিষ্য	गुरु चेला	স্বর্গ মর্ত্ত	स्वर्ग मर्त्त
রাজা প্রজা	राजा प्रजा	চেতন অচেতন	चेतन अचेतन
কীট পতঙ্গ	कीट पतंग	দেবী দেবতা	देवी देवता
সুখ দুঃখ	सुख दु:ख	হাঁ কি না	हाँ या ना

তোমার বিলম্ব হইয়াছে।
तुम्हें देर होगयी है।
তাহার মাতার মৃত্যু হইয়াছে।
उसकी माकी मृत्यु होगयी है।
তাহার রক্তপাত হইতেছে।
उसके खून बहता है।
আমার যাওয়া হইবে না।
मेरा जाना न होगा।
তোমার আসা উচিত ছিল না।
तुम्हारा आना उचित न था।
আমাকে অনেক কাজ করিতে হইবে।
मुझे बहुत से काम करने हैं।
এই আবেদন পত্রে আপনাকে সাক্ষর করিতে হইবে।
तुमको इस आवेदनपत्र पर हस्ताक्षर करने होंगे।
গাভীতে ঘাস খায়।
गाय घास खाती है।
পাখীতে বাসা নির্ম্মান করে।
पक्षी घोंसले बनाया करते हैं।
দিবসে নিদ্রা যাওয়া বড় অনিষ্ঠ কর।
दिनमें नींद लेना बड़ा नुकसानमन्द है।
তিনি সাড়ে তিন শত টাকা বেতন পান।
वह साढ़े-तीन सौ रुपया वेतन पाता है।

আমার বয়স তোমার বয়সের দ্বিগুণ।
मेरी उम्र तुम्हारी उम्रसे दूनी है।
সওয়া পাঁচ সের চিনি আন।
सवा पाँच सेर चीनी लाओ।
সাড়ে পাঁচ মাইল রাস্তা চলা সহজ নয়।
साढ़े पाँच मील रास्ता चलना सहज नहीं है।
পৌনে চারি সের দুধ দাও।
पौने चार सेर दूध दो।
হরি এ পদের যোগ্য নয়।
हरि इस पदके योग्य नहीं है।
পুলীস তাহাকে ছাড়িয়া দিয়াছে।
पुलिसने उसे छोड़ दिया है।
আমার মাথা ধরিয়াছে। मेरे सिरमें दर्द है।
তিনি কোন কথা বলিলেন না। वह कुछ न बोला।

तीसरा पाठ।

১ এক = एक
২ দুই = दो
৩ তিন = तीन
৪ চার = चार
৫ পাঁচ = पाँच
৬ ছয় = छै
৭ সাত = सात
৮ আট = आठ
৯ নয় = नौ
১০ দশ = दस

১১ এগার = ग्यारह
১২ বার = बारह
১৩ তের = तेरह
১৪ চৌদ্দ = चौदह
১৫ পনের = पन्द्रह
১৬ ষোল = सोलह
১৭ সতের = सतरह
১৮ আঠার = अठारह
১৯ উনিশ = उन्नीस
২০ কুড়ি = बीस
২১ একুশ = इक्कीस
২২ বাইশ = बाईस
২৩ তেইশ = तेईस
২৪ চব্বিশ = चौबीस
২৫ পঁচিশ = पच्चीस
২৬ ছাব্বিশ = छब्बीस
২৭ সাতাইশ = सत्ताइस
২৮ আটাইশ = अट्ठाईस
২৯ উনত্রিশ = उनतीस
৩০ ত্রিশ = तीस
৩১ একত্রিশ = इकतीस
৩২ বত্রিশ = बत्तीस
৩৩ তেত্রিশ = तैंतीस
৩৪ চৌত্রিশ = चौंत्तीस
৩৫ পঁয়ত্রিশ = पैंतीस
৩৬ ছত্রিশ = छत्तीस
৩৭ সাঁইত্রিশ = सैंतीस
৩৮ আটত্রিশ = अड़तीस
৩৯ উনচল্লিশ = उनतालीस
৪০ চল্লিশ = चालीस
৪১ এক চল্লিশ = इकतालीस
৪২ বিয়াল্লিশ = बयालीस
৪৩ তেতাল্লিশ = तैंतालीस
৪৪ চুয়াল্লিশ = चँवालीस
৪৫ পঁয়তাল্লিশ = पैंतालीस
৪৬ ছয় চল্লিশ = छियालीस
৪৭ সাত চল্লিশ = सैंतालीस
৪৮ আট চল্লিশ = अठतालीस
৪৯ উনপঞ্চাশ = उनचास
৫০ পঞ্চাশ = पचास
৫১ একান্ন = इक्यावन
৫২ বায়ান্ন = बावन
৫৩ তিপান্ন = त्रेपन
৫৪ চুয়ান্ন = चौवन

৫৫ পঞ্চান্ন = पचपन
৫৬ ছাপান্ন = छप्पन
৫৭ সাতান্ন = सत्तावन
৫৮ আটান্ন = अट्ठावन
৫৯ উনষাট = उनसठ
৬০ ষাট = साठ
৬১ একষট্টি = इकसठ
৬২ বাষট্টি = बासठ
৬৩ তেষট্টি = त्रेसठ
৬৪ চৌষট্টি = चौसठ
৬৫ পঁয়ষট্টি = पैंसठ
৬৬ ছয়ষট্টি = छासठ
৬৭ সাতষট্টি = सड़सठ
৬৮ আটষট্টি = अड़सठ
৬৯ উনসত্তর = उनहत्तर
৭০ সত্তর = सत्तर
৭১ একাত্তর = इकहत्तर
৭২ বায়াত্তর = बहत्तर
৭৩ তিয়াত্তর = तिहत्तर
৭৪ চুয়াত্তর = चौहत्तर
৭৫ পঁচাত্তর = पचहत्तर
৭৬ ছিয়াত্তর = छिहत्तर
৭৭ সাতাত্তর = सतहत्तर
৭৮ আটাত্তর = अठहत्तर
৭৯ উনআশি = उन्यासी
৮০ আশি = अस्सी
৮১ একাশি = इक्यासी
৮২ বিরাশি = बयासी
৮৩ তিরাশি = तिरासी
৮৪ চুরাশি = चौरासी
৮৫ পঁচাশি = पिचासी
৮৬ ছিয়াশি = छियासी
৮৭ সাতাশি = सत्तासी
৮৮ অষ্টাশি = अट्ठासी
৮৯ উননব্বই = नवासी
৯০ নব্বই = नब्बे
৯১ একানব্বই = इक्यानवे
৯২ বিরানব্বই = बाणवे
৯৩ তিরানব্বই = तिरानवे
৯৪ চুরানব্বই = चौरानवे
৯৫ পঁচানব্বই = पँचानवे
৯৬ ছিয়ানব্বই = छियानवे
৯৭ সাতানব্বই = सत्तानवे
৯৮ আটানব্বই = अट्ठानवे

৯৯ নিরেনব্বই = निन्यानबे   ১০,০০০ দশ হাজার = दस हजार
১০০ এক শত = एकसौ   ১০০,০০০ লক্ষ = लाख
১০০০ একহাজার = एकहजार   ১০০০০০০ দশ লক্ষ = दस लाख
তাকে এখন যেতে বল।   उसे इस समय जाने को कहो।
হিন্দুরা শব দাহ করে।   हिन्दूका मुर्दा जलाया जाता है।

चौथा पाठ।

তিনি বাজারে চা কিনিতে গেলেন।
वह बाजार में चाय खरीदने गये।
আমি তাঁহাকে দেখিতে আসিয়াছিলাম।
मैं उसे देखने को आया था।
আমি যাইতে প্রস্তুত ছিলাম।   मैं जानेको तय्यार था।
তাঁহারা উপন্যাস পড়িতে ভাল বাসেন।
उनको उपन्यास पढ़ना अच्छा लगता है।
তোমার বই আজ ফিরাইয়া দিয়াছি।
तुम्हारी पुस्तक आज लौटादी है।
তিনি আজ প্রাতে কাশী গিয়াছেন।
वह आज सवेरे काशी गया है।
রাম কাল কলিকাতায় গিয়াছে।   राम कल कलकत्ते गया है।
এ সপ্তাহে প্রচুর বৃষ্টি হইয়াছে।
इस सप्ताह में पानी खूब बरसा।

पांचवां पाठ ।

শীঘ্র কিংবা বিলম্বে	जल्दी या देरसे
আর একবার	एक दफा और, एकबार फिर
সেই মুহূর্ত্তেই	उसी महूर्त्त में, तुरत ही
বর্ত্তমান সময়ে	वर्त्तमान समय में ।
তৎক্ষণাৎ	फौरन, उसी चण
এখনও	अब भी
এই মাত্র	अभी अभी
সেই দিনই	उसी दिन
এতাবৎকাল	अाजतक

উঁহার গলায় গলাবন্ধ ছিল।

उसके गलेमें गुलूबन्द था ।

প্রতি সপ্তাহে কলিকাতায় আন্দাজ দুই শত লোকের মৃত্যু হয়।

कलकत्ते में हर हफ्ते अन्दाजन दो सौ आदमी मरते हैं ।

এখন আন্দাজ সাতটা বাজিয়াছে।

इस समय अन्दाजन सात बजे हैं ।

গত বৎসরের পূর্ব্ব বৎসর তিনি মরমর হইয়াছিলেন।

त्यौरस की साल वह मरँ मरँ हो गया था ।

আমি প্রত্যহ আন্দাজ দেড় সের দুধ খাইয়া থাকি।

मैं हर रोज अन्दाजन डेढ़ सेर दूध पीता हूँ ।

সন্তানগণের শিক্ষা বিষয়ে আমি বড় উদ্বিগ্ন আছি।

मुझे बच्चों की शिक्षाका बड़ा फ़िक्र है।

তারাগণ মেঘের উপরে রহিয়াছে।
तारे बादलों के ऊपर हैं।
পঞ্চাশ জন লোকের অধিক উপস্থিত ছিল না।
पचास से अधिक आदमी मौजूद नहीं थे।
এখন আন্দাজ একটা বাজিয়াছে।
इस समय अन्दाज़न एक बजा है।
চারিটার সময় তিনি এখানে ছিলেন।
चार बजे वह यहाँ था।
বারকপুরে আমার একটি ক্ষুদ্র বাগান আছে।
बारकपुर में मेरा एक छोटासा बगीचा है।
দুর্ভিক্ষের জন্য শস্য সঞ্চয় করিয়া রাখ।
अकाल के लिये शस्य जमा कर रक्खो।
দরিদ্রতা প্রযুক্ত তিনি দেনা পরিশোধ করিতে পারেন নাই।
वह दरिद्रता के कारण से देना नहीं चुका सका।
বার্দ্ধক্য প্রযুক্ত তিনি চলিতে অশক্ত।
बुढ़ापे के कारण वह चलनेमें असमर्थ है।
তিনি লজ্জা বশতঃ এ কথার উল্লেখ করিলেন না।
उसने लज्जा के मारे यह बात नहीं कही।
মনোযোগ পূর্ব্বক পাঠ অভ্যাস কর।
मन लगाकर पाठ पढ़ो।
তিনি হাতে হাতেই ফল পাইয়াছিলেন।
उन्हों ने हाथों हाथ फल पाया।

তিন ঘণ্টা অন্তর	तीन तीन घण्टे पर
গত শনিবার	गया शनिवार

আগামী শনিবারের পরের শনিবার।
आगामी शनिवार के बादका शनिवार।

চারি দিনের মধ্যে	चार दिनोंमें
এক সপ্তাহের মধ্যে	एक सप्ताहमें
চারি ঘটিকার সময়	चार बजे
মধ্য রাত্রিতে	आधी रातको
প্রাতঃকালে	प्रात: समय, सबेरे
প্রত্যূষে	—पौफटे
মধ্যাহ্নে	मध्यान्ह कालमें, दोपहरको
দুপুর বেলায়	दोपहर के समय
বৈকালে	तीसरे पहर
সন্ধ্যাকালে	सन्ध्या समय, शामको
রাত্রিতে	रात को, रात में
দিবাভাগে	दिन में
এক মাসে	एक महीने में
তিন বৎসরে	तीन वर्षमें
শনিবারে	शनिवार को
মে মাসে	मई महीने में
শেষে	अन्त में
অবশেষে	अन्त में, आखिरकार

অদ্য হইতে	आज से
সূর্য্যোদয়ের পূর্ব্বে	सूर्य्योदय से पहिले
অদ্যাবধি	आज तक
এতক্ষণে	इस समय
প্রত্যেক দিন	प्रत्येक दिन, हर दिन
শৈশবে	शैशवकाल में, बचपन में
বার্দ্ধক্যে	बुढ़ापे में
মৃত্যুকালে	मृत्यु समय में, मरने के वक्त
যথাকালে	उचित समय पर

আমি সে খবর শুনিয়াছি।
मैंने यह खबर सुनी है।
রাম হরির চেয়ে ভাল।
राम हरिसे अच्छा है।
তিনি আমার চেয়ে ভাল ছেলে।
वह मेरी अपेक्षा अच्छा लड़का है।
তোমার অপেক্ষা যদু বুদ্ধিমান।
यदु तुम्हारी अपेक्षा बुद्धिमान है।
শরত অপেক্ষা সতীশ পরিশ্রমী।
सतीश शरत को बनिस्बत ज़ियादा मिहनती है।
কাঠ হইতে লৌহ শক্ত।
काठसे लोहा मज़बूत होता है।
সঙ্গীতের চেয়ে মধুর আর কিছুই নাই।

सङ्गीत से मीठी और कोई चीज नहीं है।
দুই ভাইয়ের মধ্যে নরেন বড়।
दोनों भाईयों में नरेन बड़ा है।
দুই জনের মধ্যে কে বেশী জ্ঞানী।
दोनोंमें से कौन अधिक ज्ञानी है।
আমার চেয়ে তার জোর বেশী।
उसमें मुझसे अधिक बल है।
আমার ঘর তোমার ঘর অপেক্ষা নিকৃষ্ট।
मेरा घर तुम्हारे घरसे निकृष्ट है।
গদ্য হইতে পদ্য অনেক বেশী শক্ত।
गद्यसे पद्य बहुत कठिन है।
জাপানবাসীরা রুষ দিগের অপেক্ষা অনেক অধিক পরাক্রমশালী।
जापानवासी रूसियोंसे अपेक्षा अत्यधिक पराक्रमी हैं।
তিনি আমার অপেক্ষা পাঁচ বৎসরের বড়।
वह मुझसे पाँच वर्ष बड़ा है।
পৃথিবীর মধ্যে ভারতবর্ষ সর্বোৎকৃষ্ট দেশ।
संसारमें भारतवर्ष सबसे अच्छा देश है।
ব্যবসায় চাকরী অপেক্ষা অনেক বেশী ভাল।
व्यवसाय चाकरीसे बहुत अच्छा है।
পণ্ডিতেরা মূর্খ লোক অপেক্ষা বেশী সুখী।
पण्डित लोग मूर्खों से अधिक सुखी हैं।

सातवाँ पाठ।

उपयोगी शब्द।

অনুগ্রহ করিয়া। मिहरबानीसे, कृपा करके।
মনোযোগ করিয়া। ध्यानसे, ध्यान देकर।
শপথ করিয়া। शपथपूर्वक, कसम खाकर।
অত্যন্ত তাড়াতাড়ি করিয়া। अत्यन्त शीघ्रतासे।
স্বেচ্ছাপূর্ব্বক। अपनी मरज़ीसे, अपनी इच्छासे।
যত্নপূর্ব্বক। यत्नपूर्वक, होशियारीसे।
ঘোড়ায় চড়িয়া। घोड़े पर चढ़ कर।
পায়ে হাঁটিয়া। पैदल।
সাবধান পূর্ব্বক। सावधानीसे।
আলস্য করিয়া। आलस्य करके, सुस्तीसे।
পীড়া বশতঃ। रोगके कारणसे।
দুর্ব্বলতা বশতঃ। दुर्ब्बलताके कारणसे।
দরিদ্রতা নিবন্ধন। दरिद्रताके कारणसे।
শীতপ্রযুক্ত। जाड़ेके मारे।
ঈর্ষাপ্রযুক্ত। ईर्षाके कारणसे।
সময়ের অভাব বশতঃ। समय न रहनेसे
বিলম্ব বশতঃ। देर होनेकी वजहसे।
স্নেহ বশতঃ। प्रेमके कारण।
দৈবক্রমে। दैवात्, इत्तिफ़ाक़ से।

ভাগ্যক্রমে। भाग्यवश।
কোনক্রমেই না। किसी तरह नहीं।
ভ্রমক্রমে। भूलसे, ग़लतीसे।
প্রসঙ্গক্রমে। प्रसङ्गवश।
পর্য্যায়ক্রমে। बारीसे।
সম্মতিক্রমে। सम्मतिसे।
দিন দিন। दिन ब दिन, रोज़ रोज।
ঘণ্টায় ঘণ্টায়। घण्टे घण्टे में।
সপ্তাহে সপ্তাহে। सप्ताह सप्ताह में।
একে একে। एक एक करके।
ক্রমে ক্রমে। क्रम क्रमसे।
পদে পদে। पैंड पैंड पर, क़दम क़दम पर
ফোঁটা ফোঁটা। बूँद बूँद करके।
দ্বারে দ্বারে। द्वार द्वार पर।
রাস্তায় রাস্তায়। गली गलीमें।
দেশে দেশে। देश देशमें।
ঘরে ঘরে। घर घरमें।
যুগে যুগে। युग युगमें।
বনে বনে। बन बनमें।
নগরে নগরে। नगर् नगर में।
সর্ব্বসমেত। बिलकुल, सबका सब।
কোনক্রমেই না। किसी उपाय से नहीं।

গোপনে। गुप्तरूपसे।
পরিবর্ত্তে। बजाय, बदलेमें, स्थानमें।
সত্বেও। तिसपर भी
সকল প্রকারে। सबतरहसे।
সর্ব্বতোভাবে। सर्व्वतोभावसे।
অনেকের মতে। बहुतोंकी सम्मतिसे।
বিবেচনা করিয়া। ख्याल करके, बलिहाज़।
পক্ষান্তরে। पक्षान्तरमें।
সৎ উদ্দেশ্যে। अच्छे उद्देश्यसे।
উচ্চৈঃস্বরে। उच्चस्वरसे, ज़ोरकी आवाज़से।
কর্কশ স্বরে। कठोर आवाज़से।
করুণস্বরে। रोनीसी आवाज़में।
ভগ্নস্বরে। टूटे फूटे स्वरसे, अटकती आवाज़से।
কাতরবচনে। करुणामय वचनसे।
সর্ব্বত্র। सब जगह।
বহুদূরে। बहुत दूर पर।
এদিক ওদিক। इधर उधर।
অল্পবিস্তর। कम अधिक।
সর্ব্বোপরি। सबसे ऊपर।

নবাঁ অধ্যায়।

পহিলা পাঠ।

ব্যায়াম।

কাল ও অবস্থা বিশেষে ব্যায়াম করা উচিত। ব্যায়ামে শরীর লঘু সুদৃঢ় হয়, কার্য্যে উৎসাহ জন্মে, অগ্নি বৃদ্ধি ও মেদ ধাতু ক্ষয় হয়। ব্যায়ামশীল ব্যক্তি বিরুদ্ধ কি বিদগ্ধ দ্রব্য ব্যবহার করিলেও সহজে পরিপাক পায় এবং অঙ্গশৈথিল্য, জরা প্রভৃতি ব্যায়ামশীল ব্যক্তিকে সহসা আক্রমন করিতে পারে না। বলবান্ স্নিগ্ধ ভোজী এবং স্থূল ব্যক্তির পক্ষে ব্যায়াম অত্যন্ত উপকারী। ব্যায়ামের ন্যায় স্থৌল্যনাশক ক্রিয়া আর দ্বিতীয় নাই।

व्यायाम।

समय और अवस्था विशेष में कसरत करना उचित है। कसरतसे शरीर हल्का और मज़बूत होता है। काममें उत्साह होता है। अग्नि हृद्धि होती है तथा मेद धातु क्षय होता है। कसरती आदमीको विरुद्ध और विदग्ध भोजन भी सहज

में पचजाता है एवं अङ्ग शैथिल्य और बुढ़ापा प्रभृति कस-रतो पर आक्रमण नहीं कर सकते। बलवान और चिकना भोजन करनेवाले तथा मोटे आदमीके लिये कसरत अत्यन्त उपकारी है। व्यायामके समान स्थलता (मुटापा) नाशक दूसरा और उपाय नहीं है।

दूसरा पाठ।

তৈল মর্দ্দনম্।

তৈল মর্দ্দনে শ্রমের শান্ত ও বাতের উপশম হয়; দৃষ্টিশক্তি ও আয়ু বৃদ্ধি এবং শরীর পুষ্ট হয়, চর্ম্মের দৃঢ়তা ও শোভা সম্পাদিত হয়, সুনিদ্রা জন্মে এবং জরা আক্রমণ করিতে পারে না। মস্তকে, কর্ণ ও পদদ্বয়ে বিশেষরূপে তৈল ব্যবহার করা কর্ত্তব্য।

तैलकी मालिश।

तैल मलने से श्रमकी शान्ति और वातका उपशम होता है। दृष्टि-शक्ति और आयु एवं शरीर पुष्ट होता है। चमड़ा मजबूत और शोभायमान होजाता है। अच्छी नींद आती है और बुढ़ापा आक्रमण नहीं कर सकता। सिर, कान और दोनों पैरोंमें विशेष रूपसे तैल मालिश कराना चाहिये।

तीसरा पाठ ।

স্নানম্।

স্নানে শরীর পবিত্র হয়। বল, বীর্য্য, আয়ু, ওজধাতু বৃদ্ধি পায় এবং শ্রম, স্বেদ ও দেহের মল বিদূরিত হয়।

স্নান করিবার সময় শরীরে ঈষৎ উষ্ণ জল ও মাথায় শীতল জল ব্যবহার করা কর্ত্তব্য। মাথায় উষ্ণ জল ব্যবহার করিলে কেশমূল শিথিল হয় এবং দৃষ্টি হ্রাস পায়। উষ্ণ জলে স্নান, দুগ্ধপান, যুবতী স্ত্রী সম্ভোগ, ঘৃতাদিদ্বারা স্নিগ্ধ অন্ন ভোজন সর্ব্বদা মানবগণের পক্ষে সুপথ্য।

स्नानम्।

स्नानसे शरीर पवित्र होता है। बल, वीर्य्य, आयु और ओज धातुकी वृद्धि होती है तथा श्रम, पसीना और देहका मैल दूर होता है।

स्नान करनेके समय शरीर पर कुछ गर्म जल और शिर पर शीतल जल व्यवहार करना उचित है। माथे पर गरम जल व्यवहार करने से बालोंकी जड़ ढीली पड़ती है तथा नेत्र ज्योति कम होजाती है। गरम जलसे स्नान, दूध पीना, युवती स्त्रीसे सम्भोग करना और घी वगैरः से चिकना भोजन करना मनुष्योंके लिये सदा हितकारी है।

চৌথা পাঠ।

আহার।

মানব শরীরে স্বাভাবিক নিয়মে এই চারি প্রকার ইচ্ছা জন্মিয়া থাকে। যথা—আহারের ইচ্ছা, পান করিবার ইচ্ছা, নিদ্রা ও সহবাসের ইচ্ছা। আহারের ইচ্ছা জন্মিলে যদি আহার করা না যায়, তাহা হইলে অঙ্গ মর্দ্দ, অরুচি, শ্রমবোধ, তন্দ্রা, দুর্ব্বলতা, বলক্ষয় ও ধাতুপাক লক্ষণ সমূহ পরিলক্ষিত হইতে থাকে।

যথাবিধি আহারে—দেহ ধারণ করে, প্রীতি ও বল জন্মায় এবং স্মরণ শক্তি, আয়ু উৎসাহ, বর্ণ, ওজধাতু, জীবনীয় শক্তি, ও শরীরের কান্তি বৃদ্ধি করে।

প্রাতঃকালে ও সায়ংকালে এই দুইবার মাত্র আহার করা উচিত। রসাদি ধাতু, কফাদি দোষ ও মল সমূহ সম্যক পরিপাক পাইয়া যখনই ক্ষুধার উদ্বেগ হয়, তখনই আহার করা কর্ত্তব্য।

আমাশয়ের দুই ভাগ অন্নাদি ভোজ্য বস্তু দ্বারা ও এক ভাগ জলদ্বারা পূর্ণ করিয়া চতুর্থ ভাগ বায়ু সঞ্চারণের জন্য খালি রাখিবে।

आहार।

मनुष्य शरीरमें स्वाभाविक नियम अनुसार ये चार प्रकारकी इच्छाएं होती हैं। यथा—खानेकी इच्छा, पीनेकी इच्छा, सोने और स्त्री-सहवासकी इच्छा। खानेकी इच्छा

होने पर भोजन न दिया जाय तो शरीरमें दर्द, अरुचि थकान, जँभाई, कमजोरी, बलका नाश और ग्लानि आदि धातुपाक के लक्षण होते हैं।

विधि सहित किया हुआ भोजन देहको धारण करता, प्रीति और बल पैदा करता एवं स्मरण-शक्ति, आयु, उत्साह, वर्ण, ओज, जीवनीय शक्ति और शरीर की कान्तिको वृद्धि करता है।

सवेरे और शाम को दो बार भोजन करना उचित है। रस आदि धातु, कफादि दोष और मल समूह परिपाक होने पर जब भूख लगे तभी खाना उचित है।

आमाशयके दो भाग अन्न आदि खानेकी चीज़ों द्वारा और एक भाग जल द्वारा भरकर, चौथा भाग वायुके घूमनेके लिये खाली रखना चाहिये।

पाँचवाँ पाठ।

এক ব্যক্তির একটী ঘোড়া ছিল। সে ঐ ঘোড়া ভাড়া দিয়া, জীবিকা নির্বাহ করিত। গ্রীষ্মকালে, একদিন কোনও ব্যক্তি চলিয়া যাইতে যাইতে অতিশয় ক্লান্ত হইয়া ঐ ঘোড়া ভাড়া করিল। মধ্যাহ্নকাল উপস্থিত হইলে, সে ব্যক্তি

ঘোড়া হইতে নামিয়া খানিক বিশ্রাম করিবার নিমিত্ত ঘোড়ার ছায়ায় বসিল, তাহাকে ঘোড়ার ছায়ায় বসিতে দেখিয়া যাহার ঘোড়া সে বলিল, ভাল, তুমি ঘোড়ার ছায়ায় বসিবে কেন ? ঘোড়া তোমার নয়; এ আমার ঘোড়া আমি উহার ছায়ায় বসিব তোমায় কখনও বসিতে দিব না। তখন সে ব্যক্তি বলিল, আমি সমস্ত দিনের জন্য ঘোড়া ভাড়া করিয়াছি ; কেন তুমি আমার উহার ছায়ায় বসিতে দিবে না ? অপর ব্যক্তি বলিল, তোমাকে ঘোড়াই ভাড়া দিয়াছি, ঘোড়ার ছায়া ত ভাড়া দিই নাই। এইরূপে ক্রমে ২ বিবাদ উপস্থিত হওয়াতে উভয়ে ঘোড়া ছাড়িয়া দিয়া মারামারী করিতে লাগিল। এই সুযোগে ঘোড়া বেগে দৌড়িয়া পলায়ন করিল, আর উহার সন্ধান পাওয়া গেল না।

किसी शख्स के एक घोड़ा था। वह इस घोड़े को भाड़े पर देकर जीविका निर्व्वाह करता था। ग्रीष्म कालमें, एकदिन, किसी शख्सने जाते जाते बहुतही थक कर यह घोड़ा भाड़े किया। मध्याह्नकाल होने पर वह शख्स घोड़ेसे उतर कर, थोड़ासा आराम करनेके लिये घोड़ेकी छायामें बैठ गया। उसे घोड़ेकी छाया में बैठते देख कर घोड़ेका मालिक बोला :—भला, तुम घोड़ेकी छाया में क्यों बैठे? घोड़ा तुम्हारा नहीं है; यह मेरा घोड़ा है, मैं उसकी छायामें बैठूँगा। तुमको हरगिज न बैठने दूँगा तब वह शख्स बोला, मैंने सारे दिनके लिये घोड़ा भाड़े किया है, तुम मुझे इसकी छायामें क्यों न बैठने दोगे? दूसरा शख्स बोला, तुमको घोड़ा ही भाड़े दिया है घोड़े की छाया तो भाड़े नहीं दी। इस तरह, क्रम क्रमसे विवाद होनेपर, दोनोंने घोड़ा छोड़ दिया और मारपीट करने लगे। इसी सुयोगमें घोड़ा जोरसे दौड़ कर भाग गया। फिर उसका पता न मिला।

ছঠা পাঠ।

গোপালপুর নামক এক গ্রামে হরিদাস দত্ত নামে এক দরিদ্র গৃহস্থ বাস করিতেন। হরিদাসের অন্ন সংস্থানের কোন উপায় ছিল না। একদিন সে নির্জ্জনে বসিয়া নিজ স্ত্রী পুত্রের ভবিষ্যতে কি হইবে, তাহা চিন্তা করিতেছে, এমন সময় ঐ গ্রামের একটী সম্ভ্রান্ত লোক আসিয়া বলিলেন, "হরিদাস তুমি কি ভাবিতেছ? তুমি সর্ব্বদা এরূপ দুর্ভাবনা করিলে পাগল হইবে। কোন ভাবনা না করিয়া ধনোপার্জ্জনে মন দিলে দিন দিন নিশ্চই তোমার উন্নতি হইবে। আমি তোমার উপকার করিতেছি। আমার সহিত আইস, আমি তোমাকে কলিকাতায় লইয়া গিয়া, কোন মহাজনের কোন কার্য্যে নিযুক্ত করিয়া দিতেছি। তাহা হইলে অল্প সময়ের মধ্যেই তোমার দরিদ্রতা দূর হইবে।"

गोपालपुर नामक एक गाँवमें हरिदास दत्त नामका एक दरिद्र गृहस्थ रहता था। हरिदासके अन्नसंस्थानका कोई उपाय न था। एक दिन वह एकान्तमें बैठा हुआ यह सोच रहा था कि मेरे स्त्री पुत्रोंका भविष्यत्में क्या हाल होगा। इसी समय, इस गाँवका एक सम्भ्रान्त व्यक्ति आकर बोला "हरिदास तुम क्या सोचते हो? तुम सदा इस तरह दुर्भावना करनेसे पागल होजाओगे। किसी तरहका विचार न कर धनके कमाने में दिल लगाने से दिन दिन निश्चयही तुम्हारी उन्नति होगी। मैं तुम्हारा उपकार करता हूँ मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें कलकत्ते ले चलकर किसी महाजन के यहाँ किसी कामपर नियुक्त करा दूँगा। ऐसा होनेसे थोड़े समय में ही तुम्हारा दरिद्र दूर हो जायगा।

सातवाँ पाठ।

শৃগাল ও দ্রাক্ষাফল।

একদা এক ক্ষুধার্ত্ত শৃগাল আহারান্বেষণে ইতস্ততঃ ভ্রমণ করিতে-করিতে কোনও স্থানে বেড়ার উপর কয়েকটী দ্রাক্ষাফল দেখিতে পাইল। সুমিষ্ট ও সুপক্ক দ্রাক্ষাফল

দেখিয়া শৃগালের বড় লোভ জন্মিল, কিন্তু সে বহু চেষ্টা করিয়াও সেই উচ্চ স্থানে উঠিতে পারিল না। অবশেষে অত্যন্ত পরিশ্রান্ত ও নিরাশ হইয়া বলিতে বলিতে চলিয়া গেল, "আঙ্গুর ফল অম্ল রসে পরিপূর্ণ ও অপক্ব, অতএব উহার জন্য চেষ্টা না করাই শ্রেয়ঃ।"

स्यार और अंगूर।

एक दफा एक भूखे स्यारने आहार की तलाश में इधर उधर घूमते घूमते किसी स्थान पर पेड़के ऊपर कुछ अँगूर देखे। मीठे और खूब पके हुए अँगूर देख कर स्यारका मन ललचा गया। किन्तु बहुत सी चेष्टायें करने पर भी वह ऊँचे स्थानपर चढ़ न सका। अन्तमें बहुत थकित और निराश होने पर वह यह कहता हुआ चला गया, "अँगूर खट्टे और कच्चे हैं, अतएव इनके लिये चेष्टा न करना ही अच्छा है।"

আঠবাঁ পাঠ।

কুকুর ও প্রতিবিম্ব।

একটা কুকুর, একখণ্ড মাংস মুখে করিয়া নদী পার হইতেছিল। নদীর নির্ম্মল জলে তাহার যে প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, সেই প্রতিবিম্বকে অন্য কুকুর স্থির করিয়া, মনে মনে বিবেচনা করিল, এই কুকুরের মুখে যে মাংসখণ্ড আছে কাড়িয়া লই ; তাহা হইলে আমার দুই খণ্ড মাংস হইবেক।

এইরূপ লোভে পড়িয়া মুখ বিস্তার করিয়া, কুকুর যেমন সেই অলীক মাংস খণ্ড ধরিতে গেল অমনি উহার মুখস্থিত মাংস-খণ্ড জলে পড়িয়া স্রোতে ভাসিয়া গেল। তখন সে, হতবুদ্ধি হইয়া কিয়ৎক্ষণ স্তব্ধ হইয়া রহিল, অনন্তর, এই ভাবিতে ভাবিতে নদী পার হইয়া চলিয়া গেল; যাহারা লোভের বশীভূত হইয়া কল্পিত লাভের

প্রত্যাশায় ধাবমান হয়, তাহাদের এই দশাই ঘটে।

कुत्ता और प्रतिविम्ब।

एक कुत्ता, माँसका एक टुकडा लिये हुए नदी पार कर रहा था। नदीके निर्मल जलमें उसकी परछाईं पडी। उस परछाईंको दूसरा कुत्ता समझकर मनमें विचारने लगा, इस कुत्तेके मुँहमें जो माँसका टुकडा है उसे निकाल लूँ तो मेरे पास माँसके दो टुकडे हो जायँ।

इस तरह लोभमें पडकर उसने मुँह फैलाया, कुत्ता जिस समय परछाईंरूपी माँस-खण्डको पकडने लगा उस समय उसके मुँहका माँस खण्ड जलमें गिर गया और धारामें बह गया। उस समय वह हतबुद्धि होकर कुछ क्षणतक स्तब्ध हो गया। पीछे यह विचारता विचारता नदी पार चला गया, कि जो लोभके वशीभूत होकर कल्पित लाभकी आशासे दौडते हैं उनकी यही दशा होती है।

নবম পাঠ।

নেকড়েবাঘ ও মেষশাবক।

এক ব্যাঘ্র, পর্বতের ঝরণায় জল পান করিতে করিতে, দেখিতে পাইল কিছুদূরে, নীচের দিকে, এক মেষশাবক জল পান করিতেছে। সে দেখিয়া মনে ২ কহিতে লাগিল, এই মেষের প্রাণ সংহার করিয়া, আজিকার আহার সম্পন্ন করি ;, কিন্তু বিনা দোষে এক জনের প্রাণবধ করা ভাল দেখায় না ; অতএব একটা দোষ দেখাইয়া, অপরাধী করিয়া উহার প্রাণবধ করিব।

এই স্থির করিয়া, ব্যাঘ্র সত্বরগমনে মেষশাবকের নিকট উপস্থিত হইয়া কহিল, অরে দুরাত্ম ! তোর এত বড় আস্পর্দ্ধা যে, আমি জল পান করিতেছি দেখিয়াও, তুই জল ঘোলা করিতেছিস্ ! মেষ শুনিয়া ভয়ে কাঁপিতে কাঁপিতে কহিল, সে কি

মহাশয়! আমি কেমন করিয়া আপনার পান করিবার জল ঘোলা করিলাম। আমি নীচে জল পান করিতেছি, আপনি উপরে জল পান করিতেছেন। নীচের জল ঘোলা করিলে উপরে জল ঘোলা হইতে পারে না।

বাঘ কহিল, সে যাহা হউক, তুই এক বৎসর পূর্ব্বে আমার বিস্তর নিন্দা করিয়াছিলি; আজি তোরে তাহার সমুচিত প্রতিফল দিব। মেষশাবক কাঁপিতে কাঁপিতে কহিল, আপনি অন্যায় আজ্ঞা করিতেছেন; এক বৎসর পূর্ব্বে আমার জন্মই হয় নাই; সুতরাং তৎকালে আমি আপনকার নিন্দা করিয়াছি, ইহা কিরূপে সম্ভবিতে পারে। বাঘ কহিল, হাঁ বটে, সে তুই নহিস্, তোর বাপ আমার নিন্দা করিয়াছিল। তুই কর, আর তোর বাপ করুক, একই কথা। আর আমি তোর কোন

ওজর শুনিতে চাহিনা ; এই বলিয়া, বাঘ ঐ অসহায় দুর্ব্বল মেষশাবকের প্রাণসংহার করিল ।

भेड़िया और भेड़का बच्चा ।

एक भेड़ियेने, पहाड़के झरनेपर, जल पीते पीते देखा कि कुछ दूरपर, नीचे की तरफ़, एक भेड़का बच्चा जल पीता है। वह उसे देखकर मनमें कहने लगा कि भेड़के प्राणनाश करके आजका आहार जुटाऊँ। किन्तु बिना दोष एक जीवका प्राणनाश करना अच्छा नहीं मालुम होता ; अतएव एक दोष दिखाकर और अपराधी बनाकर उसका प्राणनाश करूँगा।

यह बात स्थिर करके, भेड़िया जल्दी २ चलकर भेड़के बच्चेके पास उपस्थित होकर कहने लगा, अरे दुरात्मा ! तुझे इतना घमण्ड है कि मुझे जल पीते देखकर भी तू जलको गदला करता है। भेड़का बच्चा यह बात सुनकर काँपते काँपते कहने लगा, यह क्या, महाशय ! मैंने आपके पीनेका जल किस तरह गदला किया ? मैं तो नीचे जल पीता हूँ और आप ऊपरका जल पीरहे हैं। नीचेका जल गदला करनेसे ऊपरका जल गदला नहीं हो सकता।

भेडिया कहने लगा, जो हो, तूने एक वर्ष पहले मेरी बहुत निन्दा की थी, आज तुझे उसका समुचित प्रतिफल दूँगा। भेड़का बच्चा काँपते काँपते कहने लगा, आप अन्याय कर रहे हैं। एक वर्ष पहिले तो मेरा जन्म ही नहीं हुआ था। सुतरां उस समय मैंने आपकी निन्दा की, यह किस भाँति सम्भव हो सकता है। भेड़िया कहने लगा, हाँ ठीक है, ठीक है। तू वह नहीं है, तेरे बापने मेरी निन्दा की थी। तू करे चाहें तेरा बाप करे एक ही बात है। मैं तेरा कोई और उज्र सुनना नहीं चाहता। ऐसा कहकर भेड़ियेने उस असहाय दुर्बल भेडके बच्चेके प्राणनाश कर दिये।

कलकत्तेकी सुप्रसिद्ध

हरिदास एण्ड कम्पनी।

की

अव्यर्थ रामबाण औषधियाँ

नारायण तेल।

(वायुरोगोंका दुश्मन)

इस जगत् प्रसिद्ध "नारायण तेल" को कौन नहीं जानता? वैद्यक शास्त्रमें इसकी खूब ही तारीफ लिखी है। आज़माने से हमने भी इसे अनेक अंगरेज़ी दवाओंसे अच्छा पाया है। लेकिन आजकल यह तेल असली कम मिलता है, क्योंकि अव्वल तो इसकी बहुत सी जड़ी बूटियाँ मुशकिलसे भारी खर्चमें मिलती हैं। दूसरे, इसके तैयार करनेमें भी बड़ी मिहनत करनी पड़ती है। इसी वजहसे कलकतिये कविराज इसे बहुत महँगा बेचते हैं। हमारे यहाँ यह तेल बड़ी सफ़ाई और शास्त्रोक्त विधिसे तैयार किया जाता है। यही कारण है, कि अनेक देशी वैद्य लोग इसे हमारे यहाँ से ले जाकर अपने रोगियोंको देते और धन तथा यश कमाते हैं।

यह तेल हमारा अनेक बारका आजमाया हुआ है। हजारों रोगी इससे आराम हुए हैं।

हम विश्वास दिलाते हैं, कि इसकी लगातार मालिश कराने से शरीरका दर्द, कमरका दर्द, पैरोंमें फूटनी होना, शरीरका दुबलापन या रुखापन, शरीरकी सूजन अर्द्धाङ्ग,लकवा मारजाना, शरीरका हिलना, कांपना, मुखका खुला रह जाना, बन्द हो जाना, शरीर दण्डेके समान तिरछा हो जाना, अङ्गका सूनापना, झनझनाहट, चूतड़से टखने तकका दर्द, आदि समस्त वायुरोग निस्सन्देह आराम हो जाते हैं। यह तेल भीतरी नसोंको सुधारता, सुकड़ी नसोंको फैलाता और हड्डी तकको नर्म कर देता है, तब बादी (वायु) के नाश करनेमें क्या सन्देह है? गठिया और शरीर का दर्द वगैरः आराम करनेमें तो इसे नारायणका सुदर्शन चक्र ही समझिये। दाम आधपाव तेलका १) मात्र है।

दादकी मलहम।

यह मलहम दादके लिये बहुत ही अच्छी है। ५।६ बार धीरे धीरे मलनेसे दाद साफ़ हो जाता है। लगती बिल्कुल नहीं। लगाने में भी कुछ दिक्कत नहीं। दाम ।) डि०।

कर्पूरादि मलहम।

यह मलहम खुजलीपर, जिसमें मोती समान फुन्सियाँ हो

हो जाती हैं, प्रमाण है। आजमा कर अनेक बार देख चुके हैं कि, इसके लगानेमें गोली खुजली, जले हुए घाव, छाले, फटे हुए घाव, फोड़े फुन्सी तथा औरतोंके गुप्तस्थानकी खुजली और फुन्सियां निश्चय ही आराम हो जाती हैं। कृल्म में ताकत नहीं है, जो इसके पूरे गुण वर्णन कर सके। दाम १ डि० ।≈)

शिर शूलनाशक लेप।

इसको ज़रासे जलमें पीसकर मस्तक पर लेप करने से मन भावन सुगन्ध निकलती है और हर प्रकारके सिर दर्द फौरन आराम हो जाते हैं। बुखार और गर्मीसे पैदा हुए सिरदर्दमें तो यह रामबाण ही है। दाम १ डि० ।≈) आना

सूचना।

आध आनेका टिकट भेजकर बड़ा सूचीपत्र मँगा देखिये।

हिन्दी बँगला शिक्षा

द्वितीय भाग।

लेखक
हरिदास वैद्य।

प्रकाशक
हरिदास एण्ड कम्पनी।

द्वितीय संस्करण

मूल्य ||)

HINDI BENGALI SHIKSHA.

(Second Part)

By

PANDIT HARIDASS,

AN EXPERIENCED TEACHER,

Formerly Head Master T A V School, Pokaran (JODHPUR)

AND AUTHOR OF

Swasthya Raksha, Angrezi Shiksha Series, Aqlmandi ka Khazana Kalgyan & Translator of Gulistan, Bhagvada Gita, Rajsingh or Chanchal Kumari etc.

SECOND EDITION.

1916

Printed by BABU RAMPRATAP BHARGAVA,

at the "Narsingh Press

201 Harrison Road

CALCUTTA.

दूसरी बार १०००]

[मूल्य ।)

हमारा वक्तव्य।

जिस जगदाधारकी असीम कृपासे संसारके सम्पूर्ण कार्य सुचारु रूपसे सम्पन्न होते हैं; उसी जगन्नायककी विशेष अनुकम्पा तथा साहित्यसेवी, उदारहृदय और विद्याव्यसनी ग्राहकोंकी अशेष कृपाका यह फल है कि आज हम "हिन्दी-बँगला शिक्षा" का यह दूसरा भाग लेकर सर्वसाधारणके सम्मुख उपस्थित हो सके हैं। इसके प्रथम भागकी हिन्दी-सेवियोंने जैसी क़दर की, उसीसे मालूम होता है कि हमारी थोड़ी सी तुच्छ सेवाने कुछ विशेष फल दिखाया है और यही एक प्रधान कारण है कि हमारे हृदयमें वसन्तागमनके समान यह दूसरा भाग भी लिखकर ग्राहकोंकी सेवामें अर्पण करनेका विशेष उत्साह और अवसर प्राप्त हुआ।

यद्यपि हमारी "बँगला-शिक्षा" के प्रथम भागने बँगला सीखनेमें बहुत कुछ सहायता प्रदान की है; यद्यपि अधिकांश नाम, शब्द, वाक्य और मुहावरोंका उसीसे पता मिल जाता है; यद्यपि बँगला सरीखे अथाह रत्नभाण्डारका आनन्द उपभोग करनेकी शक्ति उसी प्रथम भागसे ही आ जाती है, तथापि व्याकरणसे अमूल्य विषयका, जो भाषाको शुद्ध करनेका एक मात्र ही अस्त्र है, भीषण अभाव रह जाता है। बिना व्याकरण जाने किसी भाषाको पढ़ लेनेकी शक्ति

आ जाने पर भी उसी भाषाको शुद्ध बोलने, लिखने और उस भाषाका पण्डित होनेमें एक बड़ा ही विषम घाटा रह जाता है; जिससे मनुष्य न उस भाषाका लेखक ही हो सकता है और न वक्ता ही। यही एक प्रधान त्रुटि दूर करनेके लिये, ग्राहकोंसे उपरोक्त बयाह उत्साह मिलता हुआ देखकर, मुझे इस 'हिन्दी बँगला शिक्षा का' यह दूसरा भाग भी लिखना ही पड़ा।

इस भागमें व्याकरणका आरम्भ करके जो कुछ विषय बँगला सीखने वालोंके लिये उपयोगी दिखाई दिये, लगभग सभी लिख दिये गये हैं। व्याकरणसे कड़े चनेको समझाकर मुलायम कर देनेका बहुत कुछ उद्योग भी कर दिया गया है और साथ ही बँगलाके वे घराऊ शब्द जो प्रचलित भाषा में काम आते हैं इसलिये अधिक करके दे दिये गये हैं, जिससे बोलचालमें, वक्तृता देते समय अथवा लेख लिखते समय भद्दापन न आ जाय। यह भाग कैसा हुआ, हम अपनी मनोभिलाषा पूरी कर सके या नहीं, अथवा इससे कुछ लाभ होगा या नहीं, यह सरलहृदय समालोचक और साहित्यसेवी तथा बँगला सीखनेवाले हमारे ग्राहकगण ही जानें।

प्रेमी ग्राहकगण और उदारहृदय समालोचकोंके लिये एक बात और भी कहनी है:—लोभ मनमें आते ही मनुष्य भले बुरेका ज्ञान छोड़, असत्पथपर चलनेके लिये तय्यार हो जाते हैं। ठीक यही दशा 'अंगरेजी हिन्दी शिक्षा' और

'हिन्दी बँगला शिक्षा' के सम्बन्धमें भी हो रही है। हमारी सफलता, सम्पादकोंकी विशेष कृपा, ग्राहकों और अँगरेजी बँगला सीखनेवालोंकी विशेष कदरदानीने एक विषम हलचल मचा दी है। हम नहीं जानते—साहित्यसेवी कहलाकर, बहुत दिनोंतक हिन्दी माताकी सेवा भी करनेपर, हिन्दीके विद्वानों और सुलेखकोंमें अपनी गणना कराकर तथा ऊँची गद्दीपर बैठकर भी केवल अपने उदरपालनार्थ ऐसे काम करनेके लिये लोग क्यों तय्यार हो जाते हैं जिनसे केवल उनकी नेकनामी, कीर्त्ति और विद्वत्तामें ही बट्टा नहीं लगता बल्कि खास उस साहित्यमाताका भी अपकार होता है जिसके भरोसे उनका उदरपोषण होता है। हम जानते हैं कि उनकी गणना अच्छोंमें है—परन्तु दुःखकीबात है कि जिस कार्यमें ऐसे लोगोंने अब हाथ डाला है, उसमें उनका अनुभव नहीं है उतनी विद्वत्ता भी नहीं है और न उस शैलीसे ही वे परिचित हैं जिसकी ऐसी ग्रन्थ रचनामें विशेष आवश्यकता है। फिर ऐसे कार्य करके, हंस कहलानेका हया दावा कर साहित्य माताका अपकार करना क्या उचित है? क्या एकबार साहित्यसेवी होकर फिर साहित्यकी जड़ काटनी उन्हें उचित है? चाहे जो हो, चाहे केवल उदर-पालनके लिये ही वे ऐसे कार्य क्यों न करते हों, पर हमारी तुच्छ बुद्धिमें योग्य कहलाकर—अयोग्यताका परिचय कदापि न देना चाहिये। कीर्त्तिको स्थायी रखना ही मनुष्यत्व और

बुद्धिमत्ता है; न कि थोड़े से लोभमें अपनी कीर्त्ति को जलाञ्जलि देना ही कर्त्तव्य है। दुःख का विषय है कि—लकाल के भरोसे पर, परन्तु क़ानूनी झगड़ों से बचते हुए, ऐसा काम भी ऐसेही साहित्य सेवियोंने करना आरम्भ किया है; जिससे हृदयमें दुःख और क्षोभ होता है। साहित्यकी उन्नति, देशमें विद्याका प्रचार तथा भारत-वासियोंका उपकार न होकर साहित्यकी अवनति, विद्या के प्रचारमें बाधा और भारत के नवजीवनोंका अपकार होना सम्भव दिखाई देता है तथा ग्राहक ठगे जाते हैं। एक तो हिन्दीके ग्रन्थोंकी क्या दशा है; यह सभीको मालूम ही है। फिर जिनकी शिक्षाकी ओर रुचि हुई, उनकी रुचि बिगाड़कर हिन्दी-ग्रन्थ-प्रसारमें बाधा डालना कदापि उचित नहीं है। ऐसा करनेसे सर्वसाधारणकी शिक्षासे अरुचि हो सकती है बस, यही कारण है कि सावधान करनेके लिये इतना लिखना पड़ा—*बात क्या है, हम नहीं लिख सकते;* साहित्यकी बिना कारण अवनति होती देख दुःख हुआ; इससे इतना भी लिख दिया—हमारी बातें सत्य हैं या नहीं, निष्पक्ष और उदार-हृदय समालोचकगण ग्रन्थ हाथमें ले, ध्यानसे पढ़कर तुलना करते हुए स्वयं विचार लें।

भवदीय—

हरिदास।

प्रथम खण्ड ।

बँगला व्याकरण ।

जिस पुस्तकके पढ़नेसे बँगला भाषाका ठीक ठीक लिखना और बोलना आता है, उसका नाम "बँगला व्याकरण" है।

वर्ण-ज्ञान ।

१। पदके प्रत्येक छोटेसे छोटे टुकड़े या भागको वर्ण या अक्षर कहते हैं।

"হরি পড়িতেছে"। यहाँ "হরি" और "পড়িতেছে" ये दो

पद मिलकर एक वाक्य बना है। इसमें "হরি" इस पदमें হ, রি ये दो छोटे टुकड़े या भाग हैं और হ+অ, র+ই ये चार छोटेसे छोटे (यानी जिनसे छोटा टुकड़ा नहीं हो सकता ऐसे) टुकड़े या भाग है। इसीसे इन चारों में से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं। इसी तरह "পড়িতেছে" इस पदमें প, ড়ি, তে, ছে ये चार छोटे भाग और প+অ, ড+ই, ত+এ, ছ+এ ये आठ छोटेसे छोटे भाग हैं, इसलिये इनमें से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं।

२। बँगला भाषामें सब लेकर उनचास वर्ण या अक्षर हैं। उन्हीं अक्षरोंके समुदाय को <u>वर्णमाला</u> कहते हैं।

३। वर्ण दो भागोंमें बँटे हैं:—<u>स्वर</u> और <u>व्यञ्जन</u>। उनमें १३ स्वर और ३६ व्यञ्जन वर्ण हैं।

स्वर वर्ण।

४। जो वर्ण बिना किसी दूसरे वर्णकी सहायता लिये ही (अपने आप) उच्चारित होते हैं, उनका नाम <u>स्वरवर्ण</u> है। स्वर वर्ण ये हैं,—অ, আ, ই, ঈ, উ, ঊ, ঋ, ৯, এ, ঐ, ও, ঔ। *

---

* ঋ का प्राय व्यवहार नहीं होता। केवल क्ळृ, ৯, ঌ इत्यादि कुछ थोड़ीसी धातुओंके लिखनेमें उनकी जरूरत होती है, इसीसे कोई कोई लोग, ঋ को छोड़कर, स्वर वर्णकी संख्या बारह ही मानते हैं। बँगला भाषामें दीर्घ ৯ नहीं है, किन्तु संस्कृत भाषामें उसका चलन है।

५। स्वर वर्ण दो प्रकारके हैं :—(१) ह्रस्व, और (२) दीर्घ। অ, ই, উ, ঋ, ৯ ये पांच ह्रस्व और আ, ঈ, ঊ, ৠ, এ, ঐ, ও, ঔ, ये आठ दीर्घ हैं।

অ, ই, উ, ঋ, ৯ इन पाँचोंके उच्चारण में थोड़ा समय लगता है और আ, ঈ, ঊ, ৠ, এ, ঐ, ও, ঔ इन आठोंके उच्चारणमें उनसे कुछ अधिक समयकी ज़रूरत होती है।

स्वर वर्ण जब व्यञ्जन वर्णसे मिलता है तब उसे "बानान" (मात्रा) कहते हैं। অ और ৯ इन दोनोंको छोड़कर और और स्वर वर्णोंको व्यञ्जन वर्णोंके साथ मिलानेसे उनका रूप बदल जाता है। जैसे—

আ=া; ই=ি, উ=ু, ঊ=ূ; ঋ=ৃ; ৠ=ৄ;
এ=ে, ঐ=ৈ, ও=ো, ঔ=ৌ।

व्यञ्जन वा हल वर्ण।

६। स्वर वर्णोंकी सहायता बिना जो वर्ण साफ़ साफ़ उच्चारित नहीं हो (सक) ते, उन्हें व्यञ्जन वर्ण या हल वर्ण कहते हैं। पहले या पीछे स्वर वर्णको मिलाकर न पढ़नेसे व्यञ्जन वर्णका उच्चारण नहीं हो (सक) ता। प्रायः सब ही व्यञ्जन वर्णोंके पीछे 'अकार' लगा रहता है।

व्यञ्जन वर्ण ये हैं :—ক খ গ ঘ ঙ। চ ছ জ ঝ ঞ। ট ঠ ড ঢ ণ। ত থ দ ধ ন। প ফ ব ভ ম। য র ল ব। শ ষ স হ। ং ঃ।

ড়, ঢ়, য়, ये तीनों पृथक वर्ण नहीं हैं। ये केवल ড, ঢ, য,

इन्हीं तीन वर्णों के रूपान्तर हैं। ये वर्ण जब पदके बीचमें या अन्तमें रहते हैं तब ये ही ड़, ढ़, य़, माने जाते हैं। जैसे—कड़, मूढ़, नयन इत्यादि।

६ जिस व्यञ्जन वर्णमें कोई स्वर नहीं रहता, उसके नीचे (्) ऐसा चिन्ह देना पडता है; इस चिन्ह या निशानका नाम 'हसन्त चिन्ह' है *। जैसे—सम्राट् इत्यादि।

७। क से म तक,पचीस वर्णोंको स्पर्शवर्ण कहते हैं। स्पर्श वर्ण पाँच वर्गोंमें विभक्त है; आदि के या पहले वर्णको लेकर वर्गका नाम होता है। जैसे—क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग।

८। य, र, ल, व, इन चारोंका नाम अन्तःस्थ वर्ण है,

---

* व्यञ्जन वर्णके बाद, स्वर वर्ण रहनेसे वह स्वर वर्ण व्यञ्जन वर्णमें मिल जाता है। जैसे—कलम=क्+अ+ल्+अ। दिन=द्+इ+न्+अ। बालिका=ब्+आ+ल्+इ+क्+आ। चन्द्र=च्+अ+न्+द्+र्+अ।

हर एक पदमें दो या उससे अधिक वर्ण रहते हैं; इसी प्रकार वर्ण-विन्यास द्वारा यह साफ़ साफ़ मालूम हो जाता है कि कौन वर्ण पहिले और कौन वर्ण पीछे है।

= इसका नाम समान चिन्ह है। + इसका नाम युग चिन्ह है अर्थात् इसके द्वारा दो वर्णोंका योग या जोड़ समझा जाता है।

শ, ষ, স, হ, इन चारों का नाम ऊष्म वर्ण है; (ং) और (ঁ) का नाम अनुनासिक वर्ण है और (ঃ) विसर्गका नाम अयोगवाह वर्ण है।*

८। उच्चारण-स्थानके भेदोंसे वर्णोंके नामोंमें भी भेद होता है। जैसे—

অ আ ই ক খ গ ঘ ঙ इनका उच्चारण स्थान कण्ठ है; इसलिये इन्हें कण्ठ्य वर्ण कहते हैं।

ঈ ঐ চ ছ জ ঝ ঞ শ য इनका उच्चारण-स्थान तालु है; इसलिये इन्हें तालव्य वर्ण कहते हैं।†

ঋ ৠ ট ঠ ড ঢ ণ র ষ ড় ঢ় इनका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है; इसलिये इन्हें मूर्द्धन्य वर्ण कहते हैं।‡

ঌ ত থ দ ধ ন ল স इनका उच्चारण स्थान दन्त है; इसलिये इन्हें दन्त्यवर्ण कहते हैं।

উ ঊ প ফ ব ভ ম इनका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है; इसीसे इन्हें ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं।

---

* कोई कोई अनुस्वार और विसर्ग इन दोनोंको ही अयोगवाह कहते हैं।

† য়, यह वर्ण पदके बीचमें या अन्तमें लगाया जाता है। जैसे; অয়ন, শয়ন, জয়।

‡ ড় और ঢ় इन दोनों वर्णोंका प्रयोग भी पदके बीचमें या अन्तमें होता है। जैसे—ষড়, জড়তা, মূঢ়, দৃঢ়তা।

ए ऐ, इन दो वर्णों का उच्चारण स्थान कण्ठ और तालू है, इसलिये ये कण्ठ्य तालव्य वर्ण है।

ओ औ इन दो वर्णों का उच्चारण स्थान कण्ठ और ओठ है; इसवास्ते ये कण्ठ्योष्ठ वर्ण हैं।

अन्तःस्थ 'व' का उच्चारण स्थान दन्त और ओठ है, इस लिये यह दन्त्योष्ठ वर्ण है।

अनुस्वार और चन्द्रविन्दु नाकसे उच्चारित होते है, इस लिये ये अनुनासिक वर्ण हैं।

विसर्ग 'आश्रय स्थान' भागी है, अर्थात् जब जिस स्वरवर्ण के बाद रहता है, तब उसी स्वर वर्णका उच्चारण स्थान विसर्गका उच्चारण स्थान होता है। विसर्गका उच्चारण स्वर वर्णके बिना, 'ह' के उच्चारणकी तरह होता है। जैसे पुनः = पुनह्।

विसर्ग जिस स्वर वर्णके बाद होता है वह दीर्घकी तरह उच्चारित होता है। जैसे—प्रात काल।

संयुक्त वर्ण।

१०। यदि एक व्यञ्जन वर्णके बाद एक या उससे ज़ियादा व्यञ्जन वर्ण हों और बीचमें स्वर वर्ण न हो, तो वे सब व्यञ्जन वर्ण एक साथ मिल जाते हैं। इस तरह मिलकर, व्यञ्जन वर्ण जो रूप धारण करते हैं उसको युक्ताक्षर कहते हैं।

संयुक्त या मिले हुए वर्णके पहलेका वर्ण (पूर्व्व वर्ण) ऊपर और पीछेका वर्ण (परवर्ण) प्रायः नीचे लिखा जाता है। जैसे —ব্‌+দ্‌=ব্দ ; প্‌+ন্‌=প্ন ; ন্‌+দ্‌+র্‌=ন্দ্র।

थोड़ेसे संयुक्त वर्णोंका रूप बदल जाता है। वे नीचे दिखाये गये हैं। जैसे—ঙ+গ=ঙ্গ, জ+ঞ=জ্ঞ, ক্‌+ষ=ক্ষ, চ+ঞ=ঞ্চ, দ+ধ=দ্ধ, ত+র=ত্র, ক+ত=ক্ত, ষ+ণ=ষ্ণ, হ+ন=হ্ন, ন্‌+থ=ন্থ, হ+ম=হ্ম, ত্‌+ত=ত্ত, প+র=প্র, গ+র=গ্র इत्यादि।

র্‌ किसी व्यञ्जन वर्णके पहिले रहनेसे, बादके वर्णके माथे पर जाकर (´) ऐसा आकार धारण करता है। इसका नाम रेफ है। रेफ युक्त कोई कोई वर्णका द्वित्व हो जाता है अर्थात् वे वर्ण दो हो जाते हैं। जैसे—র+দ=র্দ। और আর্দ্র, চর্চ্চা, নির্জ্জর इत्यादि।

'ছ' द्वित्व होनेसे 'চ্ছ', 'থ' द्वित्व होनेसे 'ত্থ', 'ধ' द्वित्व होनेसे 'দ্ধ', और ত द्वित्व होनेसे 'ত্ত', ऐसा रूप धारण करता है। শ, র और ন युक्त होनेसे 'শ' कार और 'স' कार का उच्चारण 'ছ' कार के समान होता है, जैसे—শ্রাদ্ধ, স্রষ্টা, স্নান इत्यादि। 'স' कारके साथ ত या থ युक्त होनेसे वह 'স' कार 'চ' कार की तरह उच्चारित होता है। जैसे—প্রস্তাব, অবস্থিতি। जब 'হ' के नीचे कोई वर्ण लगता है तब वह 'হ' नीचेवाले वर्णके बाद उच्चारित होता है, जैसे আহ্লাদ =আল্‌+হাদ, মধ্যাহ্ন=মধ্যান্‌+হ, সহ্য=সয্‌+হ इत्यादि।

जब 'य' किसी वर्ण में संयुक्त होता है तो उसका उच्चारण 'इय' और अन्तःस्थ 'व' किसी वर्णमें युक्त होनेसे उच्चारण 'उअ' ऐसा होता है, जैसे—दिव्य=दिव्+इअ, विश्व=विश्+उअ इत्यादि।

सन्धि प्रकरण।

११। दो वर्ण पास पास होनेसे आपसमें एक दूसरेसे मिल जाते हैं, उस मिलनको सन्धि कहते हैं।

१२। सन्धि दो प्रकार की है,—स्वर सन्धि और व्यञ्जन सन्धि।

१३। एक स्वर वर्ण के साथ दूसरे स्वर वर्ण के मिलनको स्वर सन्धि कहते हैं।

१४। व्यञ्जन वर्ण के साथ व्यञ्जन वर्ण या व्यञ्जनवर्ण के साथ स्वरवर्ण के मिलनको व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

स्वर-सन्धि।

१५। अ के बाद अ या आ रहनेसे, और दोनोंके मिलनेसे आ होता है और वह आ पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे-শীত+অংশু=শীতাংশু। यहांपर शीत शब्द के अन्तमें अ है और पीछे अंशु शब्दका अ है; इसलिये उन दोनोंके मिलनसे आकार हुआ और वह आकार तकार में मिलकर "शीतांशु"

पद हुआ। इसी तरह पीत + अम्बर = पीताम्बर, कुश + आसन = कुशासन।

१६। आ के बाद अ अथवा आ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे आ होता है और वह आ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—विद्या + अभ्यास = विद्याभ्यास। यहाँपर विद्या शब्द के अन्तमें आ है और उस आ के बाद अभ्यास शब्दका अ है, इसलिये आ में अ मिलकर आ हुआ और वह आ पूर्व वर्ण 'द्य' में मिलकर "विद्याभ्यास" पद हुआ। उसी तरह तारा + आकार = ताराकार, महा + आशय = महाशय इत्यादि।

१७। ई के बाद ई या ई रहने से, और दोनोंके मिलनेसे ई होती है, वह ई पूर्व वर्ण में मिल जाती है। जैसे—अति + इत = अतीत। यहाँ पर अति के इकार के बाद इत शब्द का इकार है, इसलिये दोनों इकारों के मिलनेसे ईकार हुआ और वही ईकार पूर्व वर्ण तकार में मिलकर "अतीत" पद हुआ। इसीतरह गिरि + इन्द्र = गिरीन्द्र, गिरि + ईश = गिरीश इत्यादि।

१८। ई के बाद ई या ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ई होती है वह ई पूर्व वर्ण में मिल जाती है। जैसे—अती + इव = अतीव। यहाँपर ईकार के बाद इ है, इसलिये दोनों के मिलनेसे ईकार हुआ और वही ईकार पूर्व वर्ण तकार में मिल गया, जिससे अती + इव = अतीव के हुआ इसी तरह पृथ्वी + ईश्वर = पृथ्वीश्वर, काली + ईश = कालीश इत्यादि।

१८। उ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनों के मिलनेसे ऊ होता है यह ऊ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—विधु + उदय = विधूदय। इसी तरह साधु + उक्ति = साधूक्ति। तनु + ऊर्द्ध = तनूर्द्ध। विधु + उदय = विधूदय। यहांपर विधु शब्दके ह्रस्वके बाद उदयका उ है इसलिये ह्रस्व उ के बाद ह्रस्व उ रहनेकेकारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ। अब इसी दीर्घऊके पूर्ववर्ण ध में मिलनेसे विधूदय पद बन गया। साधूक्ति—साधु + उक्ति = साधूक्ति। यहां पर साधु इस शब्दके ह्रस्व उकारके बाद उक्ति शब्दका ह्रस्व उ है इसीसे ह्रस्व उकार के बाद ह्रस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह ऊ पूर्व वर्ण ध कारमें मिलकर 'साधूक्ति' पद बना। तनूर्द्ध—तनु + ऊर्द्ध = तनूर्द्ध। यहां पर तनु शब्दके ह्रस्व उकारके बाद ऊर्द्ध शब्दका दीर्घ ऊ है, इसलिये ह्रस्व उकारके बाद दीर्घ ऊ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह दीर्घ ऊ पूर्ववर्ण न में मिलकर "तनूर्द्ध" पद बना।

२०। ऊ के बाद ऊ या उ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऊ होता है, और ऊ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—तनू + उद्वेग = तनूद्वेग। यहां पर तनूके ऊ के बाद उद्वेग का उ रहनेसे और दोनोंके मिल जानेसे ऊ होगया और पूर्व वर्ण न में युक्त हुआ। इसी तरह भू + ऊर्द्ध = भूर्द्ध इत्यादि।

२१। अ या आ के बाद ई या ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए होजाता है और ए पूर्व वर्ण में मिलजाता है। जैसे,—नग + ईश

= নগেন্দ্র, মহ + ইন্দ্র = মহেন্দ্র, রমা + ঈশ = রমেশ, ধন + ঈশ্বর = ধনেশ্বর, উমা + ঈশ = উমেশ। नग + इन्द्र = नगेन्द्र ,—यहाँ पर नग शब्दके अ के बाद इन्द्रकी इ है , इसलिये अ के बाद इ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ और वह ए पूर्व वर्ण में मिलकर नगेन्द्र पद बना है। धन + ईश्वर = धनेश्वर , —यहाँ पर अ के बाद ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है। रमा + ईश = रमेश , यहाँ पर आ के बाद दीर्घ ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है।

२२। अ या आ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओ होता है, और वह ओ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे,—সূর্য + উদয় = সূর্যোদয়, নল + উদয় = নলোদয়, তরঙ্গ + ঊর্মি = তরঙ্গোর্মি, মহা + উদধি = মহোদধি, গঙ্গা + ঊর্মি = গঙ্গোর্মি। सूर्य + उदय = सूर्योदय —यहाँ पर अकारके बाद ह्रस्व उ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ और ओकार पूर्ववर्णमें मिलकर सूर्योदय पद बना। महा + उदधि = महोदधि ,—यहांपर आकारके बाद उकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ है। इसी तरह नलोदय, तरङ्गोर्मि, गङ्गोर्मि हैं।

२३। अ या आ के बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर् होता है। अर् का अ पूर्व वर्ण में मिल जाता है और र् पर वर्ण के माथेपर चला जाता है। अर्थात् रेफ् हो जाता है, जैसे, —দেব + ঋষি = দেবর্ষি, উত্তম + ঋণ = উত্তমর্ণ, অধম +

ऋणि = अधमर्णि, महा + ऋषि = महर्षि। देव + ऋषि = देवर्षि,— यहाँ पर अकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर् हुआ, अकार पूर्व वर्ण में मिल गया और र् के पर वर्ण व के माथेपर चले जानेसे "देवर्षि" पद बना। महा + ऋषि = महर्षि, यहाँ पर आकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर् हुआ है। आकार पूर्व वर्ण में मिल गया और र् पर वर्णके माथेपर चला गया है। इसी तरह उत्तमर्णि, अधमर्णि भी बने हैं।

२४। तृतीया तत्पुरुष समासमें अ या आ के बाद ऋत शब्द रहनेसे पूर्ववर्त्ती अ या आ के साथ मिलकर ऋत शब्द का आर् होजाता है आर् का आ पूर्ववर्णमें मिल जाता है और र् पर वर्णके मस्तक पर चला जाता है अर्थात रेफ हो जाता है। जैसे,—শোক + ঋত = শোকার্ত, তৃষ্ণা + ঋত = তৃষ্ণার্ত। * शोक + ऋत = शोकार्त्त,—यहाँ पर शोक शब्दके क के बाद ऋत शब्दका ऋकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे आर् हुआ, आ पूर्व वर्ण क में मिल गया और र पर वर्ण तकारमें जाकर "शोकार्त्त" पद बना।

२५। अ या आ के बाद ए या ऐ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐ होता है। ऐकार पूर्व वर्णमें मिल जाता है जैसे— শত + এক = শতৈক, বার + এক = বারৈক, দিন + এক = দিনৈক জন + এক = জনৈক, এক + এক = একৈক, মত + ঐক্য =

* रेफ युक्त व्यञ्जन वर्णका विकल्पमें द्वित्व होता है जैसे— पूर्व्वक, पूर्वक, निर्द्दग निर्दग इत्यादि।

মতৈক্য, বিপুল+ঐশ্বর্য্য=বিপুলৈশ্বর্য্য, মহা+ঐরাবত=মহৈরাবত, মহ+ঐশ্বর্য্য=মহৈশ্বর্য্য, অতুল+ঐশ্বর্য্য=অতুলৈশ্বর্য্য। वार+एक=वारैक,—यहाँ पर वार शब्दके अकारके बाद एक शब्दका एकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ और ऐकार पूर्व वर्ण रकारमें मिलकर "वारैक" पद बना। अतुल+ऐश्वर्य्य=अतुलैश्वर्य्य,—यहाँ पर अकारके बाद ऐकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ है। महा+ऐरावत =महैरावत ;—यहाँ पर आकारके बाद ऐकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ है। इसीतरह दिनैक, जनैक, एकैक, मतैक्य, विपुलैश्वर्य्य, महैश्वर्य्य हैं।

२६। অ या আ के बाद ও या ঔ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ঔ हो जाता है। वही ঔ पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे—জল+ওকাঃ=জলৌকাঃ, পত্র+ওঘ=পত্রৌঘ, নব+ঔষধি=নবৌষধি, মহা+ঔষধি=মহৌষধি, গত+ঔৎসুক্য=গতৌৎসুক্য इत्यादि। जल+ओकाः=जलौकाः ;—यहाँ पर जल शब्दके अकारके बाद ओकाः शब्दका ओकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे औकार हुआ और वही औकार पूर्व वर्ण लकारमें मिलकर "जलौका:" पद बन गया। इसी तरह, पत्रौघ, नवौषधि इत्यादि भी बने हैं।

२७। ই और ঈ के अलावः और कोई स्वरवर्ण ই या ঈ के बादमें रहनेसे ই বা ঈ के स्थानमें য্ हो जाता है, वह য্ पूर्व वर्णमें मिल जाता है और बादका स्वर उसी यकारमें मिल जाता है।

जैसे—যদি + অপি = যদ্যপি, অতি + আচার = অত্যাচার, প্রতি + আশা = প্রত্যাশা, প্রতি + আদেশ = প্রত্যাদেশ, নদী + উদিত = নদ্যুদিত, কালী + আগার = কাল্যাগার इत्यादि। यदि + अपि = यद्यपि,—यहां पर यदि शब्दके इकारके बाद अपि शब्दका अकार है; इसीसे इ और ई के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे इकारके स्थानमें य हुआ और वही य परवर्त्ती स्वरवर्ण अपिके अकार और पूर्व वर्ण दकारमें संयुक्त होकर "यद्यपि" पद बना। इसी तरह अत्याचार, प्रत्याशा इत्यादि भी बने हैं।

२८। उ और ऊ के सिवाय और कोई स्वरवर्ण बादमें रहने से उ या ऊ के स्थानमें व होता है, वह व पूर्ववर्णमें मिल जाता है और परवर्त्ती स्वर भी पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे—সু + আগত = স্বাগত, সাধু + ইচ্ছা = সাধ্বিচ্ছা, তনু + আচ্ছাদন = তন্বাচ্ছাদন, চক্ষু + আদি = চক্ষ্বাদি इत्यादि। सु + आगत = स्वागत:—यहां पर सु शब्दके उकारके बाद आगत शब्दका आकार है; इसीसे उ ऊ के सिवाय अन्य स्वरवर्ण बादमें रहनेसे उकारके स्थानमें व हुआ। व और परवर्त्ती स्वर वर्ण आगतके आकारके पूर्व वर्ण सकारमें मिल जानेसे "स्वागत" पद बना, इसी तरह साध्वीच्छा और तन्वाच्छादन बने हैं।

२९। ऋ के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे ऋके स्थानमें र् होता है, वह र् पूर्व वर्णमें मिल जाता है और

परवर्त्ती स्वर उसी रकारमें मिल जाता है। जैसे -मातृ+ आज्ञा=मात्राज्ञा, इत्यादि। मातृ+आज्ञा=मात्राज्ञा ;— यहाँ पर मातृ शब्दके ऋकारके बाद आज्ञाका आकार है ; इससे ऋ भिन्न स्वर वर्ण बादमें रहनेके कारण ऋकारके स्थानमें र हुआ और वह र और परवर्त्ती स्वर वर्ण आज्ञाका आकार पूर्व वर्ण तकारमें मिलकर "मात्राज्ञा" पद बना।

२०। स्वरवर्ण परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ए, ऐ, ओ, औ के स्थान में क्रम क्रमसे अय, आय, अव, आव होता है यानो ए की जगह पर अय, ऐ की जगह पर आय, ओ के स्थानमें अव, और औ के स्थानमें आव, होता है, अय, आय, अव, आव के अ और आ पूर्व वर्णमें मिल जाते हैं और परवर्त्ती स्वर ऐ, य में और ओ, व में मिल जाता है। —जैसे—ने+अन=नयन, विनै +अक=विनायक, गै+अक=गायक, पो+अन=पवन, भो+ अन=भवन, शो+अन=शवन, नौ+इक=नाविक। ने+ अन=नयन :—यहाँ पर एकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसे एकार की जगह अय हुआ और अयका अकार पूर्व वर्ण नकार में मिलकर "नयन" पद बना। इसी तरह विनै+अक =विनायक,—यहाँपर ऐकारके बाद स्वरवर्ण है इसलिये ऐकारके स्थानमें आय हुआ और आयका आकार पूर्व वर्ण नकारमें मिलकर "विनायक" पद बना। इसी तरह गै+अक—गायक पो+अन=पवन ;—यहाँ पर ओकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसे ओकारके स्थानमें अव हुआ और अवका अकार पूर्व वर्ण प-

कारमें मिलकर 'पवन' पद बना, इसीतरह 'भवन' गवन' भी बने हैं। नौ + इक = नाविक ;—यहां पर औकारके बाद स्वर वर्ण रहनेके कारण औकारके स्थानमें आव हुआ और आव का आकार पूर्व वर्ण नकारमें मिलकर "नाविक" बना।

व्यञ्जन-सन्धि।

२१। स्वर वर्ण या वर्गका तीसरा चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह परे रहनेसे, वर्गके पहले वर्ण के स्थान में उस-वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—वाक् + आड़म्बर = वागाड़म्बर, वाक् + इन्द्रिय = वागिन्द्रिय, दिक् + अन्त = दिगन्त त्वक + इन्द्रिय = त्वगिन्द्रिय, दिक् + गज = दिग्गज, वाक + जाल = वाग्जाल, वाक् + दान = वाग्दान, वाक् + देवी = वाग्देवी, दिक् + विदिक = दिग्विदिक, षट् + दल = षड्दल, उत् + घाटन उद्घाटन, सत् + विद्या = सद्विद्या, जगत् + वल्लभ = जगद्वल्लभ, अप + ज = अब्ज इत्यादि।

२२। पञ्चम वर्ण परे रहनेसे वर्गके पहिले वर्णके स्थानमें पञ्चम वर्ण होता है; और अगर द के बाद न या म रहे तो उस द के स्थानमें न हो जाता है। जैसे—दिक् + नाग = दिङ्नाग, दिक् + मुख = दिङ्मुख, अप + मय = अम्मय, उद् + मुख = उन्मुख, उद् + नयन = उन्नयन, तद् + मीर = तन्मीर।

२३। চ या ছ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या দ্ के स्थानमें চ होता है। जैसे—শরৎ+চন্দ্র=শরচ্চন্দ্র, উৎ+চারণ=উচ্চারণ, উৎ+ছেদ=উচ্ছেদ, তদ+চরণ=তচ্চরণ, তদ্+ছাত্র=তচ্ছাত্র।

२४। জ अथवा ঝ परे रहने से पूर्ववर्त्ती ৎ या দ के स्थानमें জ होता है। जैसे—উৎ+জ্বল=উজ্জ্বল, তৎ+ঝটিকা=তজ্ঝটিকা।

२५। ট या ঠ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ और দ্ के स्थानमें ট होता है। जैसे—উৎ+টলন=উট্টলন, তদ+ঠকার=তট্ঠকার।

२६। ড या ঢ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या দ के स्थानमें ড होता है। जैसे—উৎ+ডীন=উড্ডীন তদ্+ঢক্কা=তড্ঢক্কা, বৃহৎ+ঢক্কা=বৃহড্ঢক্কা।

२७। यदि চ या জ के बाद ন रहे तो ন के स्थानमें ঞ होता है। जैसे—যাচ+না=যাচ্ঞা রাজ+নী=রাজ্ঞী।

२८। यदि ল परे हो तो पूर्ववर्त्ती ৎ, দ और ন্ के स्थानमें ল होता है, और ন के पूर्ववर्णमें चन्द्रबिन्दु लग जाता है। जैसे—উৎ+লাস=উল্লাস, ভবৎ+লেখা=ভবল্লেখা, উৎ+লেখ=উল্লেখ, উৎ+লঙ্ঘন=উল্লঙ্ঘন, তদ+লোভ=তল্লোভ, এতদ্+লীন=এতল্লীন, । বিদ্বান+লেখক=বিদ্বাঁল্লেখক।

२९। यदि ৎ या দ্ के बाद শ रहे तो ৎ और দ্ के

कारमें मिलकर 'पवन' पद बना, इसीतरह 'भवन' 'गवन' भी बने हैं। नौ + इक = नाविक ;—यहाँ पर औकारके बाद स्वर वर्ण रहनेके कारण औकारके स्थानमें आव हुआ और आव का आकार पूर्व वर्ण नकारमें मिलकर "नाविक" बना।

व्यञ्जन-सन्धि।

३१। स्वर वर्ण या वर्गका तीसरा चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह परे रहनेसे, वर्गके पहले वर्ण के स्थान में उस वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—वाक् + आडम्बर = वागाडम्बर, वाक् + इन्द्रिय = वागिन्द्रिय, दिक् + अन्त = दिगन्त, त्वक + इन्द्रिय = त्वगिन्द्रिय, दिक् + गज = दिग्गज, वाक् + जाल = वाग्जाल, वाक् + दान = वाग्दान, वाक् + देवी = वाग्देवी, दिक् + विदिक = दिग्विदिक, षट् + दल = षड्दल, उत् + घाटन उद्घाटन, सत् + विद्या = सद्विद्या, जगत् + वल्लभ = जगद्वल्लभ, अप + ज = अब्ज इत्यादि।

३२। पञ्चम वर्ण परे रहनेसे वर्गके पहिले वर्णके स्थानमें पञ्चम वर्ण होता है; और अगर त के बाद न या म रहे तो उस त के स्थानमें न हो जाता है। जैसे—दिक् + नाग = दिङ्नाग, दिक् + मुख = दिङ्मुख, अप् + मय = अम्मय, षट् + मुख = षण्मुख, उत् + नयन = उन्नयन, तद् + नीर = तन्नीर।

स्थानमें च् और श् के स्थानमें छ होता है। जैसे—ভবৎ+শংখ=ভবচ্ছংখ, উত্+শৃঙ্খল=উচ্ছৃঙ্খল, জগৎ+শরণ্য=জগচ্ছরণ্য, তদ+শম্বুক=তচ্ছম্বুক।

४०। ৎ या দ के बाद হ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ধ होता है। जैसे,—উৎ+হার=উদ্ধার, উৎ+হত=উদ্ধত, তদ্+হরিণ=তদ্ধরিণ।

४१। ষ के बाद ত या থ रहनेसे ত के स्थानमें ট और থ के स्थानमें ঠ होता है। जैसे—আকৃষ্+ত=আকৃষ্ট, ষষ্+থ=ষষ্ঠ।

४२। स्पर्श वर्ण परे रहनेसे पदके अन्तस्थित ম के स्थानमें अनुस्वार होता है अथवा जिस वर्गका वर्ण परे रहता है म् के स्थानमें उसी वर्गका पञ्चम वर्ण होता है। और अन्तस्थ और ऊष्मवर्ण परे रहनेसे ম के स्थानमें केवल अनुस्वार होता है। जैसे—সম+কীর্ণ=সঙ্কীর্ণ या সংকীর্ণ, কিম্+কর=কিঙ্কর या কিংকর, সম্+গতি=সঙ্গতি या সংগতি, কিম্+চিত=কিঞ্চিৎ या কিংচিৎ, সম্+পৃক্ত=সম্পৃক্ত या সংপৃক্ত, সম্+ভৃতি=সম্ভৃতি या সংভৃতি, সম্+যম=সংযম, সম্+যোগ=সংযোগ, সম+রক্ষণ=সংরক্ষণ, সম্+লগ্ন=সংলগ্ন, সম্+বাদ=সংবাদ, সম+শয়=সংশয় সম+হদ=সংহদ।

४३। व्यञ्जन वर्ण परे रहनेसे দিব্ शब्द के स्थानमें দ্যু होता है। जैसे—দিব্+লোক=দ্যুলোক, দিব+ভবন=দ্যুভবন।

४४। स्वर वर्णके बाद छ रहनेसे छ के स्थानमें च्छ होता है। जैसे—পরি + ছেদ = পরিচ্ছেদ, অব + ছেদ = অবচ্ছেদ, স + ছিদ্র = সচ্ছিদ্র, বৃক্ষ + ছায়া = বৃক্ষচ্ছায়া, গৃহ + ছায়া = গৃহচ্ছায়া।

४५। উৎ शब्दके बाद स्था और स्तम्भ धातुके 'स' का लोप होता है। जैसे—উৎ + স্থান = উত্থান, উৎ + স্তম্ভ = উত্তম্ভ।

४६। सम् और परि के बाद कृ धातुका पद रहनेसे यह कृ धातु निष्पन्न पदके पूर्व्व क्रमशः स् और ष् होता है अर्थात् सम्के बाद स और परि के बाद ष होता है। जैसे—সম + করণ = সংস্করণ, সম + কৃত = সংস্কৃত, সম + কার = সংস্কার, পরি + কার = পরিষ্কার।

४७। च या छ बादमें रहनेसे विसर्ग के स्थान में श होता है। जैसे—মনঃ + চকোর = মনশ্চকোর, নিঃ + চয় = নিশ্চয় শিরঃ + ছেদ = শিরশ্ছেদ, উরঃ + ছদ = উরশ্ছদ্।

४८। ट या ठ परे रहनेसे विसर्ग के स्थानमें ष् होता है। जैसे—ধনুঃ + টঙ্কার = ধনুষ্টঙ্কার।

४९। त या थ परे रहनेसे विसर्ग के स्थानमें स होता है। जैसे—নিঃ + তেজ = নিস্তেজ, দুঃ + তর = দুস্তর, ইতঃ + ততঃ ইতস্ততঃ।

५०। अकार वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य र, ल व, ह, के परे रहनेसे अकार और अकारके बाद के विसर्ग इन दोनोंके मिलनेसे ओ होता है। यह पूर्व ओकार वर्णमें

स्थानमें च् और श् के स्थानमें छ होता है। जैसे—ভবৎ+শংশ=ভবচ্ছংশ, উৎ+শৃঙ্খল=উচ্ছৃঙ্খল, জগৎ+শরণ্য=জগচ্ছরণ্য, তদ্+শম্বুক=তচ্ছম্বুক।

४०। ৎ या দ के बाद হ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे দ্ধ होता है। जैसे,—উৎ+হার=উদ্ধার, উৎ+হত=উদ্ধত, উদ্+হরিণ=উদ্ধরিণ।

४१। ষ के बाद ৎ या থ रहनेसे ৎ के स्थानमें ट और থ के स्थानमें ঠ होता है। जैसे—আদৃষ্+ত=আদৃষ্ট, ষষ্+থ=ষষ্ঠ।

४२। स्पर्श वर्ण परे रहनेसे पदके अन्तस्थित न् के स्थान में अनुस्वार होता है अथवा जिस वर्गका वर्ण परे रहता है म् के स्थानमें उसी वर्गका पञ्चम वर्ण होता है। और अन्तःस्थ और ऊष्मवर्ण परे रहनेसे म के स्थानमें केवल अनुस्वार होता है। जैसे—সম্+কীর্ণ=সঙ্কীর্ণ या সংকীর্ণ, কিম্+কর=কিঙ্কর या কিংকর, সম্+গতি=সঙ্গতি या সংগতি, কিম্+চিৎ=কিঞ্চিৎ या কিংচিৎ, সম্+পূজা=সম্পূজা या সংপূজা, সম্+ভৃতি=সম্ভৃতি या সংভৃতি, সম্+যম্=সংযম, সম্+যোগ=সংযোগ, সম্+রক্ষণ=সংরক্ষণ, সম্+লগ্ন=সংলগ্ন, সম্+বাদ=সংবাদ, সম+শয়=সংশয়, সম+হৃদ=সংহৃদ।

४३। व्यञ्जन वर्ण परे रहनेसे दिव् शब्द के स्थानमें দ্যু होता है। जैसे—দিব্+লোক=দ্যুলোক, দিব+ভবন=দ্যুভবন।

४४। स्वर वर्णके बाद छ रहनेसे छ के स्थानमें च्छ होता है। जैसे—পরি + ছেদ = পরিচ্ছেদ, অব + ছেদ = অবচ্ছেদ, স + ছিদ্র = সচ্ছিদ্র, বৃক্ষ + ছায়া = বৃক্ষচ্ছায়া, গৃহ + ছায়া = গৃহচ্ছায়া।

४५। উৎ शब्दके बाद স্থা और স্তম্ভ धातुके "স" का लोप होता है। जैसे—উৎ + স্থান = উত্থান, উৎ + স্তম্ভ = উত্তম্ভ।

४६। सम् और परि के बाद कृ धातुका पद रहनेसे यह कृ धातु निष्पन्न पदके पूर्व्व क्रमश स् और ष् होता है अर्थात् सम्के बाद स और परि के बाद ष होता है। जैसे—সম + করণ = সংস্করণ, সম + কৃত = সংস্কৃত, সম্ + কার = সংস্কার, পরি + কার = পরিষ্কার।

४७। চ या ছ बादमें रहनेसे विसर्ग के स्थान में শ होता है। जैसे—মনঃ + চকোর = মনশ্চকোর, নিঃ + চয় = নিশ্চয়, শিরঃ + ছেদ = শিরশ্ছেদ, উরঃ + ছদ = উরশ্ছদ্।

४८। ট या ঠ परे रहनेसे विसर्ग के स्थानमें ষ् होता है। जैसे—ধনুঃ + টঙ্কার = ধনুষ্টঙ্কার।

४९। ত या থ परे रहनेसे विसर्ग के स्थानमें স होता है। जैसे—নিঃ + তেজ = নিস্তেজ, দুঃ + তর = দুস্তর, ইতঃ + ততঃ = ইতস্ততঃ।

५०। अकार वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवे वर्ण अथवा য, র, ল, ব, হ, के परे रहनेसे अकार और अकारके बाद के विसर्ग इन दोनोंके मिलनेसे "ও" होता है। यह पूर्व ओकार

स्थानमें च् और श् के स्थानमें छ होता है। जैसे—ভবৎ + শংস = ভবচ্ছংস, উত + শৃঙ্খল = উচ্ছৃঙ্খল, জগৎ + শরণ্য = জগচ্ছরণ্য, তদ্ + শম্বুক = তচ্ছম্বুক।

४०। ৎ या দ के बाद হ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ध होता है। जैसे,—উৎ + হার = উদ্ধার, উৎ + হৃত = উদ্ধৃত, তদ্ + হবিণ = তদ্ধরিণ।

४१। ষ के बाद ত या থ रहनेसे ত के स्थानमें ট और থ के स्थानमें ঠ होता है। जैसे—আকৃষ্ + ত = আকৃষ্ট, ষষ্ + থ = ষষ্ঠ।

४२। स्पर्श वर्ण परे रहनेसे पदके अन्तस्थित म् के स्थानमें अनुस्वार होता है अथवा जिस वर्गका वर्ण परे रहता है म् के स्थानमें उसी वर्गका पञ्चम वर्ण होता है। और अन्तःस्थ और ऊष्मवर्ण परे रहनेसे म के स्थानमें केवल अनुस्वार होता है। जैसे—সম্ + কীর্ণ = সঙ্কীর্ণ या সংকীর্ণ, কিম্ + কর = কিঙ্কর या কিংকর, সম্ + গতি = সঙ্গতি या সংগতি, কিম্ + চিত = কিঞ্চিৎ या কিংচিৎ, সম্ + পূজ্য = সম্পূজ্য या সংপূজ্য, সম্ + ভৃতি = সম্ভৃতি या সংভৃতি, সম্ + যম = সংযম, সম্ + যোগ = সংযোগ, সম্ + রক্ষণ = সংরক্ষণ, সম্ + লগ্ন = সংলগ্ন, সম্ + বাদ = সংবাদ, সম + শয় = সংশয়, সম + হৃদ = সংহৃদ।

४३। व्यञ्जन वर्ण परे रहनेसे दिव् शब्द के स्थानमें দ্যু होता है। जैसे—দিব্ + লোক = দ্যুলোক, দিব + ভবন = দ্যুভবন।

४४। स्वर वर्णके बाद छ रहनेसे छ के स्थानमें च्छ होता है। जैसे—परि + छेद = परिच्छेद, अव + छेद = अवच्छेद, स + छिद्र = सच्छिद्र, वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया, गृह + छाया = गृहच्छाया।

४५। उत् शब्दके बाद स्था और स्तम्भ धातुके "स" का लोप होता है। जैसे—उत् + स्थान = उत्थान, उत् + स्तम्भ = उत्तम्भ।

४६। सम् और परि के बाद कृ धातुका पद रहनेसे वह कृ धातु निष्पन्न पदके पूर्व्व क्रमशः स् और ष् होता है अर्थात् सम्के बाद स और परि के बाद ष होता है। जैसे—सम् + करण = संस्करण, सम् + कृत = संस्कृत, सम् + कार = संस्कार, परि + कार = परिष्कार।

४७। च या छ बादमें रहनेसे विसर्ग के स्थान में श होता है। जैसे—मनः + चकोर = मनश्चकोर, निः + चय = निश्चय, शिरः + छेद = शिरश्छेद, उरः + छद् = उरश्छद्।

४८। ट या ठ परे रहनेसे विसर्ग के स्थानमें ष् होता है। जैसे—धनुः + टङ्कार = धनुष्टङ्कार।

४९। त या थ परे रहनेसे विसर्ग के स्थानमें स होता है। जैसे—निः + तेज = निस्तेज, दुः + तर = दुस्तर, इतः + ततः इतस्ततः।

५०। अकार वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवे वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह, के परे रहनेसे अकार और अकारके बाद के विसर्ग इन दोनोंके मिलनेसे "ओ" होता है। वह पूर्व ओकार

मिल जाता है और परे अकार रहनेसे उसका लोप होता है। जैसे—ततः+अधिक=ততোধিক, मनः+गत=মনোগত, अधः+गमन=অধোগমন, सद्यः+जात=সদ্যোজাত, पयः+निधि=পয়োনিধি, यशः+धन=যশোধন, मनः+योग=মনোযোগ, मनः+वेग=মনোবেগ, इत्यादि।

५१। स्वरवर्ण, वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य र ल व ह के परे रहनेसे अकार के बादके र जात विसर्ग के स्थानमें र् होता है। यदि स्वर वर्ण या গ, ঘ, ঙ, জ, ঝ, ঞ, ড, ঢ, ণ, দ, ধ, ন, ব, ভ, ম और য র ল ব হ के परे रहता है तो अकारके बादके र जात विसर्गके स्थानमें र होता है। पूर्व्व लक्षण के अनुसार ओकार नहीं होता। जैसे—अहः+अह=অহরহ, प्रातः+आश=প্রাতরাশ, पुनः+जन्म=পুনর্জন্ম अन्तः+आत्मा=অন্তরাত্মা, अन्तः+देश=অন্তর্দেশ पुनः+उक्ति=পুনরোক্তি।

५२। स्वरवर्ण, वर्गका तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण या य र ल व ह परे रहने से अ या भिन्न स्वरवर्णके बाद के विसर्ग की जगह र् होता है। जैसे—निः+भयः=নির্ভয়, बहिः+गत=বহির্গত, दुः+आत्मा=দুরাত্মা, द्विः+उक्ति=দ্বিরুক্তি, दुः+लभ=দুর্লভ।

५३। र परे रहने से विसर्ग के स्थान में जो र् होता है, उस र का लोप होता है और पूर्व्व स्वर दीर्घ हो जाता है।

जैसे—নিঃ+রোগ=নীরোগ, নিঃ+রসঃ=নীরস, নিঃ+রব=নীরব চক্ষুঃ+রাগ=চক্ষুরাগ।

५४। স্থ परे रहने से, पूर्ववर्त्ती विसर्गका विकल्प में लोप होता है। जैसे—মনঃ+স্থ=মনস্থ या মনঃস্থ, দুঃ+স্থ=দুস্থ, इत्यादि।

५५। समास मे क ख प फ परे रहनेसे विसर्ग के स्थान में विकल्प से ग होता है, और वही ग अगर अ आ भिन्न स्वरवर्ण के बाद का होता है तो ष हो जाता है। जैसे—নিঃ+কর্ম্মা=নিষ্কর্ম্মা या নিঃকর্ম্মা, ভাঃ+কর=ভাস্কর,ভাঃকর, দুঃ+কর=দুষ্কর, দুঃকর, তেজঃ+কর=তেজস্কর, তেজঃকর, ভাঃ+পতি=ভাস্পতি, ভাঃপতি নিঃ+ফল=নিষ্ফল, নিঃফল।

५६। अकार भिन्न स्वरवर्ण परे रहनेसे अकार के बाद के विसर्गका लोप होता है। लोप के बाद फिर सन्धि नहीं होती। जैसे—অতঃ+এব=অতএব, পয়ঃ+ওষ=পয়ওষ।

५७। बँगला भाषामें पदके अन्तस्थित विसर्गका विकल्पमें लोप होता है। यथा—ফলতঃ, ফলত, বিশেষতঃ, বিশেষত, বস্তুতঃ, বস্তুত, মনঃ, মন।

णत्वविधान।

"ण" के लगानेके स्थान।

५८। ঋ, র, ষ के बादका दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है। जैसे—ঋণ বর্ণ, তৃণ, বিশীর্ণ, নিষ্ণ উষ্ণ, সহিষ্ণু।

५९। ऋ, र, ष के बाद स्वरवर्ण, कवर्ग, पवर्ग, ह य व या अनुस्वार व्यवधान रहने पर भी दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है। जैसे—কারণ, অর্পণ, পাষাণ, নির্বাণ, করিণী, বৃংহণ, বিস্মরণ।

६०। उल्लिखित वर्णके सिवा और कोई वर्ण व्यवधान में नहीं होता। जैसे—অর্চনা, কীর্তন, রসনা।

६१। पदके अन्तमें या दूसरे पदमें न रहनेसे वह मूर्द्धन्य नहीं होता जैसे—তরপনেয়, দুর্নাম, দুর্নয়।

६२। क्रियाके अन्तीयका दन्त्य न मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे—করেন, ধরেন, মারেন।

६३। त, थ, द, ध, संयुक्त न "ण" नहीं होता। जैसे—প্রান্ত, ভ্রান্ত, রক্ত।

थोड़ेसे स्वाभाविक मूर्द्धन्य ण विशिष्ट पद हैं। जैसे—বাণি, মণি, বেণী, গুণ, কঙ্কণ, গণ, বিপণি, পণ, আপণ, বীণা, ঘ্রাণ, নিপুণ, লবণ, কণিকা, বাণ, মৎকুণ, শোণ, কোণ, কল্যাণ, কণা, অণু, কাণ, ধূণ, বণিক इत्यादि।

६४। अ आ भिन्न स्वरवर्ण अथवा क और र युक्त वर्णोंके किसी भी परिस्थित पदके बीचका दन्त्य स मूर्द्धन्य होता है। विसर्ग व्यवधान रहने पर भी यह होता है। लेकिन সাৎ प्रत्ययका स मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे—মুমূর্ষু, বক্ষ্যমান, জিগীষা, চিকীর্ষা, পরিষ্কার, নিষেধ, অধিষ্ঠান, আবিষ্কার इत्यादि।

कुछ शब्दोंका स स्वाभाविक ही मूर्द्धन्य होता है। जैसे

ভাবা, পাষাণ, কম্বল আষাঢ়, কল্যাণ, বধায়, বট্টে, দুস্মাণ इत्यादि ।

पद ।

सारे पद पाँच भागोंमें बाँटे गये हैं । यथा, (१) विशेष्य (२) विशेषण, (३) सर्व्वनाम, (४) अव्यय (५) क्रिया ।

विशेष्य ।

कोई चीज़, व्यक्ति, जाति, गुण और क्रिया वाचक शब्दको বিশেষ্য कहते हैं । जैसे,—বস্ত্র, পুস্তিকা ; রাম, যদু ; গায়, মনুষ্য ; ভদ্রতা, মহত্ব , গমন, ভোজন इत्यादि ।

विशेष्य पदमें लिङ्ग, वचन, पुरुष और कारक होते हैं । इनके जाननेसे वाक्यार्थ जाननेमें सुभीता होता है ।

लिंग ।

जिसके द्वारा पुरुष, स्त्री आदि जातिका ज्ञान होता है उसे लिङ्ग कहते हैं ।

लिङ्ग तीन प्रकारके होते हैं । पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग ।

बँगला भाषामें क्लीबलिङ्ग का कोई विशेष रू

होता। फल, जल, अरण्य प्रभृति क्लीवलिङ्ग शब्दोंका रूप पुंलिङ्ग जैसा होता है।

जिन शब्दोंमें पुरुष जातिका ज्ञान होता है, वे पुंलिङ्ग कहे जाते हैं। जैसे;—मनुष्य, वानर, सिंह, अश्व इत्यादि।

जिन शब्दोंमें स्त्री जातिका बोध होता है उन्हें स्त्रीलिङ्ग कहते हैं। जैसे,—स्त्री, कन्या, हरिणी, नारी, महिषी, हस्तिनी, घोटकी, कुक्कुरी इत्यादि।

विद्युत, रात्रि, लता, बुद्धि, पृथिवी, नदी, लज्जा, शोभा, एवं ज्योत्स्ना, इनके अर्थमें जिन शब्दोंका प्रयोग होता है वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—सौदामिनी, सरस्वती, यामिनी, इत्यादि।

याद रखना चाहिये कि বিদ্যুৎ, তৃষ্ণা, বীণা, সভা, রুচি, নাড়ী বনিতা, তারা, শ্রেণী, শোভা, ধূলি, নদী, নীতি, সরিৎ, বেণী, সৌদামিনী, লতা, লজ্জা, কথা, নৌকা, নাসিকা, গ্রীবা, বিভা, ভাষা, হরিদ্রা, জিহ্বা, পুষ্করিণী इत्यादि थोड़से शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

सामान्य स्त्रीलिंग प्रत्यय।

(क) जिन शब्दोंके अन्तमें "अ" (अकार) होता है, स्त्रीलिङ्ग में "अ" के स्थानमें "आ" (आकार) हो जाता है। जैसे,—ক্ষীণ, ক্ষীণা; সর্ব, সর্বা; সরল,-সরলা; দুর্বল,

দুর্জনা; বাম, বামা; মনোহর, মনোহরা; কোকিল, কোকিলা; হ্রস্ব, হ্রস্বা; দীর্ঘ, দীর্ঘা इत्यादि।

(খ) जिन जातिवाचक शब्दोंके अन्तमें "অ" होता है, स्त्रीलिङ्गमें "অ" के स्थानमें "ঈ" हो जाती है। जैसे;— ব্রাহ্মণ, ব্রাহ্মণী; মৃগ, মৃগী; রাক্ষস, রাক্ষসী; অশ্ব, অশ্বী; গোপ, গোপী; সারস, সারসী; পিশাচ, পিশাচী; দানব, দানবী; হংস, হংসী; মানুষ, মানুষী, কুরঙ্গ, কুরঙ্গী; সর্প, সর্পী; ব্যাঘ্র, ব্যাঘ্রী; নর্তক, নর্তকী; সিংহ, সিংহী; মৎস্য, মৎসী इत्यादि।

(গ) जिन शब्दोंके अन्तमें ময়, দৃশ, চর और কর शब्द होते हैं उनका स्त्रीलिङ्ग प्रायः ईकारान्त होता है यानी उनके अन्तमें "ঈ" लगा दी जाती है। जैसे;—প্রস্তরময়, প্রস্তরময়ী; মৃন্ময়, মৃন্ময়ী, যাদৃশ, যাদৃশী; এতাদৃশ, এতাদৃশী; খেচর, খেচরী; সুখকর, সুখকরী, জলচর, জলচরী; শুভকর, শুভকরী; স্বর্ণময়, স্বর্ণময়ী; হিতকর, হিতকরী; কিঙ্কর, কিঙ্করী; সহচর, সহচরী; इत्यादि।

(ঘ) जिन शब्दोंके अन्तमें "ইন্" होता है, उनके स्त्रीलिङ्गके रूपमें उनके अन्तमें "ঈ" हो जाती है। जैसे;— দায়িন্, দায়িনী; বিধায়িন্, বিধায়িনী; মানিন্, মানিনী; জ্ঞানিন্, জ্ঞানিনী इत्यादि।

(ঙ) जिन शब्दोंके अन्तमें "বান্" होता है, उनके स्त्रीलिङ्गमें "বান্" के स्थानमें "বতী" हो जाती है। जैसे,— গুণবান্, গুণবতী; রূপবান, রূপবতী; इत्यादि।

(घ) जिन शब्दोंके अन्तमें "अक" होता है उनके स्त्रीलिङ्गमें "अक" के स्थानमें "इका" हो जाता है। जैसे,—পাঠক, পাঠিকা, নায়ক, নায়িকা, দায়ক, দায়িকা, বালক, বালিকা, গায়ক, গায়িকা इत्यादि।

(छ) अङ्गवाचक शब्द, स्त्रीलिङ्गके विशेषणमें, प्राय "ई" कारान्त हो जाते हैं। जैसे,—সুকেশ, সুকেশী, সুমুখ, সুমুখী इत्यादि।

(ज) প্রথম, দ্বিতীয় और তৃতীয় शब्दोंके सिवा और सब पूरणवाचक शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें "ই" होती है, किन्तु প্রথম, দ্বিতীয় और তৃতীয় के बाद "আ" होता है। जैसे,—চতুর্থী, পঞ্চমী, ষষ্ঠী, সপ্তমী, অষ্টমী, নবমী, দশমী इत्यादि और প্রথমা, দ্বিতীয়া, তৃতীয়া।

(झ) गुणवाचक "উ" कारान्त शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें विकल्पसे "ঈ" होती है और पहले "উ" के स्थानमें "ব" होता है। जैसे,—গুরু, গুর্বী, লঘু, লঘ্বী, মৃদু, মৃদ্বী, इत्यादि।

(ञ) जिन शब्दोंके अन्तमें "ঈয়স্" प्रत्यय होता है उनके स्त्रीलिङ्गके रूपमें, अन्तमें "ঈ" होजाती है। जैसे,—লঘীয়স, লঘীয়সী, গরীয়স, গরীয়সী, ভূয়স, ভূয়সী, প্রেয়স, প্রেয়সী इत्यादि।

(ट) जिन शब्दोंके अन्तमें "অৎ" होता है उनकी स्त्रीलिङ्गमें प्राय पीछे "ঈ" हो जाती है। जैसे—মহৎ, মহতী, সৎ, সতী, গুণবৎ, গুণবতী इत्यादि।

(ठ) जिन शब्दोंके अन्तमें "मत्" और "वत्" होते हैं उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें अन्तमें "ई" हो जाती है। जैसे,—

शब्द	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
श्रीमत्	श्रीमान्	श्रीमती
दयावत्	दयावान्	दयावती
ज्ञानवत्	ज्ञानवान्	ज्ञानवती

(ड) जिन शब्दोंके अन्तमें "ता" और "ति" प्रत्यय होते हैं, वे शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे;—गति, मति, भक्ति, नम्रता, भद्रता इत्यादि।

(ढ) मातृ, दुहितृ, स्वसृ, ननन्दृ, यातृ आदि कुछ शब्दोंको छोड़कर जिन शब्दोंके अन्तमें "ऋ" होती है उनके स्त्रीलिङ्ग के रूपोंमें, शब्दके अन्तमें "ई" हो जाती है और "ऋ" के स्थानमें "र" होजाता है। जैसे,—

शब्द	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
दातृ	दाता	दात्री
विधातृ	विधाता	विधात्री
कर्तृ	कर्त्ता	कर्त्री

लेकिन मातृ का माता और दुहितृ का दुहिता इत्यादि होता है।

(ण) काल, गौर, तरुण, पुत्र प्रभृति शब्दोंके स्त्रीलिङ्गमें दीर्घ "ई" होजाती है। जैसे ;—

काल, काली, गौर, गौरी; तरुण, तरुणी; कुमार, कुमारी, पुत्र, पुत्री, मण्डल, मण्डली, नगर, नगरी, सुन्दर, सुन्दरी.

চণ্ড, চণ্ডী, পিতামহ, পিতামহী, নর্ত্তক, নর্ত্তকী, নট, নটী, নদ, নদী, ঘট, ঘটী, কিশোর, কিশোরী, নাগ, নাগী।

(त) कुछ शब्दोंके रूप स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्गमें एकसे होते हैं। जैसे—সম্রাট, বিরাট, কবি इत्यादि।

(थ) कुछ शब्द स्त्री जातिका बोध न कराने पर भी सदा स्त्रीजातिके रूपमें गिने जाते हैं। जैसे—আমলকী, হরীতকী, বদরী, কাশী, কাঞ্চী, কাবেরী, কদলী মথুরা इत्यादि।

(द) कुछ ह्रस्व "इ" कारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द विकल्पसे "ई" कारान्त हो जाते हैं। जैसे,—রজনি, রজনী, রাত্রি, রাত্রী, শ্রেণি, শ্রেণী, ভূমি, ভূমী, সূচি, সূচী, इत्यादि।

(ध) जनक प्रभृति कुछ शब्दोंका स्त्रीलिङ्गके रूपमें भेद होता है। जैसे—

জনক জননী, পিতা, মাতা বর, কন্যা, ভ্রাতা, ভগিনী, নর, নারী, পুরুষ, স্ত্রী, হিম, হিমানী, মামা, মামী, বুড়া, বুড়ী, ঠাকুর, ঠাকুরাণী, চণ্ডাল, চণ্ডালিনী, শুক, সারী इत्यादि।

(न) कुछ पुलिङ्ग शब्दोंके स्त्रीलिङ्गके रूप नीचे और दिखाये जाते हैं। जैसे :—

पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
রাজা	রাজ্ঞী	বিদ্বান্	বিদুষী
রুদ্র	রুদ্রাণী	মাতুল	মাতুলানী*

---

* मातुल शब्दके स्त्रीलिङ्ग में तीन रूप होते हैं:— মাতুলানী মাতুলী, মাতুলা।

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	ब्रह्माणी
युवा	युवती	भव	भवानी
वरुण	वरुणानी	पापीयान्	पापीयसी
वैश्य	वैश्या	दास	दासी
शूद्र	शूद्रा	पौत्र	पौत्री
दौहित्र	दौहित्री	खुड़ा	खुड़ी

वचन।

जिससे द्वारा वस्तुकी संख्या जानी जाती है उसे "वचन" कहते हैं।

वचन दो प्रकारके होते हैं :—

(१) एकवचन।

(२) बहुवचन।

एक वचन के विभक्ति युक्त पदके द्वारा केवल एक पदार्थ जाना जाता है। जैसे ; बालक।

बहुवचन के विभक्ति पदके द्वारा, एक भिन्न, अनेक वस्तुओं का ज्ञान होता है। जैसे ; बालकेरा।

"बालक" कहनेसे केवल एक बालक और "बालकेरा" कहनेसे एकसे अधिक बालक समझे जाते हैं।

बहुवचन में शब्दके पीछे रा, एरा, दिग, गण गुला, गुलि,

इत्यादि शब्द लगाये जाते हैं। जैसे—মনুষ্যেরা, লোকগুলা, পুস্তকগুলি।*

पुरुष।

कारकके आश्रय को ही पुरुष कहते हैं। जैसे:—

যদু পড়িতেছে = यदु पढ़ता है।

রামকে পড়াও = रामको पढ़ाओ।

यहां "यदु" कर्त्ताकारक है और "राम" कर्मकारक है। अतएव "यदु" और "राम" में से प्रत्येक कारक के आश्रय हैं। इसीसे इन में से प्रत्येक "पुरुष" कहा जाता है।

पुरुष तीन प्रकारके होते हैं:—

(१) उत्तम पुरुष। जैसे; আমি (मैं)

(२) मध्यम पुरुष। जैसे; তুমি (तुम)

(३) प्रथम पुरुष। जैसे; তিনি (वह)

* अप्राणिवाचक शब्दोंके बहुवचनमें রা, এরা, चिन्ह नहीं

इन सब पुरुषोंके बाद के, ए, ये, ते, द्वारा, दिया, हइते, थेके, र, ए, एर, वगैरः शब्द जो इस्तेमाल होते हैं इन्हें विभक्ति अथवा चिन्ह कहते हैं। विभक्ति द्वारा ही वचन और कारक जाने जाते हैं।

कारक।

क्रियाके साथ जिस पदका किसी तरहका सम्बन्ध रहता है उसे कारक कहते हैं। जैसे बालक खेलितेछे, आमि वृक्ष देखितेछि, तुमि अस्त्र द्वारा शाखा कर्त्तन कर।

यहां खेलितेछे, देखितेछि और कर्त्तन, ये तीनों क्रिया हैं। खेलनेका काम बालक करता है; इससे खेलितेछे क्रिया का सम्बन्ध बालकसे है; अतएव बालक एक कारक है। आमि वृक्ष देखितेछि, इस जगह मेरे देखनेका काम वृक्ष पर सम्पन्न होता है सुतरां देखितेछि इस क्रियाका आमि और वृक्षसे सम्पर्क है। अतएव आमि और वृक्ष दोनों ही कारक हैं।

कारक छै प्रकारके होते हैं। जैसे;—(१) कर्त्ता, (२) कर्म, (३) करण (४) सम्प्रदान, (५) अपादान, (६) अधिकरण।

कर्त्ता।

जो करता है, जो होता है अर्थात् जिससे कर्त्तृक क्रिया सम्पन्न होती है उसे कर्त्ता कहते हैं। कर्त्तामें प्रथमा विभक्ति

इत्यादि शब्द लगाये जाते हैं। जैसे—মনুষ্যেরা, লোকগুলা, পুস্তকগুলি।*

पुरुष।

कारकके आश्रय को ही पुरुष कहते हैं। जैसे,—

যদু পড়িতেছে = यदु पढ़ता है।

রামকে পড়াও = रामको पढ़ाओ।

यहाँ "यदु" कर्त्ताकारक है और "राम" कर्मकारक है। अतएव "यदु" और "राम" में से प्रत्येक कारक का आश्रय है। इसीसे इन में से प्रत्येक "पुरुष" कहा जाता है।

पुरुष तीन प्रकारके होते हैं :—

(१) उत्तम पुरुष। जैसे, আমি (मैं)

(२) मध्यम पुरुष। जैसे, তুমি (तुम)

(३) प्रथम पुरुष। जैसे, তিনি (वह)

* अप्राणिवाचक शब्दोंके बहुवचनमें রা, এরা, चिन्ह नहीं लगाये जाते। ऐसे शब्दोंके साथ গুলি, গুলা, সকল, সমূহ इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं। नीचे दर्जेके प्राणि वाचक शब्दोंके अन्तमें भी রা, এরা का प्रयोग नहीं होता। उनके अन्तमें भी গুলা, গুলি, इत्यादि प्रयोग किये जाते हैं। जैसे, পত্রগুলি, জলবিন্দু সকল, পতঙ্গগুলি, কীটগুলা इत्यादि। ऐसा कभी नहीं होता—পত্রেরা, জলবিন্দুরা, পতঙ্গেরা, কীটেরা इत्यादि।

इन सब पुरुषोंके बाद के, ए, ये, ते, द्वारा, दिया, हइते, थेके, र, ए, एर, वगैरः शब्द जो इस्तेमाल होते हैं इन्हें विभक्ति अथवा चिन्ह कहते हैं। विभक्ति द्वारा ही वचन और कारक जाने जाते हैं।

कारक।

क्रियाके साथ जिस पदका किसी तरहका सम्बन्ध रहता है उसे कारक कहते हैं। जैसे बालक খেলিতেছে, আমি বৃক্ষ দেখিতেছি, তুমি অস্ত্র দ্বারা শাখা কর্ত্তন কর।

यहां खेलितेछे, देखितेछि और कर्त्तन, ये तीनों क्रिया हैं। खेलनेका काम बालक करता है, इससे खेलितेछे क्रिया का सम्बन्ध बालकसे है, अतएव बालक एक कारक है। आमि वृच देखितेछि, इस जगह मेरे देखनेका काम वृच पर सम्पन्न होता है सुतरा देखितेछि इस क्रियाका आमि और वृचसे सम्पर्क है। अतएव आमि और वृच दोनों ही कारक हैं।

कारक छै प्रकारके होते हैं। जैसे;—(१) कर्त्ता, (२) कर्म, (३) करण (४) सम्प्रदान, (५) अपादान, (६) अधिकरण।

कर्त्ता।

जो करता है, जो होता है अर्थात् जिससे कर्त्तृक क्रिया-सम्पन्न होती है उसे कर्त्ता कहते हैं। कर्त्तामें प्रथमा विभ

इत्यादि शब्द लगाये जाते हैं। जैसे—মনুষ্যেরা, লোকগুলা, পুস্তকগুলী।*

पुरुष।

कारकके आश्रय को ही पुरुष कहते है। जैसे;—

যদু পড়িতেছে = यदु पढ़ता है।

রামকে পড়াও = रामको पढ़ाओ।

यहाँ "यदु" कर्त्ताकारक है और "राम" कर्मकारक है। अतएव "यदु" और "राम" में से प्रत्येक कारक के आश्रय है। इसीसे इन में से प्रत्येक "पुरुष" कहा जाता है।

पुरुष तीन प्रकारके होते हैं:—

(१) उत्तम पुरुष। जैसे; আমি (मैं)

(२) मध्यम पुरुष। जैसे; তুমি (तुम)

(३) प्रथम पुरुष। जैसे; তিনি (वह)

* अप्राणिवाचक शब्दोंके बहुवचनमें রা, এরা, चिन्ह नहीं लगाये जाते। ऐसे शब्दोंके साथ গুলি, গুলা, সকল, সমূহ इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं। नीचे दर्जेके प्राणिवाचक शब्दोंके अन्तमें भी রা, এরা का प्रयोग नहीं होता। उनके अन्तमें भी গুলা, গুলি, इत्यादि प्रयोग किये जाते हैं। जैसे; পত্রগুলি, জলবিন্দু সকল, পতঙ্গগুলি, কীটগুলা इत्यादि। ऐसा कभी नहीं होता—পত্রেরা, জলবিন্দুরা, পতঙ্গেরা, কীটেরা इत्यादि।

इन सब पुरुषोंके बाद के, ए, ये, ते, द्वारा, दिया, हइते, थेके, र, ए, एर, वगैरः शब्द जो इस्तेमाल होते हैं इन्हें विभक्ति अथवा चिन्ह कहते हैं। विभक्ति द्वारा ही वचन और कारक जाने जाते हैं।

कारक।

क्रियाके साथ जिस पदका किसी तरहका सम्बन्ध रहता है उसे कारक कहते हैं। जैसे बालक খেলিতেছে, আমি বৃক্ষ দেখিতেছি, তুমি অস্ত্র দ্বারা শাখা কর্ত্তন কর।

यहाँ खेलितेछे, देखितेछि और कार्त्तन, ये तीनों क्रिया हैं। खेलनेका काम बालक करता है, इससे खेलितेछे क्रिया का सम्बन्ध बालकसे है, अतएव बालक एक कारक है। आमि वृक्ष देखितेछि, इस जगह मेरे देखनेका काम वृक्ष पर सम्पन्न होता है सुतरा देखितेछि इस क्रियाका आमि और वृक्षसे सम्पर्क है। अतएव आमि और वृक्ष दोनों ही कारक हैं।

कारक छै प्रकारके होते हैं। जैसे,—(१) कर्त्ता, (२) कर्म, (३) करण (४) सम्प्रदान, (५) अपादान, (६) अधिकरण।

कर्त्ता।

जो करता है, जो होता है अर्थात् जिससे कर्त्तृक क्रिया सम्पन्न होती है उसे कर्त्ता कहते हैं। कर्त्तामें प्रथमा विभक्ति

होती है। जैसे, राम পুস্তক পড়িতেছে, শিশু চাঁদ দেখিতেছে, রাজা আসিতেছেন इत्यादि।

यहाँ पर पढ़ितेछे क्रियाका "कर्त्ता" राम है, क्योंकि जो करता है उसीको कर्त्ता कहते हैं। राम पुस्तक पढ़ितेछे, यहाँ पर कौन पुस्तक पढता है? राम। इसलिये "राम" कर्त्ता है। शिशु चाँद देखितेछे, यहाँ पर चाँद कौन देखता है? शिशु, इसलिये "शिशु" कर्त्ता है। राजा आसितेछेन, यहाँ पर आता है कौन? राजा, इसलिये 'राजा' कर्त्ता है।

कर्म्म।

जो किया जाता है, जो सुना जाता है जो देखा जाता है, जो लाया जाता है, जो दिया जाता है, जो लिया जाता है, जो रक्खा जाता है, जो पकड़ा जाता है, जो मारा जाता है, उसे कर्म्म कहते हैं। कर्म्ममें द्वितीया विभक्ति होती है। कर्मकी विभक्तियों के चिन्ह ये हैं কে, রে, এরে अथवा য। जैसे, শ্যাম হরিকে ধরিতেছে, সিংহ মাংস খায়, রাম পুস্তক পড়িতেছে इत्यादि।

क्रियामें क्या या किसको यह प्रश्न करनेसे जो पद मिलता है उसी को उस क्रियाका कर्म जानना। क्रिया में "कौन" प्रश्न करनेसे कर्त्ता मि[illegible] है।

श्याम हरिके धरितेछि : 'धरितेछि' क्रिया है, कौन धरितेछि? इस प्रश्नके उत्तरमें श्याम मिलता है : इस लिये 'श्याम' कर्त्ता है। श्याम क्या या किसको पकड़ता है? इस प्रश्नसे हरि मिलता है; इसलिये "हरि" कर्म्म है। इसी तरह और उदाहरण समझ लो।

कुछ क्रियाओंके दो दो कर्म्म रहते हैं, अर्थात् जिज्ञासा, देओया इत्यादि कतिपय धातुओं तथा कथनार्थ और णिजन्त धातुओंके दो दो कर्म रहते हैं। इन धातुओंका नाम द्विकर्म्मक है। जैसे—माता शिशुके चन्द्र देखाइतेछेन, गुरु शिष्यके काव्य पड़ाइतेछेन, आमि तारकके टाका दियाछि, वीरेन्द्र सतीशके इहा बलिल इत्यादि।

माता शिशुके चन्द्र देखाइतेछेन. यहाँ पर 'देखाइतेछेन" क्रिया है। कि देखाइतेछेन? चन्द्र; इसलिये "चन्द्र" एक कर्म्म है। और काहाके देखाइतेछेन? शिशुके; इसलिये "शिशुके" और एक कर्म्म हुआ, अतएव देखाइतेछेन इस क्रियाके दो कर्म्म हुए। गुरु शिष्यके काव्य पड़ाइतेछेन, यहाँ पर "पड़ाइतेछेन" क्रिया है। कि पड़ाइतेछेन? काव्य; इस लिये "काव्य" एक कर्म्म हुआ। काहाके पड़ाइतेछेन? शिष्यके। इसलिये "शिष्यके" और एक कर्म्म हुआ; अतएव पड़ाइतेछेन क्रिया द्विकर्म्मक हुई। इसी तरह आमि तारकके टाका दियाछि; यहाँ पर 'दियाछि' क्रिया हुई; कि

होती है। जैसे ; রাম পুস্তক পড়িতেছে, শিশু চাঁদ দেখিতেছে, রাজা আসিতেছেন इत्यादि।

यहां पर पहितिछे क्रियाका "कर्त्ता" राम है, क्योंकि जो करता है उसीको कर्त्ता कहते हैं। राम पुस्तक पडितेछे, यहां पर कौन पुस्तक पढता है? राम। इसलिये "राम" कर्त्ता है। शिशु चाँद देखितेछे, यहां पर चांद कौन देखता है? शिशु, इसलिये "शिशु" कर्त्ता है। राजा आसितेछेन, यहां पर आता है कौन? राजा, इसलिये 'राजा' कर्त्ता है।

कर्म्म।

जो किया जाता है, जो सुना जाता है जो देखा जाता है, जो लाया जाता है, जो दिया जाता है, जो लिया जाता है, जो रक्खा जाता है, जो पकडा जाता है, जो मारा जाता है, उसे कर्म्म कहते हैं। कर्ममें द्वितीया विभक्ति होती है। कर्मको विभक्तियों के चिन्ह ये हैं কে, রে, এরে अथवा য। जैसे, শ্যাম হরিকে ধরিতেছে, সিংহ মাংস খায়, রাম পুস্তক পড়িতেছে इत्यादि।

क्रियामें क्या या किसको यह प्रश्न करनेसे जो पद मिलता है उसी को उस क्रियाका कर्म जानना। क्रिया में "कौन" प्रश्न करनेसे कर्त्ता मिलता है।

श्याम हरिके धरितेछे, 'धरितेछे' क्रिया है, कौन धरितेछे? इस प्रश्नके उत्तरमें श्याम मिलता है, इस लिये 'श्याम' कर्त्ता है। श्याम क्या या किसको पकडता है? इस प्रश्नसे हरि मिलता है, इसलिये "हरि" कर्म्म है। इसी तरह और उदाहरण समझ लो।

कुछ क्रियाओंके दो दो कर्म्म रहते हैं, अर्थात् जिज्ञासा, देओया इत्यादि कतिपय धातुओं तथा कथनार्थ और णिजन्त धातुओंके दो दो कर्म रहते हैं। इन धातुओंका नाम द्विकर्म्मक है। जैसे—माता शिशुके चन्द्र देखाइतेछेन, गुरु शिष्यके काव्य पडाइतेछेन, आमि तारकके टाका दियाछि, वीरेन्द्र सतीशके इहा वलिल इत्यादि।

माता शिशुके चन्द्र देखाइतेछेन यहां पर 'देखाइतेछेन' क्रिया है। कि देखाइतेछेन? चन्द्र, इसलिये "चन्द्र" एक कर्म्म है। और काहाके देखाइतेछेन? शिशुके, इसलिये "शिशुके" और एक कर्म्म हुआ, अतएव देखाइतेछेन इस क्रियाके दो कर्म्म हुए। गुरु शिष्यके काव्य पडाइतेछेन. यहाँ पर "पडाइतेछेन" क्रिया है। कि पडाइतेछेन? काव्य, इस लिये "काव्य' एक कर्म्म हुआ। काहाके पडाइतेछेन? शिष्यके। इसलिये 'शिष्यके' और एक कर्म्म हुआ।, अतएव पडाइतेछेन क्रिया द्विकर्म्मक हुई। इसी तरह आमि तारकके टाका दियाछि, यहाँ पर 'दियाछि' क्रिया हुई, कि

होती है। जैसे, রাম পুস্তক পড়িতেছে, শিশু চাঁদ দেখিতেছে, রাজা আসিতেছেন इत्यादि।

यहाँ पर पड़ितेछे क्रियाका "कर्त्ता" राम है; क्योंकि जो करता है उसीको कर्त्ता कहते हैं। राम पुस्तक पड़ितेछे, यहाँ पर कौन पुस्तक पढ़ता है? राम। इसलिये "राम" कर्त्ता है। शिशु चाँद देखितेछे, यहाँ पर चाँद कौन देखता है? शिशु, इसलिये "शिशु" कर्त्ता है। राजा आसितेछेन, यहाँ पर आता है कौन? राजा, इसलिये 'राजा' कर्त्ता है।

कर्म्म।

जो किया जाता है, जो सुना जाता है जो देखा जाता है, जो लाया जाता है, जो दिया जाता है, जो लिया जाता है, जो रक्खा जाता है, जो पकड़ा जाता है, जो मारा जाता है, उसे कर्म्म कहते हैं। कर्मर्में द्वितीया विभक्ति होती है। कर्मकी विभक्तियों के चिन्ह ये हैं কে, রে, এরে अथवा य। जैसे, শ্যাম হরিকে ধরিতেছে, সিংহ মাংস খায়, রাম পুস্তক পড়িতেছে इत्यादि।

क्रियामें क्या या किसको यह प्रश्न करनेसे जो पद मिलता है उसी को उस क्रियाका कर्म जानना। क्रिया में "कौन" प्रश्न करनेसे कर्त्ता मिलता है।

द्वारा, दिया, करिया, ते इत्यादि विभक्ति चिन्हों के द्वारा करण कारक का निर्णय होता है; इस लिये ये करण कारक की विभक्तियाँ हैं। क्रियामें किसके द्वारा प्रश्न करनेसे जो मिलता है वही करण कारक होता है। जैसे—दन्त द्वारा चर्व्वण करे, नेत्र दिया देखे, यष्टि करिया, लाठिते इत्यादि।

यहाँपर 'दन्त', 'नेत्र', 'यष्टि' और 'लाठि' करण कारक हैं। द्वारा, दिया, करिया और ते इन चारों विभक्तियों द्वारा करणकारक का निर्णय होता है।

सम्प्रदान कारक।

अपना अधिकार नष्ट करके जिसको कोई चीज़ दी जाती है उसको सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसकी विभक्ति के चिन्ह के और रे हैं। जैसे—दरिद्रके अन्न दाओ, यहाँ पर "दरिद्रके" यह पद सम्प्रदान कारक हुआ। जिस दान में अधिकार रहता है अर्थात् जब दी हुई चीज़ फिर ले लेनेकी इच्छासे दी जाती है तब वह सम्प्रदान न होकर कर्म होती है। जैसे—रजकके वस्त्र दियेछे; यहाँ पर रजक कर्म कारक है।

अपादान कारक।

जिससे, कोई आदमी या चीज़, भीत, चलित,

दियाछि ? टाका ; इसलिये "टाका" कर्म्म है। काहाके दियाछि ? तारकके ; इसलिये "तारकके" और एक कर्म हुआ ; अतएव दियाछि इस क्रियाके दो कर्म हुए। धीरेन्द्र सतीशके इहा बलिल, यहाँपर "बलिल" क्रिया है। कि बलिल ? इहा ; इसलिये "इहा" एक कर्म हुआ। काहाके बलिल ? सतीशके ; इसलिये "सतीशके" यह पद भी एक कर्म हुआ। अतएव बलिल क्रियाके दो कर्म हुए।

करण कारक।

जिसके द्वारा काम पूरा किया जाता है, उसको करण कारक कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे ;—दाय द्वारा काठ काटितेछे ; चक्षु द्वारा चन्द्र देखितेछे, जल द्वारा भूमि आर्द्र हइयाछे इत्यादि।

दाय द्वारा काष्ठ काटितेछे ; यहाँ पर दाय (कुल्हाड़ी) द्वारा काटनेका काम पूरा होता है, इसलिये "दाय" करण कारक हुआ। चक्षु द्वारा चन्द्र देखितेछे ; यहाँ पर चक्षु द्वारा देखनेकी क्रिया सम्पन्न होती है ; इसलिये "चक्षु" करण कारक हुआ। जल द्वारा भूमि आर्द्र हइयाछे ; यहाँ पर जल द्वारा आर्द्र होनेका काम पूरा होता है ; इसलिये "जल" करण कारक हुआ।

দ্বারা, দিয়া, করিয়া, তে इत्यादि विभक्ति चिन्हों के द्वारा करण कारक का निर्णय होता है; इस लिये ये करण कारक की विभक्तियाँ है। क्रियामें किसके द्वारा प्रश्न करनेसे जो मिलता है वही करण कारक होता है। जैसे—দন্ত দ্বারা কর্তন করে, নেত্র দিয়া দেখে, যষ্টি করিয়া, লাঠিতে इत्यादि।

यहाँपर 'दन्त', 'नेत्र', 'यष्टि' और 'लाठि' करण कारक हैं। द्वारा, दिया, करिया और ते इन चारों विभक्तियों द्वारा करणकारक का निर्णय होता है।

सम्प्रदान कारक।

अपना अधिकार नष्ट करके जिसको कोई चीज दी जाती है उसको सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसकी विभक्ति के चिन्ह के और रे हैं। जैसे—দরিদ্রকে অন্ন দাও, यहाँ पर "दरिद्रके" यह पद सम्प्रदान कारक हुआ। जिस दान में अधिकार रहता है अर्थात् जब दी हुई चीज फिर ले लेनेकी इच्छासे दी जाती है तब वह सम्प्रदान न होकर कर्म्म होती है। जैसे—রজককে বস্ত্র দিতেছে ; यहाँ पर रजक कर्म्म कारक है।

अपादान कारक।

जिससे, कोई आदमी या चीज़, भीत, चलित,

दियाछि ? टाका ; इसलिये "टाका" कर्म है। काहाके दियाछि ? तारकके ; इसलिये "तारकके" और एक कर्म हुआ ; अतएव दियाछि इस क्रियाके दो कर्म हुए। धीरेन्द्र सतीशके इहा बलिल, यहाँपर "बलिल" क्रिया है। किं बलिल ? इहा : इसलिये "इहा" एक कर्म हुआ। काहाके बलिल ? सतीशके, इसलिये "सतीशके" यह पद भी एक कर्म हुआ। अतएव बलिल क्रियाके दो कर्म हुए।

करण कारक।

जिसके द्वारा काम पूरा किया जाता है, उसको करण कारक कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे,—दाय द्वारा काठ काटितेछे, चक्षु द्वारा चन्द्र देखितेछे, जल द्वारा भूमि आर्द्र हइयाछे इत्यादि।

दाय द्वारा काष्ठ काटितेछे ; यहाँ पर दाय (कुल्हाड़ी) द्वारा काटनेका काम पूरा होता है, इसलिये "दाय" करण कारक हुआ। चक्षु द्वारा चन्द्र देखितेछे ; यहाँ पर चक्षु द्वारा देखनेकी क्रिया सम्पन्न होती है ; इसलिये "चक्षु" करण कारक हुआ। जल द्वारा भूमि आर्द्र हइयाछे ; यहाँ पर जल द्वारा आर्द्र होनेका काम पूरा होता है ; इसलिये "जल" करण कारक हुआ।

हइते भय पाइतेछे। बाडी थेके आन, इत्यादि। यहांपर "पांच", "भल्लूक" और "बाडी" अपादान कारक हैं। हइते और थेके इन दो विभक्तियों द्वारा अपादान कारक जाना जाता है।

अधिकरण।

वस्तु या क्रिया के आधारको अधिकरण कहते हैं जैसे— वायु सर्व्व स्थाने आछे, वृक्षे फल आछे, देहे बल आछे, दुग्धे माखन आछे इत्यादि।

वायु सर्व्व स्थाने आछे, यहां पर "सर्व्व स्थाने" यह पद 'आछे' क्रिया का आधार है इसलिये "सर्व्व स्थाने" अधिकरण कारक हुआ। वृक्षे फल आछे, यहांपर 'आछे' क्रिया है; कोथाय आछे? वृक्षे; इस लिये 'वृक्षे' अधिकरण कारक हुआ। देहे बल आछे, यहां पर 'आछे' क्रिया है; कोथाय आछे? देहे, इसलिये "देहे" अधिकरण कारक हुआ। दुग्धे माखन आछे, यहां पर दुग्ध माखनका आधार है, इसलिये "दुग्धे" अधिकरण कारक हुआ।

তে, এতে, এ, য়, য,—ये सब अधिकरणकी विभक्तियां हैं। जैसे,—জলে মৎস্য বাস করে, শাখায় কিংবা শাখাতে বসিয়া কাক ডাকিতেছে इत्यादि।

यहांपर "जले, शाखाय या शाखाते" अधिकरण कारक है।

रचित, गृहीत, उत्पन्न अन्तर्हित, निवारित, विरत, पराजित, आवद्ध या भेदित होता है, उसका नाम अपादान कारक है। अपादानमें पञ्चमी विभक्ति होती है। इस विभक्ति का चिह्न है—हइते। जैसे—व्याघ्र हइते भीत हइतेछे, वृक्ष हइते पत्र पड़ितेछे, दस्यु हइते धन रक्षा करितेछे, मेघ हइते वृष्टि हइतेछे, पाप हइते विरत हइबे, दुष्ट लोक हइते अन्तर्हित हइतेछे, पुष्प हइते फल उत्पन्न हय इत्यादि।

व्याघ्र हइते भीत हइतेछे, यहाँपर व्याघ्रसे भीत होनेके कारण "व्याघ्र" अपादान कारक हुआ। वृक्ष हइते पत्र पड़ितेछे वृक्षसे पत्रका गिराव होता है इसलिये "वृक्ष" अपादान कारक हुआ। दस्यु हइते धन रक्षा करितेछे, यहाँपर दस्युसे धन रक्षा करनेके कारण "दस्यु" अपादान कारक हुआ। मेघ हइते वृष्टि हइतेछे, यहाँपर मेघसे वृष्टि पैदा होती है, इसलिये 'मेघ' अपादान कारक हुआ। पाप हइते विरत हइबे, यहाँ पर पापसे विरत होनेके कारण "पाप" अपादान कारक हुआ। दुष्ट लोक हइते अन्तर्हित हइतेछे, यहाँपर दुष्टलोक से अन्तर्हित होनेके कारण "दुष्ट लोक" अपादान कारक हुआ। पुष्प हइते फल उत्पन्न हय, यहाँपर पुष्प से फल पैदा होता है, इसलिये "पुष्प" अपादान कारक हुआ।

हइते या थेके इत्यादि अपादान कारक की विभक्तियाँ हैं। जैसे—पाँच सेके तीन वियोग कर। मधुके

हइते भय पाइतेछे। बाड़ी थेके जान, इत्यादि। यहांपर "पाँच", "भल्लूक" और "बाड़ी" अपादान कारक हैं। हइते और थेके इन दो विभक्तियों द्वारा अपादान कारक जाना जाता है।

अधिकरण।

वस्तु या क्रिया के आधारको अधिकरण कहते हैं जैसे—वायु सर्व्व स्थाने आछे, वृक्षे फल आछे, देहे बल आछे, दुग्धे माखन आछे इत्यादि।

वायु सर्व्व स्थाने आछे, यहां पर "सर्व्व स्थाने" यह पद 'आछे' क्रिया का आधार है इसलिये "सर्व्व स्थाने" अधिकरण कारक हुआ। वृक्षे फल आछे, यहांपर 'आछे' क्रिया है; कोथाय आछे? वृक्षे; इस लिये 'वृक्षे' अधिकरण कारक हुआ। देहे बल आछे, यहां पर 'आछे' क्रिया है; कोथाय आछे? देहे; इसलिये "देहे" अधिकरण कारक हुआ। दुग्धे माखन आछे, यहां पर दुग्ध माखनका आधार है; इसलिये "दुग्धे" अधिकरण कारक हुआ।

ते, एते, ए, या, य,—ये सब अधिकरणकी विभक्तियाँ हैं। जैसे,—जले मत्स्य वास करे, शाखाय किंवा शाखाते बसिया काक डाकितेछे इत्यादि।

यहांपर "जले, शाखाय या शाखाते" अधिकरण कारक हैं।

अधिकरण तीन प्रकारके होते हैं—आधाराधिकरण कालाधिकरण और भावाधिकरण।

वस्तु या क्रिया का आधार होने ही से उसको आधाराधिकरण कहते हैं। आधाराधिकरण चार प्रकार के हैं,— विषयाधार, व्याप्ताधार, सामीप्याधार और एक देशाधार।

कोई वस्तु, अधिकरण होने से अगर "तद्विषये" (उसमें) ऐसा अर्थ समझ पड़े, तो उसका नाम "विषयाधार अधिकरण" होता है। जैसे—शिल्पकार्य्ये नैपुण्य देखाय, अर्थात् शिल्पकार्य्य में निपुणता है, शास्त्रे पारदर्शिता आछे, यहांपर "शिल्पकर्म्मे" और शास्त्रे" ये दो पद विषयाधार अधिकरण हैं।

जो सब आधार में व्याप्त होकर रहता है उसका नाम "व्याप्ताधार" है। जैसे—इक्षुते रस आछे, अर्थात् ऊख में रस है। दुग्धे माखन आछे, अर्थात् दूध में मक्खन है, इसलिये यहाँ पर "इक्षुते" और "दुग्धे" ये दोनों पद व्याप्ताधार अधिकरण हुए।

समीपे (नजदीक-पास) यह अर्थ प्रकट होने से ...

कि सारे बन में बाघ है; बल्कि यह समझना होगा कि बन के किसी एक स्थान में बाघ है, इसलिये 'बने' यह एक देशाधार अधिकरण हुआ।

कालवाचक शब्द अधिकरण होने से उसको "कालाधिकरण" कहते हैं, अर्थात् दिन, रात्रि, मास, पक्ष, यखन, तखन, इत्यादि समय-वाचक शब्द अगर अधिकरण हों तो उसको कालाधिकरण कहते हैं। जैसे—প্রত্যূষে গাত্রোত্থান করা উচিত, মধ্যাহ্নে সূর্য্যের কিরণ খরতর হয়, তিনি তখন ছিলেন না, যখন যাইবে আমিও যাইব, বর্ষায় বৃষ্টি হয় ইত্যাদি।

प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, यहाँपर प्रत्यूषे अर्थात् प्रभात काले (सवेरे) समझा जाता है, इस लिये 'प्रत्यूषे' यह पद कालाधिकरण है। मध्याह्ने सूर्य्येर किरण खरतर हय, यहाँ पर मध्याह्ने कहनेसे मध्याह्नकाल समझा जाता है; तिनि तखन छिलेन ना, यहाँ पर तखन कहने से वही समय समझा जाता है। यहाँपर "तखन" पद कालाधिकरण है। जखन जाइबे आमिओ जाइब, यहाँपर जखन शब्दद्वारा समय समझा जाता है; इसलिये 'जखन' पद कालाधिकरण हुआ। वर्षाय वृष्टि हय, यहाँ वर्षा शब्द द्वारा वर्षा काल समझा जाता है इसलिये "वर्षा" पद कालाधिकरण है।

गमन दर्शन, भोजन, श्रवण इत्यादि जितने भा

अधिकरण तीन प्रकारके होते हैं—आधाराधिकरण कालाधिकरण और भावाधिकरण।

वस्तु या क्रिया का आधार होने ही से उसको आधाराधिकरण कहते हैं। आधाराधिकरण चार प्रकार के हैं,—विषयाधार, व्याप्ताधार, सामीप्याधार और एक देशाधार।

कोई वस्तु, अधिकरण होने से अगर "तद्विषये" (उसमें) ऐसा अर्थ समझा पड़े, तो उसका नाम "विषयाधार अधिकरण' होता है। जैसे—शिल्पकारेर शिल्पकर्म्मे नैपुण्य देखाय, अर्थात् शिल्पकार्य्य में निपुणता है, शास्त्रे पाव दर्शिता आछे, यहांपर "शिल्पकर्म्मे" और शास्त्रे" ये दो पद विषयाधार अधिकरण हैं।

जो सब आधार में व्याप्त होकर रहता है उसका नाम "व्याप्ताधार" है। जैसे—इक्षुते रस आछे, अर्थात् ऊख में रस है। दुग्धे माखन आछे, अर्थात् दूध में मक्खन है, इसलिये यहां पर "इक्षुते" और "दुग्धे" ये दोनों पद व्याप्ताधार अधिकरण हुए।

समीपे (नज़दीक, पास) यह अर्थ प्रकट होने से उसे "सामीप्याधार" कहते हैं। जैसे—गङ्गाय वास करे, यहां पर गङ्गा के निकट रहता है ऐसा अर्थ प्रकट होता है, इसलिये, 'गङ्गाय" पद सामीप्याधार अधिकरण है।

यदि एकाधार हो, तो उसे "एक देशाधिकरण" कहते हैं। जैसे—वने व्याघ्र आछे। यहांपर यह नहीं समझना होगा

कि सारे बन में बाघ है; बल्कि यह समझना होगा कि बन के किसी एक स्थान में बाघ है, इसलिये 'बने' यह एक देशाधार अधिकरण हुआ।

कालवाचक शब्द अधिकरण होने से उसको "कालाधिकरण" कहते हैं, अर्थात् दिन, रात्रि, मास, पक्ष, यखन, तखन, इत्यादि समय-वाचक शब्द अगर अधिकरण हो तो उसको कालाधिकरण कहते हैं। जैसे—প্রত্যূষে গাত্রোত্থান করা উচিত, মধ্যাহ্নে সূর্যের কিরণ খরতর হয়, তিনি তখন ছিলেন না, যখন যাইবে আমিও যাইব, বর্ষায় বৃষ্টি হয় इत्यादि।

प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, यहाँपर प्रत्यूषे अर्थात् प्रभात काले (सवेरे) समझा जाता है, इस लिये 'प्रत्यूषे' यह पद कालाधिकरण है। मध्याह्ने सूर्येर किरण खरतर हय, यहाँ पर मध्याह्ने कहनेसे मध्याह्नकाल समझा जाता है; तिनि तखन छिलेन ना, यहाँ पर तखन कहने से वही समय समझा जाता है। यहाँपर "तखन" पद कालाधिकरण है। जखन जाइबे आमिओ जाइब, यहाँपर जखन शब्दद्वारा समय समझा जाता है, इसलिये 'जखन' पद कालाधिकरण हुआ। वर्षाय वृष्टि हय, यहाँ वर्षा शब्द द्वारा वर्षा काल समझा जाता है इसलिये "वर्षा" पद कालाधिकरण है।

गमन, दर्शन, भोजन, श्रवण इत्यादि जितने भाव-

अधिकरण तीन प्रकारके होते हैं—आधाराधिकरण कालाधिकरण और भावाधिकरण।

वस्तु या क्रिया का आधार होने ही से उसको आधाराधिकरण कहते हैं। आधाराधिकरण चार प्रकार के हैं,—विषयाधार, व्याप्ताधार, सामीप्याधार और एक देशाधार।

कोई वस्तु, अधिकरण होने से अगर "तद्विषये" (उसमें) ऐसा अर्थ समझ पड़े, तो उसका नाम "विषयाधार अधिकरण" होता है। जैसे—शिल्पकारेर शिल्पकर्म्मे नैपुण्य देखाय, अर्थात् शिल्पकार्य्य में निपुणता है, शास्त्रे पार दर्शिता आछे, यहाँपर "शिल्पकर्म्मे" और शास्त्रे" ये दो पद विषयाधार अधिकरण हैं।

जो सब आधार में व्याप्त होकर रहता है उसका नाम "व्याप्ताधार" है। जैसे—इक्षुते रस आछे, अर्थात् ऊख में रस है। दुग्धे माखन आछे, अर्थात् दूध में मक्खन है, इसलिये यहां पर "इक्षुते" और "दुग्धे" ये दोनों पद व्याप्ताधार अधिकरण हुए।

समीपे (नज़दीक, पास) यह अर्थ प्रकट होने से उसे "सामीप्याधार" कहते हैं। जैसे—गङ्गाय वास करे, यहाँ पर गङ्गा के निकट रहता है ऐसा अर्थ प्रकट होता है, इसलिये "गङ्गाय" पद सामीप्याधार अधिकरण है।

यदि एकाधार हो, तो उसे "एक देशाधिकरण" कहते हैं। जैसे—वने व्याघ्र आछे। यहांपर यह नहीं समझना होगा

के सारे वन में बाघ है; बल्कि यह समझना होगा कि वन के किसी एक स्थान में बाघ है; इसलिये 'वने' यह एक देशाधार अधिकरण हुआ।

कालवाचक शब्द अधिकरण होने से उसको "कालाधिकरण" कहते हैं, अर्थात् दिन, रात्रि, मास, पक्ष, यखन, तखन, इत्यादि समय-वाचक शब्द अगर अधिकरण हो तो उसको कालाधिकरण कहते हैं। जैसे—प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, मध्याह्ने सूर्य्येर किरण खरतर हय, तिनि तखन छिलेन ना, यखन याइबे आमिओ याइब, वर्षाय वृष्टि हय इत्यादि।

·प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, यहाँपर प्रत्यूषे अर्थात् प्रभात काले (सबेरे) समझा जाता है; इस लिये 'प्रत्यूषे' यह पद कालाधिकरण है। मध्याह्ने सूर्य्येर किरण खरतर हय, यहाँ पर मध्याह्ने कहनेसे मध्याह्नकाल समझा जाता है; तिनि तखन छिलेन ना, यहाँ पर तखन कहने से वही समय समझा जाता है। यहाँपर "तखन" पद कालाधिकरण है। जखन जाइबे आमिओ जाइब, यहाँपर जखन शब्दद्वारा समय समझा जाता है; इसलिये 'जखन' पद कालाधिकरण हुआ। वर्षाय वृष्टि हय, यहाँ वर्षा शब्द द्वारा वर्षा काल समझा जाता है इसलिये "वर्षा" पद कालाधिकरण है।

गमन, दर्शन, भोजन, श्रवण इत्यादि जितने भाव-

विहित क्रिया पद किसो समापिका क्रिया को अपेक्षा करते हैं उनका नाम <u>भावाधिकरण</u> है। जैसे—হরির গমনে তিনি দুঃখিত হইবেন, চন্দ্রের দর্শনে আমি বড় সুখী হই, ব্রাহ্মণের ভোজনে সকলেই সন্তুষ্ট হয়, আত্মীয় বিয়োগে সকলেই শোকাকুল হয় ইত্যাদি।

<u>हरिर गमने तिनि दु:खित हइवेन</u>, यहाँ पर हरि गमने इसका अर्थ 'हरिर गमन हइले', ऐसा कहनेसे किसो समापिका क्रिया की जरूरत होतो है, नहीं तो वाक्य सम्पूर्ण नहीं होता; इसलिये "गमने" यह पद भावाधिकरण हुआ। <u>ब्राह्मणेर भोजने सकलेइ सन्तुष्ट हय</u>, यहाँपर ब्राह्मणेर भोजने इसका अर्थ 'ब्राह्मणेर भोजन हइले', ऐसा कहनेसे कोई समापिका क्रिया चाहिये, नहीं तो वाक्य पूरा नहीं होता, इस लिये "भोजने" यह पद भावाधिकरण हुआ। <u>चन्द्रेर दर्शने आमि बड सुखी हइ</u>; यहाँपर दर्शने इसका अर्थ 'दर्शन करिले', ऐसा कहने से एक समापिका क्रिया का प्रयोजन होता है, नहीं तो वाक्य समाप्त नहीं होता; इस लिये दर्शने यह भावाधिकरण हुआ। <u>आत्मीय वियोगे सकलेई शोकाकुल हय</u>, यहाँपर "वियोगे" इसका अर्थ 'वियोग हइले' ऐसा कहनेसे एक समापिका क्रिया आवश्यक है, नहीं तो वाक्य अधूरा रहता है। इस लिये "वियोगे" यह पद भावाधि-

सम्बन्ध पद।

क्रियाके साथ अन्वित नहीं होता,इसीसे सम्बन्धको कारक नहीं कहते। विशेष्य पद के साथ विशेष्य पदके सम्पर्कको ही "सम्बन्ध पद" कहते हैं। सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। उसका रूप र या एर है। जैसे—रामेर बाड़ी, श्यामेर कापड़, आमेर गाछ, चन्द्रेर किरण, साधुर भद्रता, सागरेर जल इत्यादि।

रामेर बाड़ी, यहाँ पर राम और बाड़ी दोनों विशेष्य, पद हैं। बाड़ीके साथ रामका सम्बन्ध है क्योंकि रामको छोड़ कर बाड़ी में दूसरे का अधिकार नहीं है, इसलिये "रामेर," यह पद सम्बन्ध पद हुआ और राम पद के आगे एर विभक्ति जोड़नेसे रामेर पद बना। इसी तरह श्यामेर, आमेर, चन्द्रेर, साधुर, सागरेर ये सब भी "सम्बन्ध पद" हैं।

सम्बोधन।

आह्वान करनेको सम्बोधन कहते हैं। सम्बोधन के समय जो पद प्रयोग किया जाता है उसे "सम्बोधन पद" कहते हैं। जैसे,—

भाइ: चल = भाई चलो।

राम तुमि याओ = राम तुम जाओ।

विच्छित क्रिया पद किसी समापिका क्रिया की अपेक्षा करते हैं उनका नाम भावाधिकरण है। जैसे—हरिर गमने तिनि दुःखित हइबेन, চন্দ্রের দর্শনে আমি বড় সুখী হই ব্রাহ্মণের ভোজনে সকলেই সন্তুষ্ট হয়,আত্মীয় বিয়োগে সকলে শোকাকুল হয় इत्यादि।

हरिर गमने तिनि दुःखित हइबेन, यहाँ पर हरि गमने इसका अर्थ 'हरिर गमन हइले', ऐसा कहनेसे किसी समापिका क्रिया की जरूरत होती है, नही तो वाक्य सम्पूर्ण नहीं होता, इसलिये "गमने" यह पद भावाधिकरण हुआ। ब्राह्मणेर भोजने सकलेइ सन्तुष्ट हय, यहाँपर ब्राह्मणेर भोजने इसका अर्थ 'ब्राह्मणेर भोजन हइले', ऐसा कहनेसे कोई समापिका क्रिया चाहिये, नहीं तो वाक्य पूरा नहीं होता, इस लिये "भोजने" यह पद भावाधिकरण हुआ। चन्द्रेर दर्शने आमि बड सुखी हइ, यहाँपर दर्शने इसका अर्थ 'दर्शन करिले', ऐसा कहने से एक समापिका क्रिया का प्रयोजन होता है, नहीं तो वाक्य समाप्त नहीं होता, इस लिये दर्शने यह भावाधिकरण हुआ। आत्मीय वियोगे सकलेइ शोकाकुल हय, यहाँपर "वियोगे" इसका अर्थ 'वियोग हइले' ऐसा कहनेसे एक समापिका क्रिया आवश्यक है, नहीं तो वाक्य अधूरा रहता है, इस लिये 'वियोगे' यह पद भावाधिकरण है।

शब्द	सम्बोधन पद
भगवान्	हे भगवन्
ज्ञानी	हे ज्ञानिन्
मतिमान्	हे मतिमन्

ऊपर जो सम्बोधन के रूप दिखाये गये हैं, वह सब संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार हैं और प्रायः बँगला भाषामें संस्कृत के कायदे से ही रूपान्तर होकर सम्बोधन व्यवहार किये जाते हैं, लेकिन बहुत से बँगला व्याकरणाचार्य्यों का मत है कि बँगला में सम्बोधन पद के रूप ठीक कर्त्ताकारक की तरह होते हैं। जैसे; हे पिता, रे दुर्मति, हे शिशु, ओ सखा, हा भगवान् इत्यादि, लेकिन अधिकांश लोगोंने संस्कृत का कायदा ही ठीक माना है।

"शकुन्तला" शब्द आकारान्त है यानी शकुन्तला का अन्तिम अक्षर "आ" है। आकारान्त सभी शब्दों का रूप सम्बोधन में शकुन्तला के समान होगा। जैसे;—अयि शकुन्तले, दुर्गे इत्यादि।

"दुर्मति" शब्द इकारान्त है यानी दुर्मति शब्दका अन्तिम अक्षर "इ" है। इकारान्त शब्दों के रूप सम्बोधन में "दुर्मतिके" समान होंगे। जैसे,—रे दुर्मते, हे कवे।

इसी तरह सम्बोधनमें ईकारान्त शब्दोंके रूप "प्रेयसि"; उकारान्त शब्दोंके रूप "शिशो", ऊकारान्त शब्दोंके रूप

মাধব ভাল আছ ? — माधव अच्छे हो ?

ওহে হরি = औ हरि ।

ওরে চন্দ্র = अरे चन्द्र ।

ऊपरके उदाहरणोंमें "भ्रातः", "राम", "माधव", "हरि" और "चन्द्र" सम्बोधन पद हैं ।

नोट—सम्बोधन पदोंके आगे হে, ও, অয়ি, হা, অরে, হরে प्रभृति कितने ही अव्यय शब्द प्रायः लगाये जाते हैं । लेकिन किसी किसी जगह सम्बोधन पद के पहले सम्बोधन सूचक अव्यय शब्द नहीं लगाये जाते ।

संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार अकारान्त को छोड़ कर और तरह के शब्दों के सम्बोधन पद के एक वचन में रूपान्तर होता है, बहुवचन में नहीं होता ।

जैसे,—

शब्द	सम्बोधन पद
शकुन्तला	अयि शकुन्तले
दुर्म्मति	रे दुर्म्मते
सखि	हे सखे
प्रेयसी	हा प्रेयसि
शिशु	हे शिशो
वधू	हा वधु
मातृ	हा मातः
राजा	हे राजन्

शब्द	सम्बोधन पद
भगवान्	हे भगवन्
ज्ञानी	हे ज्ञानिन्
मतिमान्	हे मतिमन्

ऊपर जो सम्बोधन के रूप दिखाये गये हैं, वह सब संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार हैं और प्रायः बँगला भाषामें संस्कृत के कायदे से ही रूपान्तर होकर सम्बोधन व्यवहार किये जाते हैं ; लेकिन बहुत से बँगला व्याकरणाचार्यों का मत है कि बँगला में सम्बोधन पद के रूप ठीक कर्त्ताकारक की तरह होते हैं। जैसे ; हे पिता, रे दुर्मति, हे शिशु, ओ सखा, हा भगवान् इत्यादि, लेकिन अधिकांश लोगोंने संस्कृत का कायदा ही ठीक माना है।

"शकुन्तला" शब्द आकारान्त है यानी शकुन्तला का अन्तिम अक्षर "आ" है। आकारान्त सभी शब्दों का रूप सम्बोधन में शकुन्तला के समान होगा। जैसे ;—अयि शकुन्तले, दुर्गे इत्यादि।

"दुर्मति" शब्द इकारान्त है यानी दुर्मति शब्दका अन्तिम अक्षर "इ" है। इकारान्त शब्दों के रूप सम्बोधन में "दुर्मतिके" समान होंगे। जैसे,—रे दुर्मते, हे कवे।

इसी तरह सम्बोधनमें ईकारान्त शब्दोंके रूप "प्रेयसि" ; उकारान्त शब्दोंके रूप "शिशो", ऊकारान्त शब्दोंके रूप

"वधु" ; ऋकारान्त शब्दोंके रूप "मातः" ; नकारान्त शब्दोंके रूप "राजन्" की तरह होंगे।

अर्थ विशेषमें विभक्ति निर्णय।

जहां विना, व्यतिरेके, व्यतीत, ऊे, भिन्न इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं, वहां इनके पहिले का पद कर्मकारक के अनुरूप होता है। जैसे,—

धन विना सुख हय ना।

धन विना सुख नहीं होगा।

ताँहाके भिन्न काज हइबे ना।

उसके सिवाय और से काम न होगा।

धिक् और नमस्कारार्थ शब्दोंका योग होने से, पहिले शब्द में कर्म की विभक्ति लगती है—यानी शब्द के बाद "के" लगाना होता है। जैसे,—

मूर्खके धिक्	तोमाके नमस्कार।
मूर्खको धिक्कार।	तुमको नमस्कार।

जिन शब्दों के साथ सहित, प्रति, समान, तुल्य, उपरि समान, इत्यादि शब्दोंका योग होता है अथवा जिन शब्दों के साथ ये शब्द लगाये जाते हैं, उन शब्दों में सम्बन्ध पदकी

তাহার সঙ্গে। রামের তুল্য।

আমার প্রতি। তোমার সমান।

प्राधान्य वाचक शब्दों का योग होने से भी "सम्बन्ध" की विभक्ति लगती है। जैसे,—

পর্ব্বতের প্রধান হিমালয়।

কবির শ্রেষ্ঠ কালিদাস।

ধার্ম্মিকের শিরোমণি নল।

अपेक्षार्थ शब्द के परे होने से, पहले के पदको "निर्द्धार" कहते हैं। जैसे,—

রাম অপেক্ষা শ্যাম সুশীল।

তৈল অপেক্ষা ঘৃত ভাল।

इन दोनों वाक्योंमें "राम" और "तैल" निर्द्धार पद हैं।

शब्दरूप।

विशेष्य पद के लिङ्ग, पुरुष, वचन प्रभृति निरूपित हो चुके हैं। अब शिक्षार्थियोंके जानने के लिये शब्दरूप दिखा देते हैं।

पुंलिंग 'मानव' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	মানব	মানবেরা
	मनुष्य मनुष्यने	मनुष्य, मनुष्योंने

"বধু", ऋकारान्त शब्दोंके रूप "মাত" नकारान्त शब्दोंके रूप "রাজন্" की तरह होंगे।

अर्थ विशेषमें विभक्ति निर्णय।

जहां বিনা, ব্যতিরেকে, ব্যতীত, ঐ, ভিন্ন इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं, वहां इनके पहिले का पद কর্মকারক के अनुरूप होता है। जैसे,—

ধন বিনা সুখ হয় না।

धन विना सुख नहीं होता।

তাঁহাকে ভিন্ন কাজ হইবে না।

उसके सिवाय और से काम न होगा।

धिक् और नमस्कारार्थ शब्दोंका योग होने से, पहिलेके शब्द में कर्म की विभक्ति लगती है—यानी शब्द के बाद "কে" लगाना होता है। जैसे,—

মূর্খকে ধিক্ — मूर्खको धिक्कार।

তোমাকে নমস্কার। — तुमको नमस्कार।

जिन शब्दों के साथ সহিত, প্রতি, সমান, তুল্য, উপরি समान, इत्यादि शब्दोंका योग होता है अथवा जिन शब्दों के साथ ये शब्द लगाये जाते हैं, उन शब्दों में सम्बन्ध पदकी विभक्तियां लगती हैं। जैसे,—

তোমার সহিত। তাহার উপরি।

তাহার সঙ্গে।	রামের তুল্য।
আমার প্রতি।	তোমার সমান।

प्राधान्य वाचक शब्दों का योग होने से भी "सम्बन्ध" की विभक्ति लगती है। जैसे:—

পর্ব্বতের প্রধান হিমালয়।

কবির শ্রেষ্ঠ কালিদাস।

ধাম্মিকের শিরোমণি নল।

अपेक्षार्थ शब्द के परे होने से, पहले के पदको "निर्द्धार" कहते हैं। जैसे,—

রাম অপেক্ষা শ্যাম সুশীল।

তৈল অপেক্ষা ঘৃত ভাল।

इन दोनों वाक्योंमें "राम" और "तैल" निर्द्धार पद हैं।

शब्दरूप।

विशेष्य पद के लिङ्ग, पुरुष, वचन प्रभृति निरूपित हो चुके हैं। अब शिक्षार्थियोंके जानने के लिये शब्दरूप दिखा देते हैं।

पुंलिंग 'मानव' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	মানব	মানবেরা
	मनुष्य, मनुष्यने	मनुष्य,

"मधु" ; ऋकारान्त शब्दोंके रूप "मातः" ; नकारान्त शब्दोंके रूप "राजन्" की तरह होंगे।

अर्थ विशेषमें विभक्ति निर्णय।

जहाँ बिना, व्यतिरेके, व्यतीत, ऐ, भिन्न इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं, वहाँ इनके पहिले का पद कर्मकारक के अनुरूप होता है। जैसे,—

धन बिना सुख हय ना।
धन बिना सुख नहीं होता।
ताँहाके भिन्न काज हइबे ना।
उसके सिवाय और से काम न होगा।

धिक् और नमस्कारार्थ शब्दोंका योग होने से, पहिलेके शब्द में कर्म की विभक्ति लगती है—यानी शब्द के बाद "के" लगाना होता है। जैसे,—

मूर्खके धिक्	तोमाके नमस्कार।
मूर्खको धिकार।	तुमको नमस्कार।

जिन शब्दों के साथ सहित, प्रति, समान, तुल्य, उपरि, समान, इत्यादि शब्दोंका योग होता है अथवा जिन शब्दों के साथ ये शब्द लगाये जाते हैं, उन शब्दों में सम्बन्ध पदकी विभक्तियां लगती हैं। जैसे,—

तोमार सहित।	बाटेर उपरि।

ताहार सङ्गे। रामेर तुल्य।

आमार प्रति। तोमार समान।

प्राधान्य-वाचक शब्दों का योग होने से भी "सम्बन्ध" की विभक्ति लगती है। जैसे,—

पर्व्वतेर प्रधान हिमालय।

कविर श्रेष्ठ कालिदास।

धार्म्मिकेर शिरोमणि नल।

अपेक्षार्थ शब्द के परे होने से, पहले के पदको "निर्द्धार" कहते हैं। जैसे;—

राम अपेक्षा श्याम सुशील।

तैल अपेक्षा घृत भाल।

इन दोनों वाक्योंमें "राम" और "तैल" निर्द्धार पद हैं।

शब्दरूप।

विशेष्य पद के लिङ्ग, पुरुष, वचन प्रभृति निरूपित हो चुके हैं। अब शिक्षार्थियोंके जानने के लिये शब्दरूप दिखा देते हैं।

पुंलिंग 'मानव' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मानव	मानवरा
	मनुष्य, मनुष्यने	मनुष्य,

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्म	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको	मनुष्योंको
करण	মানব দ্বারা	মানবদিগের দ্বারা
	मनुष्यसे	मनुष्योंसे
सम्प्रदान	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको, के, लिये	मनुष्योंको, के, लिये
अपादान	মানব হইতে	মানব সকল হইতে
	मनुष्य से	मनुष्यों से
अधिकरण	মানবে	মানব সকলে
	मनुष्यमें, पर	मनुष्योंमें, पर
सम्बन्ध	মানবের	মানবদিগের
	मनुष्यका, के, की	मनुष्यों का, के, की
सम्बोधन	হে মানব	হে মানবেরা
	हे मनुष्य	हे मनुष्यो

फल शब्द।

कारक	একবচন	বহুবচন
	ফল	ফল সকল
	ফল	ফল সকল
	ফল দ্বারা	ফল সকল দ্বারা

पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप प्राय, ऊपर की तरह ही होते हैं। जिन शब्दों के कारक विशेष में विभक्तियों के भिन्न भिन्न रूप निरूपित किये गये हैं केवल उन्हीं शब्दोंमें कुछ भेद होता है। अर्थात् अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त प्रभृति शब्दोंके किसी किसी कारक में भिन्न रूप होते हैं।

जो शब्द संस्कृत शब्दों से कुछ रूपान्तर होकर बँगला में बरते जाते हैं, उनमें से कुछ शब्द उदाहरण के तौर पर नीचे दिये जाते हैं,—

संस्कृत	बँगला	संस्कृत	बँगला
সখি	সখা	ধনিন্	ধনী
পিতৃ	পিতা	তেজস্	তেজ
ত্বচ	ত্বক্	কলত্রস্	কলত্র
বণিজ্	বণিক্	বিদ্বস্	বিদ্বান্
মহৎ	মহান্	রাজন্	রাজা
পাপীয়স্	পাপীয়ান্	দিশ্	দিক্
মনস্	মন	যশস্	যশ
গুণবৎ	গুণবান্	বুদ্ধিমৎ	বুদ্ধিমান্
উপানহ্	উপানৎ	জ্যোতিস্	জ্যোতি
প্রেমন্	প্রেম	পথিন্	পথ
বেধস্	বেধাঃ		

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्म	मानवके	मानवदिगके
	मनुष्यको	मनुष्योंको
करण	मानव द्वारा	मानवदिगेर द्वारा
	मनुष्यसे	मनुष्योंसे
सम्प्रदान	मानवके	मानवदिगके
	मनुष्यको, के, लिये	मनुष्योंको, के, लिये
अपादान	मानव हइते	मानव सकल हइते
	मनुष्य से	मनुष्यों से
अधिकरण	मानवे	मानव सकले
	मनुष्यमें, पर	मनुष्योंमें, पर
सम्बन्ध	मानवेर	मानवदिगेर
	मनुष्यका, के, की	मनुष्यों का,के, की
सम्बोधन	हे मानव	हे मानवेरा
	हे मनुष्य	हे मनुष्यो

फल शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	फल	फल सकल
कर्म	फल	फल सकल
करण	फल द्वारा	फल सकल द्वारा

इत्यादि ।

पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप प्रायः ऊपर की तरह ही होते हैं। जिन शब्दों के कारक विशेष में विभक्तियों के भिन्न भिन्न रूप निरूपित किये गये हैं केवल उन्हीं शब्दोंमें कुछ भेद होता है। अर्थात् अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त प्रभृति शब्दोंके किसी किसी कारक में भिन्न रूप होते हैं।

जो शब्द संस्कृत शब्दों से कुछ रूपान्तर होकर बंगला में बरते जाते हैं, उनमें से कुछ शब्द उदाहरण के तौर पर नीचे दिये जाते हैं,—

संस्कृत	बँगला	संस्कृत	बँगला
सखि	সখা	धनिन्	ধনী
पितृ	পিতা	তেজস্	তেজ
त्वच	ত্বক্	ফলতস্	ফলত
वणिज्	বণিক্	বিদ্বস্	বিদ্বান্
महत्	মহান্	রাজন্	রাজা
पापीयस्	পাপীয়ান্	দিশ্	দিক্
मनस्	মন	যশস্	যশ
গুণবৎ	গুণবান্	বুদ্ধিমৎ	বুদ্ধিমান
উপানহ্	উপানৎ	জ্যোতিস্	জ্যোতি
প্রেমন্	প্রেম	পথিন্	পথ
বেধস্	বেধাঃ		

इस जगह "शीतल" शब्द विशेषण है। क्योंकि इस शब्द से ही जल की शीतलता प्रकाशित होती है। इसी भाँति मिष्ट, उष्ण प्रभृति शब्द भी विशेषण हैं। जिन शब्दों के नीचे काली काली रेखाएँ खींची हैं, वे सब विशेषण हैं।

कारक, वचन और पुरुष के भेद से विशेषण के रूपमें भेद नहीं होता। क्योंकि उसमें कारक आदि नहीं होते। केवल स्त्रीलिङ्ग में रूप-भेद होता है। जैसे; नवीना रमणी, गुणवती भार्य्याके, विद्यावती बालिकाव।

कुछ विशेषण पद, कभी कभी, विशेषण के विशेषण होते हैं। जैसे; অত্যন্ত কঠিন, বড় মন্দ, অতি সুস্বাদু इत्यादि।

कितने ही विशेषण पद क्रिया के विशेषण हो जाते हैं। जैसे; শীঘ্র শিখিয়াছে, মন্দ মন্দ বহিতেছে।

सर्व्वनाम।

प्रसङ्ग क्रमसे एक व्यक्ति या एक वस्तुका जिक्र बारम्बार करना होता है; लेकिन बार बार एक ही व्यक्ति और एक ही वस्तुका जिक्र न करके उनके स्थानोंमें और बहुतसे पद इस्तेमाल करनेका कायदा है। इस तरह किसी पदकी जगह में जो पद आता है उसको "सर्व्वनाम" कहते हैं।

विशेषण।

जिस शब्द के प्रयोग करने से किसी का गुण व अवस्था प्रकाशित हो, उसे "विशेषण" या गुणवाचक शब्द कहते हैं। जैसे—

শীতল জল = ठण्ढा पानी।
মিষ্ট ফল = मीठा फल।
উত্তম বালক = अच्छा बालक।
বৃদ্ধ অশ্ব = बूढा घोड़ा।
মনোহর পুষ্প = मनोहर फूल।
পুরাতন বৃক্ষ = पुराना पेड़।
লোহিত বসন = लाल कपड़ा।
সৎ লোক = भला आदमी।
বড় গাছ = बड़ा पेड़।
ছোট ছেলে = छोटा लड़का।
অলস বালক = सुस्त बालक।
পাকা আম = पक्का आम।
শুষ্ক ভূমি = सूखी धरती।
গরম দুগ্ধ = गरम दूध।
কাল পাথর = काला पत्थर।
বিশুদ্ধ বায়ু = शुद्ध हवा।

इस जगह "शीतल" शब्द विशेषण है। क्योंकि इस शब्द से ही जल की शीतलता प्रकाशित होती है। इसी भाँति मिष्ट, दृढ़ प्रभृति शब्द भी विशेषण हैं। जिन शब्दों के नीचे काली काली रेखाएँ खींची हैं, वे सब विशेषण हैं।

कारक, वचन और पुरुष के भेद से विशेषण के रूपमें भेद नहीं होता। क्योंकि उसमें कारक आदि नहीं होते। केवल स्त्रीलिङ्ग में रूप-भेद होता है। जैसे; नवीना रमणी, गुणवती भार्य्याके, विद्यावती बालिकार।

कुछ विशेषण पद, कभी कभी, विशेषण के विशेषण होते हैं। जैसे; अत्यन्त कठिन, बड मन्द, अति सुस्वादु इत्यादि।

कितने ही विशेषण पद क्रिया के विशेषण हो जाते हैं। जैसे; शीघ्र शिखियाछे, मन्द मन्द वहितेछे।

सर्व्वनाम।

प्रसङ्ग क्रमसे एक व्यक्ति या एक वस्तुका जिक्र बारम्बार करना होता है, लेकिन बार बार एक ही व्यक्ति और एक ही वस्तुका जिक्र न करके उनके स्थानोंमें और बहुतसे पद इस्तेमाल करनेका कायदा है। इस तरह किसी पदकी जगह में जो पद आता है उसको "सर्व्वनाम" कहते हैं।

রাম বনে গেলেন, তাঁহার শোকে রাজা মরিলেন।

रामके वन जाने पर, उनके शोकमें राजा मर गये।

इस जगह "राम" इस पदकी जगह 'ताँहार' पद आया है; अतएव "ताँहार" पद सर्व्वनाम है।

जिस पदकी जगह सर्व्वनाम इस्तेमाल किया जाता है, उस पदका जो लिङ्ग और वचन होता है, सर्व्वनामका भी वही लिङ्ग और वचन होता है; किन्तु स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग के भेदसे सर्व्वनाम में भेद नहीं होता। जैसे;

সীতা অত্যন্ত পতিব্রতা, তিনি পতিকে পরম দেবতা বলিয়া মানিতেন।

सीता अत्यन्त पतिव्रता (थी), वह पतिको परम देवता कह कर मानती थी।

[२] অশ্বগণ বলিষ্ঠ জন্তু, তাহারা ভারী ভারী বস্তু লইয়া দ্রুতবেগে চলিয়া যায়।

घोड़े बलवान् जानवर होते हैं, वे भारी भारी चीज़ लेकर तेज़ीसे चले जाते हैं।

यहाँ "सीता" स्त्रीलिङ्ग एक वचनान्त पद है। सुतरां 'तिनि' यह सर्व्वनाम भी स्त्रीलिङ्ग और एक वचनान्त पद है। "अश्वगण" पुंलिङ्ग और बहुवचनान्त पद है; इसी लिये "ताहारा" यह सर्व्वनाम भी पुंलिङ्ग और बहुवचनान्त पद है।

विशेष्य पद की भाँति सर्व्वनाम पद के भी वचन, पुरुष

र कारक होते हैं। विशेष्य पदका अर्थ देखकर ही वचन, ग और कारक निर्णय किया जाता है।

सर्व्वनाम ये हैं—আমি, মুই, তুমি, তুই, আপনি, তিনি, সে, হা, তা, যিনি, যে, যাহা, ইনি, এ, ইহা, এই, উনি, ও, উহা, ি, সর্ব্ব, সব, উভয়, অন্য, ইতর, পর, অপর इत्यादि।

युष्मद्, अस्मद्, यद्, तद्, एतद्, इदम्, किम् इत्यादि; सब संस्कृत सर्व्वनाम हैं। इन सब के असल रूप भाषा काम नहीं आते। इन सब के स्थानमें আমি, তুমি, प्रभृति शब्द और उनके रूप भाषामें व्यवहार किये जाते हैं। संस्कृत सर्व्वनाम शब्द कृत, तद्धित और समास में व्यवहार होते हैं।

कितने ही सर्व्वनाम शब्द विभक्तियोंके लगाने से और ही तरह के हो जाते हैं। जैसे,

मूलशब्द	चलित शब्द सम्भ्रान्तको	असम्भ्रान्तको
अस्मद्	আমি	
भवत्	আপনি	
युष्मद्	তুমি	তুই
यद्	যাহা, যা, তিনি,	যে
तद्	তাহা, তা, তিনি	সে
इदम् एतद्	এই, ইহা, ইনি	এ

अदस्	ঐ, উহা, উনি	ও
किम्	কে, কি, কোন্	
सर्व्व	সব	

विभक्ति योग के समय अन्य, पर, उभय, इतर प्रभृति कितने ही शब्दों में कुछ रद्द बदल नहीं होता अर्थात् ये ऐसे के ऐसे ही रहते हैं।

सर्व्वनाम शब्दके रूप।

অস্মদ শব্দ।

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	আমি	আমরা
	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म्म	আমাকে	আমাদিগকে
	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	আমা দ্বারা	আমাদিগের দ্বারা
	मुझ से	हम से
सम्प्रदान	আমাকে	আমাদিগকে
	मुझे, मुझको	हमें, हमको
अपादान	আমা হইতে	আমাদিগের হইতে
	मुझसे	हम से

अधिकरण	আমাতে	আমাদিগের মধ্যে
	मुझमें, मुझपर	हममें, हम पर
सम्बन्ध	আমার	আমাদিগের
	मेरा	हमारा

"যে" शब्द पुं॰ व स्त्री॰

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	যে	যাহারা
	जिसने	जिन्होंने
कर्म	যাহাকে	যাহাদিগকে
	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको

इत्यादि।

"সে" शब्द पुं॰ व स्त्री॰

कर्त्ता	সে	তাহারা
	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	তাহাকে	তাহাদিগকে
	उसको	उनको

आदर प्रकाशनार्थ "যে" के स्थानमें "যিনি"; "যাহারা" के स्थानमें যাঁহারা; সে के स्थानमें "তিনি", "তাহারা" के स्थानमें "তাঁহারা" इत्यादि इस्तेमाल किये जाते हैं।

और सब सर्व्वनामों के रूप भी ऐसे ही होते हैं। सर्व्व-नाममें "सम्बोधन" नहीं होता केवल सात कारक होते हैं।

अव्यय।

जिस शब्दके बाद कोई विभक्ति न हो, कारक भेद से जिसके रूपमें भेद न हो, एवं जिसका लिङ्ग और वचन न हो, उसको "अव्यय" कहते हैं।

संयोजक, वियोजक आदि भेदोंसे अव्यय अनेक प्रकारके होते हैं। संयोजक अव्यय ये हैं—এবং, ও, আর, আরও, অপিচ, কিন্তু, অথচ, যদি, যদ্যপি, যেহেতু, যেন, বরং, সুতরাং, কেননা, বাস্তে, বাজের इत्यादि।

वियोजक अव्यय ये हैं—বা, কিংবা, অথবা, নতুবা, কি, তথাপি, তথাচ,না হয়, নয় ত, নহিলে, নচেৎ, অন্যথা इत्यादि।

शोक और विस्मय आदि सूचक अव्यय ये हैं—আঃ, উঃ, হায়, হা, উহু, ছিছি, রাম রাম, হরি হরি इत्यादि।

प्र, परा, अप, सम् अव, अनु, निर, दुर, वि, अधि, सु, उत्, परि, प्रति,अभि, अति, अपि, उप, आ, एद, इ, इन्हें "उपसर्ग" कहते हैं।

उपरोक्त उपसर्ग जब क्रिया-वाचक पदके पहले लग जाते हैं तब वह क्रिया-वाचक पद भिन्न भिन्न अर्थ प्रकाश करता है। जैसे;

দান = देना	আদান = लेना
গমন = जाना	আগমন = आना
অপকার = बुराई	উপকার = भलाई

क्रिया प्रकरण।

होना, करना प्रभृतिको "क्रिया" कहते हैं। जिन शब्दोंसे यह क्रिया समझी जाती है, उनको "क्रिया पद" कहते हैं। जैसे; হইতেছে, করিতেছে इत्यादि।

भू, क्ृ, दृश्‌, गम प्रभृतिको धातु कहते हैं। ये ही क्रिया की मूल होती हैं।

क्रिया दो तरह की होती हैं:—

(१) सकर्म्मक।

(२) अकर्म्मक।

जिन क्रियाओं के कर्म नहीं होते, वह सब क्रियाएँ, अर्थात् হওয়া, যাওয়া, বসা, থাকা, পড়া, জাগা, মরা, বাঁচা, হাসা, নাচা, খেলা, কাঁদা, কাঁপা प्रभृति धातुओंकी क्रियाएँ अकर्म्मक होती हैं; क्योंकि इन सब क्रियाओं के कर्म नहीं होते। जैसे; বৃষ্টি হইতেছে, বৃক্ষটি মরিয়াছে इत्यादि। यहां हइतेछे, मरियाछे, ये दो क्रिया हैं लेकिन इनके कर्म नहीं हैं; इसवास्ते ये अकर्म्मक हैं।

जिन क्रियाओं के कर्म होते हैं, वह सब क्रियाएँ अर्थात খাওয়া, দেখা, পাঠ করা प्रभृति धातुओंको क्रिया सकर्म्मक होती हैं; क्योंकि इन सब क्रियाओं के कर्म होते हैं। जैसे;

ঈশ্বর মঙ্গল করিতেছেন।

ईश्वर मङ्गल करता है।

সে পুস্তক পড়িতেছে।

वह पुस्तक पढ़ता है।

রাম অন্ন ভক্ষণ করিল।

रामने अन्न खाया।

द्विकर्म्मक क्रिया।

বলা, লেখা, জিজ্ঞাসা দেখান, বুঝান প্রভৃতি क्रियाओंके दो कर्म्म होते हैं। इसी कारणसे इनको द्विकर्म्मक क्रिया कहते हैं। जैसे,

রাম ব্রজকে তোমার কথা বলিয়াছে।

रामने ब्रजको तुम्हारी बात बोल दी है।

আমি আজ তাঁহাকে সে বিষয় জিজ্ঞাসা করিব।

मैं आज उनसे इस विषयमें पूछूँगा।

ললিত শরৎকে পাখী দেখাইতেছেন।

ललित् शरत्को पक्षी दिखाता है।

पहिले उदाहरणमें "ब्रजके" और "कथा" ये दो कर्म "बलियाछे" क्रियाके हैं। दूसरे में "ताहाके" और 'विषय" ये दो कर्म "जिज्ञासा" क्रियाके हैं। तीसरे में "शरत्के" और 'पाखी" ये दो कर्म "देखाइतेछेन" क्रिया के हैं।

क्रियाके जिस अङ्ग से काम के होनेका समय पाया जाय उसे "काल" कहते हैं।

काल तीन प्रकार के होते हैं :—

(१) वर्त्तमान।
(२) अतीत।
(३) भविष्यत्।

वर्त्तमान काल से यह पाया जाता है कि क्रिया का कार्य्य अभी हो रहा है। जैसे, शिशु खेलितेछे। यहाँ खेलनेका काम आरम्भ हुआ है लेकिन समाप्त नहीं हुआ है। ऐसी दशामें 'खेलितेछे' इसी तरह के रूप प्रयोग किये जाते हैं। यही प्रकृत वर्त्तमान काल है।

अतीत काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका काम हो चुका है। अतीतकाल को भूतकाल भी कहते हैं। अपेक्षाकृत पूर्व्व पूर्व्व कालकी अतीत क्रियाको क्रमश: "अद्यतन" "अनद्यतन" और "परोक्ष" कहते हैं। जैसे; शिशु खेलिल, शिशु खेलित, शिशु खेलियाछिल।

भविष्यत काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका कार्य्य आगे चलकर आरम्भ होनेवाला है। जैसे; शिशु खेलिबे।

विधि, अनुज्ञा, सम्भावना प्रभृति क्रियाएँ और भी होती हैं।

किसी विषय के नियम बाँधनेको जो क्रिया इस्तेमाल

की जाती है उसे "विधि" कहते हैं। ऐसी क्रिया से किसी काल का बोध नहीं होता। जैसे,

গুরুজনকে ভক্তি করিও।

गुरु जन में भक्ति रखो।

किसी विषय की आज्ञा या अनुमति देनेको "अनुज्ञा" कहते हैं। जैसे,

সে দেখুক = उसे देखने दो।

তুমি যাও = तुम जाओ।

বাড়ী যাও = घर जाओ।

চুরি করিও না = चोरी मत करना।

কার্য্যে ন্যায় ব্যবহার করিও।

काम में न्याय से काम लो।

প্রতিবাসীকে আত্মবৎ প্রীতি কর।

पड़ोसी से अपने समान प्रीति कर।

অনুগ্রহ করিয়া আমাকে একখানি পুস্তক পড়িতে দিন।

कृपया मुझे एक पुस्तक पढ़ने को दीजिये।

यह होनेसे यह हो सकेगा, इस तरह के ज्ञान को "सम्भावना" कहते हैं। जैसे,

সে পাইতে পারে = वह पा सकता है।

তিনি যাইতে পারেন = वह जा सकते हैं।

আমি দিতে পারি = मैं दे सकता हूँ।

किस धातुका, कौन पुरुष, कौन कालमें, कैसा रूप होगा, ऐसे पद विन्यास को "धातुरूप" कहते हैं।

वर्त्तमान काल।

হওয়া ধাতু।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
হইতেছি	হইতেছ	হইতেছে

अतीत काल।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
হইলাম	হইলে	হইল
হইয়াছি	হইয়াছ	হইয়াছে
হইয়াছিলাম	হইয়াছিলে	হইয়াছিল

भविष्यत् काल।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
হইব	হইবে	হইবে

वर्त्तमान काल।

করা ধাতু।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
করিতেছি	করিতেছ	করিতেছে

अतीत काल।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
करिलाम	करिले	करिल
करियाछि	करियाछ	करियाछे
करियाछिलाम	करियाछिले	करियाछिल

क्रियाओंके रूप समझने में कुछ कठिनता पड़ती है। लिये हम नीचे कुछ उदाहरण और भी दे देते हैं।

सामान्य भूतकाल।

(Past Indefinite Tense)

	एक वचन	बहुवचन
उ० पु०	आमि गियाछिलाम	आमरा गियाछिलाम
	मैं गया	हम गये
म० पु०	तुमि गियाछिले	तोमरा गियाछिले
	तुम गये	तुम लोग गये
प्र० पु०	से गियाछिल	ताहारा गियाछिल
	वह गया	वे गये

আসন্ন ভূতকাল ।

(*Present Perfect Tense.*)

	एक बचन	बहुबचन
उ० पु०	আমি গিয়াছি	আমরা গিয়াছি
	मैं गया हूँ	हम गये हैं
म० पु०	তুমি গিয়াছ	তোমরা গিয়াছ
	तुम गये हो	तुम लोग गये हो
प्र० पु०	সে গিয়াছে	তাহারা গিয়াছে
	वह गया है	वे गये हैं

ভবিষ্যত্‌ কাল ।

(Future Indefinite.)

	एक बचन	बहुबचन
उ० पु०	আমি যাইব	আমরা যাইব
	मैं जाऊँगा	हम जायँगे
म० पु०	তুমি যাইবে	তোমরা যাইবে
	तुम जाओगे	तुम लोग जाओगे
प्र० पु०	সে যাইবে	তাহারা যাইবে
	वह जायगा	वे जायँगे

कभी कभी सकर्मक क्रिया के कर्मपद नहीं होता। उस समय सकर्मक क्रिया अकर्मक की तरह काम करती है। जैसे,

আমি দেখিলাম = मैंने देखा।

তিনি লয়েন নাই = उन्होंने नहीं लिया।

यहां "দেখা" और "লওয়া" क्रियाओं के सकर्मक होने पर भी, कर्म पद के न होनेसे, वे अकर्मक के समान हो गयी हैं।

वचन भेद से क्रियाके रूप में फर्क नहीं होता। जैसे,

আমি করিতেছি = मैं करता हूँ।

আমরা করিতেছি = हम लोग करते हैं।

इस जगह दोनों वचनों में हो एक ही प्रकार की क्रिया का प्रयोग हुआ है। लेकिन हिन्दीमें ऐसा नहीं है। हिन्दीमें वचनके अनुसार क्रियामें भेद हो जाता है। जैसे, मैं करता हूँ और हम करते हैं। बँगला में "आमि" एक वचनके लिये "करितेछि" और "आमरा" बहुवचनके लिये भी "करितेछि" एक ही प्रकार की क्रिया इस्तेमाल की गयी है। लेकिन हिन्दीमें "मैं" के लिये "करता हूँ" और "हम" के लिये "करते हैं" भिन्न भिन्न रूप की क्रियाओंका प्रयोग किया गया है।

पुरुष और काल भेद से क्रिया का रूपान्तर हो जाता है। "आमि" इस पद की क्रिया को उत्तम पुरुष की क्रिया कहते

हैं। "तुम" इस पद की क्रियाको मध्यम पुरुष की क्रिया कहते हैं। इन के सिवाय और पद की क्रिया को प्रथम पुरुष की क्रिया कहते है। जैसे,—

আমি করিতেছি = मैं करता हूँ।

তুমি করিতেছ = तुम करते हो।

সে করিতেছে = वह करता है।

"आमि" उत्तम पुरुष है, उसकी क्रिया भी उत्तम पुरुष है। "तुमि" मध्यम पुरुष है, उस की क्रिया भी मध्यम पुरुष है। "से" प्रथम पुरुष है, उस की क्रिया भी प्रथम पुरुष है।

प्रथम पुरुष (3rd Person) के सम्भ्रान्त या माननीय होने से क्रियाके अन्तमें "न" और लगा दिया जाता है। जैसे,—

(१) তিনি করিয়াছেন = उन्होंने किया।

(२) সে করিয়াছে = उसने किया।

पहले उदाहरण में "तिनि" प्रथमपुरुष और आदरणीय है इसी से उसकी क्रिया 'करियाछे" में "न" जोड दिया गया है, किन्तु "से" प्रथम पुरुष और साधारण मनुष्य है इससे उसको क्रियामें "न" नहीं जोडा गया है।

कृदन्त ।

जिस क्रियाके द्वारा वाक्य की समाप्ति न हो, वाक्य की

समाप्ति करनेके लिये एक और क्रिया की दरकार पड़े, उसको "असमापिका क्रिया" कहते हैं। जैसे; বলিয়া, করিতে, যাইতে इत्यादि।

जिस जगह एक क्रिया करने पर और एक क्रिया करने की बात कहनी पड़े, उस जगह पहली क्रिया के अन्तमें "লে" जोड़ना पड़ता है। जैसे—

তিনি বলিলে আমি যাইব।

उनके बोलनेसे जाऊँगा।

इसी तरह করিলে, দিলে इत्यादि समझो।

निमित्त अर्थमें क्रियाके पीछे "তে" जोड़ा जाता है। जैसे;

দিতে = দিবার নিমিত্ত = देनेके लिये।

যাইতে = যাইবার নিমিত্ত = जानेके वास्ते।

अनन्तरके अर्थमें धातुके बाद "য়া" जोड़ा जाता है। जैसे;

যাইয়া = গমনানন্তর = जाकर।

দিয়া = দানানন্তর = देकर।

শুইয়া = শয়নানন্তর = सोकर इत्यादि।

जब क्रिया को विशेष्य पद करना होता है तब उसके बाद "অ", "ওয়া" इनमें से एकको जोड़ना होता है। जैसे;

বলা বা বলিবা = बोलना।

করা বা করিবা = करना।

যাওয়া বা যাইবা = जाना।

धातुके उत्तर कुछ प्रत्यय लगाकर शब्द बना सकते हैं।

ऐसे प्रत्ययोंका नाम "कृत" और निष्पन्न पदोंका नाम "कृदन्त" है।

धातुके उत्तर "अन" और "ति" प्रत्यय होते हैं। "अन" और "ति" प्रत्ययान्त पद प्रायः ही क्रिया वाचक विशेष्य होते हैं। जिन पदोंके अन्तमें "ति" होती है वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
स्तु	अन, ति	स्तवन, स्तुति	स्तवन करा
स्तु	अन, ति	स्तवन, स्तुति	स्तवन करनेका काम
कृ	अन, ति	करण, कृति	करा
कृ	अन, ति	करण, कृति	करना, काम
गम	अन, ति	गमन, गति	याओया
गम	अन, ति	गमन, गति	जानेका काम
मन	अन, ति	मनन, मति	माना
मन	अन, ति	मनना, मति	मानना, मति
दृश	अन, ति	दर्शन, दृष्टि	देखा
दृश	अन, ति	दर्शन, दृष्टि	देखनेका काम
सृज	अन, ति	सर्जन, सृष्टि	प्रस्तुत करा
सृज	अन, ति	सर्जन, सृष्टि	प्रस्तुत करनेका काम
वच	अन, ति	वचन, उक्ति	वला
वच	अन, ति	वचन, उक्ति	बोलनेका काम

धातुके उत्तर कर्म वाच्य और अतीत कालमें "त" प्रत्यय

होता है। जिनके अन्तमें "त" प्रत्यय होता है वे पद प्रायः ही कर्मके विशेषण होते हैं। जैसे ;

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
কৃ	ত (ক্ত)	কৃত	जो किया गया है।
শ্রু	ত	শ্রুত	जो सुना गया है।
বি+স্তৃ	ত	বিস্তীর্ণ	जो व्याप्त है।
ভক্ষ	ত	ভক্ষিত	जो खाया गया है।
বচ	ত	উক্ত	जो कहा गया है।
যুজ	ত	যুক্ত	जो जोड़ा गया है।
দা	ত	দত্ত	जो दिया गया है।
গৈ	ত	গীত	जो गाया गया है।
জ্ঞা	ত	জ্ঞাত	जो जाना गया है।
বন্ধ	ত	বদ্ধ	जो बाँधा गया है।
ভজ	ত	ভক্ত	जो भजा गया है।
পা	ত	পাত	जो पिया गया है।
বি+ধ	ত	বিহিত	जो किया गया है।
ভুজ	ত	ভুক্ত	जो खाया गया है।
ছিদ	ত	ছিন্ন	जो काटा गया है।

धातुके उत्तर "ता" (तृन्), "ई" (णिन्) "अक" (णक), "अन" प्रभृति प्रत्यय लगाये जाते हैं। जिनके अन्तमें ये प्रत्यय होते हैं वे कर्त्ताके विशेषण होते हैं।

अकर्मक धातुके कर्त्तृवाच्य अतीत कालमें "ত" (क्त) लगाया जाता है। जैसे,

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
দা	তা (তৃণ)	দাতা	जो दे।
শ্রু	তা	শ্রোতা	जो सुने।
জি	তা	জেতা	जो जय करे।
কৃ	তা	কর্ত্তা	जो करे।
বচ	তা	বক্তা	जो बोले।
ভুজ	তা	ভোক্তা	जो खाय।
গ্রহ	তা	গ্রহীতা	जो ग्रहण करे।
সৃজ	তা	স্রষ্টা	जो रचे।
স্থা	ঈ (ণিন)	স্থায়ী	जो स्थिर रहे।
ভূ	ঈ	ভাবী	जो हो।
দা	ঈ	দায়ী	जो दान करे।
যুজ	ঈ	যোগী	जो योग करे।
জি	ঈ	জয়ী	जो जय करे।
কৃ	অক	কারক	जो करे।
ভজ	অক	ভাজক	जो भाग करे।
যুজ	অক	যোজক	जो योग करे।
নিন্দ	অক	নিন্দক	जो निन्दा करे।
পঠ	অক	পাঠক	जो पढ़े।
পচ	অক	পাচক	जो पाक करे।

धातु	प्रत्यय	शब्द	अर्थ
গ্রহ	অক	গ্রাহক	जो ग्रहण करे।
গৈ	অক	গায়ক	जो गान करे।
হন	অক	ঘাতক	जो मारे।
দৃশ	অক	দর্শক	जो देखे।
নৃত	অক	নর্ত্তক	जो नाचे।
দা	অক	দায়ক	जो दान करे।
শী	অক	শায়ক	जो सोवे।
রুধ্	অক	রোধক	जो रोध करे।
স্তু	অক	স্তাবক	जो स्तव करे।
ভূ	অক	ভাবক	जो हो।
হৃ	অক	হারক	जो हरण करे।
ছিদ্	অক	ছেদক	जो काटे।
গম	ত (ক্ত)	গত	जो बीत गया।
শ্রম	ত	শ্রান্ত	थका हुआ।
জন	ত	জাত	पैदा हुआ।
ভূ	ত	ভূত	जो हुआ है।
ভিদ	ত	ভিন্ন	छोड़ा हुआ।
মদ	ত	মত্ত	मतवाला।
মৃ	ত	মৃত	जो मर गया।

धातुके उत्तर "तव्य", "अनीय" और "य" प्रत्यय होता है। जिन धातुओंके बाद ये प्रत्यय लगते हैं वे सब धातु कर्म कारक के विशेषण होते हैं और भविष्यत् कालका अर्थ प्रकाश करते हैं। जैसे,

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
শ্রু	তব্য, অনীয়, য	শ্রোতব্য, শ্রবণীয়, শ্রব্য	যাহা শুনা যায়।
श्रु	तव्य, अनीय, य	श्रोतव्य, श्रवणीय, श्रव्य	जो सुना जाय।
গ্রহ	তব্য, অনীয়, য	গ্রহীতব্য, গ্রহণীয়, গ্রাহ্য	যাহা লওয়া যায়।
ग्रह	तव्य, अनीय, य	ग्रहीतव्य, ग्रहणीय ग्राह्य	जो लिया जाय।
গম	তব্য, অনীয়, য	গন্তব্য, গমনীয়, গম্য	যেখানে যাওয়া যায়।
गम	तव्य, अनीय, य	गन्तव्य, गमनीय, गम्य	जाने योग्य, जहाँ जाया जाय।
ভুজ	তব্য, অনীয়, য	ভোক্তব্য, ভোজনীয়, ভোজ্য	যাহা খাওয়া যায়।
भुज	तव्य, अनीय, य	भोक्तव्य, भोजनीय, भोज्य	जो खाया जाय, खाने योग्य।
কৃ	তব্য, অনীয়, য	কর্ত্তব্য, করণীয়, কার্য্য	যাহা করা যায়।
कृ	तव्य, अनीय, य	कर्त्तव्य, करणीय, कार्य्य	जो करा जाय, करने योग्य।
পা	তব্য, অনীয়, য	পাতব্য, পানীয়, পেয়	যাহা পান করা যায়।
पा	तव्य, अनीय, य	पातव्य, पानीय; पेय	जो पिया जाय, पीने योग्य।

तद्धित।

शब्दोंके पीछे अर्थ विशेषमें जिस प्रत्ययके जोड़नेसे शब्द बनता है, उसको "तद्धित प्रत्यय" कहते हैं।

हिन्दीमें भी पाँच प्रकारके तद्धित होते हैं।

(१) अपत्यवाचक। जिससे सन्तानत्व पाया जाय। इसके बनाते समय आ "अ" के स्थान में "आ" कर देते हैं। जैसे, "संसार" से सांसारिक।

कहीं "इ" के स्थान में "ऐ" कर देते हैं जैसे, शिव से "शैव" "इतिहास से "ऐतिहासिक"।

कहीं "उ" के स्थानमें "औ" कर देते हैं। जैसे, "उर्मिला" से "और्मिलेय" "कुन्ती" से "कौन्तेय" इत्यादि।

(२) कर्तृवाचक। ये "वाला" या "हारा" लगानेसे बनते हैं। जैसे; रोटी वाला, पानीवाला, दूधवाला और लकड़हारा।

(३) भाववाचक। ये "ता" या "त्व" "आई" आदि लगानेसे बनते हैं। जैसे, मूर्खता, बोधता, चतुरता, गुरुता, मौनत्व, दौर्बल्य, महत्व, गुरुत्व, सुघड़ाई।

(४) गुणवाचक। ये "वान", "मान", "दायक" इत्यादि लगाने से बनते हैं। जैसे, बलवान, स्वरूपवान, गुणदायक, सुखदायक, बुद्धिमान इत्यादि।

(५) ऊनवाचक। इनसे लघुता पाई जाती है। खाटसे खटिया।

ऊपर हम हिन्दी व्याकरणकी रीतिसे तद्धित विषयको समझा आये हैं। हिन्दी में समझानेकी बड़ी जरूरत थी कि हिन्दी जाननेवाले अल्प परिश्रमसे बँगला व्याकरण के अनुसार तद्धितको आसानी से समझ सकें।

शब्दोंके उत्तर अपत्यादि अर्थ में "इ", "एय", "य", "आयन", "ईय", "इक", "अ", "ईन" और "क" प्रत्य लगाये जाते हैं।

अपत्यार्थमें	विकारार्थमें	सम्बन्धीयर्थमें	भावार्थमें	कर्तृ वा कर्मार्थमें
दाशरथि	হৈম	দেশীয	যৌবন	তাকিব
ভাগিনেয	রাজত	শারীরিক	শৈশব	বৈদান্তিক
দৌহিত্র	ধাতব	সৌর	লাঘব	কাযিক
যাদব		পার্থিব	বার্দ্ধক্য	পৈতৃক
পাণ্ডব		স্বর্গীয		

विशेषण शब्द के उत्तर भावार्थ मे "त्व", "ता", और "इमन्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे,

शब्द	त्व	ता	इमन्
গুরু	গুরুত্ব	গুরুতা	গরিমা
মহৎ	মহত্ত্ব	মহত্তা	মহিমা
নীল	নীলত্ব	নীলতা	নীলিমা

शब्दके उत्तर "है" (আছে) इस अर्थके प्रगट करनेके लिये "मत्", "वत्", "विन्" और "इन्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे,

मत्	वत्	विन्	इन्
বুদ্ধিমান্	ধনবান্	মেধাবী	ধনী
শ্রীমান্	বিদ্যাবান্	মায়াবী	জ্ঞানী
ভানুমান্	ভাস্বান্	যশস্বী	শিখী
শিষ্টমান্	বেগবান্	মনস্বী	দণ্ডী
গোমান্	গুণবান্	তেজস্বী	মানী

पूर्णार्थ प्रत्यय युक्त पद :—

দ্বিতীয়	दूसरा	উনবিংশতিতম	उन्नीसवाँ
তৃতীয়	तीसरा	বিংশ	बीसवाँ
চতুর্থ	चौथा	একবিংশ	इक्कीसवाँ
পঞ্চম	पाँचवाँ	একবিংশতিতম	इक्कीसवाँ
ষষ্ঠ	छठा	ষষ্টিতম	साठवाँ
সপ্তম	सातवाँ	সপ্ততিতম	सत्तरवाँ
অষ্টম	आठवाँ	অশীতিতম	अस्सीवाँ
নবম	नवाँ	নবতিতম	नव्वेवाँ
দশম	दशवाँ	শততম	सौवाँ
একাদশ	ग्यारहवाँ	পঞ্চষষ্টিতম	पैंसठवाँ
দ্বাদশ	बारहवाँ		
ত্রয়োদশ	तेरहवाँ		

गुणवाचक शब्दके उत्तर आधिक्य के अर्थके लिये "तर" "तम" "इष्ठ" और "ईयस्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे,

शब्द	तर	तम	इष्ठ	ईयस्
গুরু	গুরুতর	গুরুতম	गरिष्ठ	गरीयान्
অল্প	অল্পতর	অল্পতম	অল্পিষ্ঠ	অল্পীয়ান্
প্রশস্ত	প্রশস্ততর	প্রশস্ততম	শ্রেষ্ঠ	শ্রেয়ান্
বৃদ্ধ	বৃদ্ধতর	বৃদ্ধতম	বর্ষিষ্ঠ	বর্ষীয়ান্

शब्दके बाद तुल्यार्थ प्रगट करनेके लिये "वत्" और

জলবৎ	जलके समान
গুরুবৎ	गुरुके समान
অধ্যাপককল্প	अध्यापकके समान

संख्यावाचक शब्दके बाद प्रकार अर्थ में "धा" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे, দ্বিধা, ত্রিধা, শতধা, इत्यादि।

स्वरूपके अर्थमें शब्दके पीछे "मय" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे; স্বর্ণময়, মৃণ্ময়, কাষ্ঠময়, इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद कालके अर्थ में "दा" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे; সর্ব্বদা, একদা, इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद आधार अर्थ में "त्र" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे; সর্ব্বত্র, অন্যত্র, একত্র इत्यादि।

कालवाचक शब्दके बाद उत्पन्न अर्थमें "तन" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे; পূর্ব্বতন, অধুনাতন इत्यादि।

किम् शब्द निष्पन्नपदके पीछे अनिश्चय अर्थ में "चित्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे; কিঞ্চিৎ, কদাচিৎ इत्यादि।

समास।

जब दो तीन अथवा अधिक पद अपने कारकों के चिन्हों को त्याग कर आपस में मिल जाते हैं तब उनके योग को "समास" कहते हैं और उन के योग से जो शब्द बनता है उसे "सामासिक" शब्द कहते हैं। जैसे; ফল ও মূল—इन

दो पृथक पदोंको "ফল মূল" इस तरह एक पद बना कर भी काम में ला सकते हैं। অগ্নি, জল ও বায়ু—इन तीनोंको एक पद बना कर "অগ্নি জল বায়ু" इस तरह प्रयोग कर सकते हैं। "রাজার বাটী" इन दोनों पदों को "রাজবাটী" इस भाँति एक पद करके प्रयोग कर सकते है। कई शब्दोंको मिला कर इस भाँति एक पद करने को ही समास कहते हैं।

समास पाँच प्रकार को होती है—द्वन्द, ततपुरुष, कर्मधारय, बहुब्रीहि, और अव्ययीभाव।

हिन्दीमें समास छ' प्रकार को मानी है। उसमें इनके सिवाय "द्विगु" समास और मानी है।

द्वन्द।

द्वन्द वह है जिसमें कई पदोंके बीच "और" (ও) का लोप करके एक पद बना लिया जाय। जैसे,

ফল ও ফুল = ফলফুল   রাজা ও রাণী = রাজারাণী
মাতা ও পিতা = মাতাপিতা   রাম ও লক্ষণ = রামলক্ষণ

ततपुरुष।

ततपुरुष समास उसे कहते है जिस में पहला पद कर्त्ता कारक को छोड़ दूसरे किसी भी कारक के चिन्ह सहित हो और इसी पदका अर्थ प्रधान हो।

कर्मपद के साथ जो समास होती है उसे द्वितीया तत्पुरुष कहते हैं। जैसे ;

বিস্ময়কে আপন্ন = বিস্ময়াপন্ন।

পরলোককে প্রাপ্ত = পরলোক প্রাপ্ত।

करण पदके साथ जो समास होती है उसे तृतीया तत्पुरुष कहते हैं। जैसे ,

শোক দ্বারা আকুল = শোকাকুল।

মোহ দ্বারা অন্ধ = মোহান্ধ।

আত্মা দ্বারা কৃত = আত্মকৃত।

अपादान पदके साथ जो समास होती है उसे पञ्चमी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे ,

পাপ হইতে মুক্ত = পাপমুক্ত।

বৃক্ষ হইতে উৎপন্ন = বৃক্ষোৎপন্ন।

सम्बन्ध पद के साथ जो समास होती है उसे षष्ठी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे ,

বিশ্বের পিতা = বিশ্বপিতা।

চন্দ্রের দর্শন = চন্দ্রদর্শন।

রাজার পুত্র = রাজপুত্র।

अधिकरण पद के साथ जो समास होती है उसको सप्तमी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे ;

গৃহে বাস = গৃহবাস।

হস্তে স্থিত = হস্তস্থিত।

स्वर्गे गत = स्वर्गगत।

हीन, ऊन प्रभृति कितने ही शब्दों के योग से तृतीया तत्पुरुष समास होती है। जैसे;

ज्ञान द्वारा हीन = ज्ञानहीन।

विद्या द्वारा शून्य = विद्याशून्य।

कर्म्मधारय।

जिसमें विशेषण का विशेष्य के साथ सम्बन्ध हो उसे कर्म्मधारय समास कहते हैं।

इस समास में विशेषण (Adjective) पद पहले और विशेष्यपद (Noun) पीछे रहता है और विशेष्यपद (Noun) का अर्थ ही प्रधान रूप से प्रकाशित होता है। जैसे;

परम + आत्मा = परमात्मा। महा + राज = महाराज।

परम + ईश्वर = परमेश्वर। सत् + कर्म्म = सत्कर्म्म।

यहां परम और आत्मा इन दो पदों में समास हुई है। परम पद विशेषण और आत्मा पद विशेष्य है। विशेषण पद पहिले और विशेष्य पद पीछे है और उसके ही अर्थ ने प्रधान रूपमें प्रकाश पाया है, बस, इसी कारण से इसे "कर्म्मधारय" समास कहते हैं।

बहुव्रीहि।

बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन या अधिक पदोंका योग होकर जो शब्द बने उसका सम्बन्ध और किसी पद से हो। इस की परिभाषा इस भांति भी हो सकती है—विशेष्य विशेषण अथवा दो या उससे अधिक विशेष्य पदों में समास करने पर यदि उन शब्दोंका अर्थ प्रकाशित न होकर किसी और ही वस्तु या व्यक्ति का अर्थ प्रकाशित हो तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

बहुव्रीहि समास करने पर सारे पद प्रायः विशेषण होते हैं; कभी कभी विशेष्य भी होते हैं। जैसे; क्षीण-काय, यहाँ क्षीण और काय इन दो पदों में समास हुई, है। क्षीण विशेषण और काय विशेष्य है, किन्तु इन दोनों पदोंका अर्थ पृथक पृथक भाव से बोध नहीं होता, क्षीण-काय विशिष्ट कोई व्यक्ति बोध होता है; अतएव यहाँ बहुव्रीहि समास हुई।

क्षीणकाय, इस पदसे यदि कृश शरीर यही अर्थ समझा जाय और उससे कुछ व्याघात न हो, तो कर्मधारय समास हुई समझनी होगी; क्योंकि इस जगह विशेष्य पद का अर्थ ही प्रधान रूपसे प्रकाश पाता है।

चक्रपाणि, यहा भी चक्र पद विशेष्य है। उसका अर्थ

चाका या पहिया है; पाणि पद भी विशेष्य है उसका अर्थ हाथ है। इन दोनों को समास होने से चक्रपाणि यह एक पद हुआ। इस से चक्र और हाथ, इन दोनों का कुछ अर्थ न निकलने के कारण नारायण रूप अर्थ का बोध होता है। अतएव यह बहुब्रीहि समास है और चक्रपाणि पद विशेष्य पद है।

इस समास में, यार, याहि, या, द्वारा इत्यादि पद व्यवहार किये जाते हैं। ये या याहा प्रायः व्यवहृत नहीं होते। जैसे;

पीत अम्बर यार, से पीताम्बर अर्थात् कृष्ण।
बृहत् काय यार, से बृहत्काय।
जित इन्द्रिय याहा कर्तृक, से जितेन्द्रिय।
स्वच्छ तोय आछे जाते, से स्वच्छतोय।
पाणिते चक्र यार, से चक्रपाणि।
नष्ट मति यार, से नष्टमति।
महत् आशय यार, से महाशय।
न अन्त यार, से अनन्त।
न आदि यार, से अनादि।

नोट (१) बहुब्रीहि और कर्मधारय समासमें महत् शब्द पहिले होनेसे "महत्" को जगह "महा" हो जाता है। जैसे;

महत् बल यार, से महाबल।

(२) बहुव्रीहि और कर्मधारय समास का पहला पद स्त्रीलिंग का विशेषण हो तो वह पुंलिङ्ग की भाँति हो जाता है। जैसे;

दीर्घा यष्टि = दीर्घ यष्टि।

स्थिरा मति = स्थिर मति।

यहाँ "यष्टि" शब्द स्त्रीलिङ्ग है और "दीर्घा" उसका विशेषण भी स्त्रीलिङ्ग है, किन्तु समास होने से विशेषण दीर्घा स्त्रीलिंग होनेपर भी पुंलिङ्ग की भाँति "दीर्घ" हो गया। इसी भाँति "स्थिरा" का "स्थिर" हो गया।

(३) समास में "न" इस अव्यय के बाद स्वरवर्ण होने से "न" के स्थान में "अन" हो जाता है लेकिन "न" के बाद व्यञ्जन वर्ण होनेसे "न" के स्थानमें "अ" हो जाता है। जैसे;

न + अन्त = अनन्त।

न + आदि = अनादि।

न + ज्ञान = अज्ञान।

न + संस्थान = असंस्थान।

यहाँ "न" के बाद "अ" स्वर आ गया; इससे "न" के स्थान में "अन" लगाया गया; इसी भाँति तीसरे उदाहरण में "न" के बाद "ज्ञा" व्यञ्जन आ गया; इस लिये "न" के स्थानमें "अ" लगाया गया।

(४) बहुव्रीहि समासमें परस्थित आकारान्त शब्द अकारान्त हो जाता है। जैसे;

নিঃ নাই দয়া যার, সে নির্দয়।

নিঃ নাই লজ্জা যার, সে নির্লজ্জ।

पहिले उदाहरणमें "दया" शब्द के अन्तमें "आ" है लेकिन समास होने से "आ" का "अ" हो गया यानी "दया" का "दय" हो गया। इसी भांति और समझ लो।

(५) समास के पूर्व्वपद के "नकारान्त" होने "नकार" का लोप हो जाता है। जैसे;

রাজন্-পুত্র = রাজপুত্র।

আত্মন্ কৃত = আত্মকৃত।

समास में युष्मद् और अस्मद् शब्द यदि पहले आ तो एक बचनमें उनके स्थानमें क्रमशः "त्वत्" और "मत्" हो जाते है। जैसे,

তোমার কৃত = ত্বৎকৃত।

আমার পুত্র = মৎপুত্র।

अव्ययीभाव।

अव्यय पद पहले बैठने पर जिसको समास हो उसको अव्ययीभाव कहते हैं। जैसे,

মাসে মাসে = প্রতিমাস।

গৃহে গৃহে = প্রতিগৃহ।

ক্ষণে ক্ষণে = প্রতিক্ষণ।

কূলের সমীপে = উপকূল।

দিন দিন = প্রতিদিন।

ভিক্ষার অভাব = দুর্ভিক্ষ।

সুখের অভাব = অসুখ।

বিধিকে অতিক্রম না করিয়া = যথাবিধি।

গ্রহের সদৃশ = উপগ্রহ।

বনের সদৃশ = উপবন।

वाक्य-रचना।

जिस पद समूह के द्वारा सम्पूर्ण अभिप्राय प्रकाश होता है, उसे "वाक्य" कहते हैं। जैसे;

(১) ঈশ্বর মঙ্গল করিতেছেন।

(২) বায়ু বহিতেছে।

(৩) হরি পুস্তক পড়িতেছে।

(৪) বৃষ্টি হইতেছে।

वाक्य के अन्तर्गत जो शब्द होते हैं, उनको रीतिमत यथास्थान स्थापित करनेको "वाक्यरचना" कहते हैं।

वाक्य-रचना के समय पहले कर्त्ता और उसके बाद क्रिया पद रखा जाता है। जैसे;

বৃষ্টি পড়িতেছে।

প্রভাত হইল।

সূর্য্য উদয় হইয়াছে।

नोट (१) कर्त्ता जिस पुरुष का होता है, क्रिया पद भी उसी पुरुष का होता है, वचन-भेद से क्रिया के रूप में भेद नहीं होता। जैसे;

(১) { আমি যাইতেছি
আমরা যাইতেছি

(২) { তুমি যাইতেছ
তোমরা যাইতেছ }

(৩) { সে যাইতেছে
তাহারা যাইতেছে }

पहले उदाहरणमें "आमि" एकवचन और "आमरा" बहुवचन है; किन्तु दोनोंकी क्रिया एक ही है। दूसरेमें "तुमि" एकवचन और "तोमरा" बहुवचन है, लेकिन दोनोंकी क्रिया एक ही है। "आमि" और "आमरा" उत्तम पुरुष है। इनकी क्रिया "जाइतछि" है और "तुमि" और "तोमरा" मध्यम पुरुष हैं। इनकी क्रिया "जाइतेछ" है। पुरुषके और होनेसे क्रिया भी बदल गयी।

नोट (२) जिस वाक्यमें उत्तम और मध्यम पुरुष किंवा प्रथम और उत्तम पुरुष अथवा प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष एक क्रिया के कर्त्ता हों, उस वाक्यमें <u>उत्तम पुरुष</u> की क्रिया ही व्यवहृत होगी। जैसे;

আমি ও তুমি দেখিতেছিলাম।
তোমাতে ও আমাতে বসিব।
হরি ও আমি সেখানে যাইব।
আমি, তুমি ও হরি ইহা পড়িয়াছিলাম।

नोट (३) जहाँ प्रथम और मध्यम पुरुष एक क्रिया के कर्त्ता हों, वहाँ <u>मध्यम पुरुष</u> की ही क्रिया प्रयोग करनी होगी। जैसे;

তুমি ও হরি সেখানে ছিলে।
তাহারা ও তোমরা ইহা দেখিয়াছিলে।
তাহাতে ও তোমাতে একত্র খাইয়াছ।

नोट (४) ऐसे वाक्योंमें सब या कर्त्ता पद एक ही प्रकार के वचन का व्यवहार करना चाहिये। আমি ও তোমরা যাইব, আমি ও তাহারা দেখিতেছি, इस भाँति के वाक्य नहीं हो सकते। अगर ऐसा होगा तो अलग अलग क्रिया व्यवहार की जायगी।

क्रिया के सकर्म्मक या द्विकर्म्मक होनेसे क्रिया के ठीक पहले कर्मपद बैठेगा। जैसे,

আমি হরিকে দেখিলাম।
তাহারা পুস্তক পড়িতেছে।
যদু তাহাকে পুস্তক দান করিয়াছে।

पहले उदाहरणमें "हरिके" यह कर्म पद है और वह अपनी क्रिया "देखिलाम" के पहिले बैठा है। दूसरेमें पुस्तक कर्मपद है और वह क्रिया पड़ितेछे के पहिले बैठा है। इसी तरह तीसरेमें 'ताहाके" और "पुस्तक" ये दो कर्मपद हैं और ये दोनों ही अपनी क्रिया "दान करियाछे" के पहले बैठे हैं।

असमापिका क्रिया समापिका क्रिया के पहले बैठेगी, असमापिका और समापिका क्रियाका कर्त्ता एक होगा और इन दोनों क्रियाओंके कर्म कारण विशेषण प्रभृति पद इन दोनों क्रियाओं के पहले बैठेंगे। जैसे,

হরি পুস্তক লইয়া পড়িতে লাগিল।
শশী এখানে বেদ পড়িতে আসিতেছে।
তিনি গৃহ হইতে বহির্গত হইয়া হৃষ্টমনে বিদ্যালয়ে প্রবেশ করিলেন।

विशेषण पद विशेष्य के पहले बैठता है। जैसे;

সুশীলা বালিকা।

বুদ্ধিমান বালক।

বহুদর্শী বৃদ্ধ।

पहले उदाहरण में "सुशीला" विशेषण पद है और वह अपने विशेष्य "वालिका" के पहले बैठा है। इसी भाँति और उदाहरण समझ लो।

नोट—अगर दो या दो से ज़ियादा विशेषण पद व्यवहार करने हों तो उन सब विशेषण पदोंके बीचमें संयोजक (जोड़ने-वाला) अव्यय नहीं व्यवहार करना चाहिये। जैसे;

মহামান্য ঋষিশ্রেষ্ঠ ব্যাস।

সত্যবাদী ধর্ম্মাত্মা রাজা যুধিষ্ঠির।

यहां "व्यास" शब्दके "महामान्य और 'ऋषिश्रेष्ठ" दो विशेषण हैं। लेकिन दोनों विशेषणों के बीच में "और' या "व" इत्यादि संयोजक अव्यय नहीं रखे गये। इसी तरह दूसरे उदाहरण में भी समझ लो।

क्रिया का विशेषण क्रिया के पहले ही बठता है; किन्तु क्रिया सकर्मक होने से प्रायः कर्म पद के पहले बैठता है। जैसे;

তিনি অত্যন্ত বেগে গমন্ করিলেন।

রাম উচ্চৈঃস্বরে হরিকে ডাকিল।

पहले उदाहरण में "गमन करिलेन" क्रिया है और "अत्यन्त वेगे" उसका विशेषण है और वह कायदे के माफ़िक अपनी क्रिया के पहले बैठा है। दूसरे में

"डाकिल" सकर्मक क्रिया है और "खुब भाल" उसका विशेषण है। "हरिके" कर्मपद है। क्रिया विशेषण यहां "हरिके" कर्मपद के पहले बैठा है।

दो या दो से अधिक पद, वाक्यांश अथवा वाक्यों के एक संग प्रयोग करने पर इन के बीच में संयोजक अव्यय, अर्थात् এবং, ও, কিংবা, আর बैठाने चाहियें। जैसे ;

হরি এবং রাম পড়িতেছে।

হস্তী, অশ্ব, গো ও ছাগ চরিতেছে।

রাম সর্বদা লেখে এবং পড়ে।

ऊपर के नियमानुसार ही অথবা, কিংবা, বা, প্রভৃতি वियोजक अव्यय भी व्यवहार किये जाते हैं। जैसे ;

রাম অথবা হরি আসিবে।

সে পড়িবে কিংবা লিখিবে।

তুমি বা আমি করিব।

वाक्य के पहले ही सम्बोधन पद बैठता है ; उस सम्बोधन पद के ठीक पहले सम्बोधन चिन्ह হে, ওহে, অরে प्रभृति अव्यय बैठाये जाते हैं। कभी कभी इनको न बैठानेसे भी काम चल जाता है। जैसे ;

হে জগদীশ, তুমিই সকলের কর্ত্তা।

ওহে মহেশ, এখানে এস।

অরে! তুই এখন যা।

রাম, তুমি আজ খেলা করিওনা।

सम्बन्ध पद के बाद ही सम्बन्धी पद (जिसकी साथ सम्बन्ध हो) बैठाया जाता है। जैसे ;

ঈশ্বরের মহিমা।

দুঃখীর ভগ্ন কুটীর।

यहां "ईश्वरेर" यह सम्बन्धीपद है, क्योंकि ईश्वर के साथ महिमा का सम्बन्ध है।

करण पद कर्त्तृपदके बाद और कर्म प्रभृति पदों के पहले बैठता है। जैसे,

তিনি অস্ত্র দ্বারা এই বৃক্ষটি ছেদন করিলেন।

হরি যষ্টি দ্বারা বৃক্ষ হইতে ফল পাড়িল।

यहां "अस्त्र द्वारा" यह करण पद है यह "तिनि" कर्त्तृपद के बाद और "वृक्षटि" कर्मपद के पहले बैठा है इसीतरह दूसरे उदाहरण को समझ लो।

जिन सब अर्थों में अपादान कारक होता है उन सब अर्थ-बोधक पदोंके पहले अपादान पद बैठता है। जैसे ;

তিনি কুকর্ম্ম হইতে বিরত হইয়াছেন।

जो जिसका अधिकरण पद होता है, वह उसके पहले बैठता है ; कभी कभी बाद भी बैठता है। जैसे ;

তাহার হস্তে পুস্তক আছে।

গাত্রে কোন শীতবস্ত্র নাই।

वक्तव्य ।

हमने यहाँ तक बँगला व्याकरण में प्रवेश मात्र करने की राह दिखाई है। इससे हिन्दी जाननेवालों को बँगला भाषा सीखने में सुगमता होगी। जिन्हें बँगला व्याकरण के अन्यान्य विषय जानने हों, वे बृहत् बँगला व्याकरण देखें।

हिन्दी बँगला शिक्षा ।

द्वितीय खण्ड ।

अनुवाद विषय ।

पहिला पाठ ।

ছিল = था

সেখানকার = वहांका

রাজার = राजाका

তাঁর = उनका

তত = उतना

গৌরব = प्रतिष्ठा, महिमा

অথচ = और

করিতেন = करते थे

এত = इतना

হওয়া = होनेका

সেই = उसी

যত = जितने

ছিলেন = थे

সকলের চেয়ে = सबकीअपेक्षा

পণ্ডিতদের = पण्डितोंकी

মধ্যে = बीचमें

হইলে = होनेपर

মীমাংসা = फैसिला

কেও = कोई

সীতা।

(১)

মিথিলা নামে এক রাজ্য ছিল। সেখানকার রাজার নাম ছিল জনক। তাঁর রাজ্য তত বড় ছিল না, বড় রাজা বলিয়াও তাঁর তত গৌরব ছিল না। সকল বড় বড় রাজাই তাঁকে খুব মান্য করিতেন—খুব খাতির করিতেন। তাঁর এত মান হওয়ার অনেক কারণ ছিল।

সেই সময় যত বড় বড় রাজা ছিলেন, রাজা জনক সকলের চেয়ে বিদ্বান্ ছিলেন,—সকলের চেয়ে জ্ঞানী ছিলেন। সকল শাস্ত্র তাঁর কণ্ঠস্থ ছিল। পণ্ডিতদের মধ্যে তর্ক হইলে, তিনি তার মীমাংসা করিতেন। তাঁর মীমাংসাই শেষ মীমাংসা,—তাঁর বাক্যই বেদ বাক্য—তাঁর উপর কথা বলিবার আর কেউ ছিল না।

सीता।

(१)

मिथिला नामक एक राज्य था। वहाँ के राजा का नाम जनक था। उनका राज्य उतना बड़ा नहीं था, बड़े राजा होनेके कारणही उनकी उतनी प्रतिष्ठा नहीं थी। सब बड़े बड़े राजा उनका खूब मान करते थे—खूब ख़ातिर करते थे। उनका इतना मान होने के अनेक कारण थे।

उस समय जितने बड़े बड़े राजा थे, राजा जनक सभोंकी

अपेक्षा विद्वान् थे,—सबकी अपेक्षा ज्ञानी थे। सारे शास्त्र उनके कण्ठस्थ थे। पण्डित लोगोंके बीचमें वाद विवाद होनेपर, वे उसकी मीमांसा करते थे। उनकी मीमांसा ही अन्तिम मीमांसा थी,—उनका वाक्य ही वेदवाक्य था—उनके ऊपर बात काटने वाला और कोई नहीं था।

दूसरा पाठ।

ওই = वही	কোন = कोई
শুধু = केवल	তাঁকে = उसको
কি = क्या	হটাইতে = हटाते
যেমন = जैसा	পারেন = सकता
তেমন = वैसा	নাই = नहीं
কোন = किसी	নয় = नहीं
পড়িলে = पड़नेसे	সেকালে = उस समय
বড় বড় = बड़े बड़े	মত = अनुसार, समान
পরামর্শ = सलाह	যখন = जब
নিতেন = लेते थे	বসিতেন = बैठते थे
বীরত্বও = वीरत्व भी	পরিতেন = पहिरते थे
তাঁহার = उनकी	আর = और
না = नहीं	থাকিতেন = रहते थे
করিবা = करके	

(২)

শুধু কি তাই—তিনি যেমন বিদ্বান্, তেমনি বুদ্ধিমান্ ছিলেন। কোন বিপদে আপদে পড়িলে অনেক বড় বড় রাজাও তাঁর পরামর্শ নিতেন। বীরত্ব তাঁর কম ছিল না। যুদ্ধ করিয়া কোন রাজাই তাঁকে হটাইতে পারেন নাই।

কেবল তাই নয়—সেকালে তাঁর মত ধার্ম্মিক মুনিঋষিও খুব কম ছিল। রাজা হইয়াও তিনি ভোগবিলাসী ছিলেন না। যখন রাজাসনে বসিতেন, কেবল তখন রাজপোশাক পরিতেন। আর সব সময় মুনি ঋষির ন্যায় থাকিতেন। সর্ব্বদা জপ, তপ, ব্রত, নিয়ম পালন করিতেন।

(২)

केवल इतना ही क्या—वे जैसे विद्वान्, वैसेही बुद्धिमान भी थे। किसी विपत्ति आफ़तमें पड़ने पर बहुतसे बड़े बड़े राजा भी उनकी सलाह लेते थे। वीरता भी उनकी कम न थी। लड़कर कोई राजा भी उनको हटा नहीं सकता था।

केवल इतना ही नहीं—उस ज़मानेमें उनके समान धार्म्मिक ऋषिमुनि भी बहुत कम थे। राजा होकर भी वे भोग विलासी नहीं थे। वे जब राज-आसन पर बैठते थे, सिर्फ़, उस समय राजाकी पोषाक पहिरते थे, और सब समय ऋषिमुनिकी भांति रहते थे। सदा जप, त[illegible] नियम, पालन करते थे।

तीसरा पाठ।

উদ্দেশে = उद्देशसे	গৃহী = गृहस्थ
কাজ = काम	আবার = और, फिर, दूसरी बार
কতই = कितना ही	থাকিয়া = रहकर
আমোদ = प्रसन्नता	তাহা = वह
হইত = होती थी	করিয়াছিলেন = किया था
তিনি = वे, वह	অথচ = और भी
হইয়াও = होकर भी	পাকা = पक्के
বলিয়া = इससे, इस कारणसे	খেলোয়ার = खिलाड़ी
লোকে = मनुष्य, सर्वसाधारण लोग	তরোয়াল = तलवार
বলিত = कहते थे	ঘুরাইয়া = घुमाकर

(৩)

ঈশ্বর উদ্দেশে কাজ করিয়া তাঁর কতই আমোদ হইত। তিনি রাজা হইয়াও মুনিঋষির মত কাজ করিতেন বলিয়া, লোকে তাঁকে রাজর্ষি বলিত। রাজর্ষি জনক গৃহকর্ম্মে গৃহী, আবার ধর্ম্মকর্ম্মে সন্ন্যাসী ছিলেন। গৃহে থাকিয়া সন্ন্যাস অসম্ভব হইলেও, তিনি তাহা সম্ভব করিয়াছিলেন। তিনি সকল কাজই করিতেন, অথচ কোন কাজে লিপ্ত ছিলেন না। তিনি খুব পাকা খেলোয়ার ছিলেন, তাই এক হাতে ধর্ম্মের ও আর এক হাতে কর্ম্মের তরোয়াল ঘুরাইয়া সকলকে বিস্মিত করিয়াছিলেন।

(३)

ईश्वरके उद्देश्य से काम करके उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती थी। वे राजा होकर भी ऋषि मुनिकी भाँति काम करते थे, इससे लोग उनको राजर्षि कहते थे। राजर्षि जनक घरके कामर्में गृहस्थ और धर्मके काममें संन्यासी थे। घरमें रह कर सन्यास असम्भव होनेपर भी उन्होंने उसको सम्भव किया था। वे सभी काम करते थे, परन्तु किसी काममें लिप्त न थे। वे खूब पक्के खिलाड़ी थे, इसीसे उन्होंने एक हाथसे धर्मकी और दूसरे हाथसे कर्मकी तलवार घुमाकर सभोंको विस्मित किया था।

चौथा पाठ।

দয়ার = दयाकी
বাড়ীতে = घरमें
তের = तेरह
বার = बारह
মাসে = महीनेमें
পার্ব্বণ = पर्व
খোলা = खुला
অযগত্র = अयचेत्र
যে = जो
আসে = आवे
থাকিতে পারে = रह सकता है
এমন = ऐसे
সন্তান = लड़का बाला
জনপরিজন = अपने पराये
জন্য = वास्ते
আকুল = व्याकुल
পান = पाय
তাঁদের = उनका
কিছুতেই = किसीसे भी

সেই = বহী • কিছু = কুছ
কে = কৌন হইল = হুআ

(৪)

জনকের দয়ার সীমা ছিল না। বাড়ীতে বার মাসে তের পার্ব্বণ, উৎসব, আমোদ, আহ্লাদ। আর দান দাতব্য রাতদিন খোলা অন্নসত্র—যে আসে, সেই খায়। তাঁর রাজ্যে আর দীন দুঃখী কে থাকিতে পারে?

এমন যে রাজর্ষি জনক তাঁর সন্তান নাই। প্রজা, জন পরিজন ও রাজকর্ম্মচারী সকলেরই মুখ মলিন। রাণী সন্তানের জন্য আকুল। সকলের এই ভাব দেখিয়া, রাজা কোথাও শান্তি পান না। কি করেন—তাঁদের অনুরোধে যাগ যজ্ঞ করিলেন, কিন্তু কিছুতেই কিছু হইল না।

(৪)

जनककी दयाकी सीमा न थी। घरमें बारह महीनेमें तेरह पर्व, उत्सव, आमोद, आह्लाद (होता था)। और दान, दातव्य, रात दिन खुला अन्नक्षेत्र, जो आता वही खाता। उनके राज्यमें और दीन दुःखी कौन रह सकता (था)?

ऐसे जो राजर्षि जनक (थे) उनके लड़का वाला नहीं (था)। प्रजा, अपने पराये और राजकर्म्मचारी सभोंका मुँह मलिन (रहता था)। रानी सन्तानके लिये व्याकुल (रहती थी)। सभोंका यह भाव देखकर, राजा कहीं भी शान्ति नहीं पाते थे। क्या करें—उनके अनुरोधसे होम यज्ञ किया, परन्तु किसीसे भी कुछ न हुआ।

পাঁচবাঁ পাঠ।

করিবেন = করেঁগী	বাগানে = বাগমেঁ
জায়গা = জগহ্	ফুটিল = খিলী, ফূটে
ঠিক = ঠীক	অলি = ভৌঁরা
হইল = হুই	তুলিবার = তোড়নেকে লিয়ে, চুননেকে লিয়ে
জিনিষ-পত্র = চীজ বস্ত	গেলেন = গয়ে
জোগাড় = জোগাড় জুটাব	মাঝে = বীচমেঁ
হইতে লাগিল = হোনে লগা	সরোবর = তালাব
পোহাইল = সবেরা হোনা, বীতনা	তিন = তীন
কাক = কৌআ	পাড়ে = ঔর, কিনারেপর
কোকিল = কোয়ল	মাঠ = মৈদান, চরাগাহ
ডাকিয়া উঠিল = পুকার উঠী, বোল উঠী	আসিয়া পড়িলেন = আ পড়ে

(৫)

আবার সকলে সন্তান লাভের জন্য যজ্ঞ করিতে অনুরোধ করিল। রাজর্ষি জনক আবার যজ্ঞ করিবেন। যজ্ঞের জায়গা ঠিক হইল, জিনিষ পত্র যোগাড় হইতে লাগিল।

একদিন রাত পোহাইল কাক, কোকিল ডাকিয়া উঠিল, বাগানে ফুল ফুটিল, অলি গুন্ গুন্ গাইল। ক্রমে ফুল তুলিবার সময় হইল, রাজর্ষি বাগানে গেলেন। বাগানের মাঝে সরোবর, তাতে ফটিকের মত জল। সূর্য্যদেবের সোনার কিরণ আকাশ

খানি লাল করিয়া সরোবরের জলে খেলিতেছে। সরোবরের তিন পাড়ে ফুলের বাগান, এক পাড়ে খোলা মাঠ। রাজর্ষি ফুল তুলিতে তুলিতে মাঠে আসিয়া পড়িলেন।

(५)

फिर सभोंने सन्तान लाभके लिये यज्ञ करनेका अनुरोध किया। राजर्षि जनक फिर यज्ञ करेंगे। यज्ञकी जगह ठीक हुई, चीज़ वस्तु जोगाड़ होने लगी।

एक दिन रात बीती (सवेरा हुआ), कौवे, कोयल बोल उठे, बागमें फूल खिले भौंरे गुन् गुन् गाने लगे। धीरे धीरे फूल चुननेका समय हुआ, राजर्षि बागमें गये। बागके बीचमें तालाब (है), उसमें स्फटिकके समान जल (है)। सूर्य्यदेवकी सुनहरी किरणें आकाश को लाल करके तालाबके पानीमें खेल रही हैं। तालाबके तीन ओर फूलका बाग है एक ओर जानवरोंके चरनेका मैदान (है)। राजर्षि फूल चुनते चुनते उसी मैदानमें आ पड़े।

छठा पाठ।

গাছ = पेड़	সদ্যফোটা = तुरत फूटे हुए, तुरत खिले हुए
উঁচু = ऊँचा	মেয়ে = लड़की
নীচু = नीचा	চাঁদ = चन्द्रमा
সে = वह	জ্যোৎস্নার = चाँदनीका
চাষ করিয়া = हल चलाकर, जोतकर	ননীর = मक्खनका

করা চাই = করনা চাহিয়ে	ছাড়িলেন = ছোড় দিয়া
লাঙ্গল = হল	তাড়াতাড়ি = জলদীসে
আসিল = আয়া	ছুটিয়া গেলেন = দৌড়কর গয়ে
গরু = বৈল	কোলে = গোদমেঁ
যেন = জৈসে, মানো	তুলিয়া নিলেন = উঠা লিয়া
আলোকিত = রৌশন	সাড়া পড়িল = কোলাহল মচা
উঠিল = উঠা	অনায়াস = বিনা পরিশ্রম,
ফালে = ফালমেঁ	যকায়ক

(৬)

ঐ খোলা মাঠেই যজ্ঞ হইবে। মাঠের মাঝে মাঝে গাছ পালা, উহার কোন জায়গা উঁচু কোন জায়গা নীচু। সে সব চাষ করিয়া সমান করা চাই। লাঙ্গল আসিল, গরু আসিল, রাজা নিজেই চাষ করিতে আরম্ভ করিলেন। চাষ করিতে করিতে মাঠ যেন আলোকিত হইয়া উঠিল। দেখেন লাঙ্গলের ফালে সদ্যফোটা পদ্মফুলের মত এক মেয়ে! মেয়ে কি মেয়ে, যেন আকাশের চাঁদ। জ্যোৎস্নার মত রঙ, ননীর মত শরীর, মেয়ে দেখিয়াই রাজা লাঙ্গল ছাড়িলেন, তাড়াতাড়ি ছুটিয়া গেলেন, মেয়ে কোলে তুলিয়া নিলেন। চারিদিক হইতে লোক জন আসিল, জয় জয়কার পড়িয়া গেল। রাজপুরীতে মহা আনন্দের সাড়া পড়িল। রাজা অনায়াসে সন্তান পাইয়া ভগবানের নিকট কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিলেন।

(६)

इस खुले मैदानमें ही यज्ञ होगा। मैदानके बीच बीचमें पेड़ पत्ते (हैं), उसकी जमीन कहीं ऊँची कहीं नीची है। यह सब हल चलाकर बराबर करनी चाहिये। हल आया, बैल आया, राजाने स्वयं हल चलाना आरम्भ किया। हल चलाते चलाते मैदान मानों आलोकित हो उठा। देखा कि हलके फालमें तुरत फूटे हुए कमलके फूलके समान एक लड़की (है)! लड़की कैसी लड़की (है) मानों आकाशका चन्द्रमा। चाँदनीसा रंग, मखन सा शरीर, लड़की देखकर राजाने हल छोड़ दिया, जल्दी से दौड़कर गये, लड़कीको गोदमें उठा लिया। चारों ओरसे मनुष्य आये, जयजयकार मच गई। राजपुरीमें महा आनन्द का कोलाहल मचा। राजाने अनायास ही सन्तान पाकर ईश्वरके आगे कृतज्ञता प्रकाश की।

सातवाँ पाठ।

সত্যই = सच ही, सचमुच	সাজান হইল = सजी गई
বড় = बहुत	ফটকের = फाटकके
নিয়ে = ले जाकर	চূড়ায় চূড়ায় = सरपर
অন্দরে = भीतरमें	नक्‌कारख़ानेमें
যত = जितना	রাজ্যময় = राज्यभरका
তবু = तब भी	মাতিল = मतवाले हुए
বুঝি = मालूम होता है	আপন আপন = अपना अपना

লতা পাতা = तोरन बन्दनवार   সাজাইল = सजाया
ক্রটি = कमी   ভূষিত রহিল = भूषित रहा

(৭)

সত্যই রাজর্ষির বড আনন্দ হইল। আনন্দে মেয়ে নিয়ে রাজা অন্দরে গেলেন। "ভগবানের দান" এই বলিয়া মেয়েটি রাণীর কোলে দিলেন। মেয়ে পাইয়া রাণীর আহ্লাদের সীমা নাই, সে কি যত্ন! সে কি আদর! যত যত্ন করেন, যত আদর করেন, তবু মনে হয়, মেয়ের যত্নের বুঝি ত্রুটি রহিল।

রাজপুরী লতা পাতা পুষ্প পতাকায় সাজান হইল। ফটকের চূড়ায় চূড়ায় বাদ্য বাজিয়া উঠিল। রাজ্যময় উৎসবের ঘোষণা হইল। দেবালয়ে পূজা অর্চ্চনার ধূম পড়িল। রাজপুরী আনন্দময়ী হইয়া উঠিল। রাজার সুখে প্রজার সুখ। প্রজারাও আমোদে মাতিল। আপন আপন ঘর বাড়ী সাজাইল। সাত রাত পর্য্যন্ত নগর আলোকমালায় ভূষিত হইল।

(७)

सचमुच राजर्षिको बडा आनन्द हुआ। आनन्दमें लडकीको लेकर राजा अन्दरमें गये। "ईश्वरका दान" यह कह कर लडकी रानीकी गोदमें दे दी। लडकी पाकर रानीकी प्रसन्नताकी सीमा नहीं (रही); यह कैसा यत्न! यह कैसा आदर! जितना यत्न करती थीं, जितना ही आदर करती थीं, तब भी मनमें होता था, लडकीके यत्नमें मालूम होता है कमी रही।

राजपुरी तोरन बन्दनवार फूल पताकाओं से सजाई गई। फाटकोंके ऊपर ऊपर (नक्कारखानोंमें) बाजे बज उठे। राज्य भरके उत्सवकी घोषणा हुई। देवालयोंमें पूजा अर्चनाकी धूम पडी। राजपुरी आनन्दमयो हो उठी। राजा के सुख से प्रजाका सुख (है)। प्रजा भी आमोदमें मतवाली (हुई), अपने अपने घर द्वार सजाये। सात रात तक नगर रोशनीकी लडीसे भूषित हुआ।

आठवां पाठ।

জন্য = वास्ते
গাভী = गायें
অজস্র = बिना रुकावटके, लगातार
জোড়হাতে = हाथ जोडकर
কামনা = इच्छा
চলিয়া গেল = चले गये
বিবরণ = हाल, समाचार, व्यौरा
চারিদিকে = चारों ओर
কথা = बात
রটনা হইল = रटी गई
দলে দলে = दल बांधकर
আসিতে লাগিল = आने लगे
শিষ্যগণসহ = शिष्यगणोंके साथ
আসিলেন — आये
প্রাণ ভরিয়া = जी भरके
যাঁর যাঁর = जिसकी जिसकी
জিনিষ = चीज

(৮১)

রাজা মেয়ের মঙ্গলের জন্য বহু মণি মাণিক্য ও বৎস সহ শত শত গাভী দান করিলেন। নানা রাজ্যের দীন দুঃখীদিগকে আশাতীত ধন দিলেন। সাত রাত সাত দিন অজস্র দান চলিল।

রাজ্যে রাজ্যে লোকের অভাব ঘুচিয়া গেল। আশার অধিক দান পাইয়া সকলেই যোড়হাতে ভগবানের নিকট রাজকন্থার দীর্ঘজীবন কামনা করিতে করিতে আপন আপন দেশে চলিয়া গেল। রাজর্ষি জনকের কন্যালাভের বিবরণ চারিদিকে প্রচারিত হইল। মেয়ের অসামান্য রূপলাবণ্যের কথাও দেশ বিদেশে রটনা হইল। এই অপূর্ব্ব মেয়ে দেখিবার জন্য দেশ বিদেশের লোক দলে দলে আসিতে লাগিল। শিষ্যগণসহ মুনি ঋষি আসিতে লাগিলেন, দলে দলে ব্রাহ্মণ পণ্ডিত আসিলেন, মেয়ে দেখিলেন, প্রাণ ভরিয়া আশীর্ব্বাদ করিয়া চলিয়া গেলেন। দলে দলে রাজগণ আসিলেন—মেয়ে দেখিলেন, যাঁর যাঁর যা আদরের জিনিষ ছিল, মেয়েকে উপহার দিলেন, চলিয়া গেলেন।

(৮)

राजाने लड़कीके मङ्गलके लिये बहुतसे मणि माणिक्य, और अच्छे सहित सैकड़ों गायें दान कीं। नाना राज्यके दीन दु:खियोंको आशाके बाहर धन दिया। सातरात सातदिन लगातार दान चलता रहा। राज्य राज्यमें लोगोंका अभाव दूर हुआ। आशासे अधिक दान पाकर सभी हाथ जोड़कर ईश्वरके निकट राजकन्याके दीर्घजीवनकी कामना करते करते अपने अपने देशमें चले गये। राजर्षि जनकके कन्यालाभका समाचार चारों ओर फैल गया। लड़कीके असामान्य रूपलावण्य की बातें देश विदेशमें रटी जाने लगीं। इस अपूर्व लड़कीको देखनेके लिये देश विदेशसे मनुष्य दल के दल

आने लगी। शिष्योंके साथ ऋषिमुनि भी आने लगे। दलके दल ब्राह्मण पण्डित आये, लड़की देखी, जी भरकर आशीर्वाद करके चले गये। दलके दल राजा आये—लड़की देखी, जिसकी जिसकी जो प्यारी चीज़ थी, लड़कीको उपहार दे, चले गये।

नवाँ पाठ।

পর = बाद	পাওয়া যাইবে = पायी जायगी, पाया जायग
চাইল = चाहा	কেন = क्यों
দিয়া = देकर	শোনে = सुने
ফোটা = खिला हुआ	আসে = आवे
চোখ = आँख	ফুরায় = पूरा होना
না জানি = नहीं जानता	হইতে = से
আরও = और भी	আসেন = आती थीं
কত = कितना (बहुत)	না হইলে = नहीं तो, न होनेपर
মানুষের = मनुष्यका	
ইনি = ये	

(৯)

তাহার পর প্রজারা। দলে দলে প্রজা আসিয়া মেয়ে দেখিল, যার প্রাণে যা চাইল, মেয়েকে দিয়া আপন ঘরে চলিয়া গেল। রাজসভা হইতে কন্যা অন্তঃপুরে রাণীর কোলে যান, সেখানে মুনিপত্নী, ঋষিপত্নী, মুনিকন্যা, ঋষিকন্যা আসেন, মেয়ে দেখেন, আশীর্ব্বাদ করেন, চলিয়া যান। রাজ্যের

মেয়েরা শতে-শতে আসে—মেয়ে দেখে—রূপের কত সুখ্যাতি করে। আহা, রূপ কি রূপ—যেন ফোটাপদ্মফুল, চাঁদের মত মুখ, পদ্মের মত চোখ, ননীর মত শরীর। আহা! এখনই এত রূপ,—বড় হইলে না জানি আরও কত সুন্দর হইবে। মানুষের কি এত রূপ কখনও হয়? নিশ্চয়ই ইনি কোন দেবকন্যা। না হইলে যজ্ঞক্ষেত্রেই বা পাওয়া যাইবে কেন? এত রূপের কথা যে শোনে সেই একবার দেখিতে আসে। একদল আসে, একদল যায়, রাজবাড়ীর লোক আর ফুরায় না।

(৫)

उसके बाद प्रजा। दलकी दल प्रजाने आकर लड़की देखी; जिसके मनने जो चाहा (मनमें जो आया) लड़कीको देकर अपने घर चला गया। राजसभासे लड़की भीतर रानीकी गोदमें गई; वहाँ मुनियोंकी स्त्रियाँ, ऋषियोंकी स्त्रियाँ, मुनिकी कन्याएँ, ऋषिकन्याएँ आई (उन्होंने) लड़की देखी, आशीर्वाद किया, चली गईं। राज्यकी सैकड़ों स्त्रियाँ आईं—लड़की देखी—रूपकी कितनी सुख्याति की। अहा! रूप कैसा रूप, मानों खिला कमलका फूल। चन्द्रमाके समान मुँह, कमलसी आँखें, मखन सा शरीर। आहा! अभी ही इतना रूप(है)बड़ी होने पर न जाने और भी कितनी सुन्दर होगी। मनुष्यका इतना रूप क्या कभी होता है? निश्चय ही ये कोई देवकन्या हैं। नहीं तो यज्ञ क्षेत्रमें ही क्यों पाई जातीं? इतने रूपकी बात जो सुनता था वही एकबार देखनेको आता था। एक दल आता

था, एक दल जाता था, राज महलके लोग कम नहीं होते थे।

दसवां पाठ।

শেষ = समाप्त	ধরিয়া = पकड़कर
হইতে না হইতে = होते न होते	হাটি হাটি = धीरे धीरे
বলিয়া = वास्ते, कारणसे	পা পা = पैर पैर
রাখিলেন = रखा	হাটিতে = चलना
কেহ কেহ = कोई कोई	ছেলে মেয়েদের সহিত = लड़के लड़कियोंके साथ
ডাকিতেন = पुकारते थे	
হামাগুড়ি = घिसकना घुटमन	খেলায় = खेलमें
আঙ্গুল = उँगली चलना	যোগ দিলেন = साथ दिया।

---

(১০)

এই উৎসব আমোদ শেষ হইতে না হইতেই আবার রাজ-কন্যার নামকরণ উৎসব আরম্ভ হইল। লাঙ্গলের সীতিতে (ফালে) পাইয়াছেন বলিয়া কন্যার নাম রাখিলেন সীতা। জনকের কন্যা বলিয়া কেহ কেহ তাঁহাকে জানকী বলিয়া ডাকিতেন। সীতা দিন দিন বড় হইতে লাগিলেন। মা বাপের কোল ছাড়িয়া, হামাগুড়ি দিলেন। হামাগুড়ি ছাড়িয়া মা বাপের আঙ্গুল ধরিয়া, হাটি হাটি, পা পা, করিতে করিতে হাটিতে শিখিলেন। ক্রমে ক্রমে পুরীর ছেলেমেয়েদের সহিত খেলায় যোগ দিলেন।

(१०)

यह उत्सव आमोद समाप्त होते न होते ही फिर राज कन्याके नामकरणका उत्सव आरम्भ हुआ। हलके फालमें पाई थी इसलिये लडकीका नाम रक्खा सीता। जनककी कन्या रहनेके कारण कोई कोई उनको जानकी कह कर पुकारता था। सीता दिनों दिन बडो होने लगी। मा बापकी गोद छोडकर, घुटनों चलने लगीं। घटग्रन चलना छोडकर मॉं बापको उँगली पकड धीरे धीरे पाँव पाँव (करते करते) चलना सीखा। धीरे धीरे नगरके लडके लडकियोंके साथ खेलनेमें भी योग देने लगीं।

ग्यारहवां पाठ।

বড = बहुत, बडा	যাগ যজ্ঞ = होमयज्ञ
তিনি = वे	খেলা = खेल
নিয়েই = लेकर	কাজকর্ম্ম = काम धन्धा
কাছে = पास	কতই = कितनाही,बहुत कुछ
সঙ্গে = साथ	পান = पाती थी
কখনও = कभी	আদেশ = आज्ञा
লেখা পড়া = लिखना पढना	প্রকার = तरह
সাংসারিক = संसारके	করিয়া = करके
সকল = सभी	

(১১)

রাজা আজকাল রাজকার্য্য বড় দেখেন না। তিনি মেয়ে নিয়েই ব্যস্ত। রাজা সভায় যান, মেয়েও তাঁর সঙ্গে যায়। হোম যজ্ঞ করেন—মেয়ে তাঁর কাছে বসে। তিনি কখনও মেয়ে নিয়ে খেলা করেন, কখনও মেয়েকে লেখা পড়া শিখান। কখনও বা সাংসারিক কাজকর্ম্ম দেখান—কখনও বা ধর্ম্ম উপদেশ দেন। ঈশ্বরভক্তি ও সংযম শিক্ষার জন্য নানা প্রকারের ব্রত, নিয়ম পালনের ব্যবস্থা করেন। সীতা আগ্রহের সহিত পিতার সকল আদেশ পালন করিয়া কতই যেন সুখ পান।

(११)

राजा भ्राजकल राजके काम बहुत नहीं देखते थे। वह अपनी लडकी को लेकर ही व्यस्त रहते थे। राजा सभा में जाते (तो) उनकी लडकी भी उनके साथ जाती थी। होम यज्ञ करते (तो)—लडकी उनके पास ही बैठती। वे कभी लडकीके साथ खेलते, कभी लडकीको लिखना पढना सिखाते। कभी संसारके काम धन्धे दिखाते और कभी धर्मका उपदेश देते थे। ईश्वरकी भक्ति और सयम शिक्षाके लिये कितनी ही तरहके व्रत, नियम पालन की व्यवस्था करते थे। सीता भ्रायहसे पिताकी सभी भ्राज्ञा पालन करके बहुत कुछ सुख पाती थी।

बारहवां पाठ।

শ্রান্ত = श्रान्त, थका শুনেন = सुने

হন = হুএ	মনে প্রাণে = জী প্রাণ লগাকর
যখনই = জভী	এবং = ঔর
তখনই = তভী	লক্ষ্য = লক্ষ্য
স্নেহাপ্লুত = স্নেহভরী	তাঁহাদিগকে ধরিয়া = উন্হেঁ বৈঠাকর
ভাষায় = ভাষামেঁ	মিটে = মিটনা
এই = য়হী	বায়না = বহানা
রমণীদের = রমণিয়োঁকী	হইয়া পড়েন = হো পড়তী থী
কাহিনী = কহানী	
বলেন = কহতী থী	

(১২)

শুধু ব্রত, নিয়ম পালনের ব্যবস্থা করিয়াই বাল্মিকি ক্ষান্ত হন না, যখনই সময় পান তখনই স্নেহাপ্লুত ভাষায় কন্যাকে সতী, সাবিত্রী, অরুন্ধতী, এই সব পুণ্যবতী আদর্শ সতী রমণীদের কাহিনী বলেন। সীতা মনে প্রাণে সেই সব শোনেন এবং সেই সব দেবী চরিত্রের অনুকরণই তাঁহার জীবনের লক্ষ্য বলিয়া স্থির করেন।

আর শোনেন তপোবনের কথা। তপোবনের কথা শুনিতে সীতার বড়ই আগ্রহ। রাজসভায় মুনি ঋষি আসিলে, তাঁহাদিগকে ধরিয়া তপোবনের কথা শোনেন। সেখানে শুনিয়া তাঁর আশা মিটে না। আবার বায়না করিয়া বাবার মুখে শুনিতে চান। বাবার মুখে তপোবনের সেই পবিত্র মধুর কথা শুনিতে শুনিতে বালিকা সীতা তন্ময় হইয়া পড়েন।

(१२)

केवल व्रत, नियम पालनकी व्यवस्था करके ही राजर्षि शान्त नहीं होते थे. जभी समय पाते थे तभी स्नेहभरी भाषामें लड़कीको सती, सावित्री, अरुन्धती, इन्हीं सब पुण्यवती आदर्श सती रमणियोंकी कहानी कहते थे। सीता मन प्राणसे यही सब सुनती थीं और उन्हीं सब देवी चरित्रोंका अनुकरण ही अपने जीवनका लक्ष्य बनाकर स्थिर करती थीं।

और सुनती थीं तपोवनकी बातें। तपोवनकी बात सुननेमें सीताका बड़ा ही आग्रह (था)। राजसभामें मुनि ऋषि आने पर, उन्हें बैठाकर तपोवनकी बात सुनती थीं। वहाँ सुनकर उनका जो न भरता था। फिर महाराज करके पिताके मुँह से सुना चाहती थीं। पिताके मुंहसे तपोवनकी पवित्र मीठी बातें सुनते सुनते बालिका सीता तन्मय हो जाती थीं।

तेरहवां पाठ।

छाडिया = छोडकर	सेखाने = वहाँ
थाकिले = रहने	छानाटिर = बच्चेका
पिछने = पीछे	धरिया = पकडकर
साजि = फूलेका चँगेर	आदर करिलेन = प्यार किया
चलेन = चलती थी	दुटी = दो
बसेन = बैठते थे	कचि = कोमल, कच्चे
पडेन = पढ़ते थे	पाता = पत्ता
पूँथि — पोथी	आनिया = लाकर

যান = जाती थी — খাওয়াইলেন = खिलाया
ততক্ষণ = उतनी देर — কাছে = पास
বিশেষ = ज़रूरी — একটু = कुछ, थोड़ा
কাজে = काममें

(১৩)

সীতা তাঁর বাবাকে ছাড়িয়া থাকিতে পারেন না। রাজর্ষি ফুল তুলিতে যান—সীতা তাঁর পিছনে সাজি নিয়ে চলেন। জনক পূজা করিতে বসেন—সীতাও ফুল, দূর্ব্বা, চন্দন নিয়ে খেলার পূজায় বসিয়া যান। রাজর্ষি শাস্ত্র পড়েন—সীতাও তাঁর পুঁথি খুলিয়া পড়িতে বসেন। জনক পূজা না করিয়া জল খান না—সীতারও ততক্ষণ উপবাস। রাজা যখন বিশেষ কাজে ব্যস্ত থাকেন, সীতা কাছে থাকিতে পারেন না। তখন সীতা বাগানে যান—সেখানে হরিণ ছানাটির গাল ধরিয়া একটু আদর করিলেন, দুটি কচি পাতা আনিয়া তাকে খাওয়াইলেন।

(१३)

सीता अपने पिताको छोड़कर नहीं रह सकती थीं। राजर्षि फूल तोड़ने जाते थे—सीता उनके पीछे फूलका चँगेर लेकर चलती थीं। जनक पूजा करने बैठते थे, सीता भी फूल, दूर्वा, चन्दन लेकर खेलकी पूजापर बैठ जाती थीं। राजर्षि शास्त्र पढ़ते थे—सीता भी उनकी पोथी खोलकर पढ़ने बैठती थीं। जनक बिना पूजन किये खाते नहीं थे। सीता का भी उतनी देर उपवास (होता था)। राजा जब

किसी ज़रूरी काममें व्यस्त रहते थे, सीता पास नहीं रहने सकती थीं। उस समय सीता बाग़में जाती—वहां हरिनके बच्चेका गाल धरकर प्यार करतीं, दो कोमल पत्ते लाकर उसको खिलाती थीं।

चौदहवां पाठ।

দেখিতে = देखनेके लिये, देखनेमें	কিছুতেই = किसीसे भी
	গুলিকে = (बहुवचन अर्थमें)
চলিলেন = चले, चलते थे	দিগকে = ,,
অমনি = योंही, इसी तरह	ছোলা = चना
বায়না = ज़िद	মিটেনা = नहीं मिटती थी
যাব = जाऊंगा	জায়গা = जगह
গহনাগাটী = गहने कपड़े	বলিয়া গেলে = कह जानेपर
খুলিয়া = खोलकर	ফিরিতে = फिरनेमें
বেশে = वेशमें	বাধা দেন = मना किया, बाधा दिया
কত = कितना ही	
হরিণশিশু গুলিকে = हरिनके बच्चोंको	খুসী = खुशी

(১৪)

রাজর্ষি জনক তপোবন দেখিতে চলিলেন—সীতা অমনি যনা ধরিলেন, "বাবা ! আমি যাব। যাব কি ?" অমনি গহনা-াটি খুলিয়া, ঋষিবালিকার বেশে বাপের পিছনে উপস্থিত। বাপ কত বাধা দেন—কিছুতেই শোনেন না। সীতা তপোবন

দেখিতে যাবেনই। জনক আর কি করবেন—নিয়েই চলিলেন। আহা, সীতা তপোবন দেখিয়া কতই খুসী। ঋষিবালিকাদের সঙ্গে খেলা করিয়া তাঁর আমোদ ধরে না। হরিণশিশুগুলিকে দু গাছি করি করি ঘাস, পাখীগুলিকে ছোলা, ঋষিবালক বালিকাদিগকে ফল মূল খাওয়াইয়া যে তাঁর আশা মিটে না। তপোবনই যেন তাঁর সুখের জায়গা। সেখানে গেলে তাঁর আর বাড়ীতে আসিতে ইচ্ছা করে না। জনক এক দিনের কথা বলিয়া গেলে সীতার জন্য তিন দিনেও ফিরিতে পারেন না।

(१४)

राजर्षि जनक तपोवन देखने चले—सीताने यों ही जिद पकड़ ली—"पिता। मैं जाऊँगी, चलूँ क्या?" उसी समय गहने कपड़े खोलकर, ऋषि बालिकाके वेशमें पिताके पीछे खड़ी हो गई। पिताने कितना ही मना किया—कुछ भी न सुना। सीता तपोवन देखने जायँगी ही। जनक अब क्या करें—ले चले। अहा! सीता तपोवन देखकर कितनी खुश (हुई)। ऋषि बालिकाओंके साथ खेल करके उनका जी नहीं भरता था। हरिनके बच्चोंको दो दो नर्म नर्म घास, पक्षियोंको चना और बालक बालिकाओंको फल मूल खिला कर भी उनका जी न भरता था। तपोवन ही मानों उनकी सुखकी जगह (थी)। वहाँ जानेपर उन्हें फिर राजमहल आने की इच्छा न होती थी। जनक एक दिनकी बात कह जानेपर सीताके कारण तीन दिनमें भी नहीं फिर सकते थे।

পন্দ্রহবাঁ পাঠ।

পাইবার = পানেকী	কেও = কোঈ ভী
পর = বাদ	কাবে = কিসকো
হয় = হুঈ	ফেলিয়া = ছোড়কর ফেঁককর
রাখেন = রখ্খা, রখা গয়া	ছায়ায় = ছায়ামেঁ, সায়েমেঁ
বড়টির = বড়ীকা	আবদার = জিদ্
ছোটটির = ছোটীকা	ভাব = প্রেম

(১৫)

সীতাকে পাইবার পর রাণীর একটি মেয়ে হয়, তাঁহার নাম রাখেন উর্ম্মিলা। কুশধ্বজ নামে জনকের এক ভাই ছিলেন, তাঁরও দুইটি মেয়ে—বড়টির নাম মাণ্ডবী, ছোটটির নাম শ্রুত-কীর্ত্তি। তাঁরাও সীতার সঙ্গে জনকের স্নেহের ভাগী। সীতার সঙ্গে তাঁদের বড়ই ভাব। কেও কাকে ফেলিয়া থাকিতে পারেন না। সীতার ছায়ায় থাকিয়া তাঁরাও সীতার মত হইয়া উঠিলেন।

সীতার শিশুকাল গিয়াছে, বাল্যকালও যায় যায়। তাঁর শরীরের কান্তি দিন দিন বাড়িতে লাগিল। এখন আর সে চপলতা নাই, সে আবদার নাই, সে বায়না নাই। মধুর লজ্জা আসিয়া যেন সব দূর করিয়া দিল।

(१५)

সীতাকো পানে বাদ রানীকো এক লড়কী হুই, উসকা নাম রক্খা উর্ম্মিলা। কুশধ্বজ নামকে জনককে এক ভাই থে, উনকী ভী দো কন্যায়েঁ (থীঁ)—বড়ীকা নাম মাণ্ডবী, ছোটীকা

नाम श्रुतकीर्त्ति (था)। वे भी सीताके साथ जनकके स्नेह्व भगिनी (थीं), सीताके साथ उनका बड़ा ही प्रेम था। को किसीको छोड़कर नहीं रह सकती थीं। सीताकी छाया रहकर वे भी सीताकी भाँति ही गईं।

सीताका बचपन गया है, लड़कपन भी जाने जानेपर है उसके शरीरकी कान्ति दिनों दिन बढ़ने लगी। अब और वा चंचलता नहीं है, वह जिद्द नहीं है, वह बहाना नहीं है मधुर लज्जा ने आकर मानों सब दूर कर दिया।

सोलहवाँ पाठ।

প্রাণপণে = प्राणभरके	মুহূর্ত্তও = मुहूर्त्तभर भी
বোনদিগকে = बहिनोंको	পাড়াপড়সীরা = पड़ोसी पड़ोसी सब
ভালবাসেন = प्यार करती थीं	ঘিরিয়া থাকে = घेरे रहती थी
জনপরিজনে = अपने पराये पर	কারও = किसीका भी
ভাবনা = चिन्ता, विचार	চোখে = आँखमें
ভাবেন = विचारे	লুটিয়া = लोटकर
সখীরা = सखी सब	
ছাড়িয়া = छोड़कर	

(১৬)

সীতা এখন প্রাণপণে মা বাপের সেবা শুশ্রূষা করেন, বোন্‌দিগকে প্রাণের সহিত ভালবাসেন, দাসদাসীদিগকে স্নেহ, জন পরিজনে দয়া করেন। সীতা যেন সকলের সুখ দুঃখের ভাবনা

ভাবেন। সখীরা সীতাকে ছাড়িয়া এক মুহূর্ত্তও থাকিতে পারেন না। পাড়াপড়সীরা সর্ব্বদা তাঁকে ঘিরিয়া থাকে। পশুপক্ষী-দের পর্য্যন্ত সীতাই সব। সীতা যাকে পান, তাকেই প্রাণ দিয়া স্নেহ করেন, যত্ন করেন, আদর করেন। কারও কষ্ট দেখিলে সীতার চোখে জল ধরে না সীতার আকুলতার সীমা থাকে না। সীতার ব্যবহার দেখিয়া জনক ভাবেন—এ কি? এ কি আমার সীতা? এ তো দেবী। তার শরীরে দেবতার মত জ্যোতিঃ হৃদয়ে দেব ভাব। যে দেখে সেই যেন চরণে লুটিয়া পড়িতে চায়। আনন্দে রাজর্ষির প্রাণ মন ভরিয়া উঠে।

(১৫)

सीता इस समय जी भरके मा बापकी सेवा शुश्रुषा करती थीं, बहिनोंको जीसे प्यार करती थीं, नौकर मज़दूरिनों पर स्नेह, अपने पराये पर दया करती थीं। सीता मानों सभोंके सुख दुःखकी चिन्ता करती थी। सखियाँ सीताको छोड़कर, एक क्षण भी नहीं रह सकती थी, पड़ोसिनें सदा उनको घेरे रहती थीं। पशु पक्षियों तक को सीता ही सब कुछ थी। सीता जिसको पाती थीं, उसको ही जी भरके प्यार करती थीं, यत्न करती थीं, आदर करती थी। किसीका भी कष्ट देखनेसे सीताकी आंखोंका पानी नहीं रुकता था सीताकी व्याकुलता की सीमा नहीं रहती थी। सीताका व्यवहार देखकर जनक विचारते थे—यह क्या? यह क्या मेरी सीता(है)? यह तो देवी (है)। उसके शरीर पर देवताओंकी भांति ज्योति(है)। हृदयमें देव

भाव (है), जो देखता (है), वही मानों पैरोंपर लोट पड़ना चाहता है। आनन्दसे राजर्षिका प्राण मन भर उठता (है)।

सत्रहवाँ पाठ।

छड़ाइया पड़िल = छा गई	देइ = दे
पथे = राहमें	वर = वर
हाटे माठे = हाटबाटमें	काके = किसको
जागिया उठिल = जाग उठी	ये = जो
पाइबार = पानेकी	रङ्गटी = यह रत्न
भाट = भाट	करि = करे
भाङ्गिल = टूटा	एइरूप = इसी तरह
दिव = दूंगा	धनुते = धनुषमें
कार = किसका	छिला = चाँप
बाछे = पास	पराइया = पहिनाकर

(१७)

सीतार असामान्य रूप, असामान्य गुण; एइ रूप गु कथा जगते छड़ाइया पड़िल। ये राज्येइ याओ सीत रूप-गुणेर कथा। पथे दु'जने कथा बलितेछे—सीतार र गुणेर कथा। राजदरबारे राजाय राजाय, हाटे माठे, ग्रामे प्रजाय, घरे घरे, कि रानी, कि गृहस्थ, कि भिखारिणी, सकलेइ बले—सेइ सीतार रूप-गुणेर कथा।

एइ असाधारण कन्यारत्न लाभेर आशा, सकल देशेर राज-

মুন্ত্রের প্রাণেই জাগিয়া উঠিল। সকলেই সীতাকে পাইবার জন্য জনকের নিকট ভাট পাঠাইতে লাগিলেন। কোন কোন দুষ্ট রাজা বলপূর্ব্বক সীতা লাভের ভয়ও দেখাইলেন। রাজর্ষি জনকের চমক ভাঙ্গিল।

"এমন সোণার চাঁদ মেয়ে কাকে দিব? কে এর যথার্থ আদর করিতে পারিবে? কে এই রত্নের মূল্য বুঝিবে? সীতাকে ছাড়িয়া আমিই বা কেমন করিয়া থাকিব?" এই রূপ চিন্তা তাঁর মনে আসিল। কিন্তু চিন্তা করিয়া কি হইবে?—"মেয়ে তো বিয়ে দিতেই হইবে। এখন কার কাছে দেই? কে উপযুক্ত বর? কাকে দিলে মেয়ে সুখে থাকিবে? যে রত্নের জন্য পৃথিবী লালায়িত, কার এমন বল আছে যে নিজবলে রত্নটী রক্ষা করিতে পারিবে? সেই বরের পরীক্ষাই বা কেমন করিয়া করি?" এরূপ চিন্তা করিতে করিতে হরধনুর কথা তাঁর মনে পড়িল। এ পর্য্যন্ত কেহ সে ধনুতে ছিলা দিতে পারে নাই। তিনি প্রতিজ্ঞা করিলেন—"যিনি হরধনুতে ছিলা পরাইয়া ভাঙ্গিতে পারিবেন, আমি তাঁহাকেই এই কন্যারত্ন দান করিব।"

(১৬)

सीताका असामान्य रूप, असाधारण गुण (है); इस रूप-गुणकी बातें जगत्‌में छा गई। जिस राज्यमें जाओ सीताके रूप-गुणकी बातें (हैं)। राहमें दो मनुष्य बातें करते हैं—सीताके रूप-गुणकी बातें (हैं)। राजदरबारमें, राजा

राजामें, हाटबाटमें, प्रजा प्रजामें, घर घरमें, क्या रानी, क्या गृहस्थ, क्या भिखारिनी, सभी कहते हैं—वही सीताके रूप-गुणकी बातें।

इस असाधारण कन्यारत्न मिलनेकी आशा, सब देशोंके राजकुमारोंके मनमें जाग उठी। सभी सीताको पानेके लिये जनकके पास भाट भेजने लगे। किसी किसी दुष्ट राजाने बलपूर्वक सीतालाभका भय भी दिखाया। राजर्षि जनककी नींद टूटी।

"ऐसी सोनेकी चांद लड़की किसको दूंगा? कौन इसका यथार्थ आदर कर सकेगा? कौन इस रत्नका मूल्य समझेगा? सीताको छोड़कर मैं ही किस तरह रह सकूंगा? यही चिन्ता उनके मनमें उठी। परन्तु चिन्ता करके क्या होगा?—"लड़की तो व्याहनी ही होगी। अब किसके पास दें? कौन उपयुक्त वर (है)? किसे देने से लड़की सुखी होगी? जिस रत्नके लिये पृथिवी लालायित है, किसका ऐसा बल है जो अपने बलसे (उस) रत्नकी रक्षा कर सकेगा? उस बलकी परीक्षा ही किस तरह करें?" इसी तरहकी चिन्ता करते करते हरके धनुषकी बात उनके मनमें आई। अबतक कोई भी उस धनुषमें चांप न चढ़ा सका। उन्होंने प्रतिज्ञा की—"जो हरके धनुषमें चांप चढ़ाकर तोड़ सकेंगे, मैं उन्हींको यह कन्यारत्न दान करूंगा।"

अष्टादशवां पाठ।

পণ = प्रण	যাইয়া = जाकर
সব চেয়ে = सबसे	রব পড়িয়া গেল = धूम मच गई
হরধনু = हरका धनुष	
ভাঙ্গা = तोड़ना	

(১৮)

যেমন অপরূপ মেয়ে, পৃথিবীর সার রত্ন সীতা—তেমন তাঁর বিবাহের পণও হইল সব চেয়ে কঠিন কাজ—হরধনু ভাঙ্গা।

জনকরাজার প্রতিজ্ঞার কথা রাজ্যে রাজ্যে ঘোষিত হইল। যাঁরা ভাট পাঠাইয়াছিলেন, তাঁরা নিরাশ হইলেন। বীর বলিয়া যাঁদের গৌরব আছে, তাঁরা আনন্দিত হইলেন।

কার আগে কে ধনুক ধরিবে, কে আগে যাইয়া সীতা লাভ করিবে—এই জন্য সকল রাজ্যেই সাজ সাজ রব পড়িয়া গেল।

(१८)

जैसी आश्चर्यमयी लड़की, पृथिवीकी सार रत्न सीता (है)—वैसा ही उसके विवाहका प्रण भी हुआ सबसे कठिन काम—हरका धनुष तोड़ना।

जनकराजाके प्रतिज्ञाकी बात राज्य राज्य में घोषित हुई। जिन्होंने भाट भेजे थे वे निराश हुए। वीर रहनेके कारण जिनका गौरव है, वे आनन्दित हुए।

किसके पहिले कौन धनुष उठायगा, कौन आगे जाकर

सीता लाभ करेगा;—इसके लिये सभी राज्योंमें तय्यारियोंकी धूम मच गई।

उन्नीसवां पाठ।

এ পর্য্যন্ত = अबतक	কেহবা = कोई भी
যত = जितने	কাজেই = लाचार हो
হাতী = हाथी	একে একে = एक एक करके
সিপাই = सिपाही	জাঁকজমক = शानशौकत
সান্ত্রী = हथियारबन्द सिपाही, पहरेदार	আসাই = आना ही
লোক লস্কর = मनुष्य फौज	মহাভাবনায় = बड़ी चिन्तामें
ধনুক = धनुष	এত সাধের = इतनी प्यारी
পিট্টান্ = भागना	এনে দাও = ला दो
	প্রভু = ईश्वर

(১৯)

দলে দলে যত রাজা রাজপুত্র সব আসিল। সঙ্গে হাতী, ঘোড়া, সিপাই-সান্ত্রী, লোক-লস্কর যে কত, তার সংখ্যা নাই। কার আগে কে ধনুক ধরিবে-তা নিয়ে বিবাদ। কোন রাজা ধনুক দেখিয়াই পিট্টান্, কেহবা তুলিতে চেষ্টা করিলেন, কেহবা তুলিলেন, কিন্তু ছিলা দিতে কেহই পারিলেন না—ভাঙ্গা ত দূরের কথা। কাজেই একে একে সব চলিয়া গেলেন। সীতার আর বিবাহ হইল না। কেহ কেহ ঊর্ম্মিলা, মাণ্ডবী, শ্রুতকীর্ত্তিকে বিবাহ করিতে চাহিলেন, কিন্তু সীতার বিবাহ

না হইলে তাঁহাদের বিয়ে কিরূপে হয়? রাজপুত্রদের কেবল জাঁকজমক করিয়া আসাই সার হইল।

রাজর্ষি জনক মহাভাবনার মধ্যে পড়িলেন—আমার এত সাধের মেয়ে, তার বিয়ে হইবে না? আমি কেন এমন প্রতিজ্ঞা করিলাম। আমার দোষেই ত এমন হইল।—রাজা নিজকে নিজে কত নিন্দা করেন। যোড়হাতে সজলনয়নে ভগবানকে ডাকেন, আর বলেন, "প্রভু! সীতার বর কোথায়? এনে দাও প্রভু।"

(१८)

दलके दल जितने राजा, राजपुत्र (थे) सब आये। साथमें हाथी,घोड़ा,सिपाही-पहरेदार,मनुष्य फौज कितनी(थी),उसकी संख्या नहीं (है)। किसके पहिले कौन धनुष उठायगा अब इसीका झगड़ा(है)। कोई राजा धनुष देखकर ही भागे,किसीने उठानेकी चेष्टा की, किसीने उठाया, परन्तु कोई भी चाँप न चढ़ा सका—तोड़ना तो दूरकी बात (है)। लाचार हो एक एक करके सब चले गये। सीताका व्याह नहीं हुआ। किसी किसीने उर्म्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्त्तिसे व्याह करना चाहा, परन्तु सीताका व्याह बिना हुए, उनका व्याह कैसे हो? राजपुत्रोंका केवल शानशौकतसे आना भर ही हुआ।

राजर्षि जनक बड़ी चिन्तामें पड़े—मेरी इतनी प्यारी लड़की, उसका व्याह न होगा? मैंने क्यों ऐसी प्रतिज्ञा की। मेरे दोषसे ही तो ऐसा हुआ।—राजा अपनी आप कितनी निन्दा

करते थे। हाथ जोड़कर आँखोंमें आँसू भरे हुए ईश्वरको पुकारते और कहते थे—"प्रभु! सीताका वर कहाँ (है)? ला दो प्रभु।"

बीसवाँ पाठ।

ঠাট্টা = ठट्ठा　　　　বর = दूल्हा

সই = सखी　　　　উঠা = चढ़

কপালে = भाग्यमें　　　　অদৃষ্ট = भाग्य, कर्म

জুটিবার = जुटनेका, मिलनेका　　　　ফিরিয়া গেলেন = लौट गये

যা হয় = जो हो, जो जो चाहे

(২০)

সীতার মনে কোন চাঞ্চল্য নাই। কত রাজা আসিলেন রাজপুত্র আসিলেন, ধনুকে ছিলা পরাইতে না পারিয়া ফিরিয়া গেলেন। কাহারও কথাই সীতার মনে উঠিল না। তা উঠিলে কি? তবু তাঁহার বিপদ উপস্থিত—সখীদের কাছে আর তাঁর থাকিবার উপায় নাই। তারা তাঁকে কত ঠাট্টা করে। এক এক রাজা আসে, আর অমনি "সই, তোর 'বর এলো' 'বর এলো'" বলিয়া অস্থির করে। যেই চলিয়া যায় অমনি—"সই, তোর কপালে বিয়ে নাই" বলিয়া দুঃখ করিতে থাকে।

ইহাতে সীতার মনে কোন উদ্বেগ নাই। সীতা বলেন, "ভগবান যাঁকে নির্দ্দেশ করিয়াছেন, তিনি আসিলে অবশ্য পণ রক্ষা হইবে। তাঁর ইচ্ছা না হইলে, তোরা যাকে ইচ্ছা ধরিয়া দিলে ত হইবে না।" সখীরা বলে—"তোমার বাবার যেমন

হৃষ্টিছাড়া পণ তাতে যমরাজ ভিন্ন অন্যবর জুটিবার উপায় নাই।"

সীতা বলেন "বাবা আমার ভালর জন্যই পণ করিয়াছেন। তোমরা আমাকে যা হয় বল—বাবার কথা কেন?—মা-বাপ যা করেন, সন্তানের মঙ্গলের জন্যই করেন। তাতে যদি সন্তান দুঃখ পায়, উহা তার অদৃষ্টের ফল।"

(২০)

सीताके मनमें कोई चाञ्चल्य नहीं है। कितने राजा आये, राजकुमार आये, धनुष पर चाँप न चढ़ा सकनेके कारण लौट गये। किसीकी बात भी सीताके मनमें न उठी। उसके नहीं उठनेसे क्या (हुआ)? तब भी उनकी विपद उपस्थित (है)—सखियोंके पास अब उनके रहनेका उपाय नहीं (है)। वे सब उनसे कितना ठट्ठा करती (हैं)। एक एक राजा आता है, इस तरह "सखी! तेरा वर आया" "वर आया" कहकर तङ्ग करती हैं। ज्योंही (वह) चला जाता है त्योंही "सखी, तेरे भाग्यमें विवाह नहीं है" कहकर दुःख करती हैं।

इससे सीताके मनमें कोई उद्वेग नहीं (है)। सीता कहती है—"भगवान्‌ने जिसको निर्द्दिष्ट किया है उनके आनेपर अवश्य प्रणकी रक्षा होगी। उनकी इच्छा न होनेपर, तुम सब जिसको चाहो (उसको) देनेसे तो न होगा।" सखी कहती है—"तुम्हारे पिताकी जैसी दुनियासे बाहर प्रतिज्ञा है, उससे यमराज भिन्न दूसरा वर मिलनेका उपाय नहीं है।"

सीता कहती थीं—"पिताने मेरे भलेके लिये ही प्रण किया

है। तुम हम मुझे जो चाहो कहो—पिताकी बात क्यों (कहती हो)? मा बाप जो करते हैं सन्तानकी मंगलके लिये ही करते हैं। उससे यदि सन्तान दु:ख पाय (तो) वह उसके भाग्यका फल है।"

इक्कीसवाँ पाठ।

প্রকাণ্ড = बहुत बड़ा	বাতাস = हवा
বাড়ী = मकान	চুপি চুপি = चुपचाप
তোরণ = फाटक	পালাইতেছে = भागती है
কারুকার্য্যে = कारीगरीके कामसे	ডুবিতেছে = डूबती है
খচিত = खचा हुआ	উঠিতেছে = उठती है उतराती है
চওড়া = चौड़ा	ঢেউয়ে ঢেউয়ে = तरङ्गोंपर, ढेहुओंपर
পাশে = ओरमें	গড়া = बनाया हुआ, गढ़ा हुआ
বিকালবেলা—तीसरेपहर	তাড়া খাইয়া = धक्का खाकर
উড়িয়া = उड़कर	বাহা = रंगीन
বেড়াইতেছে = घूमती है	

(২১)

রাজর্ষি জনকের প্রকাণ্ড বাড়ী। সম্মুখের তোরণটি বেশ সুন্দর। নানা কারুকার্য্যে খচিত। তোরণের বাহিরে চওড়া রাস্তা। রাস্তার দুই পাশে সুন্দর ফুলের বাগান। বিকাল বেলা বাগানে নানাবিধ ফুল ফুটিতেছে; অলিগণ ফুলের মধু পাইবার জন্য গুন্ গুন্ করিয়া উড়িয়া বেড়াইতেছে। বাতাস

ফুলের মধু চুরি করিয়া, চুপি চুপি পালাইতেছিল, পশ্চিম দিকে রাঙা রবির তাড়া খাইয়া যেন নদীর জলে পড়িয়া গেল। জলের উপর দিয়া দৌড়িতে দৌড়িতে—একবার ডুবিতেছে আবার উঠিতেছে। ঢেউয়ে ঢেউয়ে এক রবি যেন শত রবি হইয়া তার পিছনে পিছনে ছুটিতেছে।

তোরণটি বেশী উচ্চ নয়। তার সামনে ফুলের বাগান। কাতারে কাতারে ফুলের গাছ। গাছে গাছে ফুল আর ফুলের কলি—কোনটি ফুটিয়াছে, কোনটি আধ ফোটা হইয়াছে। এই খানি সীতার আপন হাতে গড়া ফুলবন। সাঁঝের ধূসর আঁধার আসিবার আগেই রোজ সীতা ফুলবনে দেবীর মত বোন্‌দিগকে সাথে লইয়া গাছে গাছে জল দিতে আসেন। আজও আসিয়া-ছেন। জল দেওয়া শেষ হইয়াছে। সীতার হাতের জল পাইয়া গাছগুলি যেন আনন্দে হাসিয়া উঠিয়াছে।

(२१)

राजर्षि जनकका मकान बहुत बडा (है)। सामनेका फाटक बहुत सुन्दर (है)। बहुतसे कारीगरोंके कामसे खचा हुआ (है)। फाटकके बाहर चौडा रास्ता (है)। रास्तेके दोनों तरफ सुन्दर फूलका बाग (है)। तीसरे पहरको बागमें बहुत तरहके फूल खिलते हैं, भौंरे फूलका मधु पीनेके लिये गुन गुन् करके उडते फिरते हैं। हवा फूलका मधु चोरी करके चुपचाप भागती थी (परन्तु) पश्चिम ओर रंगीन सूर्यका धक्का खाकर मानों नदीके जलमें गिर पडी।

पानीके ऊपरमें दौड़ती दौड़ती—एकबार डूबती है, फिर उत राती है। ढेंऊ ढेंऊपर एक रवि मानों सौ रवि होकर उसके पीछे पीछे दौड़ते हैं।

फाटक बहुत ऊँचा नहीं (है)। उसके सामने ही फूलका बाग (है)। कतारसे फूलके पेड़ (हैं), पेड़ पेड़में फूल और फूल को कलि—कोई खिली है और कोई खिलने खिलनेपर है। यह सीताका अपने हाथका बनाया हुआ फूलवन है। सन्ध्याका धूसर अँधेरा आनेके पहिलेही रोज सीता फूलवनमें देवीकी भाँति बहिनोंको साथ लेकर पेड़ पेड़में जल देने आती हैं। आज भी आई हैं। पानी देना समाप्त हो गया है। सीताके हाथका जल पाकर पेड़ मानों आनन्दसे हँस उठे हैं।

सावित्री।

बाईसवाँ पाठ।

घुरे घुरे = घूम घूमकर	आड = आड़ अन्तराल
देखाते = दिखाने	पाछे = पीछे
लागिलेन = लगी	हाराते हय = खोना पड़ता है
फिंगे = एक प्रकारकी चिड़िया	दिके = तरफ़
मयूर = मोर	एक दृष्टिते = टकटकी बाँधकर
नाचछे = नाचता है	चेये आछेन = देख रही हैं
आलो = रोशनी	हाओयाय = हवासें
देख छलो = देखती हो तो?	पाता = पत्ता

আজ ও কি দেখবেন = आज वह क्या देखेंगी	নড়ে = हिलता है
	বুক = कलेजा
কেঁপে উঠে = कांप उठता है	ছিনিয়ে = छीनकर
শুক্‌নো = सूखा हुआ	নিতে = लेजानेके लिये
ঝরে পড়ে = झड़कर गिरता है	আস্‌চে = आता है

সাবিত্রী।

(২২)

এ দিক ও দিক ঘুরে' ঘুরে' সত্যবান সাবিত্রীকে বনের শোভা দেখা'তে লাগলেন। ঐ দেখ, ঐ ফিঙ্গে উড়ছে, অশোক ডালে ময়ূর নাচ্‌ছে—ও সাবিত্রী, দেখ্‌ছ তো?—সাবিত্রী আজ ও কি দেখ্‌বেন। চোখের আড় কর্‌লে পাছে হারাতে হয়, এই ভয়ে তিনি স্বামীর মুখের দিকে একদৃষ্টিতে চেয়ে আছেন। হাওয়ায় গাছের পাতা নড়ে,—সাবিত্রীর বুক কেঁপে উঠে! শুক্‌নো পাতা ঝ'রে পড়ে—সাবিত্রী ভাবেন, ঐ বুঝি কে সত্যবানকে ছিনিয়ে নিতে আস্‌চে!

(२२)

इधर उधर घूम घूम कर सत्यवान सावित्रीको वनकी शोभा दिखाने लगे। यह देखो, यह फिङ्गे उडता है, अशोकको डालपर मोर नाचता है—ऐ सावित्री, देखती हो तो?—सावित्री आज वह क्या देखेंगी। आंखकी ओट करनेपर खोना पडेगा इसी भयसे वह स्वामीके मुँहकी ओर एकदृष्टिसे देख रही हैं। हवासे पेडका पत्ता हिला,—सावित्रीका

कलेजा काँप उठा! सूखा पत्ता झड़कर गिरनेसे—माधवि यह समझकर कि कोई मलयानको छीन लेनेके लिये आता चिन्तित हुई।

तेईसवाँ पाठ।

হাত = हाथ
আপন = अपना
চেপে ধরেন = दबा धरती है
ভয় ভয় করচে = डर मालूम होता है
কাঠ = लकड़ी
কেটে = काटकर
চল = चलो
কাটতে = काटनेके लिये
উঠলেন = उठे, चढ़े
তলায় = नीचे
দাঁড়িয়ে = खड़ी होकर
পানে = ओर
রইলেন = रही
হয়েছে = हुआ है
ডেকে ডেকে = पुकार पुकार कर

নেমে এস = उतर आओ
ফুরিয়ে গেল—बीत गया
আঁধার = अँधेरा
ফেটে যায় = फटी जाय
ব্যথায় = दर्दसे
মাথার = माथेको
দারুণ = भयानक, जोरकी, कष्टकर
ছটফট = छटपट
ঢলে পড়লেন = ढलक पड़ी
দেহ = शरीर
কালি = काला
হয়ে গেছে = हो गया है
মুখ দিয়ে = मुँहसे
ফেনা উঠছে = फेननिकलता है
আঁখির পাতা = आँखकी पलक

(২৩)

অমনি তিনি দ্বিগুণ জোরে স্বামীর হাত আপন হাতে চেপে ধরলেন। সাবিত্রী বল্লেন—আমার কেমন ভয় ভয় কর্‌চে, তুমি শীঘ্র কাঠ কেটে ঘরে চল। সত্যবান আর দেরি না ক'রে কাঠ কাট্‌তে গাছের উপর উঠ্‌লেন। গাছের তলায় দাঁড়িয়ে সাবিত্রী স্বামীর মুখের পানে চেয়ে রইলেন। "কাটা ডালের স্তূপ হয়েছে, কাঠের বোঝা ভারি হয়েছে—এখন নেমে এস।" সাবিত্রী গাছের তলা থেকে ডেকে ডেকে বল্‌ছেন—নেমে এস, এখন নেমে এস। বেলা যে ফুরিয়ে গেল, বনের পথ আঁধার হ'ল—এখন নেমে এস।

সত্যবান গাছের উপর থেকে এক-পা দু-পা ক'রে নীচে নেমে আস্‌চেন, এমন সময়—বিধির লিপি না খণ্ডান যায়—দারুণ মাথার ব্যথায় ছট্‌ফট্ ক'রে তিনি গাছের তলায় ঢ'লে পড়্‌লেন। সাবিত্রী ছুটে' এসে দেখেন—স্বামীর দেহ কালি হ'য়ে গেছে, মুখ দিয়ে ফেনা উঠ্‌ছে, আঁখির পাতা নড়ে না—হায় হায়, এ কি হল!

(२३)

यह विचार कर उसने दूनी ज़ोरसे स्वामीका हाथ अपने हाथसे चांपकर पकड़ लिया। साबित्रीने कहा—मुझे कैसा भय मालूम होता है, तुम जल्दी लकड़ी काटकर घर चलो। सत्यवान और देर न करके लकड़ी काटनेके लिये पेड़पर चढ़े। पेड़के नीचे खड़ी होकर सावित्री स्वामीके मुँहकी ओर

देखती रहीं। "काठी हुई डालकी ढेर हुई है, काठका बोझा भारी हुआ है—अब उतर आओ!" सावित्री पेड़के नीचेसे पुकार पुकारकर कहती है—"उतर आओ, अब उतर आओ! समय हो गया, वनकी राह अँधेरी हुई, अब उतर आओ!"

सत्यवान पेड़के ऊपरसे एक पैर दो पैर करके नीचे उतरे आते हैं, ऐसेही समय—भाग्यका लिखा हुआ नहीं टाला जाता—माथेके भयानक दर्दसे छटपटाकर वह पेड़के नीचे ढलक पड़े। सावित्रीने दौड़कर देखा—स्वामीका शरीर काला हो गया है, मुँहसे फेन निकल रहा है, आँखकी पलक नहीं हिलती—हाय, हाय, यह क्या हुआ!

चौबीसवाँ पाठ।

এক ধারে = एक ओर	বাদুড় = चमगादड़
দেহ = शरीर	দুলচে = डोलता है
বোণের বধূ = दुलहिन	খসে পড়চে = खिसक पड़ता है
একলা = अकेली	দুপুর = दो पहर
ফেটে = फटकार	কেটে গেল = कट गई
কান্না = रोना	সাড়া = शब्द
উথ্‌লে = उथलकर	শক্ত = कड़ा
বুক চেপে = कलेजा दबाकर	হ'য়ে = होकर
শেয়াল = सियार	আগলে = बचाये
ডাকচে = पुकारता है, बोलता है	

(২৪)

এক ধারে কাঠের বোঝা, এক ধারে স্বামীর দেহ—কোণের বধূ সাবিত্রী এই আঁধার বনে একলা এখন কি কর্‌বেন! বুক ফেটে তাঁর কান্না উথ্‌লে উঠ্‌ল—জোর ক'রে, তিনি বুক চেপে স্বামীর দেহ কোলে তুলে' বনের ভিতর ব'সে রইলেন।

আঁধার পক্ষের আঁধার রাত। ঘুরঘুট্টি আঁধারের মাঝে শেয়াল ডাকছে, বাদুড় ঝুল্‌ছে, গাছের পাতা খসে পড়্‌ছে—সাবিত্রী স্বামীর দেহ বুকে চেপে স্বামীর মূর্ত্তি ধ্যান কর্‌ছেন। দেখ্‌তে দেখ্‌তে দুপুর রাত কেটে গেল, তবু তো তাঁর সাড়া নেই—কাঠের মত শক্ত হ'য়ে সাবিত্রী স্বামীর দেহ আগ্‌লে রইলেন।

(२४)

एक ओर काठका बोझा, एक ओर स्वामीका शरीर—दुलहिन सावित्री इस अँधेरे बनमें अकेली इस समय क्या करेंगी। कलेजा फटकर उनको रुलाई आई—ज़ोर करके, कलेजा दबाकर वह स्वामीके शरीरको गोदमें उठाकर बनमें बैठी रही।

अँधेरे पखकी अँधेरी रात (है)। घनघोर अँधकारमें सियार बोलता है, चमगादड़ डोलता है, पेड़का पत्ता खिसक पड़ता है—सावित्री स्वामीका शरीर कलेजेसे दबाकर स्वामीकी मूर्त्तिका ध्यान करती है। देखते देखते दो पहर रात्रि बीत गई, तब भी तो उनका शब्द नहीं—(सुन पड़ा है)

काठकी भाँति कठोर होकर सावित्री स्वामीके शरीरकी रक्षा किये रहीं।

উমা।

पच्चीसवाँ पाठ।

ক্রমে ক্রমে = धीरे धीरे
শিশু = बच्चा
একটু একটু করিয়া = थोड़ा थोड़ा करके
একটুখানি = छोटा, थोड़ा
জ্যোৎস্না পরিপূর্ণ = ज्योति भरा, चाँदनी भरा
সেরূপ = उस तरह
দিন দিনই = दिनों दिन
বাড়িতে লাগিল = बढ़ने लगा
লয় = लेता था
চাঁদপানা = चाँद सरीखा
জোছ্না মাখা = ज्योति भर.
বিলাইতেই = बाँटनेके लिये

(২৫)

ক্রমে ক্রমে শিশু কন্যাটি বড় হইয়া উঠিল। প্রতিপদের চাঁদ যেমন প্রথম একটুখানি থাকে, আর প্রতিদিনই একটু একটু করিয়া বড় হইয়া জোৎস্না-পরিপূর্ণ ও মনোহর হইয়া উঠে, হিমালয়ের শিশু মেয়েটীও সেরূপ ক্রমে ক্রমে বড় হইয়া উঠিল। দিন দিনই উহার সৌন্দর্য্য বাড়িতে লাগিল। মেয়েটিকে যে দেখে, সেই আদর করে, যে দেখে, সেই কোলে লয়। যেমন চাঁদপানা মুখ, তেমনি জোছ্নামাখা শরীর, তা আবার ননীর মত কোমল, এমন মেয়ে কি আর হয়! মনে হয় যেন পৃথি-

ধীতে আনন্দ বিলাইতেই ভগবান মেয়েটীকে আনন্দধাম থেকে পাঠিয়ে দিয়েছেন !! হিমালয়ের বাড়ীতে রোজ বন্ধু বান্ধবগণ আসিতে লাগিল। তাহারা ত মেয়ের রূপ দেখিয়া অবাক। পর্ব্বতের মেয়ে কিনা, তাই সকলে আদর করিয়া উহাকে "পার্ব্বতী" বলিয়া ডাকিত।

পার্ব্বতীর মা বাপের কথা আর কি বলিব। পার্ব্বতীকে পেয়ে উঁহারা যেন হাতে চাঁদ পেয়েছেন। মেয়ের দিকে চাহিলে, তাহাদের আর ক্ষুধা, তৃষ্ণা থাকে না। এক মিনিট মেয়েটী চোখের আড়াল হইলে মা বাপ যেন অস্থির হইয়া পড়েন।

উমা।

(২৫)

धीरे धीरे बच्चा कन्या बड़ी हो गई। प्रतिपदाका चन्द्र जिस तरह पहले छोटासा रहता है और रोज रोज थोड़ा थोड़ा बड़ा होकर ज्योति भरा और मनोहर हो जाता है, हिमालयकी बच्ची कन्या भी उसी तरह धीरे धीरे बड़ी हो गई। दिनों दिन उसका सौन्दर्य्य बढ़ने लगा। लड़कीको जो देखता (है),वही प्यार करता (है), जो देखताहै, वह गोदमें लेता (है)। जिस तरह चाँदसरीखा मुँह, वैसा ही ज्योतिभरा शरीर (है); वह फिर मखनसा कोमल है। ऐसी लड़की क्या दूसरी होतीहै। मनमें आता है, मानों पृथिवीमें आनन्द बाँटनेके लिये ही भगवान्ने लड़कीको आनन्दधामसे भेज दिया है!! हिमालयके

मकानपर रोज़ बन्धु बान्धवगण आने लगे। वे तो लडकोका रूप देखकर अवाक (हो गए)। पर्वतकी लडकी है कि नहीं इसीसे सभी प्यार करके उसे "पार्वती" कहकर पुकारते हैं।

पार्वतीके माँ बापकी बात और क्या कहूँगा। पार्वती को पाकर उन्होंने मानों हाथमें चांद पाया है। लडकोकी ओर देखने पर उन्हें फिर भूख प्यास नहीं रहती है। एक मिनिट लडकी आँखोंकी ओट होने पर माँ बाप मानों अस्थिर हो जाते हैं।

छब्बीसवां पाठ।

बाटी = कटोरी
झिनुक = सीपी, चमच
এনে দিলেন = लादिया
পুতুল খেলার = गुडिया खेलनेका
পুতুল = गुडिया, पुतली
সাটিনের = साटनका
জামা = कपडा, पोषाक
বেগুনে = बैंगनी
ঝলমল = झिलमिल
বহিয়া চলিয়াছে = बह चली है
সাদা সাদা = सफ़ेद सफ़ेद
বালিগুলি = बालू
রূপার মত = चाँदीके समान
ঝিকমিক করে = चमकाता था, झिलमिलाता था
বালিরাশিতে = बालूकी ढेरमें
পরিবেশন করে = परोसती थी
আধ আধ স্বরে = तोतली भाषामें
বয়স = अवस्था उम्र

(২৬)

বাপ আদরকরে মেয়ের জন্য সোণার ঝুবের বাটি

ও হীরার ঝিনুক এনে দিলেন। পার্ব্বতী যখন আধ আধ স্বরে "মা" বলিত, তখন মেনকার আনন্দ দেখে কে। ক্রমে পার্ব্বতীর বয়স ৩।৪ বৎসর হইল। এখন ত পুতুল খেলার সময়। পার্ব্বতীর পুতুলের অভাব কি? কত সোণার পুতুল, রূপার পুতুল, স্ফটিকের পুতুল, আর তাদের কত রকমের জামা। সাটিনের জামা, রেশমের জামা, লাল, নীল, বেগুনে, কত রঙের জামা, আর তার মাঝে হীরা, মাণিক, ঝল্ মল্ করে। পার্ব্বতী খেলার সাথীদের সঙ্গে পুতুল খেলা করে। পুতুলের বিয়ে হয়, আর কত আমোদ প্রমোদই বা হয়। রাজবাড়ীর পাশ দিয়াই গঙ্গা নদী বহিয়া চলিয়াছে। উহার তীরে সাদা সাদা বালিগুলি রূপার মত ঝিক্‌মিক্ করে। পার্ব্বতী সখিগণ লইয়া সেই বালিরাশিতে খেলা করিতে যায়। সোণার হাঁড়িতে বালি দিয়া ভাত রাঁধে, আর পুতুলের বিয়ের সময় সকলকে নিমন্ত্রণ করে খাওয়ায়। বরের বাড়ী হইতে কত লোকজন আসে, পার্ব্বতী সোণার থালে বালির ভাত ও পাতার তরকারী পরিবেশন করে।

(२६)

बापने प्यार करके लडकोंके लिये सोनेकी दूधकी कटोरी और हीरेका चमच ला दिया। पार्वती जब तोतली स्वरमें "माँ" कहती (थी) उस समय मैनकाका आनन्द कौन देखे। धीरे धीरे पार्वतीकी अवस्था तीन चार वर्षकी हुई। अब तो गुड़िया खेलनेका समय (है)। पार्वतीको गुड़ियेका क्या अभाव (है)? कितनी ही सोनेकी पुतली, चाँदीकी पुतली, स्फटिककी

पुलसी और उसके किसमें रंगकी पोशाक ; माटकी पोशाक, रेशमकी पोशाक, लाल, नीला, हरा कितने रङ्गकी पोशाक और उसके बीचमें हीरा, माणिक, झिलमिल करता है। पार्वती देव की पारियोंके साथ गुड़िया खेलती है। गुड़ियेका ब्याह होता है और कितनी ही ऐसी खुशी होती है। राजमहलके पास ही गंगानदी बह रही है। उसके किनारे पर सफेद सफेद बालू चाँदीकी तरह झिलमिल करती है। पार्वती सखियोंका सिर्फ उसी बालूकी ढेरमें खेलने जाती है। सोनेकी हाँडीमें बालू डालकर भात सिझाती है और गुड़ियेके ब्याहके समय सभीका निमन्त्रण करके खिलाती है। घरके मकानमें कितने मनुष्य आते हैं, पार्वती सोनेकी थालीमें बालूका भात और पत्तेकी तरकारी परोसती है।

सत्ताईसवाँ पाठ।

জামাই বাড়ী = जमाईके घर
কান্না = रोना
খেলাধূলায় = खेल कूदमें
শিখিবার = सीखनेका
গুরুমা = शिक्षिका
মজা = सुख बहार
বানান = वर्ण विचार
শেষ = समाप्त

ছবির = तस्वीरकी, तस्वीरदार
বই = किताब
আনিয়া দিবেন = ला दो
সে গুলি = वह सब
হাসে = हँसती थी
মিলিতে চায় = मिलना चाहता है

(২৭)

আর গেযে পুতুলটীকে জামাই-বাড়ী নিয়ে গেলে, পার্ব্বতী কান্না আরম্ভ করে। সে দিন রাত্রিতে আর ভাত খায় না। এমনি ভাবে খেলাধুলায় পার্ব্বতীর দিন চলিতে লাগিল। এসব দেখিয়া বাপ মাযের মনে আর আনন্দ ধরে না। ক্রমে পার্ব্বতীর লেখাপড়া শিখিবার সময় হইল। সে রাজকন্যা, তার ত আর স্কুলে গিয়া পড়িতে হইবে না। পর্ব্বতরাজ বাড়ীতেই শিক্ষক রাখিয়া দিলেন। পার্ব্বতী সোণার পাতায় হীরার কলম দিয়া 'ক' 'খ' লিখিতে লাগিল। ছয় মাসের মধ্যেই ফলা, বানান, শেষ হইয়া গেল। এখনত ছবির বই পড়িবার সময়। বাপ আদর করিয়া কত সুন্দর সুন্দর ছবির বই আনিয়া দিলেন পার্ব্বতী সেগুলি দেখে, আর হাসে। কি সুন্দর ছবি। একটা বেঙ বিনা একটা হাতী গিলিতে চায়। বেঙের কি সাহস। পার্ব্বতী ছবি দেখিয়া হাসে, আর মনে মনে ভাবে, বেঙ কি কখনও হাতী গিলিতে পারিবে।

(२७)

और कन्या गुडियेको जवाईके घर ले जानेपर पार्वती रोना आरम्भ करती है। उस दिन रातको फिर भात नहीं खाती। इसी भावसे खेलकूदमें पार्वतीका दिन बीतने लगा। यह सब देखकर बाप मा के मनमें आनन्द नहीं समाता। क्रमसे पार्वतीका लिखना पढना सीखनेका समय हुआ। वह राजकन्या (है), उसे तो स्कूल जाकर, पढना न

होगा। पर्वतराजने घरमें ही गुरुभाजी रख दी। पार्वती सोनेके पत्तेपर हीरेकी कलमसे 'क' 'ख' लिखने लगी। छः महीनेके बीचमें ही संयुक्त अक्षर और वर्ण-विचार समाप्त हो गया। अब तो तस्वीरदार किताब पढ़नेका समय (है)। पिताने प्यार करके कितनी ही सुन्दर सुन्दर तस्वीरवाली किताब ला दी। पार्वती वह सब देखती और हँसती थी। कैसी सुन्दर तस्वीर है! एक बेंग, एक हाथी निगलना चाहता है। बेंगका कैसा साहस है! पार्वती तस्वीर देखकर हँसती (है) और मन ही मन विचारती (है), बेंग क्या कभी हाथी निगल सकेगा।

अट्ठाईसवां पाठ

नाना = बहुतसे	कुमीर = मगर
रकमेर = तरहकी	बेङग = बेंग
छड़ा = पद्य	नाककाटा = नकटा
टिये = तोता	मनोयोग दिया = जी लगाकर
पाखी = पक्षी	देमाक = अहङ्कार
खुकुराणी = छोटी लड़की	दुष्टामि = बदमाशी
गल्प = कहानी	भालवासे = प्यार करे

(२८)

छबिर बइगुलिते नानारकमेर छड़ा ओ गल्प आछे। टिये पाखीर छड़ा, खुकुराणीर बियेर छड़ा, कत रकमेर छड़ा। आर गल्प? शेयाल ओ कुमीरेर गल्प, बेङग बेङगीर गल्प, नाककाटा

রাজার গল্প, শীত বসন্তের গল্প, কত গল্পই বা পার্ব্বতী শিখিয়া ফেলিল। পার্ব্বতী খুব মনযোগ দিয়া লেখা পড়া করিত। রাজকন্যা হইলে কি হবে, তার একটুকুও দেমাক ছিল না। সে গুরমাকে খুব ভক্তি করিত। গুরমা যাহা বলিতেন, সে তাহাই করিত। পড়ার সময় একটুকুও দুষ্টামি করিত না। কাহারও নিকট মিথ্যা কথা কহিত না। এমন মেয়েকে কে না ভাল-বাসে? তোমরাও যদি মন দিয়া লেখাপড়া কর এবং সর্ব্বদা সত্য কথা বল, সকলেই তোমাদিগকে ভালবাসিবে।

(২৮)

तस्वीरवाली किताबोंमें कितनी तरहकी कविता और कहानी हैं। तोता पक्षीकी कविता, छोटी लड़कीके व्याहपर कविता कितनी ही तरह की कविता (है)। और कहानियाँ? सियार और मगरकी कहानी बेंग बेंगीकी कहानी, नकटे राजाकी कहानी, शीत वसन्तकी कहानी कितनी ही कहानियाँ पार्वतीने सीख डाली। पार्वती खूब जी लगा कर लिखना पढ़ना करती थी। राजकन्या होनेसे क्या होगा, उसको कुछ भी अहङ्कार न था। वह गुरुआनीकी खूब भक्ति करती थी। गुरुआनी जो कहती थीं वही करती थी। पढ़नेके समय कुछ भी बदमासी नहीं करती थी। किसीसे झूठ नहीं बोलती थी। ऐसी लड़कीको कौन नहीं प्यार करता? तुम लोग भी यदि जी लगाकर लिखना पढ़ना करो और सदा सच बात बोलो,(तो) सभी तुमलोगोंको प्यार करेंगे।

उन्नीसवाँ पाठ।

গানও = गाना भी	স্বামীকে = पतिको
রাঁধিতে = रसोई बनाना	ছুটাছুটি = दौड़ धूप
তখনকার = उस समयकी	লুকোচুরী = लुकाचोरी
ছাড়া = छोड़कर, अलावे	বাল্যকাল = लड़कपन
শিখিয়াছিল = सीखा था	যৌবন = जवानी
বাবুগিরি = बाबुआनी	চলিয়া গেল—बीत गया
কাটাইতে = काटने	

(২৯)

পার্ব্বতী যে শুধু লেখাপড়া শিখিয়াছিল, তা নয়। গুরুমা তাকে গানও শিখাইয়া ছিলেন। সন্ধ্যার সময় পার্ব্বতী যখন গুরুমার নিকট গান করিত, তখন তাহার সুমিষ্ট স্বর শুনিয়া সকলে মুগ্ধ হইয়া যাইত। দেবতাও এমন সুন্দর গান করিতে পারেন না। গান ছাড়া পার্ব্বতী রাঁধিতেও শিখিয়াছিল। তখনকার রাজকন্যারা কেবল বাবুগিরি করিয়া দিন কাটাইত না। বিয়ের পর তাহারা হাতে রাঁধিয়া স্বামীকে খাওয়াইত। পার্ব্বতী যে শুধু পুতুল খেলা করিত, তা নয়। অনেক সময় সখীদের সঙ্গে ছুটাছুটি করিত, লুকোচুরি খেলিত, আরও নানা রকমের খেলা খেলিত। ইহাতে তাহার শরীরে যেমন শক্তি হইয়াছিল, তেমন সৌন্দর্য্যেরও বৃদ্ধি হইয়াছিল। এইরূপে পার্ব্বতীর বাল্যকাল চলিয়া গেল এবং যৌবন আসিয়া পড়িল।

(२८)

पार्वतीने केवल लिखना पढ़ना सीखा था, यही नहीं। गुरुआनीने उसको गाना भी सिखाया था। सन्ध्याके समय पार्वती जब गुरुआनीके पास जाती (थी), उस समय उसका मीठा स्वर सुनकर सभी मुग्ध हो जाते थे। देवता भी ऐसा सुन्दर गाना नहीं गा सकते थे। गानेके अलावे पार्वतीने (भोजन) पकाना भी सीखा था। उस समयकी राजकन्याएँ केवल बाबूआनी करके दिन नहीं काटती थीं। विवाहके बाद वे अपने हाथसे पकाकर स्वामीको खिलाती (थी)। पार्वती केवल गुड़िया खेलती थी सो नहीं। बहुत बार सखियोंके सङ्ग दौड़ धूप करती, लुका-चोरी खेलती, और भी नाना प्रकारके खेल खेलती थी। इससे उसके शरीरमें जैसी शक्ति हुई थी, वैसा सौन्दर्य भी बढ़ गया था। इसी तरहसे पार्वतीका लड़कपन बीत गया और जवानी आ पहुँची।

सोलहवां पाठ।

बाड़िया उठिल = बढ़ उठा	आँकिया राखियाछे = अङ्कित कर रखी है
विकसित हइया उठे = विकसित उठता है	पायेर = पैरकी
चेहारा = चेहरा	अङ्गुलिते = उँगलीमें
चित्रकर = चित्रकार, तस्वीर बनानेवाला	हाटिया याइते = हट जाती
	बोध हइत = मालूम होता था

আল্তার রস = অলতীকা রস	হাঁটু = ঘুটনে
বাহির হইতেছে = নিকল রহা	সরু = পতলা
) হৈ	শিরিষ = সিরীস
মাটিতে = মিট্টীমে	কুসুম = ফুল
স্থলপদ্ম = ভূমিকমল	

(৩০)

পার্ব্বতীর শরীর স্বভাবতঃই সুন্দর। এখন যৌবনকাল— তাহার শরীরের লাবণ্য যেন আরও বাড়িয়া উঠিল। সূর্য্যের কিরণে পদ্ম যেমন বিকসিত হইয়া উঠে, নবযৌবনের উদয়ে পার্ব্বতীর শরীরও তেমনি অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করিল। তখন, তাহার চেহারা দেখিলে মনে হইত যে, কোন চিত্রকর যেন এক খানা ছবি আঁকিয়া রাখিয়াছে। পার্ব্বতীর পায়ের অঙ্গুলিতে যে নখ আছে তাহা এমন লাল এবং এমনই উজ্জ্বল যে, সে যখন হাটিয়া যাইত, তখন বোধ হইত যেন নখ হইতে আল্তার রস বাহির হইতেছে। আর মাটিতে উহার এমনই জ্যোতিঃ হইত যে, লোকে মনে করিত, মাটিতে বুঝি স্থলপদ্ম ফুটিয়াছে। পার্ব্বতীর হাঁটু দুটি কেমন সুশ্রী, উপরে গোল এবং পরে ক্রমশঃ সরু হইয়া আসিয়াছে। উহাতে লাবণ্যই বা কত! লোকে কথায় বলে যে শিরীষ ফুলের মত কোমল জিনিষ আর কিছুই নাই। কিন্তু পার্ব্বতীর বাহু দুটি শিরিষ কুসুম অপেক্ষাও কোমল।

(३०)

पार्वतीका शरीर स्वभावतः ही सुन्दर (है)। अब यौव

नका समय (है)—उसके शरीरका लावण्य मानों और भी बढ़ उठा। सूर्यकी किरणसे कमल जैसे खिल उठता है, नये यौवनके उदयसे पार्वतीके शरीरने भी वैसी ही अपूर्व शोभा धारण की। उस समय उसका चेहरा देखनेसे जीमें आता था कि किसी चित्रकारने मानों एक तस्वीर अङ्कित कर रखी है। पार्वतीके पैरकी उँगलीमें जो नख है वह ऐसा लाल और ऐसा ही उज्ज्वल है कि वह जिस समय चलती थी उस समय मालूम होता था मानों नखसे अल्तेका रस निकल रहा है। और मिट्टीमें उसकी ऐसी ज्योति होती थी कि मनुष्य समझते थे कि मिट्टीमें मालूम होता है स्थलपद्म खिला है। पार्वतीके घुटने दोनों कैसे सुन्दर हैं। ऊपर गोल और फिर क्रमश पतले होते आये हैं। उसमें लावण्य भी कितना (है)। लोग बातोंमें कहते हैं कि सिरीस फूलके समान कोमल पदार्थ और कुछ नहीं (है) परन्तु पार्वतीकी दोनों बाहें सिरीस फूलसे भी अधिक कोमल (हैं)।

इकतीसवां पाठ।

গলায় = गलेमें	পেছন দিক = पीछेकी ओर
মুক্তাগুলি = मोतियाँ	ছুটিয়া বেড়ান = घूमते फिरते थे
তুলনা = तुलना, उपमा	হাটিতে হাটিতে = घूमते घूमते
ভূ = भौंह	জমতা = बल, शक्ति

চুনের = কুমরী ফলিত = ফলনা
গন = ঘনা ফোঁটা = বুঁদ
(৩১)

পার্ব্বতীর গলায় মুক্তার মালা। শিশিরের ফোঁটার মত সাদা সাদা মুক্তাগুলি তাহার বুকের উপর ঝক্ ঝক্ করিত। সুন্দর মুখের সহিত লোকে পদ্মের অথবা চন্দ্রের তুলনা দিয়া থাকে। কিন্তু পার্ব্বতীর মুখশ্রীর নিকট চন্দ্র ও পদ্ম উভয়েই পরাজিত। সেই অবধি দিনে চাঁদ উঠে না, আর রাত্রিতে পদ্ম ফোটে না। পার্ব্বতীর চক্ষু দুটি যেমন বিস্তৃত, নাসিকা তেমন উচ্চ এবং ভ্রূদুটি তেমন লম্বা। আর চুলের কথা কি বলিব। ঘন কৃষ্ণ কেশ, তাহা পিছনদিক দিয়া হাঁটু পর্য্যন্ত পড়িয়াছে। যৌবনকালে পার্ব্বতী এতই সুন্দরী হইয়া উঠিল।

দেবতাদের দেশে নারদ নামে একজন বিখ্যাত মহর্ষি আছেন। তিনি সর্ব্বদা ইচ্ছামত এদিক ওদিক ঘুরিয়া বেড়ান। এক দিন হাঁটিতে হাঁটিতে তিনি পর্ব্বতরাজ হিমালয়ের বাড়ীতে উপস্থিত হইলেন। হিমালয় খুব সমাদরে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন। তখনকার মুনিঋষিদিগের ভারী ক্ষমতা ছিল। তাঁহারা যাহা বলিতেন, তাহাই ফলিত। হিমালয়ের আদেশে পার্ব্বতী আসিয়া মহর্ষি নারদকে প্রণাম করিল। মহর্ষি পার্ব্বতীকে আশীর্ব্বাদ করিয়া বলিলেন, "দেব-দেব মহাদেব তোমাকে বিবাহ করিবেন, আর তুমি স্বামীর খুব সোহাগিনী হইবে।" মহর্ষির কথা ব্যর্থ হইবার নয়। পর্ব্বতরাজ ভগবান মহাদেবকে জামাতারূপে

পাইবেন জানিয়া খুব খুসী হইলেন। বিবাহের বয়স হইলেও পর্ব্বতরাজ পার্ব্বতীর বিবাহের কোন আয়োজন করিলেন না। তিনি জানিতেন মহর্ষির কথাই সত্য হইবে। কাজেই তিনি নিশ্চেষ্ট রহিলেন।

(२१)

पार्वतीके गलेमें मुक्ताकी माला (है)। शिशिरकी बूँदकी तरह सफ़ेद सफ़ेद मोती उसके कलेजे पर चमकते हैं। सुन्दर मुखके साथ मनुष्य कमलकी अथवा चन्द्रकी तुलना दिया करते हैं। परन्तु पार्वतीकी सुखश्रीके सामने चन्द्र और कमल दोनों ही पराजित (हैं)। उसी समयसे दिनमें चन्द्रमा नहीं निकलता और रातमें कमल नहीं खिलता है। पार्वतीकी आँखें दोनों जैसी बड़ी, नाक वैसी ही ऊँची और भौंहें दोनों वैसी ही लम्बी (हैं)। और केशकी बात क्या कहूँगा। घने काले केश, वे पीछेसे घुटने तक गिरे हैं। यौवनके समय पार्वती इतनी ही सुन्दरी हो गई।

देवताओंके देशमें नारद नामके एक विख्यात महर्षि हैं। वे सदा इच्छानुसार इधर उधर घूमते फिरते (हैं)। एक दिन घूमते घूमते वे पर्वतराज हिमालयके मकानपर उपस्थित हुए। हिमालयने बड़े आदरसे उनकी अभ्यर्थना की। उस समयके मुनि ऋषियोंकी भारी क्षमता थी। वे जो कहते थे, वही फलता था। हिमालयके आदेशसे पार्वतीने आकर महर्षि नारदको प्रणाम किया। महर्षिने पार्वतीको आशी-

भेंट देकर कहा—'देव-देव महादेव तुमसे विवाह करेंगे, और तुम स्वामीकी बड़ी ही सोहागिनी होओगी।' महर्षिकी बात झूठी होनेकी नहीं। पर्वतराज भगवान् महादेवको जामाताके रूपमें पानेके विचारसे बड़े प्रसन्न हुए। विवाहकी अवस्था हो जानेपर भी पर्वतराजने पार्वतीके विवाहकी कोई तैयारी न की। वे जानते थे (कि) महर्षिकी बात ही सच होगी। इससे वे निश्चेष्ट रहे।

बत्तीसवां पाठ।

पूर्ब्बे = पहिले
একদা = एक समय
দূরে থাকুক = दूर रहे
বরং = वरन्
ঝাঁপ দিয়া = कूदकर
রাখিলেন = रक्खी

মাখিলেন = लगाया, मला
বাঘছাল = बघछल
পরিধান = पहिरनेका वस्त्र
পাগল সাজিয়া = पागल सजकर
সেই অবধি = तबसे
পাদদেশ = तराईमें

(৩২)

ভগবান মহাদেব পূর্ব্বে দক্ষরাজের কন্যা সতীকে বিবাহ করিয়াছিলেন। একদা দক্ষরাজ এক যজ্ঞ আরম্ভ করেন। তাহাতে সকলের নিমন্ত্রণ করা হয়, কিন্তু দক্ষরাজ নিজকন্যা সতী এবং জামাতা মহাদেবকে নিমন্ত্রণ করিলেন না। সতী বিনা নিমন্ত্রণেই পিতার যজ্ঞে উপস্থিত হইলেন। দক্ষ সতীকে অভ্যর্থনা করা দূরে থাকুক, বরং তাহার নিকটেই মহাদেবের নিন্দা আরম্ভ করেন। পতিনিন্দা শ্রবণে নিতান্ত দুঃখিত হইয়া সতী

অগ্নিকুণ্ডে ঝাঁপ দিয়া প্রাণত্যাগ করিলেন। সেই অবধি মহাদেব সংসার বাসনা পরিত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসীর মত দেশ বিদেশে ভ্রমণ করিতে থাকেন। তিনি মাথায় জটা রাখিলেন, শরীরে ভস্ম মাখিলেন, আর বাঘছাল পরিধান করিলেন। এইরূপে পাগল সাজিয়া, তিনি নানাস্থানে ঘুরিতে লাগিলেন। প্রিয়তমা পত্নী সতীর বিরহে তিনি বড়ই কাতর হইয়া পড়িলেন। অবশেষে নানাস্থান পর্য্যটন করিয়া, তিনি হিমালয়ের পাদদেশে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। সে স্থানটি অতিশয় নির্জ্জন এবং তপস্যার পক্ষে বেশ উপযুক্ত; সেখানে এক কুটীর বাঁধিয়া তিনি উপাসনা আরম্ভ করিলেন। তাঁহার সঙ্গে অনেকগুলি অনুচর আসিয়াছিল, তাহারাও সেখানে রহিয়া গেল। মহাদেব কি কঠোর তপস্যাই আরম্ভ করিলেন।

(३२)

भगवान् महादेवने पहिले दक्षराजकी कन्या सतीसे विवाह किया था। एक समय दक्षराजने एक यज्ञ आरम्भ किया। उसमें सभोंका निमन्त्रण किया गया, परन्तु दक्षराजने अपनी कन्या सती और जामाता महादेवको निमन्त्रण नहीं किया। सती विना निमन्त्रणके ही पिताके यज्ञमें उपस्थित हुई। दक्षने सतीको अभ्यर्थना करना तो दूर रहा, वरन् उनकी पास ही महादेवकी निन्दा आरम्भ की। पति-निन्दा सुननेसे अत्यन्त दुःखित हो, सतीने अग्निकुण्डमें कूद-कर प्राणत्याग किया। तबसे महादेव संसारवासना छोड़

कर संन्यासीके समान देशविदेशमें घूमा करते थे। उन्होंने माथेमें जटा रखी, शरीरमें भस्म लगाया और बाघछाल पहिर लिया। इसी तरह पागल रूजकर वे नानास्थानमें घूमने लगे। प्रियतमा पत्नी सतीके विरहमें वे बड़े ही कातर हो पड़े। अन्तमें बहुतसे स्थानोंमें घूमकर, वे हिमालयकी तराईमें आ पहुँचे। वह स्थान बड़ा ही निर्जन और तपस्याके लिये अच्छा उपयुक्त (था); वहाँ एक कुटी बांधकर (बनाकर) उन्होंने उपासना आरम्भ की। उनके साथ बहुतसे अनुचर आये थे, वे भी वहीं रह गये। महादेवने कैसी कठोर तपस्या आरम्भ की!

तैंतीसवाँ पाठ।

আগুণের = अग्निका	তাপেই = गर्मीसे ही
জ্বালিলেন = जलाया	পুড়িয়া যাইত = जल जाता
জ্বলন্ত = जलती हुई	আনিয়া দিত = ला देती थी
হুতাশন = अग्नि	

(৩৩)

খোলা জায়গায় বসিয়া, সামনে এক আগুণের কুণ্ড জ্বালিলেন। উপরে প্রচণ্ড সূর্য্য, চতুর্দ্দিকে জ্বলন্ত হুতাশন! অন্যলোক হইলে আগুণের তাপেই পুড়িয়া যাইত! এরূপ কঠোর অবস্থায় তিনি ধ্যান আরম্ভ করিলেন।

মহাদেব নিজেই ভগবান। তাঁহার ধ্যান করিয়া কত লোক কৃতার্থ হইয়া যাইতেছে। মহাদেব স্বয়ং মঙ্গলময়, তিনি সকলের

ফল বিধান করেন। তিনি যে কি জন্য ধ্যান করিতে বসিলেন, তাহা তুমি আমি বুঝিতে পারিব না। দেবতারা যে সকল কার্য্য করেন, তাহা কি তুমি আমি বুঝিতে পারি? মানুষের জ্ঞান বুদ্ধি খুব কম। এই জ্ঞান দ্বারা ভগবানের কার্য্য কলাপের কারণ নির্দ্দেশ করা যায় না।

পর্ব্বতরাজ হিমালয় যখন শুনিতে পাইলেন যে, ভগবান মহাদেব নিজরাজ্যে আসিয়া উপস্থিত হইয়াছেন, তখন তাঁহার আর আনন্দের সীমা রহিল না। তিনি পশুপতির নিকট উপস্থিত হইয়া বিনীতবচনে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন। বাড়ীতে ফিরিয়া আসিয়া তিনি পার্ব্বতী ও তাহার জয়া বিজয়া নামক দুই সখীকে বলিলেন "তোমরা প্রত্যহ যাইয়া দেব দেব পশুপতির সেবা কর।" পরদিন হইতে পার্ব্বতী পশুপতির সেবায় নিরত হইল। পার্ব্বতী স্ত্রীলোক, যুবতী, এমত অবস্থায় তপস্যাস্থলে গমন করিলে তপস্যার বিঘ্ন হইতে পারে ইহা বুঝিয়াও মহাদেব পার্ব্বতীকে নিষেধ করিলেন না। কারণ মহাদেব অতি জিতেন্দ্রিয় পুরুষ ছিলেন। মহাপুরুষগণের মন সাধারণের মত চঞ্চল নহে। যে সকল কারণে সাধারণ লোকে চঞ্চল হইয়া উঠে, মহাপুরুষগণ তাহাতে ভ্রুক্ষেপও করেন না। মহাপুরুষ প্রকৃতির লক্ষণই এই। পার্ব্বতী প্রতিদিন শিবের পূজার জন্য ফুল স্নানের জন্য জল আনিয়া দিত, যজ্ঞের স্থান পরিষ্কার করিয়া রাখিত।

(২২)

খুদী অমহদি বৈঠকর, সামনে এক অগ্নিকা

जलाया। ऊपर प्रचण्ड सूर्य, चारों ओर जलती हुई आग! दूसरा मनुष्य होनेसे अग्निकी गर्मीसे ही जल जाता! ऐसी कठोर अवस्थामें उन्होंने ध्यान आरम्भ किया।

महादेव स्वयं ही भगवान् (हैं), उनका ध्यान करके कितने ही मनुष्य कृतार्थ हो जाते हैं। महादेव स्वयं मङ्गलमय (हैं), वे सभोंका मङ्गल विधान करते हैं। वे किस लिये ध्यान करने बैठे (हैं), यह हम तुम नहीं समझ सकते। देवतागण जो सब काम करते हैं, यह क्या तुम हम समझ सकते (हैं)? मनुष्यकी ज्ञान बुद्धि बहुत कम (है)। इसी ज्ञान द्वारा ईश्वरके कार्यकलापका कारण नहीं निर्देश किया जाता।

पर्वतराज हिमालयने जिस समय सुन पाया कि भगवान् महादेव अपने राज्यमें आ पहुँचे हैं, उस समय उनके आनन्दकी और सीमा न रही। उन्होंने पशुपतिके पास जाकर विनीत वचनसे उनकी अभ्यर्थना की। मकानपर लौटकर उन्होंने पार्वती और उसकी जया-विजया नामकी दोनों सखियोंसे कहा "तुम सब रोज जाकर देव-देव पशुपतिकी सेवा करो।" दूसरे दिनसे पार्वती पशुपतिकी सेवामें लगी। पार्वती स्त्री (है), युवति (है), ऐसी अवस्थामें तपस्याके स्थानमें जानेसे तपस्यामें विघ्न हो सकता, यह समझकर भी महादेवने पार्वतीको मना नहीं किया; कारण महादेव बड़े जितेन्द्रिय पुरुष थे। महापुरुषगणका चित्त साधारण मनुष्योंकी भाँति चंचल नहीं (है)। जिन सब कारणोंसे

साधारण मनुष्य चञ्चल हो उठते हैं, महापुरुषगण उनपर भ्रूक्षेप भी नहीं करते। महापुरुष प्रकृतिका लक्षण यही है। पार्वती प्रतिदिन शिवकी पूजाके लिये फूल और स्नानके लिये जल ला देती और उनका स्थान साफ कर रखती (थी)।

चौंतीसवां पाठ।

পাত্রী = स्त्री	আনয়ন করা = लाना
অনুসন্ধান = खोज	সুতরাং = इसलिये
কোথাও = कहीं भी	মিলিয়া = मिलकर
প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন = प्रलय मचा सकते हैं	ঠিক = ठीक
	পুনরায় = फिर

(৩৪)

সতীর দেহত্যাগের পর হইতেই দেবগণ মহাদেবের জন্য একটা উপযুক্ত পাত্রীর অনুসন্ধান করিতেছেন। সতী যেরূপ গুণবতী ও রূপবতী ছিলেন, ঠিক ঐরূপ একটা কন্যা পাইবার জন্য দেবগণ কত পরিশ্রম করিতেছেন কত দেশ বিদেশ ঘুরিতেছেন কিন্তু কোথাও ঐরূপ একটি কন্যা পাওয়া যাইতেছে না। মহাদেব ত স্ত্রীবিয়োগের পর হইতে সংসার বাসনা ত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসী সাজিয়াছেন। তাঁহাকে আবার গার্হস্থ্যধর্ম্মে আনয়ন করা দেবগণের প্রধান উদ্দেশ্য হইলেও, তাঁহারা সাহস করিয়া মহাদেবের নিকট সে কথা বলিতে পারেন না। তাঁহারা জানেন যে মহাদেব ক্রুদ্ধ হইলে সংসারে প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন। সুতরাং তাঁহারা সকলে

মিলিয়া ঠিক করিলেন যে, একটী সুন্দরী কন্যার সহিত মহাদেবের বিবাহ সংঘটিত হইলে, পশুপতি নিজেই সন্ন্যাস ত্যাগ করিয়া পুনরায় গৃহস্থ হইবেন। এমন সময় এক দিন নারদ মুনি আসিয়া সংবাদ দিলেন যে, শিবের উপযুক্ত পাত্রী এত দিনে পাওয়া গিয়াছে। পর্ব্বতরাজ হিমালয়ের কন্যা পার্ব্বতীর ন্যায় গুণবতী ও রূপবতী রমণী স্বর্গে মর্ত্তে, কোথাও আর নাই। সুতরাং ইহার সহিতই মহাদেবের বিবাহ দিতে হইবে। দেবর্ষির কথা শুনিয়া দেবগণ খুব আনন্দিত হইলেন। কিন্তু তাঁহাদের মধ্যে কেহই সাহস করিয়া শিবের নিকট বিবাহের প্রস্তাব করিতে সম্মত হইলেন না।

(३४)

सतीके देहत्यागके बादसे ही देवगण महादेवके लिये एक उपयुक्त पात्रीको खोज करते हैं। सती जैसी गुणवती और रूप वती थीं, ठीक इसी तरहकी एक कन्या पानेके लिये देवता गण कितना परिश्रम करते हैं, कितने देश विदेशमें घूमते हैं, परन्तु कहीं भी ऐसी एक कन्या नहीं पाई जाती है। महादेव तो स्त्रीवियोगके बादसे संसारवासनाको त्याग करके संन्यासी बने हैं। उनको फिर गार्हस्थधर्ममें लाना देवता ओंका प्रधान उद्देश्य होनेपर भी वे साहस करके महादेवके पास यह बात कह नहीं सकते। वे जानते हैं कि महादेव क्रुद्ध होनेपर संसारमें प्रलय मचा दे सकते हैं। इसलिये उन सभोंने मिलकर ठीक किया कि एक सुन्दरी कन्याके

साथ महादेवका विवाह होजानेसे पशुपति स्वय ही सन्यास छोड़कर फिर गृहस्थ होंगे। ऐसे ही समय एक दिन नारद मुनिने आकर समाचार दिया कि शिवकी उपयुक्त पात्री इतने दिनोंमें पाई गई है। पर्वतराज हिमालयकी कन्या पार्वतीकी भाँति गुणवती और रूपवती रमणी स्वर्गमें,मर्त्यमें कहीं भी और नहीं है। इसलिये इसके साथ ही महादेवका विवाह करना होगा। महर्षि की बात सुनकर देवगण खूब आनन्दित हुए, परन्तु उनमेंसे कोई भी साहस करके शिवके पास विवाहका प्रस्ताव करनेमें सम्मत न हुए।

नोट—"पार्वती" नामकी बड़ी ही मनोहारिणी पुस्तिका भी छपकर तय्यार हो गई है। मूल्य ⟩)॥

विष-वृक्ष

पर

हिन्दी के सुप्रसिद्ध धुरन्धर लेखक, अनेक भाषाओं के ज्ञाता, लोकविख्यात सम्वादपत्र "हिन्दी बंगवासी" के प्रधान सम्पादक

बाबू हरिकृष्णजी जौहर की

सम्मति :—

"बंगालके औपन्यासिकश्रेष्ठ परलोकगत बंकिमचन्द्र के बंगला विष वृक्ष का यह हिन्दी-अनुवाद है। बंकिम बाबू के इस उपन्यासका अनुवाद देशी-विदेशी कितनी ही भाषाओं में हो चुका है। उर्दू के सुप्रसिद्ध औपन्यासिक और पत्रसम्पादक लखनऊके मौलवी अब्दुलहलीम शररको यह उपन्यास इतना पसन्द आया, कि आपने इसे बंग-भाषासे उर्दू-भाषामें अनुवादित किया। हर्षका विषय है, कि आज हिन्दी-भाषा में भी इस उपन्यासका अनुवाद प्रकट हुआ है। विष-वृक्ष में हिन्दी-समाजकी दशा दिखाई गई है; हिन्दुओं के घरों का चित्र अंकित किया गया है।

अमूल्य बातोंसे यह उपन्यास भरा हुआ है। फिर; इस उपन्यासकी कथा में बड़ी ही रोचकता है। इसे देखने पर देखने वाले को आहार-निद्राका त्याग करना होता है। जब तक यह उपन्यास समाप्त नहीं होता; तब तक इसके पढ़ने की उत्कण्ठा मनमें बनी रहती है। इस में सन्देह नहीं, कि यह उपन्यास हिन्दी-साहित्यका संग्रहयोग्य एक रत्न है। इसकी छपाई आदि बाह्य सौन्दर्यके सम्बन्ध में इतना ही कहना यथेष्ट है, कि यह उपन्यास कलकत्ते के सुप्रसिद्ध नरसिंह प्रेस से मुद्रित हुआ है। इस उपन्यासका आकार देखते हुए इसका मूल्य अधिक समझा जा नहीं सकता। दो सौ चौंसठ पृष्ठोंके इस उपन्यासका मूल्य ॥<) आने मात्र है।" डाकव्यय =)

पता—हरिदास एण्ड कम्पनी,

२०१ हरीसन रोड कलकत्ता